जुलाई-अगस्त-सितम्बर, 1981
वर्ष 17 ❋ अंक 1-2-3
मूल्य 4.50

ज्ञा ना मृ त

ऊपर : अम्बेदकर स्टेडियम में विश्व-कल्याण महोत्सव के प्रतिनिधि एकत्रित हो रहे हैं।
मध्य में : प्रतिनिधियों का विशाल समूह दिखाई दे रहा है।
नीचे : विदेशों से आये प्रतिनिधि।

ज्योतिस्वरूप परमपिता
परमात्मा शिव

प्रजापिता ब्रह्मा

जगदम्बा सरस्वती

विश्व-कल्याण महोत्सव और दससूत्री कार्यक्रम की पृष्ठ-भूमिका और रिपोर्ट

अप्रैल, १९८० में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय के मुख्यालय, माउण्ट आबू में एक विशेष बैठक हुई जिसमें प्राय: हरेक प्रदेश से कुछेक ब्रह्माकुमारी बहनें और ब्रह्माकुमार भाई सम्मिलित हुए। इस बैठक में इस बात पर विशेष चर्चा हुई कि आध्यात्मिक पुरुषार्थ द्वारा स्व-परिवर्तन और विश्व-परिवर्तन के कार्य को और अधिक तीव्र गति दी जाय। इसमें यह बात भी सामने आयी कि परमपिता परमात्मा शिव ने प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा समस्त इतिहास का यह जो विश्लेषण दिया है कि मानव की व्यक्तिगत और समाज की समष्टिगत समस्याएँ मानसिक तनाव के कारण, या दस मानवी दुर्बलताओं, मनोविकारों अथवा आसुरी लक्षणों ही के कारण हैं, इससे संसार भर को अवगत किया जाय। साथ ही साथ यह भी तय हुआ कि अपवित्रता और अशान्ति से त्रस्त मानव-मन को राजयोग के अभ्यास तथा दिव्य गुणों की धारणा का मार्ग विशाल पैमाने पर दर्शाया जाय। अत: सर्व-सम्मति से सोचा गया कि एक कार्यक्रम क्रान्तिकारी स्तर पर किया जाय। इस चर्चा के फलस्वरूप "**दस सूत्री कार्यक्रम**" की रूप-रेखा तैयार की गयी।

इस कार्यक्रम के पीछे एक उद्देश्य तो यह था कि ईश्वरीय विश्व-विद्यालय में आने वाले बहन-भाइयों की अपनी तीव्रतर आध्यात्मिक उन्नति हो और इसके लिये उनकी स्वेच्छा से ऐसी दैनिक दिनचर्या बने जिसमें वे और अधिक लग्न से नित्यप्रति ईश्वरीय ज्ञान के श्रवण-मनन में, राजयोग के अभ्यास में और दिव्य गुणों की धारणा में सक्रिय एवं संगठित रूप से सम्मिलित हों।

एक आध्यात्मिक अभियान

इसका दूसरा उद्देश्य यह था कि जन-जन को पवित्रता का लाभ देने और ईश्वरानुभूति कराने का एक योग-युक्त अभियान हो जिसमें ईश्वरीय विश्व-विद्यालय के सभी रूहानी बहनें और भाई एक जुट होकर तन, मन, धन से विश्व सेवा करें। यह भी निर्णित हुआ कि दस मास का यह सारा कार्यक्रम एक अलौकिक "ज्ञान-योग महायज्ञ" की तरह हो जिसमें सभी अपनी-अपनी किसी-न-किसी कमी या कमज़ोरी की आहुति दें और दूसरों को भी इसमें मनोविकार स्वाहा करने की प्रेरणा दें। इस योजना में दिव्य सांस्कृतिक कार्यक्रमों को भी विशेष स्थान दिया जाना था क्योंकि आज के वातावरण में लोग मनोरञ्जन की भावना से दृश्य-श्रव्य कार्यक्रमों में अधिक रुचि से आते हैं। यह भी निश्चित हुआ कि इस कार्यक्रम का समापन देहली में फ़रवरी के चतुर्थ सप्ताह में एक विशाल कार्यक्रम के रूप में होगा जिसमें विदेशों और प्रदेशों से बहुत-से बहन-भाई आयेंगे।

इस सारी योजना को क्रियान्वित करने के लिये "पत्र-पुष्प" नाम से प्रपत्र का सिलसिला शुरू किया गया जिसके द्वारा सभी सेवा-केन्द्रों के संगठित रूप से सहयोगी होने की प्रक्रिया चालू रही। इस कार्यक्रम से सम्बन्धित कुछ फ़ार्म भी प्रतिज्ञा पत्र के (Pledge Forms) के रूप में छपवाये गये, जिन द्वारा जन-जन को निर्विकार बनने के लिये दृढ़ संकल्प करने की प्रेरणा देने का कार्य शुरू किया गया। इसके

अतिरिक्त लोगों को दस सूत्री कार्यक्रम से अवगत करने तथा उन्हें इसमें भागी बनाने के लिये हिन्दी और अंग्रेज़ी भाषा में सचित्र व्याख्यायिका और फ़ोल्डर्स छपवाये गये। इस प्रकार इस कार्यक्रम की क्रियान्विति बड़े उमंग-उल्लास और रूहानियत-भरे ढंग से शुरू हुई।

महोत्सव के नाम और कार्यक्रम की रूप-रेखा के बारे में निर्णय

१९८० में ही आबू पर्वत पर मुख्यालय में तथा देहली में पाण्डव भवन में दो और विशाल बैठकें हुईं। इनमें भी बहुत-से प्रदेशों के बहन-भाई सम्मिलित हुए। नई देहली में हुई बैठक में कार्यक्रम के लिये स्थान लाल किला मैदान ही निश्चित हुआ और आने वाले बहन-भाइयों की संख्या तथा उनके रहने के स्थान आदि सभी की सम्मति से निश्चित हुए। फ़रवरी में होने वाले कार्यक्रम का नाम "आध्यात्मिक अनुभूति महोत्सव" से बदल कर "विश्व-कल्याण महोत्सव" निर्णित हुआ और सांस्कृतिक कार्यक्रमों को तथा सम्मेलनों को कम करने का निर्णय किया गया जिसके फलस्वरूप इसकी रूप-रेखा में तदानुसार न्यूनाधिक परिवर्तन हुआ। इसी बैठक में हर प्रदेश द्वारा बनाये जाने वाले प्रदर्शनी मंडप के विषय भी स्वीकृत किये गये।

इसी बैठक में योजना की क्रियान्विति के लिये कौन-कौन बहन-भाई किस-किस कार्य के लिये मुख्य रूप से निमित्त बनेंगे - यह भी निश्चित हो गया। हरेक विभाग के कार्य में और भी बहुत-से भाई-बहन विशेष रूप से सहयोगी थे। उनका सहयोग अत्यन्त महत्वपूर्ण था, सच तो यह है कि कोई भी बहन या भाई ऐसे नहीं रहे होंगे जिसने किसी प्रकार का सहयोग न दिया हो। अतः साठ-सत्तर हज़ार बहन-भाइयों में से किसका नाम लिखें ? फिर बात यह भी है किसी ने भी नाम, मान और शान की इच्छा को लेकर यह कार्य नहीं किया बल्कि सेवा और लोक-कल्याण ही को सामने रखकर कार्य किया।

रिपोर्ट

इसी दस-सूत्रीय कार्यक्रम के अन्तर्गत ईश्वरीय विश्व-विद्यालय के विभिन्न क्षेत्रों (Zones) या सेवा-केन्द्रों ने देश भर में ५१ बड़े आध्यात्मिक मेले, ३,७६३ राजयोग प्रदर्शनियाँ, ३२६ परिसंवाद या सम्मेलन, ४,९२५ भाषण, १,९९४ ग्रामीण सेवा कार्यक्रम, स्कूलों तथा कालेजों में ९५७ प्रवचन और ३,७८० राजयोग शिविर आयोजित किये। इन द्वारा लगभग डेढ़ करोड़ लोगों को ईश्वरीय सन्देश, प्रभु-परिचय या आध्यात्मिक अनुभव मिला। ईश्वरीय विश्व-विद्यालय के आध्यात्मिक संग्रहालयों में आकर जिन लोगों ने लाभ लिया या जिन्होंने यहाँ की हिन्दी, अंग्रेज़ी, गुजराती और कन्नड़ भाषा में छपने वाली पत्रिकाओं तथा पत्राचार पाठ्क्रम से या पुस्तकालयों में भेंट किए गए साहित्य से लाभ लिया, उनकी संख्या इससे अलग है। इसी प्रकार इन दस-बारह मास में २९० रेडियो-वार्ताओं आदि द्वारा तथा ७१ टेली-विज़न पर झलकियों द्वारा जितने लोगों को लाभ मिला, उसकी तो गिनती करना कठिन है।

समाचार पत्रों द्वारा करोड़ों लोगों को सूचना

फिर, जैसे कि हमने पृष्ठ १०९ पर समाचार पत्रों में छपे लेखों तथा समाचारों का विवरण दिया है, उसके अनुसार इन दस मास में ४२५ समाचार पत्रों और पत्रिकाओं में ७८० बार समाचार या लेख प्रकाशित हुए। यदि परिशिष्टों और ज्ञापनों को छोड़ दिया जाय और यदि औसत के रूप में एक समाचार पत्र अथवा पत्रिका की प्रकाशन-संख्या २०,००० भी मान ली जाय तो ७८० बार छपने से यह संख्या डेढ़ करोड़ हो जाती है।

रेडियो, दूरदर्शन, शोभा यात्रा तथा प्रदर्शनी द्वारा लोगों को ईश्वरीय सन्देश

इसके अतिरिक्त, महोत्सव के दिनों में भी ३ बार हिन्दी में, ४ बार अंग्रेज़ी में, १ बार प्रादेशिक भाषाओं में तथा एक बार अनेकानेक विदेशी भाषाओं में रेडियो पर जो समाचार प्रसारित किया गया उसे भी करोड़ों लोगों ने सुना होगा और दूर-

दर्शन पर भी शोभा यात्रा आदि का जो दिग्दर्शन कराया गया, उसे भी लाखों लोगों ने देखा होगा।

महोत्सव में अन्तर्राष्ट्रीय प्रदर्शनी को तथा शोभा यात्रा द्वारा भी लाखों लोगों को ईश्वरीय सन्देश का तथा ईश्वरीय विश्व-विद्यालय की गतिविधियों का परिचय मिला होगा। इनका विवरण भी इस स्मारिका में यथा-स्थान पर दिया गया है।

कितने ही लोगों ने निमन्त्रण पत्र, फ़ोल्डर्स, सचित्र व्याख्यायिका, व्यक्तिगत सम्पर्क आदि द्वारा इसका परिचय पाया होगा। इन सब की भी गणना करना कठिन है।

विकलाँगों, हरिजनों, कैदियों आदि की सेवा

विशेष बात तो यह है कि अनेकानेक विकलाँग-संस्थाओं, हरिजन-बस्तियों, जेल खानों आदि में आध्यात्मिक कार्यक्रम होने से ऐसे वर्गों की भी खूब आध्यात्मिक सेवा हुई।

धूम्रपान, मद्यपान आदि का त्याग

पुनश्च, मनोविकार अथवा आसुरी संस्कार छोड़ने तथा दिव्य गुणों को धारण करने के जो फ़ार्म भराने की सेवा की गई, उससे भी हज़ारों लोग मद्य-पान, धूम्रपान, अश्लील साहित्य एवं अश्लील सिनेमा, माँसाहार, क्रोध, काम वासना आदि को छोड़ने के लिए कृत-संकल्प हुए। विभिन्न क्षेत्रीय कार्यालयों से जो आँकड़े मिले हैं, वह उत्साह-वर्धक हैं। अब उन-उन लोगों से सम्पर्क बनाये रखने तथा उन्हें प्रेरणा देते रहने से उन्हें स्थायी लाभ हो सकता है।

पुनश्च, देहली के इतिहास में हज़ारों योग-युक्त, कमल पुष्प-सम पवित्र जीवन वाले बहनों और भाइयों का लाल किला मैदान में इकट्ठे होकर विश्व-परिवर्तन के लिए संगठित शक्ति प्रयोग करने का वृत्तान्त कोई कम महत्त्व का नहीं है। ऐसा मनोरम दृश्य अव्यक्त धाम से कैसा लगा होगा! यदि यही कार्यक्रम, विशेषकर अन्तर्राष्ट्रीय मेला, एक सप्ताह या कुछ दिन और होता और साँस्कृतिक कार्यक्रम भी अलग से, बड़े पैमाने पर होते तो देहली की और अधिक जनता को लाभ होता।

—:o:—

कृपया ध्यान दें

ज्ञानामृत का यह अंक जुलाई, अगस्त और सितम्बर का इकट्ठा है। ज्ञानामृत का यह वर्ष जुलाई से प्रारम्भ हुआ। अब इसके बाद आपको अक्तूबर अंक मिलेगा।

जिन्होंने अभी तक हमें ज्ञानामृत का शुल्क नहीं भेजा, वे कृपया इस पत्रिका के मिलते ही भेज दें, ताकि हम उनको अगला अंक भेज सकें।

—व्यवस्थापक

विश्व-कल्याण महोत्सव

–एक संक्षिप्त विवरण–

अमृत-सूची

पृ०

१. विश्व-कल्याण महोत्सव और दससूत्री कार्यक्रम की पृष्ठ-भूमिका और रिपोर्ट (सम्पादकीय) १
२. सर्व के सहयोग से महोत्सव का आयोजन ५
३. विश्व-कल्याण महोत्सव—उद्घाटन समारोह १४
४. अन्तर्राष्ट्रीय प्रदर्शनी १९
५. विश्व-कल्याण महोत्सव के अवसर पर आयोजित विभिन्न सम्मेलन २६
६. राजयोग शिविर और उनका उद्घाटन ... ३३
७. प्रकाश और ध्वनि कार्यक्रम और उसका उद्घाटन ३८
८. विश्व-कल्याण महोत्सव के अवसर पर हुए धर्म नेता समागम की रिपोर्ट ४२
९. विश्व-कल्याण महोत्सव के अवसर पर दिल्ली में निकाली गई शान्ति यात्रा की रिपोर्ट ४५
१०. 'बनो महान, करो कल्याण' की भावना से विश्व-कल्याण महोत्सव व सम्मेलन का उद्घाटन ५१

पृ०

११. पत्रकार संगोष्ठी एवं स्नेह मिलन ५४
१२. विकलांगों के कल्याण के लिए कार्यक्रम ... ५९
१३. विश्व भ्रातृत्व-सम्मेलन ६५
१४. विश्व में नव जागृति के लिए राजयोग ... ६९
१५. शिक्षा-विद सम्मेलन ७२
१६. महिला सम्मेलन ७७
१७. आध्यात्मिक जागृति दिवस ८१
१८. न्यायविद् एवं विधिवेत्ता सम्मेलन ८५
१९. चिकित्सक सम्मेलन ९२
२०. विश्व शान्ति और सद्भाव सम्मेलन १००
२१. विश्व-कल्याण महोत्सव (महायज्ञ) की समाप्ति तथा ४५वीं त्रिमूर्ति शिव-जयन्ती समारोह दिवस १०४
२२. सांस्कृतिक कार्यक्रम १०७
२३. समाचार पत्रों द्वारा समाचार, निमन्त्रण और सूचना १०९
२४. विश्व-कल्याण महोत्सव का रेडियो, और टेलीविज़न पर प्रसार १११

सर्व के सहयोग से महोत्सव का आयोजन

विश्व-कल्याण महोत्सव एक बहुरंगी कार्यक्रम था जिसका आयोजन एक विशाल पैमाने पर किया जाना था और इसलिए इसको प्रयोगात्मक रूप देने के लिए संगठित रूप से संचालित करने की आवश्यकता थी और फिर ये सभी कार्यक्रम आर्थिक पहलु को ध्यान में रखते हुए एवं सेवा के लिए उत्साह, त्याग, प्रेम तथा सहयोग को कायम रखते हुए ही सम्पन्न किये जाने थे।

चूंकि इस महोत्सव का मुख्य उद्देश्य मानव आत्माओं के परमप्रिय निराकार माता-पिता, ज्योति स्वरूप परमात्मा को प्रत्यक्ष करना था, इसलिए हमें इस बात पर भी विशेष ध्यान रखना था कि इस महोत्सव के हर पहलु से—महोत्सव का चिह्न (Symbol) हो या प्रदर्शनी हो, सम्मेलन हो अथवा शोभा यात्रा हो—परमात्मा का गुणगान हो और दर्शकों का ध्यान भी परमात्मा की विशेषताओं, गुणों तथा वर्तमान समय हो रहे उनके कर्त्तव्य की ओर ही आकर्षित हो।

इस सब के साथ-साथ ब्रह्माकुमारों एवं ब्रह्माकुमारियों की आपसी चर्चा में यह महोत्सव **'महायज्ञ'** के नाम से जाना जाता था अर्थात् एक ऐसा महान यज्ञ जिसमें सर्व आत्माओं को पवित्रता व नैतिक बल की उपलब्धि के लिए अपनी किसी-न-किसी कमज़ोरी, विकार अथवा बुरे संस्कार की आहुति देनी थी। इसलिए, महोत्सव की इतनी शुद्धता को बनाए रखना अनिवार्य था। और, इससे पहले ही से बनाए गए १० सूत्रीय कार्यक्रम में सभी ने १० दिव्य गुणों पर ध्यान रखने तथा विशेष रूप से जिस भी दिव्य गुण की कमी है, उसको धारण करने की प्रतिज्ञा की थी। लेकिन, भौतिक विज्ञान के नियमानुसार आध्यात्मिक विज्ञान में भी ऐसा होना स्वाभाविक ही था कि जैसे ही एक ओर के पुरुषार्थ की गति बढ़ती है, साथ-ही-साथ प्रतिकूल परिस्थितियाँ व प्रतिरोध भी बढ़ जाते हैं। परन्तु, इन प्रतिरोधों के होते हुए भी शिव बाबा की मदद तथा निर्देशन से अन्त में सर्व प्रयास सफ़ल हुए।

स्टेडियम और लाल-किला मैदान के लिए अनुमति

उदाहरण के लिए, शोभा-यात्रा के प्रारम्भ होने से पहले सभी भाई-बहनों के बैठने के लिए निश्चित किये गये स्थान अम्बेडकर स्टेडियम की बुकिंग को ही लीजिए। स्टेडियम के लिए अनुमति लेने की विधि बहुत विघ्नों-भरी, कष्टकारी तथा समय को लेने वाली (Time Consuming) थी। इसलिए इस कार्य के लिए बार-बार पुरुषार्थ करना पड़ता था और स्तर के अधिकारियों से रुहानी-स्नेह से बातचीत करते हुए उन्हें इस कार्य का महत्त्व बताना पड़ता था। हर बार वे यही कहते थे कि यह तो फुटबाल का मैदान है और आप जिस तरह के कार्य के लिए इसे चाहते हैं, उसके लिए अभी तक किसी को नहीं दिया गया है। हम पूछते थे, "यह तो आप सच कहते हैं परन्तु हम शान्तिप्रिय लोगों को, परमात्मा को प्रत्यक्ष करने हेतु, कुछ घण्टों के लिए यदि आप इसे दे भी देंगे तो इसमें नुकसान ही क्या है?" उनका जवाब होता, "पहले कभी ऐसा हुआ ही नहीं है।" इस प्रकार यह सिलसिला कई महीनों तक जारी रहा और, आख़िर अन्त में सफ़लता छप्पर फाड़कर हमारे सामने आई! सचमुच परमात्मा महान हैं!

लाल किला मैदान को बुक कराने की भी कुछ इसी प्रकार की कहानी है। नये विधान व नियमों के अनुसार लाल किला मैदान की अनुमति के लिए कई अधिकारियों जैसे थल सेना, दिल्ली नगर निगम, दिल्ली पुलिस से प्रमाणिकता (Approval) प्राप्त करनी थी और विधि-पूर्वक एक अर्ज़ी सभी विभागों

को भेजनी थी ताकि शीघ्र-अति-शीघ्र महोत्सव के कार्यक्रम का स्थान और तिथि समय से काफ़ी पहले ही निश्चित की जा सके और यह भी एक विघ्नों-भरा कार्य था। शायद, यह भी अभी कम था, कुछ अन्य लोग अपने कार्यक्रम के लिए उच्च अधिकारियों द्वारा इस मैदान को लेने के लिए ज़ोर डलवा रहे थे।

किसान-सम्मेलन में भाग लेने वालों के द्वारा मैदान पर हमारी निश्चित की गई तिथियों में, कब्ज़ा करने की बात तो एक तरफ़ रही, लेकिन इस विषय का हर पहलु अनेक मुश्किलातों को लिए हुए था। बहनों और भाइयों ने मधुरता, धैर्यता और एक-दूसरे को प्रोत्साहन देते हुए अथक परिश्रम किया ताकि लाल किले पर पहुँचकर शिव बाबा का झण्डा वहाँ फहराया जा सके।

मण्डपों, पण्डालों आदि का निर्माण-कार्य

लाल किला मैदान में महोत्सव का आयोजन करने के लिए मैदान की अनुमति प्राप्त करना तो पूरी कहानी का एक छोटा-सा ही भाग था। किसान सम्मेलन के पश्चात् प्राप्त थोड़े से समय के अन्दर, मण्डपों, कार्यालयों, योग-शिविरों, बड़े-बड़े दो पण्डालों, शिव शक्ति मण्डप, और ध्वनि एवं प्रकाश कार्यक्रम के लिए विशाल मंच का निर्माण करना वास्तव में एक चुनौती पूर्ण कार्य था। जिन्हें यह कार्य अन्य बहन-भाइयों या मज़दूरों से पूर्ण कराना होता था, उन्हें तनाव-रहित, स्नेह-युक्त, चतुराई-बल से अथक मेहनत करते हुए व्यवहार करना पड़ता था। शिव बाबा ही उनका आधार था क्योंकि स्वयं ठेकेदार और उसके मज़दूर कार्य की अधिकता व समय की कमी से परेशान थे। लेकिन, हमारे भाई और बहनें, जो कार्यक्रम की विभिन्न योजनाओं को कार्यान्वित करने तथा कार्य को सुचारु रूप से चलाने की व्यवस्था करने के लिए निमित्त थे, वे खुद भी इतनी मेहनत से कार्य कर रहे थे कि उनको देख ठेकेदार और उसके मज़दूर भी कार्य को निश्चित समय में पूरा कर देने के लिए तत्पर थे। उन्होंने यह कभी नहीं सोचा था कि श्वेत वस्त्रधारी भी बिना किसी झुँझलाहट के और सदा मुस्कुराते हुए इतनी मेहनत का कार्य कर सकते हैं।

माऊण्ट आबू से आए हुए भीलों का सहयोग भी कोई कम नहीं था। वे बड़ी तीव्रता से कार्य करते हुए परमात्मा की महिमा के गीत गा रहे थे।

मण्डपों की व्यवस्था

वास्तव में, जिन भाई-बहनों ने हर मण्डप में प्रदर्शनी लगायी थी और जिन्होंने मण्डपों के अन्दर व बाहर की सजावट का कार्य किया था, वे तो बस फुर्ती से चलते-फिरते फ़रिश्ते ही नज़र आते थे। उन्होंने यह कार्य इतनी चतुराई से और तीव्रता से किया जिससे यही निर्णय लेना उचित होगा कि परमात्मा को प्रत्यक्ष करने के शुभ संकल्प ने उन्हें उमंग, उत्साह के पंख लगा दिये थे।

सजावट का कार्य

इस सब के साथ-साथ एक ओर बहनों का झुण्ड और दूसरी ओर भाइयों का झुण्ड सजावट के कार्य में अत्यधिक व्यस्त था। बहनों ने बहुत ही सुन्दर और कलात्मक ढंग से बनाई गई कुछ कलाकृतियों को योग्य स्थानों पर लगाया और भाइयों ने ईंटों के आयताकार बनाकर गमलों और फूलदानों से मैदान को सजाया। इसके अलावा एक तीसरा भी झुण्ड था जो एक बहुत ऊँचा ध्वज-स्तम्भ लगाने में व्यस्त था ताकि शिव बाबा की महिमा इस आकाश को छूती हुई पूरे विश्व में फैल सके।

ट्रेलर्स की व्यवस्था और झाँकियों का निर्माण

वे भाई-बहन भी अविस्मरणीय हैं जिन्होंने झाँकियों का निर्माण इस तरह से किया मानों कि वे किसी अभियान में लगे हुए हों। उनको अपनी-अपनी झाँकियों के निर्माण के लिए ट्रैक्टर एवं ट्रेलर्स २४ फ़रवरी को दिये गये ओर २६ फरवरी की प्रातः को आरम्भ होने वाली शोभा यात्रा में उन्हें अपनी झाँकियों को शामिल करना था। इस बात से कौन

इन्कार करेगा कि इतने थोड़े समय में उन्होंने बहुत ही सुन्दर, शोभामान कार्य किया ! सभी दिल्ली निवासियों ने एक ही आवाज़ में कहा कि उन्होंने अभी तक किसी एक धार्मिक संस्था के द्वारा निर्मित इतनी सुन्दर झाँकियाँ पहले कभी नहीं देखी।

परन्तु झाँकियाँ बनाने के लिए ट्रेलर्स का इन्तज़ाम करना भी कोई आसान कार्य नहीं था। जो भाई इसके लिए निमित्त थे, उन्हें हर सम्भव स्थान (Source) का पता लगाना होता था। कई महीनों की अथक मेहनत के बाद ही इतनी अधिक संख्या में ट्रेलर्स का इन्तज़ाम हो सका।

शोभा यात्रा का आयोजन

इतना सब कुछ होने के पश्चात्, शोभा यात्रा को विशेष मार्ग से ले जाने के लिए पुलिस अधिकारियों से अनुमति लेना भी एक और समस्या थी। परमात्मा ने हमारी रक्षा की, हमें एक मार्ग तो वही मिला जो हम चाहते थे। पुलिस अधिकारी जिसे देने के लिए पहले मना कर रहे थे, उन्होंने बाद में स्वयं ही इसकी अनुमति दे दी। परमात्मा की महिमा अपरम्पार है !

शोभा यात्रा निकालने के लिए झंडे, प्लेकार्ड्स (Placards) बैनर इत्यादि भी बनवाने थे, घोड़ों और हाथियों का भी इंतज़ाम करना था, क्रम की भी योजना बनानी थी, घोषणा कर अन्य आत्माओं तक संदेश भी पहुंचाना था तथा ये सब कार्य बिना किसी हानि अथवा दुर्घटना के शुरू करने थे। शिव-बाबा की मदद से सब कार्य अच्छी रीति से सम्पन्न हुआ।

प्रतिनिधियों की आवास व्यवस्था

हमारे सामने एक सबसे बड़ी समस्या विभिन्न देशों से और भारत के विभिन्न राज्यों से आने वाले लगभग १०,००० व्यक्तियों, जो विभिन्न आर्थिक स्तर वाले, विभिन्न परिवारों के, विभिन्न प्रकार की सुविधाओं में रहने के आदि थे, के रहने के लिए ठीक प्रकार से व्यवस्था करने की थी; जिसमें हमें यह भी मालूम नहीं था कि उपरोक्त तथा अन्य बातों को विचार में रखते हुए कितने लोगों को कितना और कैसा आरामदायक स्थान चाहिए। महोत्सव के प्रारम्भ से कुछ दिन पहले रेल-यात्रा छूट (Rail Travel Concession) टिकट की सूचना मिलते ही इस महोत्सव में भाग लेने वाले प्रतिनिधियों की संख्या अचानक ही बढ़ गई जिसने इस समस्या को और उलझा दिया। एक साथ इतने सारे सरकारी क्वार्टर्स का उचित दामों पर मिलना और धर्मशालाओं का इतने दिन के लिए इन्तज़ाम करना भी एक बड़ी जटिल समस्या थी। सब काम ठीक ढंग से और पर्याप्त समय में पूरा करने के लिए इन्जीनियरों और ठेकेदारों से बराबर सम्पर्क बनाये रखना पड़ता था और फिर क्वार्टर्स की सभी फिटिंगस सहित ज़िम्मेवारी लेना और फिर उनकी सफ़ाई कराना भी एक बड़ी भारी ज़िम्मेवारी थी।

इस समस्या का सहज समाधान पानी की निरन्तर सप्लाई से हो सकता था, परन्तु वह भी हमारे हाथ में नहीं था। जो भाई बहन धर्मशालाओं में रहे, उनका रहने का अच्छा प्रबन्ध था और जो लोग हनुमान रोड व तिमारपुर के क्वार्टर्स में रहे, उन्हें भी काफ़ी हद तक ठीक प्रबन्ध प्राप्त हुआ। वहाँ पर स्वच्छ पानी की सप्लाई में किसी प्रकार की कोई कमी नहीं थी। सरकारी अधिकारियों के बार-बार आश्वासन दिलाने के बावजूद भी गोल मार्किट, प्रगति विहार इत्यादि स्थानों पर कठिनाई महसूस की गई जिसका मुख्य कारण यह था कि ठेकेदार ने जमी हुई या उखड़ी हुई मिट्टी को वहाँ से नहीं हटाया था और वाटर पम्पिग सिस्टम (Water Pumping System) नया होने के कारण उसे सही रूप से चलाने में समय लग रहा था। इसका शायद एक कारण यह भी था कि किसी भी सरकारी या ग़ैर सरकारी कालोनी के सभी रहवासी एक ही समय पर नहीं जागते और न ही सब एक ही समय पर नहाते तथा खाना बनाते हैं। इसलिए यह सारा कार्य हमारी सन्तुष्टता मुताबिक नहीं हुआ। इस-

लिए हम यह नहीं कह सकते कि हमने अपने आने वाले प्रिय मेहमानों को पूरी सुविधा दी।

परन्तु, अगर आप हमारी सारी कठिनाइयों की ओर नज़र डालेंगे तो भी केवल दो या तीन बातों को छोड़कर सभी व्यवस्था सुचारु ढंग से हुई थी।

रेल-यात्रा में रियायत

रेल-यात्रा भाड़ा में आधी छूट (रियायत, Concession) कराना भी एक अत्यधिक मुश्किल कार्य था, क्योंकि हमारी संस्था को इस तरह की छूट पहले कभी नहीं मिली थी तथा रेल मन्त्री भी उन दिनों संसद सत्र (Parliament Session) होने के कारण अधिकतर उसी में व्यस्त रहते थे। दूसरे, इन रियायती फार्मों (Concession Forms) को ठीक समय पर विभिन्न शहरों में पहुँचाना तथा ट्रेन के डिब्बों को वापसी यात्रा के लिए रिज़र्व कराना कोई छोटा कार्य नहीं था। इस कार्य को करने के लिए बहुत धैर्य, शान्ति, उत्साह, उमंग एवं तीव्रता की आवश्यकता थी। जिन्होंने भी ये कार्य किये, उनको पूरा अनुभव है कि बाबा की सूक्ष्म मदद के बिना यह कार्य सम्पन्न नहीं हो सकता था।

विभिन्न सम्मेलनों का आयोजन

एक बड़ा कार्य सम्मेलनों के आयोजन से सम्बन्धित था। विभिन्न सम्मेलनों के लिए विषय निर्धारित करना और उसमें भाग लेने वाले वक्ताओं, अध्यक्षों, सम्मानित अतिथियों, मुख्य अतिथियों आदि का चयन करना भी कोई कम नहीं था यह सब निश्चित करने के लिए अनेकों व्यक्तियों से सम्पर्क करना पड़ता था ताकि सम्मेलन में भाग लेने वालों के पास समय भी हो और उस कार्यक्रम के प्रति उनकी रुचि भी हो। प्रतिदिन होने वाले दो या तीन सत्रों को विस्तृत रूप से विचार करना था तथा सारे कार्यक्रम को रोचक एवं शिक्षाप्रद बनाना था ताकि 'पवित्र बनो, राजयोगी बनो' अथवा 'बनो महान, करो कल्याण' का दिव्य सन्देश जन-जन तक पहुँच सके और लोगों को यह मालूम हो सके कि स्वयं परमपिता परमात्मा विश्व-कल्याण का कार्य कर रहे हैं।

ये सम्मेलन समाज के विभिन्न वर्गों के लिए आयोजित किये गए थे और इसलिए, विधि वेत्ताओं, चिकित्सकों, शिक्षाविदों, महिला संस्थाओं की अधिकारियों, पत्रकारों आदि से मिलने के साथ-साथ उन्हें सम्मेलन का सार, उसका उद्देश्य तथा उसके महत्त्व इत्यादि से भी परिचित कराना था। वक्तागण सिर्फ़ दिल्ली के नहीं थे बल्कि विदेशों व भारत के विभिन्न प्रान्तों से आने वाले थे, अतः उनका उपयुक्त रीति से स्वागत करना और हर कार्यक्रम में यथा सम्भव विभिन्नता को बनाए रखने का भी ध्यान रखना था।

इस कार्यक्रम से सम्बन्धित कई महीनों पहले ही कई कार्यक्रम किये गये। उदाहरण के लिए, चिकित्सकों के लिए एक-दो छोटे प्रोग्राम पहले ही किये गए। बच्चों के लिए वाद-विवाद प्रतियोगिता, शुभ वचन प्रतियोगिता तथा अन्य प्रतियोगिताएँ पहले से ही कई स्कूलों में आयोजित की गईं। विकलाँगों की संस्थाओं से भी पहले ही सम्पर्क किया गया और अन्तिम कार्यक्रम की सफ़लता के लिए उनकी संस्थाओं में पहले से ही कुछ कार्यक्रम किये गए।

प्रचार (Publicity)

जन-साधारण इस अन्तर्राष्ट्रीय प्रदर्शनी को अधिक-से-अधिक संख्या में देखे और सम्मेलनों में आकर लाभ उठायें, इस के लिए अधिक-से-अधिक प्रचार करने की आवश्यकता थी। लोगों को कार्यक्रम की सूचना तथा उसमें आने का निमन्त्रण देना था। इसके लिए बहुत बड़ी संख्या में बैनर्स, पोस्टर्स, स्टिकर्स आदि बनवाने थे और उन्हें सामाजिक स्थानों पर लगाया जाना था। सिनेमा हॉल में बैठे हुए हज़ारों लोगों को मेले की सूचना देने के लिए रंगीन स्लाइड्स का निर्माण किया गया। कुछ मुख्य चौराहों, सड़कों पर बड़े-बड़े होर्डिंग्स (hoardings) तथा विशाल द्वार (Gates) बनवा कर लगवाये गए ताकि जहाँ से प्रतिदिन निकलने वाले हज़ारों-लाखों

दिल्ली निवासी कार्यक्रम की सूचना प्राप्त कर सकें।

इसके लिए पोस्टर्स के लिए नई-नई किस्म के कलात्मक (artistic) डिज़ाइन बनाने थे, उन्हें अच्छी किस्म से छपवाना था, सैंकड़ों की संख्या में बैनर्स बनवाने के लिए स्टैन्सिल भी बनवाने थे और यह सब कार्य कम-से-कम खर्च में करना था।

प्रेस द्वारा प्रचार

प्रेस प्रचार का कार्य कोई कम महत्त्वपूर्ण नहीं था। इसके लिए प्रेस वालों के साथ अच्छा सम्बन्ध बनाये रखना, प्रेस-नोट व समाचारों की रूप-रेखा तैयार करना, तथा प्रेस-सम्मेलन का आयोजन भी करना था। साथ ही लेख व 'सम्पादक के नाम पत्र' भी छपवाने थे ताकि अधिक-से-अधिक लोगों को यह मालूम हो सके कि किस प्रकार का कार्यक्रम होने जा रहा है।

देहली से कई साप्ताहिक एवं मासिक पत्रिकायें प्रकाशित होती हैं। उनसे भी सम्पर्क किया गया ताकि उनमें भी सूचना छप सके। दादी जी के साथ कुछेक प्रेस-इन्टरव्यू का भी आयोजन किया गया। अंग्रेज़ी, हिन्दी तथा क्षेत्रीय भाषाओं के समाचार पत्रों का सहयोग लेने की हर सम्भव कोशिश की गई। इसके लिए मुख्य सम्पादकों, सम्पादकों, मुख्य संवाददाताओं, संवाददाताओं, व्यवस्थापकों, समाचार पत्रों के मालिकों (Proprietors) तथा प्रेस एवं समाचार एजेन्सियों से सम्बन्धित व्यक्तियों से बार-बार मिलना हुआ।

रेडियो व दूरदर्शन द्वारा प्रसार

रेडियो तथा दूरदर्शन द्वारा प्रसार कराना भी इसी प्रकार का ही एक और कार्य था। इनसे सम्बन्धित व्यक्तियों को कार्यक्रम की रूपरेखा आयोजकों के अन्तर्राष्ट्रीय स्तर, कार्यक्रम के उद्देश्य एवं दूरदर्शन के लिए उपयुक्त इसकी बहुरंगी विभिन्नताओं से पहले से ही अवगत कराना था ताकि इसे ऑल इण्डिया रेडियो से तथा दूरदर्शन से प्रसारित किया जाये। इसके लिए न केवल भारत के रेडियो तथा दूरदर्शन अधिकारियों से बल्कि साथ-साथ विदेशी दूरदर्शन कारपोरेशन के प्रतिनिधियों से लगातार सम्बन्ध बनाए रखना होता था।

महिला कार्यक्रम, युवा कार्यक्रम तथा अन्य महत्त्वपूर्ण कार्यक्रमों से सम्बन्धित अधिकारियों की भी सेवा की गई ताकि महोत्सव के सभी कार्यक्रमों को अधिक-से-अधिक प्रदर्शन इन साधनों द्वारा किया जा सके।

निमन्त्रण पत्र, पर्चे फोल्डर्स आदि की छपाई

जन-जन को कार्यक्रम की सूचना देने व उसमें आने का निमन्त्रण देने का एक अन्य साधन था—निमन्त्रण पत्र, पर्चे, कार्ड्स, फोल्डर्स इत्यादि छपवाना तथा उनका वितरण करना।

फोल्डर्स तथा पर्चे बहुत अधिक संख्या में छपवाये गये। लोगों तक ये उचित समय पर पहुँच सकें, इसके लिए बहुत तीव्रता तथा फुर्ती से कार्य करने की आवश्यकता थी।

जैसे-जैसे दस-सूत्रीय कार्यक्रम को व्यवहार में लाते गए। उसी अनुसार विभिन्न प्रकार के फोल्डर्स छपवाये जाने थे।

इसके साथ-साथ संस्था का वार्षिक सेवा-समाचार, संस्था का परिचय, ब्रह्मा बाबा के दिव्य कर्त्तव्यों की झलक व उनकी संक्षिप्त जीवन-कहानी, कार्यक्रम की विस्तृत रूपरेखा, पाकिट केलेन्डर्स, छोटी-छोटी डायरियाँ एवं इस तरह की अनेक चीज़ें एवं छोटी-छोटी पुस्तिकायें वितरण करने के लिए छपवाई जानी थीं।

योग-शिविर के लिए फ़ार्मस, योग-शिविर में दिये जाने वाले विषयों का संक्षिप्त विवरण, लेटर हैडस (Letter Heads) लिखने के लिए छोटे-छोटे पैड्स (Writing Pads), फाइलें आदि उचित मात्रा में छपवाना भी एक बड़ा कार्य था।

इसके अलावा, कई पुस्तकें जो स्टॉक में नहीं थी, उन्हें दोबारा छपवाना था ताकि महोत्सव के अवसर पर ये उपलब्ध हो सकें।

बस-यातायात व्यवस्था

यातायात के साधनों की व्यवस्था करना भी एक अन्य महत्त्वपूर्ण कार्य था। महोत्सव में भाग लेने वाले लगभग १०,००० भाई-बहनों को उनके रहने के स्थान से लाने व वापस ले जाने के लिए सुविधाजनक व्यवस्था की आवश्यकता थी तथा दुर्घटनाओं से बचाव और आकस्मिक देरी के निराकरण का ध्यान भी रखना होता था। इन दिनों में जबकि भारत के विभिन्न प्रान्तों तथा विदेशों से आये हुए पर्यटक (Tourists) तथा शादी वाले लोग बसों को पहले से ही बुक करा लेते हैं, ऐसे समय में इतनी अधिक बसों को उचित दर पर प्राप्त करना एक कठिन कार्य था और वो भी तब जबकि उन्हीं दिनों में पेट्रोल व डीज़ल की कीमत में वृद्धि हो गई थी।

साथ-ही-साथ बसों को दिन-रात कार्यरत रखने के लिए बस चालकों एवं कन्डकटरों के हार्दिक सहयोग की प्राप्ति करना एक मास्टर दिमाग़ का कार्य था। इन बसों को रहने के स्थान से महोत्सव के स्थान पर लाने व ले जाने के साथ-साथ नई दिल्ली एवं पुरानी दिल्ली रेलवे स्टेशन से महोत्सव में भाग लेने वाले प्रतिनिधियों को लाने तथा वापसी में छोड़कर आने का कार्य भी सौंपा गया था। इन बसों में लगे बैनर्स महोत्सव की सूचना देने का एक सुन्दर आधार बना।

भोजन व्यवस्था

एक अत्यधिक कठिन कार्य था –खाद्य सामग्री की व्यवस्था जिसमें शामिल है गेहूँ, चावल, चना, बेसन, मसाले, सब्ज़ियाँ, दूध, चीनी, कोयला, मिट्टी का तेल, वनस्पति घी आदि पदार्थों के लिए परमिट प्राप्त करना तथा छोटे-बड़े अनेक बर्तनों की व्यवस्था करना। विभिन्न स्थानों पर रहे हुए प्रतिनिधियों को प्रतिदिन कई वस्तुएँ पहुँचाना भी एक बहुत बड़ा कार्य था जिसके लिए एक छोटी परन्तु अथक परिश्रमी भाइयों की एक टीम बनाई गई। अनाज को साफ़ करना, गेहूँ पिसवाना, दालें, मसाले आदि साफ़ करना तथा प्रतिदिन की सब्ज़ियाँ खरीदना आदि सचमुच एक बड़ा कार्य था जो बहुत ही सुन्दर ढंग से व सक्षमता से किया गया। लेकिन कुछ अधिक दूर के स्थानों पर कुछ दिक्कत महसूस हुई। वैसे तो जहाँ-जहाँ क्वार्टर्स में सैंकड़ों प्रतिनिधि ठहरे हुए थे, वहाँ टेलीफ़ोन व्यवस्था भी की गई थी और कुछ ऐसे भाई-बहनों को भी वहाँ नियुक्त किया गया था जो हर चीज़ की ठीक से सम्भाल करें परन्तु फिर भी कहीं अत्यधिक दूरी और कुछ कार्य की अधिकता के कारण, सेवाओं में कुछ कमी महसूस हुई। इस कार्य में कुछ कठिनाई महसूस होने का एक कारण यह भी था कि रेलवे रिज़र्वेशन निर्धारित तिथि पर न मिलने के कारण लगभग ४०० भाई-बहन निश्चित समय से पहले ही पहुँच गये और अचानक ही बाहर से आने वाले प्रतिनिधियों की संख्या भी बढ़ गई।

सांस्कृतिक कार्यक्रम और प्रकाश एवं ध्वनि कार्यक्रम

लगभग हर कार्य में कुछ-न-कुछ प्रेरणादायक तथा आत्म-उत्थान से सम्बन्धित गीत, आत्मिक जागृति लाने वाले नृत्य, फ़रिश्ता नृत्य (Angelic dance) और कुछ दूसरे प्रकार के छोटे-बड़े आइटम थे। उपरोक्त के अलावा लगभग प्रतिदिन, साँय को एक ड्रामा भी दिखाया जाता था। इन कार्यक्रमों की इतनी विभिन्नता थी कि अगर किसी ने इन विषयों की बनी लम्बी सूची को देखा हो तब वह अवश्य ही इनकी गहराई व मूल्य का अन्दाज़ा लगाएगा। अन्तर्राष्ट्रीय कार्यक्रम में मंच पर इन आइटम्स को दिखाने के लिए बहुत तैयारी की आवश्यकता होती है। इनका स्क्रिप्ट तैयार करना, रिहर्सल करना, निर्देशन करना, हर कदम पर मेहनत की आवश्यकता होती है। नन्हे-नन्हे, नये कलाकारों की कला को देखकर मनुष्य आश्चर्यचकित रह जाता था। और हो भी क्यों न, ये कलाकार कोई व्यवसायिक कलाकार नहीं थे और न ही इन्हें किसी व्यवसायिक और माहिर निर्देशक द्वारा निर्देशन ही मिला था। परमात्मा पिता का सन्देश पहुँचाने की उमंग में, आत्मा को खुशी प्रदान करने वाले इस माध्यम में उन्होंने सही वस्त्रों का चुनाव किया था, आवश्यक सौन्दर्य-

प्रसाधनों का इस्तेमाल किया था और संगीत के माध्यम को सही रीति इस्तेमाल करते हुए बहुत अच्छी तरह से पार्ट अदा किया था। लेकिन इन नन्हे कलाकारों के ग्रुप्स को निमन्त्रण देना, मंच पर उन्हें सर्व आधुनिक सुविधायें देना तथा उनके आइटमस को सारे कार्यक्रम में निश्चित समय पर करवाना भी एक महत्त्वपूर्ण कार्य था।

प्रकाश एवं ध्वनि कार्यक्रम के लिए भी ऐसा ही कहा जा सकता है। सुचारु रूप से इसे पेश करने के लिए इसकी रूपरेखा व स्क्रिप्ट तैयार करने, कलाकारों व निर्देशकों को संगठित करने में उन भाई-बहनों का बहुत समय लगा जिन्होंने इस कार्यक्रम को करवाने की ज़िम्मेवारी ली थी।

मंच व्यवस्था

सभी की आँखें मंच पर केन्द्रित होती हैं। इसलिए किसी भी सार्वजनिक सभा में मंच की व्यवस्था करना भी एक अति महत्त्वपूर्ण कार्य होता है। मंच पर लगे पर्दे, ताज़गी से भरपूर और लुभावना दृश्य उपस्थित करने के लिए फूलों द्वारा सजावट, भिन्न-भिन्न भाषाओं में व्याख्या देने वालों की व्यवस्था तथा अन्य इस तरह की कई चीज़ों पर बहुत ध्यान देने की आवश्यकता होती है। आये हुए अतिथि वक्ताओं का स्वागत करना, सभी वक्ताओं के नामों की प्लेटें तैयार करना, ध्वनि और प्रकाश के माध्यमों को आवश्यकतानुसार सही रीति इस्तेमाल करना तथा अन्य इस तरह के कई कार्यों में भी चुस्ती, फुर्ती व होशियारी की आवश्यकता होती है।

सुरक्षा व्यवस्था

लाल किला मैदान बहुत विशाल मैदान है और सभी कार्यक्रमों के लिए वहाँ जितने भी मण्डप, पण्डाल इत्यादि बनाये गये थे, वे सभी कपड़े तथा अन्य ऐसी चीज़ों से बने हुए थे जिनमें आग लगने अथवा जिनकी चोरी हो जाने का ख़तरा था। चूंकि वहाँ काफ़ी संख्या में लोग इकट्ठे होते थे, वहाँ जेब-कतरों का भी ख़तरा हो सकता था। इन तथा ऐसे दूसरे ख़तरों से सावधान रहने के लिए अथवा बचने के लिए सुव्यवस्था करनी थी और वह भी विशेषकर इस क्षेत्र में, क्योंकि यह क्षेत्र इस तरह की घटनाओं में बदनाम है।

इसके अलावा, जिन क्वार्टर्स में हमारे विभिन्न स्थानों से आये हुए प्रतिनिधि ठहरे हुए थे, वे जब सम्मेलन अथवा मेला-स्थल पर आ जाते तब भी वे क्वार्टर्स अकेले हो जाने के कारण वहाँ सुरक्षा व्यवस्था की ज़रूरत थी ताकि कुछ ऐसी अनहोनी घटना न घट जाए।

अपराधियों को काबू करने व उन पर नज़र रखने के लिए चतुराई बल की आवश्यकता थी और सुरक्षा कमेटी ने यह कार्य बड़ी होशियारी से किया।

चित्रों तथा माडल्स की तैयारी

विभिन्न मण्डपों के लिए चित्रों व मॉडल्स का निर्माण करना एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण कार्य था। कई-कई दिन तक लगातार बिन मौसम बरसात हो जाती जिससे मिट्टी (Clay) से बने मॉडल्स को सूखने में समय लग जाता था। और फिर चित्रों व मॉडल्स की संख्या भी तो कम नहीं थी। विदेशों से आये हुए भाई-बहन कुछ चित्र व मॉडल्स आदि तो वहाँ से ही बनाकर ले आये थे परन्तु कुछ कार्य अभी भी ऐसे बाकी थे जिनमें अभी कुछ-न-कुछ करने को रहता था। वर्षा ने उनके कार्य में भी विघ्न डाला। जब प्रदर्शनी लगाई जा रही थी, उन दो दिनों में कभी रात को, कभी बहुत सवेरे ३-४ बार वर्षा होती रही। फिर भी सब अच्छा ही हुआ और चित्रों व मॉडल्स को कोई विशेष नुकसान नहीं पहुँचा जबकि मण्डपों की छतें रेन-प्रूफ (Rain Proof) से ढकी हुई नहीं थी।

राजयोग शिविर और ज्ञान शिविर

महोत्सव का एक मुख्य अंग थे - राजयोग शिविर। अतः उनके संचालन के लिए सही व्यवस्था करने की आवश्यकता थी। इसके लिए हमें कुशल व प्रवीण राजयोग शिक्षिकाओं की तथा इस महत्त्वपूर्ण कार्य में निपुण कार्यकर्त्ताओं की भी आवश्यकता थी।

अन्तर्राष्ट्रीय प्रदर्शनी के लिए मार्गदर्शक

इसी प्रकार विभिन्न मण्डपों में लगे हुए भिन्न-भिन्न चित्रों तथा मॉडल्स में छिपे हुए गूढ़ रहस्यों को समझाने वाले ज्ञान-युक्त तथा योग-युक्त बहनों व भाइयों की ज़रूरत थी जो प्रदर्शनी देखने आने वालों की आध्यात्मिक सेवा कर सकें।

सफ़ाई की व्यवस्था

महोत्सव स्थल व प्रतिनिधियों के आवास-स्थल पर ठीक प्रकार से सफ़ाई आदि कराने के प्रबन्ध की आवश्यकता थी क्योंकि गन्दे वातावरण में पवित्रता का सन्देश नहीं दिया जा सकता।

फ़ोटोग्राफ़ी व अन्य किस्म की रिकार्डिंग

विभिन्न कार्यक्रमों की फ़ोटोज़ लेना या फ़िल्म बनाना, विडियो के लिए उन कार्यक्रमों को रिकॉर्ड करना, प्रेस वालों को कार्यक्रमों की फोटोज़ पहुँचाना भी एक महत्त्वपूर्ण कार्य था जिसे भी बड़ी तीव्रता व श्रेष्ठ ढंग से करना था।

बिजली की व्यवस्था

क्वार्टर्स जहाँ देश-विदेश से आये हुए प्रतिनिधि ठहरे हुए थे, क्वार्टर्स के नज़दीक ही जो शामियाने लगाए हुए थे तथा महोत्सव स्थल अर्थात् लाल किला मैदान, इन सभी स्थानों पर बिजली की व्यवस्था भी करनी थी और इस बात का विशेष ख़्याल रखना होता था कि कहीं कोई किसी भी प्रकार की—शोर्ट सरकिट (Short Circuit), लीकेज (Leakage) ब्रेक डाउन (break down) दुर्घटना न घट जाए।

बैज, पहचान पत्र, रजिस्टर आदि छपवाना

वक्ताओं के लिए बैज भी बनवाये जाने थे, भिन्न-भिन्न क्षेत्रों से आने वाले १०,००० प्रतिनिधियों के लिए उनके क्षेत्र (Zone) के अलग-अलग पहचान-पत्र (Identification Cards) भी छपवाने थे व उन्हें पहुँचाने थे और आये हुए प्रतिनिधियों के नाम व पतों का रिकार्ड रखने के लिए रजिस्टर भी छपवाये जाने थे।

पत्राचार, टंकण (Typing), रिकार्ड रखना आदि

पत्राचार, टाइप तथा फाइलें आदि तैयार करने का भी एक बड़ा काम था। चूंकि बहुत-से विषयों से सम्बन्धित पत्र-व्यवहार होता था, इसलिए बहुत-सी फ़ाइलें खोलने व उनका रिकार्ड रखने की आवश्यकता होती थी। कई भाई-बहनों ने इसमें मदद की।

भोजन व प्रसाद बनाना

जो भाई-बहन लाल किला मैदान पर ठहरते थे या काम करते थे, और जो विभिन्न सेवाओं के लिए २४ फ़रवरी से पहले ही आ गये थे, उनके लिए भोजन, चाय, प्रसाद अथवा टोली बनाने की भी एक सेवा थी जिसमें कुछ भाई और बहन स्वेच्छा से लगे हुए थे।

साहित्य व सेवा के कुछ अन्य साधन

महोत्सव स्थल पर साहित्य मंडप की सही व्यवस्था करना व कुछ प्लास्टिक की चीज़ें जैसे शिव-बाबा का स्मरण चिह्न हर वक्त तैयार रखना; यह भी एक ऐसा कार्य था जिसके लिए काफ़ी समय दिया गया।

फ़र्स्ट एड

महोत्सव स्थल पर यदि किसी को कोई चोट आदि लग जाए तो उसके लिए एक फ़र्स्ट एड मंडप की भी आवश्यकता थी ताकि फ़ौरन मरहम पट्टी आदि की जा सके।

आय-व्यय तथा हिसाब-किताब

लगभग प्रतिदिन आय-व्यय का कार्य चलता था और इसलिए सही रूप से हिसाब रखना होता था। यह ध्यान रखा जाता था कि कम ख़र्च हो परन्तु कंजूसी न हो। इस बात का भी विचार करना होता था कि भाई-बहनों का उमंग भी बना रहे, जिस चीज़ को हम ख़रीदने जा रहे हैं वह कितनी महत्त्वपूर्ण है, कार्य कितना बड़ा है, इस प्रकार उस कार्य के महत्त्व

को समझते हुए उतना ख़र्च करना होता था ताकि कार्य का स्तर व क्वालिटी ठीक बनी रहे परन्तु कई बार तो किसी सौदे में लेन-देन भी करना पड़ता था जिससे हम उचित दामों में उसे प्राप्त कर सकें।

अन्य कार्य

वास्तव में, उपरोक्त वर्णित कार्यों के अलावा अन्य कार्य भी थे। उदाहरण के तौर पर, अतिथि-वक्ताओं को सौगात देने के लिए साहित्य के पैकेट तैयार करना, जन-सम्बन्धी कार्य को देखना, दर्शकों के विचारों को लिखवाना, मंडपों व झाँकियों के निर्माण के लिए लकड़ी, कपड़ा, ईंटें तथा अन्य इस तरह का सामान प्रदान करना, सिलाई-कटाई, साइन बोर्ड लिखना आदि उनमें से कुछेक हैं।

महोत्सव की समाप्ति के बाद सारे सामान को समेटना भी एक विशाल पैमाने का कार्य था। ट्रकों की व्यवस्था करना, चीज़ों को उखाड़ना उन्हें ठीक से पैक करना और उन्हें दिल्ली तथा दिल्ली से बाहर दूर-दूर सुरक्षित ढंग से पहुँचाना—इन सब में पूरी देखभाल तथा कठिन परिश्रम की आवश्यकता थी।

सबने परमात्मा का निमित्त साधन बन कार्य किया

संक्षेप में, यही कहना ठीक होगा कि कोई भी बहन या भाई ऐसा नहीं था जिसने कुछ भी काम न किया हो। अपनी-अपनी सामर्थ्य व इच्छा के अनुसार सभी ने अपनी ओर से अच्छा ही कार्य किया। किसी ने तन से मदद की, किसी ने मन से व किसी ने धन से और किसी ने तीनों ही तरीकों से सहयोग दिया। किसी को किसी स्थान पर बस खड़ा होने का ही कार्य दिया गया था परन्तु यह ठीक ही कहा गया है 'जो खड़े होते हैं, इन्तज़ार करते हैं, वे भी सेवा करते हैं' (They also serve who stand and wait), यह एक सामूहिक रूप से किया गया कार्य था। अगर कोई किसी विभाग का मुखिया होता, कई भाई बहन उसके सहयोगी बनते। वे सब परमात्मा द्वारा नियुक्त किये गए सेवा के माध्यम थे। हर व्यक्ति इस मशीनरी का महत्त्वपूर्ण अंग था। हमें नहीं मालूम कि कौन किसका धन्यवाद करे?

इस कार्य की सुन्दरता तो यह है कि सभी का एक विचार था, एक उद्देश्य था, एक ही मंज़िल थी। वे विश्व के कोने-कोने से आये थे, यात्रा के ख़र्च व कठिनाइयों को भी उन्होंने झेला था, सिर्फ़ इसलिए कि वे शिव बाबा के ध्वज को ऐतिहासिक लाल किला मैदान पर फहराना चाहते थे और अपने शुभ संकल्प को और अधिक दृढ़ करना चाहते थे कि वे भारत तथा विश्व से माया (५ विकार) को निकालने के लिए अथक पुरुषार्थ करेंगे ताकि यह संसार दिव्य, नैतिकता पूर्ण और शान्तमय बन जाये। प्राचीन अथवा आधुनिक इतिहास में कोई ऐसी घटना का वर्णन नहीं है जिसमें इतने सारे लोग ऐसे श्रेष्ठ लक्ष्य को लेकर एक स्थान पर एकत्रित हो जायें। हमने कई जलूस, सम्मेलन, रैलियाँ देखी हैं जो किसी राजनीतिक नेता या किसी धार्मिक गुरु के सम्मान में की गई हैं परन्तु एक निराकार परमपिता परमात्मा में विश्वास रखने वाले इतने योगी, योगिन, ब्रह्मचारी, ब्रह्माचारिणियों का इतना विशाल जन-समूह कभी नहीं देखा जिनका केवल एक ही ध्येय है कि हम माया तथा इसके सिपाहियों को हमेशा-हमेशा के लिए विश्व से निकालकर विश्व को स्वर्ग बना देंगे।

दूर-दूर से इतने बहनें और भाई आये, इकट्ठे रहे, शिव बाबा की महिमा सुनते उसके कार्य में तत्पर रहे और इस तरह एक-दूसरे के नज़दीक आये। यहाँ मनों का मिलन था, विचारों की एकरूपता थी, आपसी सहयोग से कार्य करते थे, एक-दूसरे की मदद करते थे, और इस श्रेष्ठ लक्ष्य की पूर्ति के लिए कठिनाइयों को भी इकट्ठे ही झेलते थे।

ऐसे कार्यक्रम, जो शिव बाबा की मदद से व प्रेरणा से होते हैं, जो हज़ारों-लाखों-करोड़ों आत्माओं को शिव बाबा से वरदान लेने के हकदार बनाने की शुभ भावना को लेकर किये जाते हैं, मनुष्य की ज़िन्दगी में कभी-कभी ही होते हैं। ये सेवा के तीर्थ-स्थल हैं, ये शिव बाबा की शिक्षाओं को व्यवहार में लाने के रिहर्सल-स्थल भी होते हैं। जिन्होंने हृदय की गहराइयों से इसमें भाग लिया, वे अत्यन्त भाग्यशाली हैं और वे भी भाग्यशाली आत्मायें हैं जिन्होंने इस से कुछ लाभ लिया, कुछ प्रेरणा ली।

विश्व-कल्याण महोत्सव—उद्घाटन समारोह

दिल्ली, लाल किला मैदान में २४ फ़रवरी से ५ मार्च, १९८१ तक आयोजित विश्व-कल्याण महोत्सव अनेक बातों में अद्भुत एवं अद्वितीय था। यह महोत्सव अनेक आकर्षक कार्यक्रमों जैसे कि प्रदर्शनी, झाँकियाँ, शोभा यात्रा, सम्मेलन, साँस्कृतिक कार्यक्रम, प्रकाश एवं ध्वनि कार्यक्रम, राजयोग शिविर इत्यादि का मिश्रण था और इसमें लेशमात्र भी व्यापारिक झलक नहीं थी। न केवल हर कार्यक्रम में प्रवेश निःशुल्क था लेकिन वहाँ कोई खाने-पीने की दुकानें, झूले या व्यापारिक गति-विधि भी नहीं थी। एक बार महोत्सव की चार दीवारी में प्रवेश करने पर, वह अपने को बिल्कुल अलग किस्म की दुनिया में महसूस करता जहाँ आत्मा को एक अजीब-सी खुशी और दिव्य शान्ति की अनुभूति होती और वह और अधिक देखे बिना, सुने बिना और पवित्रता के वातावरण में अधिक समय ठहरे बिना न रह पाता। जो लोग महोत्सव-स्थल पर नहीं गये थे, उन्हें यह विश्वास करने में कठिनाई महसूस हो रही थी कि वहाँ का वातावरण इतने आध्यात्मिक आनन्द व रूहानी स्नेह से परिपूर्ण था और कि सारा कार्यक्रम इतने विशाल स्तर पर परन्तु इतना शान्तिपूर्ण एवं व्यवस्थित ढंग से हुआ कि आत्मा दिव्यता के भावों से भरपूर महसूस करती थी और मन चाहता था कि वहाँ पर बार-बार आया जाये।

निश्चित समय पर कार्यक्रम सम्पन्न हुआ

मैदान में निर्माण का कार्य १५ फ़रवरी से शुरू होना था क्योंकि उसी तारीख से किराये पर लिया गया था लेकिन कुछ अत्याज्य परिस्थितियों के कारण मंडपों का निर्माण कार्य १९ फ़रवरी की दोपहर से पहले शुरू नहीं हो सका। मण्डपों के ढाँचे २१ फ़रवरी को बनकर तैयार हो गये तब ब्रह्माकुमारी एवं ब्रह्माकुमार बहन-भाइयों ने अपने-अपने मण्डपों में चित्रों व मॉडल्स को निश्चित स्थानों पर रखना शुरू किया। उन्होंने इतनी तीव्र गति से व अथक होकर यह कार्य किया कि सारा कार्य ३ दिन के निश्चित समय में समाप्त हो गया। जबकि कितना लकड़ी का काम निश्चित किये गये मापानुसार होना था। उदाहरण के तौर पर महाराष्ट्र मण्डप, दिल्ली मण्डप, कर्नाटक अथवा बंगाल के मण्डप को लीजिए। चित्रों और मॉडल्स को मापानुसार निश्चित स्थान पर रखा जाना था क्योंकि यह सब पूर्व योजना-बद्ध था। बिजली की फिटिंग होनी थी। मण्डपों के अन्दर व बाहर की सजावट का कार्य पूरा होना था। इन सब बातों को ध्यान में रखते हुए संगठन के बल पर सब कार्य समय पर समाप्त हो गया। हर ज़ोन के भाई-बहनों ने इतनी लग्न तथा तन्मयता से कार्य किया कि तिरुमलाई तिरुपति देवास्थानम् के संग्रहालय के अधिकारी, जो कि तिरुपति देवस्थानम् की ओर से बनाये गए स्टॉल की रेख-देख करने के लिए वहाँ आये थे, ने कहा : "अब मैंने स्वयं अपनी आँखों से इनकी अद्वितीय तन्मयता व श्रद्धा की उमंग को देखा है। किसी भी व्यवसाय का हो या किसी भी पद पर हो, हरेक इस ईश्वरीय परिवार का सदस्य होने के नाते उमंग उत्साह से कार्य में तत्पर दिखाई देता था।" कुछ सरकारी अधिकारियों और कुछ धार्मिक संस्थाओं के प्रशासन अधिकारियों, जिन्हें प्रशासन-सम्बन्धी कार्यों का अनुभव है, ने कहा : "स्नेह, सहयोग व अर्पणमयता की भावना के बिना इतना विशाल कार्य इतने थोड़े से समय में और इतने कम खर्च में होना असम्भव था और वह भी उन भाइयों और बहनों द्वारा जो व्यवसायिक दृष्टिकोण से इस तरह के कार्यों में निपुण न हों।" जिसने भी इन तीन दिनों के अन्दर यह इतना विशाल निर्माण कार्य होता

हुआ देखा, उसने यही अनुभव किया कि इन बहनों और भाइयों ने दिन और रात एक करके जो यह कार्य किया, वह परमात्मा के प्रति अगाध प्रेम के आधार पर ही किया।

इस तरह अन्तर्राष्ट्रीय प्रदर्शनी प्रैस वालों को पहले ही से दिखाने के लिए (Press Preview) २४ फ़रवरी की प्रातः को ही तैयार हो गई। इसके अतिरिक्त एक विशाल पण्डाल, प्रकाश एवम् ध्वनि कार्यक्रम के लिए मंच तथा राजयोग शिविरों के लिए स्थान २४ फ़रवरी की सायं तक तैयार हो गये।

इसी बीच अनेक देशों एवं भारत के विभिन्न प्रान्तों के कई प्रतिनिधि, वक्तागण, दर्शक, ब्रह्माकुमारी बहनें व ब्रह्माकुमार भाई पहुँच चुके थे और महोत्सव के उद्घाटन समारोह के लिए पण्डाल में पधार चुके थे। हर चेहरे पर खुशी की झलक थी और हर आत्मा को अपने परमप्रिय परमपिता परमात्मा, एक निराकार शिवबाबा को प्रत्यक्ष करने की लग्न लगी हुई थी क्योंकि वही प्यारा पिता तो मनुष्यात्माओं को पवित्रता, शान्ति, दिव्यता, आनन्द का वरदान दे रहे हैं और उन्होंने ही विश्व के परिवर्तन के कार्य को बड़ी तीव्र गति से आरम्भ कर दिया है। राज्य सभा के उपाध्यक्ष भ्राता श्यामलाल यादव जी ने मेले का उद्घाटन किया। ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय की मुख्य प्रशासिका ब्रह्माकुमारी दादी प्रकाशमणि जो ने ध्वजारोहण किया। इस महोत्सव की मुख्य आयोजिका ब्रह्माकुमारी हृदयमोहिनी जी ने शक्तियों के मण्डप का अनावरण मोमबत्तियाँ जलाकर किया। संयुक्त राष्ट्र संघ के ग़ैर सरकारी संस्थाओं की प्रधान मैडम सैली स्विग शैली ने अन्तर्राष्ट्रीय मण्डप का उद्घाटन टेप काटकर किया। फिर ये सभी तथा अन्य आदरणीय अतिथिगण तथा मुख्य ब्रह्माकुमारी बहनें व ब्रह्माकुमार भाई उद्घाटन समारोह के लिए पण्डाल में पधारे।

उद्घाटन समारोह

चण्डीगढ़ से आये हुए ब्रह्माकुमार अमीरचन्द जी ने मंच सचिव बन कार्यक्रम का संचालन किया। कार्यक्रम का शुभारम्भ लन्दन से आये हुए दो ब्रह्माकुमार भाइयों ने एक दिव्य गीत गाकर किया। तत्पश्चात् आगरा से आई हुई एक छोटी बच्ची ब्रह्माकुमारी अर्चना ने स्वागत नृत्य प्रस्तुत किया।

फिर, दिल्ली विद्युत प्रदाय संस्थान के चीफ़ कर्मशियल आफ़िसर (Chief Commercial Officer) तथा एक अनुभवी राजयोगी, ब्रह्माकुमार राजकुमार मित्तल से प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय का संक्षिप्त परिचय देने के लिए अनुरोध किया गया। उन्होंने कहा कि यह एक विश्व-व्यापी संस्था है जो दृढ़ नियमों पर आधारित सहज राजयोग की शिक्षा देने तथा नैतिक मूल्यों की पुनर्स्थापना के कार्य में तत्पर है ताकि विश्व में फैली हुई बुराइयों तथा बढ़ते हुए तनाव को खत्म किया जा सके और एक विश्व-बन्धुत्व की भावना पर आधारित सम्पूर्ण पवित्रता, सुख और शान्ति सम्पन्न युग की स्थापना की जा सके। उन्होंने कहा कि इस संस्था की स्थापना हैदराबाद सिन्ध (वर्तमान समय जो पाकिस्तान में है) में सन् १९३७ में हुई, सन् १९५० में यह भारत में स्थानान्तरित हुई और आज इसके पूरे विश्व में ६५० से भी अधिक सेवाकेन्द्र हैं और इस संस्था का अन्तर्राष्ट्रीय मुख्यालय माऊण्ट आबू, राजस्थान में है। संस्था की मुख्य विशेषतायें बताते हुए उन्होंने कहा कि हज़ारों की संख्या में स्त्रियाँ, पुरुष तथा बच्चे प्रतिदिन राजयोग का अभ्यास कर रहे हैं और यह विशेष ध्यान देने योग्य बात है कि जो आध्यात्मिक अनुशासन वे अपने जीवन में पालन कर रहे हैं, वह बहुत ऊँचे स्तर का है जिसके कारण उस अनुशासन बद्ध हर व्यक्ति का जीवन निश्चित रूप से उन्नत और दिव्य होता जाएगा।

महोत्सव का उद्देश्य एवं लक्ष्य

अगली वक्ता देहरादून से पधारी हुई ब्रह्माकुमारी प्रेम बहन थीं। विश्व-कल्याण महोत्सव के उद्देश्य एवं लक्ष्य को स्पष्ट करते हुए उन्होंने कहा कि इस महोत्सव का आयोजन लोगों को व्यक्तिगत तथा विश्व-कल्याण के लिए सहज व विश्वसनीय ढंग

की मार्ग-प्रदर्शना देने के लिए किया गया है जिसका आधार हमारे जीवन तथा कर्मों में आध्यात्मिकता का पुट होना है। उन्होंने कहा कि वर्तमान युग कोरी भौतिकवादिता का प्रतीक है जहाँ राजनीति, व्यापार तथा हर व्यक्ति के जीवन से नैतिक मूल्य खत्म होते जा रहे हैं और यही, उन्होंने कहा, सर्व दुःखों का मूल कारण है।

लाल किला मैदान में आयोजित विश्व-कल्याण प्रदर्शनी की ओर ध्यान खिचवाते हुए उन्होंने बताया कि किस प्रकार विभिन्न मण्डपों में विभिन्न युगों में मानव तथा समाज की स्थितियों का वर्णन किया गया है और रंगों व मिट्टी की सहायता से इस सत्य को स्पष्ट किया गया है कि आदि काल में विश्व दिव्यगुणों का स्वरूप था और उस सतयुगी तथा त्रेता-युगी दुनिया में दुःख, अशान्ति का नाम-मात्र भी न था, आत्मा तथा प्रकृति के तत्त्वों में पूर्ण तालमेल था तथा प्रकृति के पाँचों तत्व भी सतोप्रधान थे। परन्तु समय ने पलटा खाया और सामाजिक घटनाओं तथा स्थिति तीव्रता से गिरावट की ओर अग्रसर होते-होते वर्तमान दुःखदायी स्थिति तक पहुँच गई। दिव्यगुणों का स्थान विकारों ने ले लिया। आज मानव में विकारों की अग्नि तेज़ी से भड़क रही है और विश्व में अव्यवस्था तथा उपद्रव हो गया है। किसी भी व्यक्ति में इस विश्व को परिवर्तित करने की सामर्थ्य नहीं है। केवल विश्व-पिता परमात्मा ही इस सृष्टि का उत्थान कर सकते हैं और यह सभी के लिए खुश-खबरी है कि उन्होंने विश्व-नव-निर्माण का कार्य प्रारम्भ कर दिया है। इस महोत्सव को आयोजित करने का यही प्रयोजन है कि समस्त मानव जाति को वर्तमान समय विश्व-कल्याण के लिए किये जा रहे परमात्मा के दिव्य कर्त्तव्यों का संदेश दिया जा सके ताकि कोई भी व्यक्ति अपने कल्याण करने के लिए इससे मार्ग-प्रदर्शना तथा प्रेरणा प्राप्त कर सके।

'दुःखों का कारण मनुष्य के बुरे कर्म ही हैं' : श्यामलाल यादव

अगले वक्ता उस दिवस के मुख्य अतिथि, राज्य सभा के उपाध्यक्ष, भ्राता श्यामलाल यादव जी थे। इससे पूर्व वे अन्तर्राष्ट्रीय प्रदर्शनी के सभी मण्डपों को देख चुके थे और विभिन्न मण्डपों में लगे चित्रों व मॉडल्स की संक्षिप्त व्याख्या उन्हें दी जा चुकी थी। अपने विचार व्यक्त करते हुए उन्होंने कहा : "इस संस्था द्वारा आध्यात्मिक महत्व का एक बहुत महान कार्य किया जा रहा है और प्रदर्शनी को देखकर मुझे अति हर्ष हुआ है।" उन्होंने कहा कि नैतिक और आध्यात्मिक जागृति एवं कल्याण आज के समय की माँग हैं और वास्तव में वर्तमान सभी समस्याओं तथा दुःखों का कारण मनुष्य के आसुरी संस्कार तथा बुरे कर्म हैं और इसलिए, इसमें कोई संदेह नहीं, इसका समाधान नैतिक उत्थान से ही हो सकता है जैसा कि ब्रह्माकुमारियाँ कहती हैं।

इसके पश्चात् माऊण्ट आबू से आई हुई राज-योगिनी ब्रह्माकुमारी मोहिनी बहन ने सामूहिक योगाभ्यास कराया। सारा वातावरण शान्ति के प्रकम्पनों से भरपूर था।

राजयोग से देश-भेद तथा धर्म-भेद की दीवारें टूट रही हैं : केन ओ० डौनल

ब्राज़ील से आये हुए भ्राता केन ओ० डौनल ने विदेशों में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय द्वारा आयोजित प्रदर्शनियों की चर्चा करते हुए कहा कि विदेशों में शिव बाबा का सूक्ष्मातिसूक्ष्म दिव्य ज्योति बिन्दु रूप का चित्र बहुत प्रसिद्ध है और वहाँ के लोग, कल्पवृक्ष के चित्र, जिसमें सृष्टि का आध्यात्मिक इतिहास दर्शाया गया है, की ओर भी बहुत आकर्षित होते हैं। विदेशों में ईश्वरीय सेवा का अपना अनुभव बताते हुए उन्होंने कहा कि वास्तव में लोग शिव बाबा के दिव्य सन्देश की प्रतीक्षा में हैं और ब्राज़ील में, जहाँ इस ईश्वरीय सेवा के लिए वे कुछ समय पहले ही गये हैं, लोग इन चित्रों द्वारा बाबा के ज्ञान को बहुत जल्दी और अच्छी तरह से समझ लेते हैं जबकि ब्राज़ील विश्व का सबसे बड़ा रोमन कैथोलिक देश है। उन्होंने आगे कहा : "यद्यपि पश्चिमी देशों में लोगों को बाबा के ज्ञान के कुछ बिन्दुओं को समझने में कुछ समय लग जाता है परन्तु

वे राजयोग के अभ्यास में बहुत रुचि लेते हैं।"

श्रेष्ठ मत की ओर ध्यान दो, विकारों को छोड़ो
—जयप्रकाश भारती

भ्राता डौनल के बाद बच्चों की प्रसिद्ध साप्ताहिक पत्रिका, 'नन्दन' के मुख्य सम्पादक, भ्राता जयप्रकाश भारती जी अपने विचार प्रगट करने के लिए उठे। उन्होंने कहा कि वे पिछले कुछ वर्षों से ब्रह्माकुमारी संस्था के सम्पर्क में हैं और कि उन्होंने संस्था को दिन दूनी रात चौगुनी उन्नति करते हुए वर्तमान अन्तर्राष्ट्रीय स्तर तक पहुँचते हुए देखा है। उन्होंने कहा "जब मैं छोटा बच्चा था, तब परियों की कहानियाँ सुना करता था लेकिन आज मैं श्वेत वस्त्रधारी परियों, इन ब्रह्माकुमारी बहनों के बीच अपने को देख रहा हूँ।" उन्होंने कहा—"इनकी श्वेत वेशभूषा पवित्रता तथा सात्विकता का प्रतीक है।" "मैंने रुचि के साथ प्रदर्शनी के मण्डपों को देखा है।" प्रदर्शनी में एक स्थान पर बताया गया है—"सुनो लोग, छोड़ो भोग, करो योग, मिटे रोग"। यही उन्होंने कहा, इस संस्था का उद्देश्य है। राजयोग के अभ्यास से पुरुषार्थी का आत्मिक उत्थान होता है और कई समस्याओं को हल करने में उसे सहायता मिलती है।

इस विशाल कार्य का प्रेरक स्वयं परमात्मा है
—ब्रह्माकुमारी प्रकाशमणि

तत्पश्चात् उपस्थित श्रोताओं ने एकाग्रचित्त होकर कार्यक्रम की अध्यक्षा महोदया दादी प्रकाशमणि जी के प्रेरणादायक प्रवचन को सुना। उन्होंने अपने वक्तव्य का आरम्भ इस प्रश्न से किया, "क्या आप जानते हैं कि इस महोत्सव का आयोजन करने की प्रेरणा हमें किसने दी? हमें आध्यात्मिक सेवा करने की मार्ग-प्रदर्शना कौन देता है?" फिर इन प्रश्नों का उत्तर देते हुए उन्होंने कहा : इस कल्याणकारी महोत्सव के पीछे जो अज्ञात शक्ति कार्य कर रही है, वह स्वयं परमप्रिय परमपिता परमात्मा है जो कि अपनी निश्चित योजना के अनुसार इस सृष्टि का परिवर्तन कर रहे हैं क्योंकि परमात्मा ने जब दिव्य ज्ञान द्वारा विश्व की रचना की थी तब यह विश्व एक पवित्र एवं सुखी समाज के रूप में था। उन्होंने कहा कि इसी यमुना के किनारे, यह दिल्ली शहर, जो इन्द्रप्रस्थ के नाम से प्रसिद्ध था, देवताओं की भूमि 'देव-भूमि' था। वही सतयुगी भूमि अब एक नर्कमयी भूमि बन गई है। इस भूमि को अब फिर से पवित्र और दिव्य बनाने की आवश्यकता है। और हम सर्व आत्माओं के परमप्रिय परमपिता परमात्मा ने यह रहस्योद्घाटन किया है कि कलियुग जाने वाला है और सतयुग आने वाला है। विश्व-परिवर्तन का कार्य अब हो रहा है। अब हमें स्वयं को तथा अन्य आत्माओं को बदलना है ताकि पवित्रता, सुख, शान्ति-सम्पन्न नव विश्व का अभ्युदय हो सके।

दूसरों को दोषी ठहराने का कोई लाभ नहीं, आओ हम स्वयं को सुधारें

उन्होंने आगे कहा : "जागो, जागो, प्यारे बहनो और भाइयो, धरती पर प्रभात आ रहा है। प्रिय आत्माओं, आप पिंजरे के पंछी के समान हो गये हो और अब ज्ञान और योग रूपी पंखों के आधार से इस देहाभिमान रूपी पिंजरे से स्वतन्त्र होने का समय आ गया है।" वह कह रही थीं कि अपने दुःखों के लिए हम आमतौर पर दूसरों को दोषी ठहराते हैं। स्वयं को सुधारने की बजाय हम दूसरों पर दोष धरते हैं और कहते हैं कि फलाँ व्यक्ति इस भूल का ज़िम्मेवार है। कोई भी कभी अपने अन्दर झाँककर नहीं देखता। अब शिव बाबा कहते हैं। मेरी प्रिय आत्माओं, प्रिय सन्तानों, आप अपनी ही भूलों के कारण दुःखी हुए हो और अब स्वयं आपको ही इन भूलों को सुधारना है। यह दुनिया बहुत शीघ्र ही स्वर्णिम दुनिया में बदलने वाली है और अब आपको स्वयं को पवित्र बनाने के लिए तीव्र पुरुषार्थ करना है।

मेले की ओर ध्यान खिंचवाते हुए उन्होंने कहा, "इस मेले में एक मण्डप 'भारत माता शक्तियों' का है। इस मण्डप का उद्देश्य आपको यही जानकारी देना है कि ये भारत-मातायें और शक्तियाँ भी आपके समान मनुष्य-रूप ही थीं और कि आप भी सर्व के

परमप्रिय परमपिता परमात्मा के द्वारा दिये जा रहे ईश्वरीय ज्ञान के आधार से आने वाली सतयुगी दुनिया में श्री लक्ष्मी और श्री नारायण के समान बन सकते हैं।"

फिर उन्होंने धार्मिक एकता के विषय में चर्चा की। उन्होंने शिव बाबा के महावाक्य याद दिलाये : "सर्व धर्मों की आत्मायें, आत्मा के नाते मेरी सन्तान हैं और जब वे शरीर धारण करते हैं तो सभी का नाता भाई-बहन का हो जाता है। केवल यही दृष्टि-कोण एकता तथा सद्भावना पैदा कर सकता है।"

मातृ-स्नेह से उन्होंने अपनी आवाज़ और बुलन्द करते हुए कहा कि सम्पूर्ण विश्व यह जान ले कि हम सब एक पिता के बच्चे हैं, हमारा रूहानी निवास स्थान एक ही है और हमारा वास्तविक धर्म अर्थात आत्मा का धर्म भी एक ही है। सभी को इस तथ्य की अनुभूति करनी चाहिए और फिर हम में से हरेक को दिव्य गुणों की धारणा करनी चाहिए। हमारे देश के नेता, जो कि धार्मिक सद्भावना तथा राष्ट्रीय एकता लाने के लिए इतना परिश्रम कर रहे हैं, भी इस तथ्य को भली भाँति जान लें। शिव बाबा का हम आत्माओं के प्रति जो सन्देश है, उसे जानने से ही इसकी प्राप्ति हो सकती है। शिव बाबा का कहना है कि हम सबको आत्म-स्थिति में स्थित होने का अभ्यास करना चाहिए तथा अपने को परमपिता परमात्मा की सन्तान समझना चाहिए। इससे धर्म-भेद, जाति-भेद, लिंग-भेद, रंग-भेद, आदि सब भेद समाप्त हो जायेंगे। अपने वक्तव्य को समाप्त करते हुए उन्होंने कहा, "इसी उद्देश्य को लेकर यह विश्व-कल्याण महोत्सव, जिसे 'रूद्र ज्ञान यज्ञ' भी कहा जाता है, आयोजित किया गया है, ताकि सर्व आत्मायें इसमें सम्मिलित होकर शिव बाबा का संदेश प्राप्त कर सकें और यथाशक्ति अपने जीवन को फिर से पवित्रता, आनन्द, शान्ति तथा आध्यात्मिक परा-काष्ठा से भरपूर कर सकें।"

फिर उन्होंने इस बात पर ज़ोर देते हुए कहा : हम ब्रह्माकुमारियों का यह दृढ़ संकल्प है कि हम शिव बाबा के इस सन्देश को जन-जन तक पहुँचायेंगी कि, "हे आत्माओं, अपने जीवन में १० दिव्य गुण धारण करने की शपथ लो और अपने १० विकारों को त्यागो जो ही सभी दुःखों, कष्टों एवं अशान्ति का मूल कारण हैं। जब कोई ५ मुख्य विकारों को छोड़ देता है, विकारी वृत्तियाँ स्वतः ही समाप्त हो जाती हैं। जब एक बार इन विकारों के बोझ से छुटकारा मिल जाता है तो मनुष्य हल्केपन एवं आनन्द का अनुभव करता है। इसलिए हम सब को पवित्र बनना है और राजयोगी बनना है।"

अन्त में, उन्होंने कहा, "मैं विश्व की सर्व आत्माओं के प्रति अपनी शुभ कामनायें व्यक्त करती हूँ और आशा करती हूँ कि हमारे पत्रकार भाई तथा जो रेडियो और टी० वी० से सम्बन्धित हैं, वे कृपया इस कार्य में अपना पूर्ण सहयोग देंगे ताकि यह सन्देश विश्व के कोने-कोने में हर आत्मा तक पहुँच सके।"

कार्यक्रम का अन्त, दिल्ली के अतिरिक्त डिस्ट्रिक्ट एवं सैशन जज, भ्राता आर० एल० गुप्ता जी के धन्यवाद प्रस्ताव से हुआ।

उसके बाद मंच पर सांस्कृतिक कार्यक्रम आरम्भ हुआ जिसे लोगों ने बहुत रुचि से देखा।

अन्तर्राष्ट्रीय प्रदर्शनी

"विश्व-कल्याण महोत्सव" के अन्तर्गत जन-जन के कल्याण के लिए लाल किला मैदान पर एक अन्तर्राष्ट्रीय प्रदर्शनी अथवा विशाल मेले का भी आयोजन किया गया था। लाल किले का मैदान एक अन्तर्देशीय ख्याति का स्थान है क्योंकि विदेशियों को भी यह बात ज्ञात है कि हर वर्ष १५ अगस्त की प्रातः को भारत के प्रधानमन्त्री का लाल किले की दीवार पर से भाषण होता है और विदेशी लोग जब भारत में आते हैं तब वे स्वयं भी ऐतिहासिक महत्व के इस स्थान को देखते हैं। इसी महत्वपूर्ण स्थान पर, जो कि देश के इतिहास से और स्वतन्त्रता के संग्राम से सम्बद्ध हो गया है और जो कि एक प्रकार से नई दिल्ली के आदि और पुरानी दिल्ली के अन्त के संगम पर है, मेले को लगाना ठीक ही था।

लाल किले के प्रवेश द्वार की ओर जाने से कुछ ही कदम पहले दाहिने हाथ इस महोत्सव का मुख्य द्वार बना हुआ था। इसमें प्रवेश होते ही बाँये हाथ को एक विशाल क्षेत्रफल में भव्य मेला लगा हुआ था जिसकी ओर स्वतः ही मनुष्य का मन आकर्षित होता था। इस मेले के द्वार के बाहर एक बच्चे और एक बच्ची की दो मूर्तियाँ थीं जो चेहरे पर मधुर मुस्कान लिए हुए, सतत नमस्कार करते हुए सबको मेले में आने का सस्नेह निमन्त्रण दे रहे थीं जिसको अस्वीकार करना किसी के लिए सम्भव नहीं था।

भारत की आदि संस्कृति के बारे में महाराष्ट्र मण्डप

मेले के मुख्य द्वार में प्रवेश करते ही सबसे पहला मण्डप भारत की आदि संस्कृति पर महाराष्ट्र के ईश्वरीय सेवा केन्द्रों की ओर से बनाया गया था। इस मण्डप में जाते ही एकाएक ऐसा लगता था कि मानो नई स्वर्गिक दुनिया में आ पहुँचे हों क्योंकि यहाँ मूर्तियों तथा चित्रमय कलाकृतियों द्वारा सतयुग की सतोप्रधान, सुख-शान्ति सम्पन्न सृष्टि की झाँकियाँ सजाई गई थीं जिसमें वहाँ की राज्य प्रणाली, राजा-प्रजा सम्बन्ध, वाणिज्य, शिक्षा-पद्धति, प्राकृतिक सौन्दर्य आदि का ऐसा सुन्दर, मनोरम और मनमोहक चित्रण था कि बस, वहीं खड़े रहने को मन करता था।

इस मण्डप की कलाकृतियों द्वारा यह भाव अभिव्यक्त किया गया था कि सृष्टि के प्रथम युग में मानव देव-तुल्य था और संस्कृति वैर-वैमनस्य, शोषण, दुख-अशान्ति, जरा-व्याधि, नीरसता एवं शुष्कता से सर्वथा मुक्त थी और इस सभी का कारण था—मन, वचन और कर्म की निर्मलता एवं व्यवहार की दिव्यता।

भारत की इस स्वर्णिम एवं गौरवमयी संस्कृति के चित्र की पुष्टि में, इसी मण्डप के एक भाग में प्रमाण-युक्त विधि से डार्विन के विकासवाद को निर्मूल एवं असत्य सिद्ध किया गया था। इसमें यह दर्शाया गया था कि पुराकाल में वानर मनुष्य का पूर्वज कभी नहीं रहा। यद्यपि आज जब चारित्रिक पतन की पराकाष्ठा है तब यह कहा जा सकता है कि मनुष्य वानर अथवा पशु से भी बदतर बन गया है। सतयुग का ऐसा प्रभावशाली चित्रण करते हुए यह स्पष्ट किया गया था कि इस संसार के चक्रवत् इतिहास में वर्तमान समय कलियुग का अन्तिम चरण है जिसके बाद सतयुग आने वाला है और कि अब इस सत्यता को जानते हुए पुनः सतयुगी पावन देवता बनने के लिए पुरुषार्थ में कमी नहीं छोड़नी चाहिये और इस अवसर को गंवाना नहीं चाहिये।

देहली और पंजाब का मण्डप—
अन्धकार से प्रकाश की ओर

अगले मण्डप का शीर्षक था—"अन्धकार से प्रकाश की ओर।" यह देहली, पंजाब, हरियाणा

और हिमाचल के बहनों व भाइयों की ओर से बना था। इस मण्डप के द्वार पर एक दृश्य द्वारा यह चित्रित किया गया था कि मनुष्य ने अनेक जन्म विविध रूप से यज्ञ, तप, भक्ति, पूजा आदि किये परन्तु अब जब सतयुगी सृष्टि की पुनर्स्थापना के लिए वर्तमान कलियुगी अन्धकारमय समय में परमपिता परमात्मा का अवतरण हुआ है, तभी मनुष्य को परमपिता परमात्मा का ज्ञान रूपी सत्य प्रकाश मिलता है।

इसी मण्डप में उस परमपिता परमात्मा के दिव्य नाम, दिव्य रूप, ईश्वरीय गुणों और कर्तव्यों आदि का सही बोध कराया गया था और यह बताया गया था कि यह संसार प्रकृति के परमाणुओं का बना हुआ है, नश्वर है और मृत्यु के आधीन है। इन सबसे अलग चेतन सत्ता आत्मा है जो कि मनुष्य-तन में भृकुटि में निवास करती है। यह संसार तो बस, एक मुसाफ़िर ख़ाना है। परन्तु कितने आश्चर्य की बात है कि इस में मनुष्य रूपी मुसाफ़िर न तो जानता है और न जानने की चेष्टा ही करता है कि वह देह रूपी पुरी में अथवा संसार रूपी विराट में किस दूर देश से आया है और कौन से गन्तव्य स्थान की ओर उसे जाना है।

पुनश्च, उसे यह भी ज्ञात नहीं कि जैसे इस शरीर का कोई माता-पिता होता है, नगर का नगर पिता, राष्ट्र का राष्ट्रपिता और धर्म का धर्मपिता होता है, वैसे ही इस सारी सृष्टि का परमपिता अथवा सभी मनुष्यात्माओं का मात-पिता परमात्मा है। अत: इसी मण्डप में उसी मात-पिता अथवा परमपिता का परिचय दिया गया था ताकि मनुष्य-आत्माएँ उस अविनाशी पिता को जान कर, पहचान कर और उससे सम्बन्ध जोड़कर सम्पूर्ण पवित्रता, सुख और शान्ति का जन्म-सिद्ध अधिकार प्राप्त कर सकें। इसी प्रयोजन से ही इस मण्डप के पार्श्व में एक स्थान पर तीन लोक वृहद् प्रकाशमय चित्र लगा हुआ था और वहाँ पर आकाँक्षी मनुष्यात्माओं को परमात्मानुभूति के अभ्यास के लिए मार्ग-प्रदर्शना दी जाती थी।

विश्व कल्याण पर बना—कर्नाटक मण्डप

इसी के साथ ही जुड़ा था विश्व-कल्याण मण्डप जो बाहर से विशाल और आकर्षक लगता था। कर्नाटक ज़ोन की ओर से बनाये गए इस मण्डप के स्वागत द्वार पर प्रकाशमय शिव बाबा से निकलती हुई जगमगाती हुई किरणें सभी को इस ओर आकर्षित करती थीं। इसमें इलेक्ट्रोनिक्स (Electronics) के प्रयोग द्वारा बहुत ही रूचिकर और प्रभावशाली रीति से तथ्यों और अंकों (Facts and Figures) सहित दर्शाया गया था कि किस प्रकार आज अरबों रुपया एटम और हाइड्रोजन बमों पर ख़र्च किया जा रहा है और कैसे विश्व की हरेक प्रमुख एवं जटिल समस्या किसी-न-किसी मनोविकार से जुड़ी हुई है। अत: इसमें यह सुझाव दिया गया था कि इन मनोविकारों पर विजय प्राप्त करके हमें विश्व-कल्याण की ओर कदम बढ़ाना चाहिए। इसमें इस बात पर विशेष बल डाला गया था कि विश्व का कल्याण केवल विश्व पिता, परमपिता परमात्मा ही कर सकते हैं और कर रहे हैं। हमारे लिए उनकी आज्ञा है कि "पवित्र बनो, योगी बनो।"

"अव्यक्त स्थिति कैसे प्राप्त करें ?"—इस विषय पर बना इंग्लैण्ड मंडप

"पवित्र और योगी बनो" के इस दिव्य संदेश को लेते हुए जब इस मण्डप से बाहर निकलते थे तो अगले मण्डप के गेट के बाहर बड़े-बड़े अक्षरों में लिखा था 'ओमशान्ति' (Om Shanti) जिन्हें पढ़ते ही मनुष्य को शान्ति का आभास होता था। इसे इंग्लैण्ड, आयरलैण्ड और स्कॉटलैण्ड के भाई-बहनों ने मिलकर बहुत ही भीने-भीने मनोरम रंगो से, पाश्चात्य पद्धति में सूक्ष्म प्रकार के चित्रों के रूप में तैयार किया था। इन चित्रों द्वारा इस रहस्य पर प्रकाश डाला गया था कि अव्यक्त स्थिति (Angelic State) कैसे प्राप्त की जा सकती है। सारे स्टॉल में एक शान्ति का प्रवाह था और मनुष्य को अपनी अवस्था अव्यक्त बनाने की प्रेरणा मिलती थी।

इसके अतिरिक्त, इसी मण्डप में वे पुरस्कृत

कलाकृतियाँ भी लगाई थीं जो लन्दन सेवा-केन्द्र की ओर से आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय चित्र प्रतियोगिता में से चुनी गई थीं।

वर्तमान संगम युग पर बना बंगाल मण्डप

थोड़ा ही आगे बढ़ने पर नज़र जाती थी बंगाल की प्रसिद्ध निर्माण और सजावट शैली में, श्वेत कपड़े से बने हुए विशाल मण्डप पर जो वहाँ के प्रसिद्ध विक्टोरिया नामक भवन की हूबहू प्रतिमूर्ति के रूप में बना हुआ था। इसमें वैसे ही बनी हुई खिड़कियाँ, दरवाजे आदि विक्टोरिया का भव्य दृश्य उपस्थित करते थे। मण्डप के श्वेत-श्वेत, गोल गुम्बद के ऊपर मातेश्वरी जगदम्बा सरस्वती हाथ में शिव-ध्वज लिए हुए एक बहुत ही प्रेरणादायक दृश्य उपस्थित कर रही थीं। ऐसे लगता था कि मातृ शक्ति की ललकार हो रही है कि—"हे विश्व के मनुष्यो, अब माया (विकारों) से नाता तोड़ लो और शिव बाबा से नाता जोड़ लो। अब इस सुहावने संगम युग में कौडी-तुल्य से हीरे-तुल्य बनने का पुरुषार्थ करो।"

अत्यन्त प्रभावशाली तरीके से इस मण्डप में यही दिखाया गया था कि यदि समय पर बीज न बोया जाए तो ऋतु-परिवर्तन हो जाने से उपज नहीं होती, समय पर स्टेशन पर न पहुँचने से मनुष्य गाड़ी पर चढ़ने से चूक जाता है; समय पर औषधि व उपचार न होने से मनुष्य जीवन को खो बैठता है; इसी प्रकार, यह जो कलियुग के अन्त और सतयुग के आदि का संगम समय है, यही श्रेष्ठ कर्म रूपी बीज बोने का अथवा आत्मा के रोगों को ज्ञान रूपी औषधि से समाप्त करने का अथवा कलियुग से सतयुग की यात्रा करने का अनमोल समय है जिसे हाथ से गंवा देने से मनुष्य श्रेष्ठ प्राप्तियों से वन्चित रह जाता है।

इस मण्डप में विविध रूप से यह बताया गया था कि सत, त्रेता, द्वापर और कलियुग के निरन्तर चलते रहने वाले इस युग चक्र में वर्तमान जीवन मनो-विकारों के कारण कौड़ी-तुल्य बन गया था और अब इसे कल्प वृक्ष के बीज रूप परमात्मा हीरे तुल्य बना रहे हैं।

गीता-ज्ञान दाता भगवान का सही परिचय इस विषय पर जर्मनी मंडप

इसके बाद ईश्वरीय ज्ञान के एक मुख्य एवं अत्यन्त महत्वपूर्ण विषय पर बना हुआ मण्डप था जिसे जर्मनी के बहन-भाइयों ने अथक परिश्रम से बनाया था। "गीता-ज्ञान किसने दिया और कब दिया ? गीता में किस युद्ध का वर्णन है ? गीता के भगवान का वास्तविक परिचय क्या है ?—इन प्रश्नों पर फाइबर ग्लास (Fiber Glass) के माडल तथा भव्य चित्रों द्वारा प्रकाश डाला गया था। इन्हें सिल-सिलेवार देखने व समझने से यह स्पष्ट हो जाता था कि गीता का ज्ञान ज्योतिस्वरूप परमपिता परमात्मा शिव ने कलियुग के अन्त में एक साधारण मनुष्य के तन में प्रविष्ट होकर दिया था जिसे उन्होंने स्वयं ही "प्रजापिता ब्रह्मा" नाम दिया और कि इस गीता-ज्ञान और सहज राजयोग के द्वारा श्रेष्ठ धर्म-सम्पन्न सतयुग का आगमन हुआ जिसके ही आदि में प्रजा-पिता ब्रह्मा का श्री कृष्ण के रूप में जन्म हुआ और यही श्री कृष्ण स्वयंवर के पश्चात श्री नारायण कहलाये।

"सहज राजयोग" विषय पर बना गुजरात मंडप

इसके बाद गुजरात का मण्डप था जिसमें मनुष्य के मन से तनाव को दूर करने वाले, उसके पुराने विकर्मों को दग्ध करने वाले, उसके मन को परम-पिता परमात्मा से जोड़कर अतीन्द्रिय सुख प्राप्त कराने वाले सहज राजयोग का विषद चित्रण था। मनुष्य कर्म करते हुए भी कर्मातीत अवस्था की ओर कैसे अग्रसर हो ? अनेक सम्बन्धों में आते हुए भी वह कर्मबन्धन से कैसे ऊपर उठकर रहे ? निन्दा-स्तुति, हानि-लाभ की परिस्थितियों में से गुज़रते हुए भी वह इन सब में अचल कैसे रहे ? देहधारी होने पर भी वह विदेह कैसे हो ? कर्मभोग सामने आने पर भी वह योगी कैसे बना रहे ?—बहुत ही रसीले रहस्य समझाये गये थे।

इसी मण्डप के पास से ही बाँयी ओर का द्वार मनुष्य को योग शिविर की राह की ओर बुलाता था और दायीं ओर का द्वार एक योग कुटीर में ले जाता था जो छहों ओर श्वेत वस्त्र से मण्डित सादगी और

शान्ति की रश्मियाँ बिखेर रही थी जहाँ पर कुछ क्षण के लिए जाकर योगाभिलाषी प्रभु की ठौर पहुँच कर प्रेम-विभोर हो उठते थे।

अन्तर्राष्ट्रीय मण्डप

परमात्म अनुभूति करते हुए जब उस कुटिया से बाहर निकलते तो ध्यान खिंच जाता अन्तर्राष्ट्रीय मण्डप की ओर जिसमें जापान, हाँगकाँग, सिंगापुर, मैक्सिको, दुबई, फ्राँस, मॉरीशियस, अमरीका, गयाना आदि के चित्र अथवा मॉडल्स ईश्वरीय ज्ञान, सहज राजयोग तथा दिव्य गुणों की धारणा आदि विषयों पर बहुत ही सुन्दर रीति से प्रकाश डाल रहे थे। कहीं जापानी भाषा और चित्रशैली में यह दिखाया था कि जापान में सरस्वती, ब्रह्मा, श्री कृष्ण आदि को चिरातीत से किस नाम से तथा किन गुणों एवं किन अलंकारों से सम्पन्न माना जाता रहा है तो कहीं मारीशियस की कला कृतियाँ गन्ने के छिलके के प्रयोग से नम्रता, सहनशीलता आदि दिव्य गुणों की धारणा का महत्व दर्शा रही थीं। कहीं दुबई की निर्माण प्रणाली में "तीन लोकों" का रहस्य बताया गया था तो कहीं अमेरिकन पद्धति में 'भौतिकवाद पर अध्यात्मवाद की विजय' का रहस्य स्पष्ट किया गया था।

"विभिन्न व्यवसाय वालों का कल्याण" विषय पर मध्य प्रदेश द्वारा बना मंडप

अगला मण्डप मध्यप्रदेश की ओर से बनाया गया था। विषय था- विभिन्न वर्गों के कल्याण में योग का स्थान। इस मण्डप के बने हुए चित्रों और मॉडल्स द्वारा ऐसे विषयों पर प्रकाश डाला गया था जो न केवल उद्योगपतियों, कृषकों, अध्यापकों एवं विद्यार्थियों, चिकित्सकों, न्यायविदों एवं विधि-वेत्ताओं के लिए बल्कि सामान्य जन के लिए भी बहुत लाभप्रद थे—जैसे उद्योग में योग का समावेश कैसे हो? कृषि करते हुए भी ऋषि कैसे बने? व्यापार में आचार कैसे बना रहे? अध्ययन में स्वाध्याय को कैसे स्थान दिया जाए? शारीरिक स्वास्थ्य के साथ मानसिक एवं आध्यात्मिक स्वास्थ्य पर कैसे ध्यान दिया जाए? विधि एवं विधान (Law & Constitution) को जानने के साथ जीवन-विधि और कर्म-विधान जानना कैसे महत्वपूर्ण है? आदि आदि इस मण्डप को देखकर हर व्यक्ति को ऐसा लगता था कि कर्म करते हुए भी योगी बन सकते हैं और जीवन को महान् बना सकते हैं।

विश्व-परिवर्तन पर बना आस्ट्रेलिया का मंडप

इसके आगे आस्ट्रेलिया के बहन-भाइयों द्वारा निर्मित बहुत सुन्दर मण्डप था जिसमें वैज्ञानिक एवं तार्किक ढंग से, युक्तियों एवं प्रमाण-सहित अनेक ईश्वरीय रहस्यों को स्पष्ट किया गया था। इसमें तीन लोक का प्लास्टिक का वृहद् मॉडल भी था जिसमें मनुष्यलोक में चारों युगों का चक्र तो देखते ही बनता था। एक स्थान पर समाचार पत्रों से लिए गए कुछ समाचार एवं लेख लगाए थे जिसमें बताया गया था कि आणविक अस्त्रों-शस्त्रों द्वारा निकट भविष्य में महाविनाश कैसे होने वाला है और एक दूसरे स्थान पर वैज्ञानिक रीति से यह दिखाया गया था कि सतयुग में पृथ्वी की स्थिति कैसे बदल जाएगी और विश्व की जलवायु तथा सारा वायुमण्डल कैसे बदल जाएगा जिससे कि यह धरा स्वर्ग-समान सुखदायक बन जाएगी।

इसी मंडप में कुछ ख्याति-प्राप्त समाचार पत्रों से काटकर समाचार और लेख भी वहाँ लगाये गये थे जिनके पीछे भाव यह था कि जिन लोगों को निकटता से मालूम है, वे भी कहते हैं कि निश्चय ही विश्व महासंघातक विनाश की ओर बढ़ रहा है।

इसी मंडप में पारदर्शी प्लास्टिक को ढाल कर बनाया गया तीन लोकों का एक सुन्दर मॉडल भी रखा था। इसी के पेंदे पर साकार मनुष्य लोक दर्शाया गया था। इसी लोक में सतयुग, त्रेता, द्वापर कलि और वर्तमान शुभ संगम युग, अर्थात पाँच युगों का चक्राकार-क्रम भी प्रदर्शित किया गया था।

इस मण्डप में ऐसे बहुत-से लोगों की भीड़ लगी रहती थी जो कि विज्ञान और तर्क सम्मत रीति से आध्यात्मिक ज्ञान को समझना चाहते थे।

आन्ध्र प्रदेश के तिरूपति देवस्थानम द्वारा बनाया मण्डप

आस्ट्रेलिया के मण्डप के साथ ही तिरूपति देव-स्थानम् द्वारा बनाया गया बहुत सुन्दर मंडप था जिसमें मन्दिर-निर्माण कला को सुव्यवस्थित ढंग से दिखाया गया था।

बाल कला-कृति मंडप

इसके आगे बच्चों द्वारा बनाये कलात्मक चित्रों आदि का मंडप था। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय के देहली-स्थित विभिन्न सेवा-केन्द्रों ने महोत्सव से पहले जो चित्रकला प्रतियोगिता, नीति वचन स्पर्धा तथा कविता प्रतियोगिता की थीं, उनमें से चुनी गयी कृतियाँ रखी गयी थीं।

साहित्य मंडप तथा प्लास्टिक की ज्ञानोपयोगी वस्तुओं का स्टाल

यहाँ ईश्वरीय ज्ञान के अनेकानेक विषयों पर हिन्दी, अंग्रेजी तथा अन्य प्रादेशिक भाषाओं में छपा साहित्य प्राप्त हो सकता था। समस्त प्राप्य साहित्य को छः भागों में बाँटा जा सकता है:—

इनमें से एक भाग को "ज्ञान प्रधान" साहित्य कहा जा सकता है। "ईश्वरीय ज्ञान का साप्ताहिक पाठ्यक्रम", "आत्मा के तीनों कालों की कहानी", "विश्व का भविष्य", "परमात्मा कहाँ है", "क्या मनुष्यात्मा पशु-आदि योनियाँ लेती है" ऐसी पुस्तकें इस शीर्षक के अन्तर्गत आती हैं।

दूसरी प्रकार का साहित्य "राजयोग" से सम्बन्धित था। "राजयोग की विधि और सिद्धि, "सहज राजयोग", "योगी बनो", "सच्चा योगी जीवन" आदि पुस्तकें इस प्रकार का साहित्य हैं।

तीसरे प्रकार की पुस्तकें दिव्य गुणों की धारणा से सम्बन्धित थीं। "नैतिक शिक्षा", "कमल पुष्प के समान जीवन", "दिव्य गुणों का गुलदस्ता", "जीवन हीरे-तुल्य कैसे बने ?", "बाल नैतिक शिक्षा", "अच्छे बच्चे" आदि इसी के अन्तर्गत हैं।

चौथे प्रकार का साहित्य "ईश्वरीय सेवा" से सम्बन्धित है। ईश्वरीय विश्व-विद्यालय के कार्यक्रमों की गत वर्ष की "वार्षिक रिपोर्ट", विशिष्ट लोगों की सम्मतियाँ तथा ईश्वरीय सेवार्थ प्रयोग होने वाले चित्र आदि जिनमें ज्ञान, योग, दिव्य गुण धारणा आदि से सम्बन्धित सामग्री है, भी इसी में सम्मिलित हैं।

पाँचवें में "ईश्वरीय विश्व-विद्यालय का परिचय", प्रजापिता ब्रह्मा की अद्भुत जीवन कहानी" आदि पर छपी पुस्तकें, फोल्डर आदि शामिल हैं।

छठवें में "शिव और शिवरात्रि", "सच्ची होली कैसे मनाएँ ?", "रक्षाबन्धन का वास्तविक रहस्य" आदि ऐसी पुस्तकें सम्मिलित हैं जो भारत के त्योहारों के रहस्य पर प्रकाश डालती हैं।

इनमें से बहुत-सी पुस्तकें उस अवसर पर विभिन्न भाषाओं में उपलब्ध थीं।

इसके अतिरिक्त, इसी स्टाल में नीति वचन अंकित बाल-पेन, शिव बाबा के प्रकाशमय रूप वाले बिजली के प्लग आदि ज्ञानोपयोगी साधन भी प्राप्य थे।

शक्ति अथवा देवी मण्डप

इसमें नव शक्ति या देवियाँ थीं—सरस्वती, दुर्गा मीनाक्षी, सन्तोषी, वैष्णो देवी, गायत्री, महाकाली, महालक्ष्मी, इनमें सम्मिलित थीं। ये कोई मृण-मूर्तियाँ या पाषाण-मूर्तियाँ नहीं थीं बल्कि योगिन ब्रह्माकुमारी बहनों ने हर शक्ति या देवी के सम्बन्धित वस्त्राभूषण तथा अलंकारादि धारण करके इनकी छवि प्रगट की थी। हरेक देवी या शक्ति का अपना-अपना वाहन भी था। हाँ यह वाहन मृण-मूर्ति के रूप में थे। सरस्वती मोर पर विराजमान थीं तो दुर्गा सिंहवाहिनी दिखाई गयी थीं और मीनाक्षी बैल पर। ये शक्तियाँ निस्तब्ध एवं निष्क्रिय बैठी थीं। अतः लोगों की भीड़ इन्हें अचल देखकर इन्हें मूर्तियाँ समझती थी परन्तु जब अन्त में लोग इन्हें चेतना-युक्त एवं हिलते हुए देखते तो वे आश्चर्य-चकित हो जाते थे। बात यह थी कि शेर और मोर आदि के जो मॉडल वहाँ वाहन रूप में रखे थे, उनके नेत्रों में जब बिजली का प्रकाश हो जाता तो वे इन पर की देवियों अथवा शक्तियों को भी मॉडल मानने की भूल कर बैठते थे परन्तु वास्तव

में ये शक्तियाँ थीं चेतन ही।

इस सारे दृश्य के पीछे मुख्य उद्देश्य तो लोगों को इनके वाहनों तथा अलंकारों का, जिन्हें लोग "सूचक" मानने की बजाय यों का त्यों मान लेते हैं, सही भाव बताना था। अतः टेप किया हुआ एक गीत इस दौरान में बजता रहता था जिसमें इन शक्तियों का परिचय दिया गया था। इस गीत में हरेक शक्ति या देवी की महानता का परिचय देते हुए यह बताया गया था कि ये शक्तियाँ भारत देश ही की कन्याएँ-माताएँ थीं, जिन्होंने सर्वशक्तिमान परमपिता से ज्ञान-शक्ति, योग-शक्ति आदि शक्तियाँ प्राप्त की थीं जिसके कारण ही इनका नाम "शक्ति" हुआ। इन देवी शक्तियों द्वारा इन्होंने नर-नारियों के मनो-विकारों रूपी दानवों या आसुरी लक्षण रूपी "असुरों" का संहार किया था। इस गीत में बताया गया था कि ये शक्तियाँ अब भारत में फिर प्रगट हुई हैं और अपना कार्य कर रही हैं और कि जो कोई भी इन आसुरी वृतियों के कष्टकारी चंगुल से छूटना चाहता हो वह इनसे लाभ ले सकता है।

इस प्रकार यह उचित ही था कि इस विशाल, अन्तर्राष्ट्रीय प्रदर्शनी के अन्तिम मण्डप में प्रेरणा-दायक, प्रभावशाली परन्तु सीधे और स्पष्ट शब्दों में परमात्मा के वर्तमान अवतरण का सुसमाचार दिया गया तथा "भारत-माता शक्तियों" के रूप में ब्रह्मा-कुमारियों के कार्य का परिचय दिया गया।

केन्द्रीय स्तूप तथा ध्वज-स्तम्भ

प्रदर्शनी स्थल के आयाताकार, घास से हरे-भरे मैदान, जिसके चारों ओर उपरोक्त मण्डप बने थे, के मध्य में एक बहुत ही ऊँचे स्तम्भ पर लगा शिव बाबा का झण्डा खूब लहरा रहा था। यह काफ़ी दूर से दिखाई देता था। इसके निचले भाग के चारों ओर बड़े-बड़े चार चित्रों का बना एक चौमुखा था। एक ओर के चित्र में जन-जन के हाथ बने थे और हर हाथ की संकेत उंगुली ऊपर बने शिव बाबा की ओर इशारा कर रही थी। इसका संदेश यह था कि— परमात्मा एक है, ज्योति-स्वरूप एवं अशरीरी है और हम सभी का परमपिता है। दूसरी ओर भूमण्डल की आकृति बनी थी, जिसके चहुँ ओर विभिन्न धर्मावलम्बी इकट्ठे होकर शान्ति का आह्वान कर रहे थे परन्तु शान्ति की फ़ाख्ता उनसे दूर ही जा रही थी। उसमें दिखाया गया था कि शक्ति का दाता एकमात्र शान्तिसागर परमात्मा ही है। वही अब हर मानव-मन की शान्ति की इच्छा पूर्ण करने के लिए ईश्वरीय कार्य कर रहा है—

तीसरी ओर प्रजापिता ब्रह्मा का चित्र बना था और उनके ऊपर ज्योतिस्वरूप परमात्मा शिव थे। भाव यह दर्शाया था कि अशरीरी परमात्मा विश्व-कल्याणार्थ ईश्वरीय ज्ञान, गुण और योग की शिक्षा देने के लिये प्रजापिता ब्रह्मा के तन में प्रवेश करते हैं।

चौथी ओर कमल पुष्प पर बैठे हुए एक राज-योगी को चित्रित किया गया था जो कि ऊपर शिव बाबा से योग लगाये हुए था। इस द्वारा यह महत्व-पूर्ण रहस्य प्रगट किया गया था कि नई शान्तिमयी सृष्टि की पुनर्स्थापना के लिये पवित्रता और राजयोग का क्या महत्व है।

प्रवेश द्वार और प्रस्थान

प्रदर्शनी स्थल के प्रवेश द्वार के दायें और बायें, दोनों ओर दो बड़े-बड़े चित्र थे। प्रवेश द्वार की बायीं ओर तो "तीन लोक" का एक दीर्घकाय चित्र था और दायीं ओर एक विशालकाय घड़ी का मॉडल रखा था। यह कोई साधारण घड़ी का प्रतिरूप नहीं था बल्कि इसके ८ फुट व्यास वाले डायल पर काल-चक्र को पाँच भागों में बाँटा हुआ दिखाया गया था और हर भाग के पुनः विभाग अंकित किये हुए थे जैसे कि घंटे को मिनटों में बाँटा हुआ दिखाया गया होता है। हर भाग में एक या दो मानवी आकृतियाँ बनी थीं जिसका भाव यह था कि इस काल में अमुक लोक-प्रसिद्ध व्यक्ति प्रगट हुआ। इस घड़ी की घंटे वाली सुई (छोटी सुई) तो बारह बज पर थी और मिनटों वाली सुई (बड़ी सुई) उससे थोड़ा ही पहले थी। इन दोनों सुइयों की इस स्थिति द्वारा यह प्रदर्शित किया गया था कि अब विश्व महाविनाश के कगार में पहुँचने ही वाला है। इसके बाद सतयुग का पुनरागमन प्रदर्शित किया गया था जिसमें राजा और

प्रजा पवित्रता और सुख-शान्ति के दो मुकुटों से सुसज्जित होते हैं। बारह बजे, अर्थात् सृष्टि की रात्रि और दिन के संगम पर प्रजापिता ब्रह्मा और जगदम्बा सरस्वती की छवि थी जिसका भाव यह था कि अब परमपिता परमात्मा शिव इन दोनों द्वारा तथा इन दोनों की ज्ञान-संतति द्वारा संसार का चारित्रिक पुनरुत्थान करते हुए विश्व का नव-निर्माण कर रहे हैं और इस हेतु संसार के सभी नर-नारी को इनके धर्म-ध्वज के नीचे एकत्रित हो सहयोगी बन जाना चाहिये।

जब सारी प्रदर्शनी देखकर द्वार से बाहर आते थे तब पुनः इन दोनों की ओर दृष्टि आकृष्ट हो जाती थी। इससे यह लाभ होता था कि इतनी विशाल प्रदर्शनी में अनेकानेक चित्र आदि देखने और समझने के बाद इसका यह सार इन दोनों मॉडलों के द्वारा बुद्धि में पुनः स्मरण हो आता था कि—(i) आप आत्माओं के शान्तिमय लोक अर्थात् परलोक या परमधाम से इस सृष्टि-मंच पर आये हैं और (ii) अब आत्मा के वापस लौटने का समय आ पहुँचा है, अतः आपको शरीर से न्यारा होने का अभ्यास करना चाहिये तथा पवित्र बनना चाहिये और (iii) इस द्वार के ऊपर जिन परमपिता शिव का प्रकाशमय चित्र है, यह अब आपको निमन्त्रण दे रहे हैं कि, हे बच्चे "अब मुझे याद करो और वापस अपने घर (परमधाम) चलो !"

द्वार पर पुनः वह बच्चा और बच्ची हाथ जोड़कर तथा मधुर मुस्कान लिये खड़े थे। भारत में यह प्रथा चली आती है कि हाथ जोड़कर ही अतिथि के शुभागमन के समय उनका स्वागत तथा प्रस्थान करते समय उनको विदा किया जाता है। अतः ये बच्चे भी इन दोनों प्रकार के शिष्टाचार में लगे थे और इनका भाव "ओमशान्ति" के अर्थ को अभिव्यक्त कर रहा था।

जिस प्रदर्शनी का हमने उल्लेख किया है, लगभग अस्सी और नव्वे हज़ार के बीच की संख्या में लोगों ने देखा। यहाँ कुछ लोगों द्वारा लिखी गयी सम्मतियों में से कुछेक, कोई सिलसिला निश्चित किये बिना, उद्धृत कर रहे हैं :—

१. नारायण सिंह, शिक्षक : मैं ब्रह्माकुमारियों द्वारा आयोजित प्रदर्शनी देखने से अत्यन्त प्रभावित हुआ हूँ और इनके आयोजन के लिये मैं समस्त आयोजन-कर्ताओं को और इस संस्थान को बधाई देता हूँ तथा आशा रखता हूँ कि यह प्रदर्शनी चिर समय तक चलती रहेगी जिनसे ज्यादा से ज्यादा मनुष्य-प्राणी अपनी वास्तविकता का आभास पा सकें। मैं अपने सम्बन्धियों और शिष्यों तथा मित्रों को इसके लिये प्रेरित करूंगा। अतः एक बार फिर कम-से-कम एक वर्ष के आयोजन का परामर्श देता हूँ। धन्यवाद।

२. जी० एम० याग्निक, संयुक्त निर्देशक, बीकानेर—मैंने इस मेले को देखा है। यह एक बड़े पैमाने पर आयोजित किया गया है। मैंने "लाईट एवं साउंड" का कार्यक्रम भी देखा है। इस सबसे न केवल भारत के अतीत सांस्कृतिक गौरव का मन पर अच्छा प्रभाव पड़ता है और न केवल नैतिकता का रुचिकर रीति से प्रकाश मिलता है बल्कि इससे सामाजिक और राष्ट्रीय एकता की भावना पैदा होती है।

३. टी०आर० श्रीनिवासन, पुलिस अधिकारी—मैंने आध्यात्मिक प्रगति के लिए इस प्रदर्शनी को देखा। मुझे यह कहते हुए हर्ष होता है कि मुझे इससे इस दिशा में बहुत सहायता मिली है। मेरी यह शुभ-कामना है कि इससे सभी लाभ उठायें।

४. डॉ० बी० बी० विश्वास, प्राध्यापक, देहली विश्व-विद्यालय—एकबार फिर इस प्रकार की प्रदर्शनी (ब्रह्माकुमारी विश्व-विद्यालय द्वारा आयोजित) में अनेक प्रश्नों, जिज्ञासाओं और कौतुहलों के साथ आया—विशेष आग्रह अपनी छात्रा (ब्र० कु० उर्मिल) का था। प्रदर्शनी का कलात्मक स्तर बहुत श्रेष्ठ है। विशेष रूप से आध्यात्मिक विचारों, प्रसंगों और उपदेशों को अनेक चित्रों और मॉडल्स द्वारा प्रस्तुत किया गया है।

विभिन्न पण्डालों में दिग्दर्शिकायें और दिग्दर्शक अत्यधिक आस्थावान और भावुक हैं। इस प्रकार की प्रदर्शनियाँ देश के वातावरण को उच्च, सांस्कृतिक और पवित्र गरिमा प्रदान करती हैं। मेरा साधुवाद।

५. एस० एस० शर्मा, मैनेजर, इलाहाबाद बैंक, देहली—यह आयोजन सचमुच अद्भुत है। हरेक मनुष्य को चाहिये कि इन शिक्षाओं को धारण करे।

(शेष पृष्ट ३७ पर)

विश्व-कल्याण महोत्सव के अवसर पर आयोजित विभिन्न सम्मेलन

विश्व कल्याण महोत्सव के अन्तर्गत कुल मिलाकर १८ सम्मेलन आयोजित किये गये। प्रत्येक सम्मेलन या तो समाज के किसी महत्त्वपूर्ण वर्ग से सम्बन्धित था या विश्व-कल्याण के कार्य में सहायक किसी महत्त्वपूर्ण विषय से।

विभिन्न वर्गों से सम्बन्धित सम्मेलन

समाज के विभिन्न वर्गों से सम्बन्धित सम्मेलन अथवा समागम इस प्रकार थे :

१. धर्म नेता समागम, २६ फ़रवरी
२. पत्रकार संगोष्ठी एवं स्नेह मिलन, २७ फ़रवरी
३. विकलाँग कल्याणोत्सव, २७ फ़रवरी
४. शिक्षा-विद सम्मेलन, २८ फ़रवरी
५. महिला सम्मेलन, २८ फ़रवरी
६. न्यायविद एवं विधिवेत्ता सम्मेलन, १ मार्च
७. चिकित्सक स्नेह मिलन, १ मार्च

उपरोक्त वर्गों के अतिरिक्त समाज के कुछ अन्य इतने ही या इससे भी अधिक महत्त्वपूर्ण वर्ग और भी हैं लेकिन सभी को इतने कम समय में स्थान देना सम्भव नहीं था; उनमें से कुछेक को हर हाल में छोड़ना ही पड़ता। और फिर, इस कार्यक्रम के पूर्व ही पिछले १० महीनों में समाज के कुछ वर्गों की सेवा काफ़ी विस्तृत रूप से की गई थी। उदाहरणतः राजनीतिज्ञों व संसद सदस्यों की सेवा पहले ही की जा चुकी थी और उनमें से बहुतों के साथ सम्पर्क स्थापित कर उन्हें महोत्सव में भाग लेने के लिए आमन्त्रित भी किया गया था। यह आप सम्मेलन में भाग लेने वाले प्रतिष्ठित व्यक्तियों की सूची में देख सकेंगे कि राजनीतिक नेता भी इसमें आमन्त्रित किये गये थे। शिक्षाविद सम्मेलन में बच्चों व युवाओं ने भी भाग लिया क्योंकि उस सम्मेलन में होने वाले बहुत-से विषय (Items) उन्हीं से ही सम्बन्धित थे और इसीलिए बहुत-से स्कूलों के बच्चे बड़े-बड़े समूहों में वहाँ आये भी थे। बिना किसी जाति-भेद व मत-भेद के समाज के सभी वर्गों के लोगों को किसी भी कार्यक्रम में आने की खुली छूट थी, इसलिए कोई भी व्यक्ति इनसे लाभ उठा सकता था।

उपरोक्त सम्मेलनों व समागमों के अतिरिक्त ईश्वरीय सेवा से सम्बन्धित महत्त्वपूर्ण विषय इस प्रकार थे।

ईश्वरीय सेवा के अन्य साधनों से सम्बन्धित सम्मेलन

१. अन्तर्राष्ट्रीय प्रदर्शनी एवम् महोत्सव का उद्घाटन, २४ फ़रवरी
२. राजयोग शिविर का उद्घाटन, २५ फ़रवरी
३. प्रकाश एवं ध्वनि कार्यक्रम का उद्घाटन, २५ फ़रवरी
४. शोभा यात्रा प्रस्थान समारोह, २६ फ़रवरी

उपरोक्त सम्मेलनों में सबसे पहला सम्मेलन अन्तर्राष्ट्रीय प्रदर्शनी के उद्घाटन से सम्बन्धित था। इसका लक्ष्य जनता के सम्मुख सच्चाई के मौलिक व महत्त्वपूर्ण तथ्यों पर प्रकाश डालना था। समाज के हर वर्ग के हर व्यक्ति को राजयोग का व्यक्तिगत लाभ देने के लिए राजयोग शिविरों का उद्घाटन समारोह मनाया गया। मानसिक तनाव, आसुरी संस्कार और अकुलीन प्रवृत्तियाँ आज के समाज की एक मुख्य समस्या है जिसके ही कारण समाज में अनेक बुराइयाँ पनप रही हैं, इसलिए प्रत्येक व्यक्ति चाहे वह किसी भी आयु का हो या किसी समाज या व्यवसाय विशेष से सम्बन्ध रखता हो, के व्यावहारिक

जीवन में राजयोग के महत्त्व तथा उससे होने वाली अनेक प्राप्तियों पर बहुत अधिक बल देकर समझाया गया।

विश्व-भर से सम्बन्धित विषय

उपरोक्त ११ सम्मेलनों के अतिरिक्त कुछ अन्य सम्मेलन तथा समागम भी आयोजित किये गये, जो इस प्रकार हैं :

१. विश्व-बन्धुत्व समारोह, २७ फ़रवरी
२. विश्व-कल्याण राजयोग महोत्सव, २७ फ़रवरी
३. आध्यात्मिक जागृति दिवस, २८ फ़रवरी
४. शान्ति एवम् सद्भाव सम्मेलन, १ मार्च
५. महोत्सव का अन्तिम दिवस तथा ४५ वाँ शिवरात्रि महोत्सव, ५ मार्च

ये पाँच कार्यक्रम संसार-भर के लिए महत्त्वपूर्ण थे और इनमें सभी के रुचिकर विषयों को रखा गया था। उदाहरण के तौर पर विश्व-बन्धुत्व समारोह का लक्ष्य भ्रातृ भाव को प्रोत्साहन देना था तथा इसका उद्देश्य विशेषकर इसी सच्चाई पर ज़ोर देना था कि विश्व-बन्धुत्व को सही अर्थों में तभी जाना जा सकता है यदि सभी स्वयं को व अन्य को आत्मा समझें और सर्व को परमपिता परमात्मा की सन्तान निश्चित करते हुए आध्यात्मिक दृष्टिकोण अपनायें।

विश्व-कल्याण राजयोग महोत्सव द्वारा इसी बात पर ज़ोर देकर समझाया गया कि नये युग का आरम्भ करने के लिए तथा स्वस्थ सामाजिक व नैतिक मूल्यों पर आधारित समाज का निर्माण करने के लिए राजयोग का कितना महत्त्व है।

भौतिकवाद के इस युग में आध्यात्मिक जागृति की आवश्यकता के महत्त्व को दर्शाने के लिए आध्यात्मिक जागृति सम्मेलन का आयोजन किया गया।

जातीय व कुलीन सामञ्जस्यता तथा विश्व में शान्ति लाने की अभिलाषा को कैसे पूर्ण किया जा सकता है, इसके लिए विश्व शान्ति व सद्भाव सम्मेलन का आयोजन किया गया। क्योंकि इस बात को कोई भी खण्डित नहीं कर सकता कि मानव का स्वप्न अशान्ति पूर्ण समाज नहीं था, चाहे भौतिक रूप में वह कितना ही धनी तथा विकसित क्यों न हो।

पाँचवा कार्यक्रम, जैसा कि इसके नाम से ही सिद्ध है, शिवरात्रि के उपलक्ष्य में आयोजित किया गया। शिवरात्रि परमात्मा का विश्व-कल्याण अर्थ इस सृष्टि पर मानव तन में अवतरित होने का सूचक है जिस कारण ही परमात्मा का गुणवाचक नाम 'शिव' है। महोत्सव के अन्तिम दिवस सभी को कल्याणकारी परमात्मा शिव का संदेश दिया गया। उन्हें बताया गया कि परमात्मा शिव इस धरती पर मनुष्य तन का आधार लेकर फिर से अवतरित हो चुके हैं तथा वह मनुष्यों को इस कलियुगी दुनिया से मुक्ति देने व स्वर्णिम युग की स्थापना का दिव्य कार्य कर रहे हैं।

निमन्त्रण पत्रों का वितरण

इन सम्मेलनों में सभी को आमन्त्रित करने के लिये, काफ़ी संख्या में हर कार्यक्रम के अलग-अलग निमन्त्रण पत्र छपवाये गये और विभिन्न व्यवसायों से सम्बन्धित व्यक्तियों जैसे न्यायविदों, चिकित्सकों, पत्रकारों आदि को वितरित किये गये। इन निमन्त्रण पत्रों का वितरण करने की सेवा विभिन्न सेवा-केन्द्रों के विद्यार्थियों, ब्रह्माकुमार भाइयों व ब्रह्माकुमारी बहनों ने की जिसके परिणाम स्वरूप बहुत-से व्यक्ति प्रदर्शनी, सम्मेलन व कुछ अन्य कार्यक्रमों में भाग लेने के लिए पधारे।

पहले तो हम सभी को यही उम्मीद थी कि इस महोत्सव का उद्घाटन प्रधान मन्त्री श्रीमती इन्दिरा गाँधी जी ही करेंगी। इस सम्बन्ध में इस कार्यक्रम के आयोजक उनसे मिले भी थे। उन्होंने अपनी इच्छा भी व्यक्त की थी तथा उन्हें यह पसन्द भी था परन्तु किन्हीं आवश्यक सरकारी कार्यों की वजह से वे न आ सकीं। सम्मेलन का उद्घाटन लोक सभा के स्पीकर, भ्राता बलराम झाकर ने किया।

विशिष्ट वक्तागण

विभिन्न सम्मेलनों में भाग लेने वाले विशिष्ट वक्ताओं के नाम निम्नलिखित हैं। इनके साथ-साथ बहुत ही अनुभवी व योग्य ब्रह्माकुमारी बहनों व ब्रह्माकुमार भाइयों ने भी भाग लिया।

१. भ्राता स्टीव नारायण, गयाना के उपराष्ट्रपति
२. श्रीमती स्टीव नारायण
३. मेडम सेली स्विग शैली, संयुक्त राष्ट्र संघ की ग़ैर-सरकारी संस्थाओं की प्रधान
४. भ्राता बलराम झाकर, स्पीकर, लोक सभा
५. भ्राता श्यामलाल यादव, उपाध्यक्ष, राज्य सभा
६. भ्राता एस० बी० चव्हाण, केन्द्रीय शिक्षा एवं समाज-कल्याण मन्त्री
७. भ्राता पी० सी० सेठी, केन्द्रीय पेट्रोलियम एवम् रसायन मन्त्री
८. भ्राता केदार पाण्डे, केन्द्रीय रेल मन्त्री
९. भ्राता वीरेन्द्र पाटिल, केन्द्रीय यातायात एवं जहाज़रानी मन्त्री
१०. भ्राता आर० वी० स्वामीनाथन, कृषि मन्त्रालय के राज्य मन्त्री
११. भ्राता निहार रंजन लश्कर, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मन्त्रालय के राज्य मन्त्री
१२. भ्राता जाफ़र शरीफ, रेल मन्त्रालय के राज्य मन्त्री
१३. डा० हेरल्ड स्ट्रेटफील्ड, कुण्डलिनी रिसर्च स्कोलर और एक विशिष्ट मनोवैज्ञानिक, सान फ्रांसिस्को, यू. एस. ए.
१४. भ्राता मगन भाई बरोत, वित्त मन्त्रालय के उपमन्त्री, गृह मन्त्रालय के राज्य मन्त्री
१५. भ्राता बृज मोहन मोहनती, आपूर्ति मन्त्रालय के उपमन्त्री
१६. बहन कुमुद बेन जोशी, सूचना एवम् प्रसारण मन्त्रालय की राज्य मन्त्री
१७. भ्राता जस्टिस मुर्तज़ा फ़ाज़ल अली, भारत के उच्चतम न्यायालय के न्यायाधीश
१८. भ्राता जस्टिस जसवन्त सिंह, अध्यक्ष, आरबिटरेशन बोर्ड
१९. भ्राता जस्टिस एच. आर. खन्ना, उच्चतम न्यायालय के भूतपूर्व न्यायाधीश
२०. भ्राता जस्टिस पी. के. गोस्वामी, उच्चतम न्यायालय के भूतपूर्व न्यायाधीश
२१. भ्राता जस्टिस वी. आर. कृष्णाअय्यर, उच्चतम न्यायालय के भूतपूर्व न्यायाधीश
२२. भ्राता जस्टिस टी. वी. आर. तातार्चारी, दिल्ली उच्च न्यायालय के भूतपूर्व मुख्य न्यायाधीश
२३. डा० वी जी० पोडोइनिटज़िन, भारत में यूनेस्को के प्रधान
२४. भ्राता आर० एम० अग्रवाल, जॉयन्ट सेक्रेटरी, गृह मन्त्रालय
२५. श्रीमती सुशीला रोहतगी, अध्यक्षा, केन्द्रीय समाज-कल्याण बोर्ड, दिल्ली
२६. डा० आई० डी० बजाज, डायरेक्टर जनरल, भारतीय स्वास्थ्य सेवा विभाग
२७. भ्राता छेदी लाल, भूतपूर्व लेफ्टिनेन्ट गवर्नर, पांडेचरी
२८. कर्नल डा० हंसा रावल, कैंसर विशेषज्ञ, टेक्सास, अमरीका
२९. भ्राता जॉन न्यूबरी, बी० बी० सी० के धार्मिक कार्यक्रमों के प्रोड्यूसर, लन्दन
३०. श्रीमती सावित्री निगम, अध्यक्षा, अखिल भारतीय गृहिणी संस्था
३१. मेडम एस्टला मायर्स, पत्रकार, न्यूएज लीडर, सिडनी, आस्ट्रेलिया
३२. डा० हीदी फीटकू, मनोचिकित्सक, पश्चिमी जर्मनी
३३. डा० वीडा स्कुलटन्स, ब्रिस्टल युनिवर्सिटी, इंग्लैण्ड

कुछ अन्य विशिष्ट व्यक्ति जिन्हें भी भाग लेना था

इनके अतिरिक्त भी कुछ विशिष्ट व्यक्तियों ने इन सम्मेलनों में वक्ता के रूप में भाग लेना था परन्तु किन्हीं आवश्यक कारणों के कारण वे सम्मिलित न हो सके। जैसे भ्राता पी० वी० नरसिंह राव, केन्द्रीय विदेश मन्त्री, भ्राता ज्ञानी जैल सिंह, केन्द्रीय गृह मन्त्री, श्रीमती माधुरी आर० शाह, अध्यक्षा, युनिवर्सिटी ग्रान्ट्स कमीशन, डा० राजेन्द्र कुमारी बाजपेयी, संसद सदस्य, भ्राता जे० एन० सिंह, कमिश्नर, दिल्ली नगर निगम इत्यादि।

हज़ारों की संख्या में अन्य व्यक्तियों से सम्पर्क किया गया। परन्तु सभी के नामों की सूची देना यहाँ बहुत कठिन होगा। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय के देहली क्षेत्र के मुख्यालय, पाण्डव भवन, में इस कार्यक्रम के सिलसिले में पहले ही कुछ केन्द्रीय मन्त्री, संसद सदस्य तथा अन्य विशिष्ट व्यक्ति पधारे थे। उनमें से कुछेक के नाम तथा इस संस्था के बारे में उनके विचार नीचे दिये जा रहे हैं:

१. भ्राता बी० डी० जत्ती, भारत के भूतपूर्व उपराष्ट्रपति

मुझे इस पवित्र स्थान पर आने से अत्यन्त प्रसन्नता हुई है। इस संस्था के सदस्य मानव को देवता बनाने का भरसक प्रयत्न कर रहे हैं। आज मानव पथ-भ्रष्ट हो गया है। इसे रोकने के लिए यह आवश्यक है कि बहुत-से ऐसे सेवा-स्थान खोले जायें तथा मानव को एक आदर्श इन्सान बनाया जाए।

२. भ्राता शिवराज पाटिल, रक्षा मन्त्रालय में राज्य मन्त्री

यहाँ के आध्यात्मिक चित्रों ने मुझे बहुत प्रभावित किया है। यदि यहाँ बताई गयी बातों को हम याद रखें तो हमारी बहुत-सी चिन्तायें व समस्याएँ समाप्त हो सकती हैं तथा हम एक अर्थ पूर्ण व खुशहाल जीवन व्यतीत कर सकते हैं। मनुष्य को और कुछ नहीं चाहिए, बस, वह केवल स्वयं को जान ले। अपने अन्दर निहित शक्तियों व अपनी कमज़ोरियों को समझ कर वह परमात्मा को मिलने का प्रयास कर सकता है और यही सब यहाँ पढ़ाया जाता है।

३. भ्राता बृज मोहन मोहनती, आपूर्ति मन्त्रालय के उप-मन्त्री

मैंने यह आश्रम देखा तथा यह देखकर अत्यन्त खुश हूँ कि यहाँ आध्यात्मिक शिक्षा देने का पुरुषार्थ किया जा रहा है।

४. भ्राता जोगिन्दर नाथ हज़ारिका, भूतपूर्व मुख्य मन्त्री आसाम

मैं इस पावन स्थल पर आकर बेहद खुश हूँ। यहाँ सृष्टि की स्थापना, पालना व विनाश के रहस्य को रेखाचित्र द्वारा भली-भाँति स्पष्ट किया गया है। मैं यहाँ के व्यक्तियों की ज्ञान में निपुणता से अत्यन्त प्रभावित हुआ जिस ज्ञान से हर आने वाले व्यक्ति को परमात्मा का संदेश दिया जाता है। मैं दोबारा भी आऊँगा।

५. भ्राता गुरुबख्श सिंह, उपकुलपति, दिल्ली विश्व विद्यालय

आज मैंने ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय देखा तथा यह जानकर अत्यन्त प्रसन्न हुआ कि पारिवारिक जीवन में आध्यात्मिक उत्थान लाने के लिए इस आश्रम द्वारा हर कोशिश की जा रही है।

६. भ्राता पी० सी० मुखर्जी, भूतपूर्व उपकुलपति, दिल्ली विश्व-विद्यालय

जन-जन में आध्यात्मिक जागृति लाने के लिए यहाँ हो रहे कार्य को देखकर मैं बहुत प्रभावित हुआ हूँ।

भ्राता सी० के० जाफ़र शरीफ़, रेल मन्त्रालय के राज्य मन्त्री

मानव के चरित्र निर्माण के कार्य में लगी हुई इस संस्था को देखकर बहुत सन्तोष हुआ। चरित्र का उत्थान, इन्सानियत व विश्व-शान्ति की स्थापना के लिए अत्यावश्यक है।

८. भ्राता पी० बी० वेंकटासुब्रमण्यम, सचिव, कानून एवं न्याय मन्त्रालय

इस संग्रहालय को देखने का एक अनोखा ही अनुभव था। यहाँ समझाये गये विषय विचारणीय हैं। यह प्रदर्शनी शिक्षाप्रद है, प्रेरणादायक है तथा एक महत्त्वपूर्ण उद्देश्य की पूर्ति करने वाली है।

९. भ्राता एम० पी० छाया, मुख्याध्यापक, भारतीय विद्या भवन, नई दिल्ली

यह बहुत प्रभावशाली संग्रहालय है। इसको देखने वाले पर गहरा प्रभाव पड़ता है क्योंकि यहाँ चित्रों द्वारा हर पहलू को बहुत अच्छी तरह से दर्शाया गया है। यहाँ दी गई शिक्षाएँ विद्यार्थियों, युवाओं, अध्यापकों व अन्य दूसरे व्यक्तियों के लिए

बहुत ही उपयोगी सिद्ध होंगी। मेरी हार्दिक इच्छा है कि अधिक-से-अधिक व्यक्ति यहाँ आकर लाभ उठायें।

१०. श्री सरनसिंह, सचिव, समाज-कल्याण मन्त्रालय, नई दिल्ली

आध्यात्मिक तथा मानसिक रूप से, सचमुच ही यह ऊँचा उठाने वाला अनुभव था। संग्रहालय में बने चित्र तथा मॉडल्स बहुत ही स्पष्ट रूप में, विचारणीय विषयों को हमारे सामने प्रस्तुत करते हैं। ब्रह्माकुमारी संस्था को अपने पर गर्व करने का हर अधिकार है कि यह अपने ६५० सेवाकेन्द्रों द्वारा समाज में कितना नैतिक उत्थान लाने में सफ़ल हो सकी है।

११. कैप्टेन बोध प्रिया, ऑनरेरी डायरेक्टर, न्यू इण्डिया सेन्टर

यह एक ऐसी संस्था है जो नैतिक मूल्यों की शिक्षा देने का कार्य कर सकती है।

१२. श्रीमती लीला मूलगाओनकर चार, सी० एस० डब्ल्यू० आर०

यहाँ बनाये गये आध्यात्मिक चित्र तथा मॉडल्स बहुत शिक्षाप्रद हैं। वर्तमान समय उच्चकोटि की नैतिक शिक्षा देने की बहुत आवश्यकता है। ब्रह्माकुमारियाँ यह कार्य सम्पूर्ण श्रद्धा, त्याग व तपस्या से कर रही हैं।

१३. श्री एल० बी० गोखले, समाचार सम्पादक, दि हिन्दुस्तान टाइम्स

मेरी पत्नी तथा मैं इस पावन संस्था को देखकर बहुत प्रसन्न हुए हैं। निस्सन्देह, ब्रह्माकुमारी संस्था हमें एक आदर्श इन्सान बनाने का सराहनीय कार्य कर रही है।

१४. श्रीमती सुमित्रा चरतराम, उद्योगपति

बहुत ही श्रेष्ठ कार्य है और मुझे आशा है कि बहुत-से लोग अब आध्यात्मिक मार्ग को अपनायेंगे। मानव जाति की सुरक्षा के लिए यह अत्यन्त आवश्यक है। इस कार्य की सफ़लता के लिए मेरी शुभकामनाएँ साथ हैं।

१५. श्री छेदीलाल, अध्यक्ष, रिज़र्व बैंक बोर्ड, भूतपूर्व लेफ्टिनेन्ट गवर्नर, पाँडेचेरी

संग्रहालय बहुत शिक्षाप्रद है। प्रभावशाली चित्रों व मॉडल्स के द्वारा जीवन के वास्तविक मूल्यों पर ज़ोर दिया गया है। यह संग्रहालय चरित्र-निर्माण में सहायक सभी व्यक्तियों—अध्यापकों, युवा नेताओं, समाज सुधारकों, आध्यात्मिक नेताओं द्वारा अच्छी तरह से देखा जाना चाहिए। ब्रह्माकुमारी बहनों व ब्रह्माकुमार भाइयों ने जिस उत्तम ढंग से मानव में उत्पन्न हो जाने वाले आसुरी संस्कारों तथा साथ ही साथ एक व्यावहारिक आदर्श जीवन का चित्रण किया है, वह बेहद प्रशंसनीय है।

१६. लेफ्टिनेन्ट कर्नल एस० सी० कटोच

इस पवित्र स्थान पर आकर मुझे ज्ञान प्रकाश मिला। इस संस्था द्वारा किये जा रहे कार्यों से भगवान व इन्सान के बीच की दूरी निश्चित रूप से मिट जाएगी जो शान्ति व विश्व-बन्धुत्व की भावना को फैलाने में मददगार सिद्ध होगी।

१७. डॉ० अनीस फ़ारुगिर, प्रधान, नेशनल गैलरी आफ़ माडर्न आर्ट, नई दिल्ली

यह प्रेरणादायक संस्था है।

१८. श्री वी० एन० गडगिल, संसद सदस्य

मैं यहाँ कुछ देर आकर भी बहुत सन्तुष्ट हुआ हूँ क्योंकि इस संस्था द्वारा किया गया कार्य सचमुच प्रशंसनीय है।

१९. श्री सुरिन्दर सिंह चौधरी, संसद सदस्य

इस स्थान पर आकर मैं बहुत खुश हूँ। मैं अत्यधिक सन्तुष्टता पाने के लिए फिर दोबारा भी आऊँगा।

२०. श्री एच० एन० नाघे गौड़ा, संसद सदस्य

यहाँ दिखाये गये चित्र शिक्षाप्रद हैं और अगर इनको विस्तार से कोई याद रखे तो उस पर गहरा प्रभाव पड़ सकता है। निस्सन्देह, ये दिल और दिमाग़ दोनों पर गहरी छाप छोड़ जाते हैं और यहाँ आकर शिक्षा लेने वाला हर व्यक्ति उस परमपिता परमात्मा को याद रखेगा।

२१. भ्राता भीखूराम जैन, संसद सदस्य, दिल्ली

हर मानव मन को आकर्षित करने वाले, जिस ढंग से जो शिक्षायें यहाँ दी जाती हैं, उसे देखकर मैं अति प्रसन्न हूँ। आज के इस अशान्त और व्याकुल संसार में ऐसे स्थान पर आकर सचमुच मन को ढारस मिलता है।

२२. भ्राता डी० एम० पुट्टे गौड़ा, संसद सदस्य, चिकमंगलूर, कर्नाटक

१७ जुलाई १९८० को मैं ने व मेरी धर्मपत्नी ने यह संग्रहालय देखा और यहाँ हमें आत्मा व परम आत्मा का ज्ञान दिया गया। यह जानकर अच्छा लगा कि हमें निर्विकारी जीवन व्यतीत करना चाहिए जो ही हमें खुशी के मार्ग पर ले जाएगा। मैं इस संस्था की प्रधान व यहाँ के विद्यार्थियों को देखकर बहुत प्रभावित हुआ हूँ।

२३. भ्राता मोहम्मद असरार अहमन, संसद सदस्य

इस स्थान पर, संसद सदस्य, श्री दिगम्बर सिंह के साथ आकर मुझे अत्यधिक हर्ष हुआ। भारत-वासियों को अपने देश में इस संस्था द्वारा किये जा रहे इस उच्च कार्य की प्रशंसा अथवा सराहना करनी चाहिए और इससे कुछ प्रेरणा लेनी चाहिए। विशेष-कर भारत के सभी नागरिकों को इस संस्था द्वारा किये जा रहे कार्य में सहयोगी बनना चाहिए। वर्त-मान समय की परिस्थितियों का मुकाबला करने के लिए केन्द्रीय तथा राज्य सरकार को इस संस्था तथा यहाँ के समर्पित कार्यकर्त्ताओं द्वारा उठाये गये श्रेष्ठ कार्य को सम्पन्न करने में मददगार बनना चाहिए।

२४. भ्राता मालदेव जी एम० ओडेरा, संसद सदस्य

मैं केन्द्र के अनुयायियों का बहुत कृतज्ञ हूँ। जिस सहज, सुलभ ढंग से यहाँ ज्ञान के गहरे रहस्यों को स्पष्ट किया गया है, उसे समाज का हर व्यक्ति समझ सकता है। यह संस्था आत्म-निर्भर है और धन-दौलत संग्रह करने में विश्वास नहीं रखती। मुझे पूर्ण निश्चय है कि यह संस्था एक विशाल रूप में और भी श्रेष्ठ कार्य करेगी।

२५. भ्राता नवल किशोर शर्मा, संसद सदस्य

मुझे इस ईश्वरीय विश्व-विद्यालय में आने का अवसर मिला। यहाँ चित्रों के माध्यम से आध्यात्मिक तथ्यों को समझाया जाता है! मानव को बुराइयों से दूर रखने की प्रेरणा देने में यह विद्यालय सफल होगा।

२६. भ्राता रामेश्वर निखरा, संसद सदस्य

इस संस्था द्वारा नैतिक शिक्षा देने का जो कार्य हो रहा है, वह बेहद प्रशंसनीय है।

२७. भ्राता चतुर्भुज, संसद सदस्य

यह दिव्य सेवा है। यही श्रेष्ठतम सेवा है।

२८. भ्राता कमल नाथ झा, संसद सदस्य

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय के करोल बाग़ स्थित केन्द्र पर आने का सौभाग्य मिला। यहाँ आकर मैं संस्था के लक्ष्य व उद्देश्य से परिचित हुआ। यहाँ के पावन वातावरण व चरित्र निर्माण के लिए हो रहे कार्य को देखकर मैं बहुत प्रभावित हुआ।

२९. भ्राता टी० एम० नेगी, संसद सदस्य

मैं प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्या-लय में आया हुआ हूँ। आज मुझे दूसरी बार आने का अवसर मिला। मुझे इस तरह की संस्थाओं में जाने का बहुत शौक है। सिर्फ़ समय के अभाव के कारण मैं यहाँ अधिक समय नहीं दे सकता। फिर भी इस संस्था द्वारा आयोजित हर कार्यक्रम में सम्मि-लित होने की मैं पूरी-पूरी कोशिश करता रहूँगा।

३०. बहन राजेन्द्र कुमारी बाजपेयी, संसद सदस्य

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय में मुझे आने का मौका मिला। परमात्मा का दिव्य संदेश फैलाने व अलौकिक तथ्यों को समझाने की विधि से मैं बहुत प्रभावित हूँ। जन-साधारण के लिए यह नैतिक शिक्षा अत्यावश्यक है।

३१. भ्राता बृजमोहन गोयल, संसद सदस्य

'सत्य' को जानना, 'सत्य' की रक्षा करना और अपने को उसी 'सत्य' के अनुसार बदलना यहाँ का लक्ष्य है।

३२. चौधरी दिगम्बर सिंह, संसद सदस्य

मैंने यह प्रदर्शनी पहले भी देखी है। मैं लम्बे अर्से से ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय के सम्पर्क

में रहा हूँ। कुछ चीज़ों से तो मैं बहुत ही प्रभावित हूँ। लोग उपदेश तो देते हैं परन्तु अमल नहीं करते, ब्रह्माकुमारियाँ जो कुछ कहती हैं, उसे जीवन में धारण करने का पुरुषार्थ भी करती हैं। ये ब्रह्मचर्य, पवित्रता, नम्रता, सात्विक अन्न तथा उच्च विचारों की मूर्त हैं। मेरे जीवन पर भी इसका प्रभाव पड़ा है। ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय में आकर ही हमें भाई-बहन के पवित्र नाते की महसूसता आती है। अगर मैं इनकी सभी विशेषतायें लिखने लगूं, उसकी तो एक पुस्तक बन जाएगी।

३३. भ्राता अमरसिंह, मावशार्ग

इस स्थान पर आकर मुझे बहुत खुशी हुई। आशा बहन ने ईश्वरीय ज्ञान के रहस्यों को भली भाँति स्पष्ट किया। यह एक अद्‌भुत संग्रहालय है। साधारण और अनपढ़ व्यक्ति भी चित्रों के माध्यम से सहज ही इतना उच्च ज्ञान समझ सकते हैं। जो कुछ यहाँ बताया गया है, अगर सभी उसे समझ लें, तो निश्चय ही सतयुग का अभ्युदय होगा। मेरी हार्दिक इच्छा है कि शिव बाबा द्वारा दिया गया ज्ञान सारे विश्व में फैले और सतयुग का आगमन हो जाए।

३४. भ्राता आर० बी० मारानी, संसद सदस्य

आज मैंने संग्रहालय देखा। मुझे यहाँ मानसिक शान्ति का अनुभव हुआ। आज, हर प्राणी शान्ति की खोज में है। अगर सभी लोग इस राह को अपना लें तो सब कष्टों का अन्त हो जाएगा।

३५. भ्राता वगुन सुम्बकी, संसद सदस्य

मैंने यहाँ आकर चित्रों को देखा और ब्रह्माकुमारी बहनों द्वारा इनमें छिपे रहस्यों को समझा। यहाँ आकर मुझे बहुत खुशी और शान्ति का अनुभव हुआ जिससे मेरे मन में इन्हें अपने जीवन में धारण करने तथा आत्मिक उत्थान करने की प्रबल इच्छा जागृत हो गई है।

३६. भ्राता हरीश चन्द्र रावत, संसद सदस्य

मैं अपने को बहुत भाग्यशाली मानता हूँ कि मुझे प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय में आने का मौका मिला। 'वास्तविक जीवन क्या है' उसे यहाँ चित्रों द्वारा दर्शाया गया है जिससे समझने में आसानी होती है। यह संस्था आध्यात्मिक शक्ति बढ़ाने की एक महान सेवा पर उपस्थित है। मुझे यहाँ ज्ञान प्रकाश और शान्ति की प्राप्ति हुई है। मैं यही सोचता हुआ इस स्थान को छोड़कर जा रहा हूँ कि मैं यहाँ फिर-फिर आता रहूँगा।

३७. भ्राता विनय दूबे, एम० एल० ए०, भोपाल

मैं कुछ ही समय में बहुत प्रभावित हुआ हूँ।

जिन्होंने इन सम्मेलनों में भाग लिया, उन्होंने इनमें लिये गये विषयों तथा उन्हें प्रस्तुत करने के तरीके के लिए बहुत उच्च विचार दिये हैं। न्यायविद और विधिवेत्ता सम्मेलन अथवा चिकित्सक सम्मेलन में जिन्हें निमन्त्रण दिया गया, उनमें से कुछेक तो यह समझ ही न पाये थे कि इन सम्मेलनों का आध्यात्मिक ज्ञान व राजयोग से क्या सम्बन्ध हो सकता है। लेकिन, जब वे इन कार्यक्रमों में आये तो वे प्रवचनों में दिये गए उच्च विचारों से बहुत प्रभावित हुए। कुछ श्रोतागण तो इतने खुश हुए कि उन्होंने अपने मित्रों व सम्बन्धियों को इन कार्यक्रमों में भाग लेने की सलाह दी। अब इतने सब लोगों के विचार यहाँ लिखना तो बहुत कठिन होगा लेकिन एक झलक दिखाने के लिए बीकानेर से पधारे हुए एक सुशिक्षित एवं विशिष्ट व्यक्ति के विचार नीचे दे रहे हैं!

रामदयाल शास्त्री, आयुर्वेद रत्न, आयुर्वेदाचार्य, सिंहस्थल पीठाधीश्वर लिखते हैं—मैंने बहुत से आध्यात्मिक सम्मेलन तथा महोत्सव देखे हैं परन्तु प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय द्वारा आयोजित विश्व-कल्याण महोत्सव सचमुच देखने योग्य व प्रशंसा-योग्य था।

इतने थोड़े समय में परम शिक्षक शिव बाबा ने अपने विद्यार्थियों को इतनी प्रेरणा दी है कि वे अपने जीवन में दिनोंदिन प्रगति करते हुए उन शिक्षाओं को सबके सामने उपस्थित कर रहे हैं।

हम धार्मिक लोग यह देखकर हैरान हैं कि इतनी बड़ी संख्या में हमारे देशवासी व विदेशी भी राजयोग की शिक्षाओं से प्रभावित होकर इन्हें व्यावहारिक जीवन में ला रहे हैं। हमने देखा कि अंग्रेज़ लोग भी इन आध्यात्मिक विचारों में एक मत हैं और इसलिए

(शेष पृष्ट ३७ पर)

राजयोग शिविर और उनका उद्घाटन

जैसे भौतिक विज्ञान (Physics) में प्रयोगशाला में प्रयोग का स्थान है वैसे ही अध्यात्म में राजयोग का महत्त्व है। अत: विश्व-कल्याण महोत्सव में अन्तर्राष्ट्रीय प्रदर्शनी का आयोजन तो इसलिए किया गया था कि उसे देखकर नर-नारी को सत्यता का बोध हो ताकि जीवन तथा उसमें घटने वाले वृत्तान्तों के प्रति **दृष्टिकोण ठीक हो** और राजयोग शिविर इसलिए लगाये गए थे कि उसमें मनुष्य को सत्य और वास्तविकता का प्रायोगिक अनुभव कराया जा सके। प्रदर्शनी में तो आत्मा, परमात्मा, सृष्टि मंडल, समय-चक्र, कर्मविधान, नैतिक गुणों का महत्त्व आदि विषयों के बारे में सत्य सिद्धान्त चित्रित किये गए थे परन्तु राजयोग शिविर में आत्मा और परमपिता की अनुभूति करने की क्रियात्मिक विधि, अनासक्त भाव से कर्म करने की विधि तथा जीवन में दिव्य गुण धारण करने की व्यावहारिक विधि सिखाई जाती थी। अत: यह स्वाभाविक ही था कि जिन्होंने प्रदर्शनी देखी और विभिन्न मंडपों में यह देखा कि यहाँ चित्रित किए गए सिद्धान्तों का सम्बन्ध व्यावहारिक जीवन से तथा राजयोग के अभ्यास से है, तब उन्होंने राजयोग के अभ्यास के लिए इच्छा प्रकट की। प्रदर्शनी स्थल पर ही ऐसे योगाभिलाषी जनों के लिए स्थान-स्थान पर योग-शिक्षार्थ परिचय एवं प्रवेश पत्र तो रखे ही हुए थे, अत: वे प्रपत्र भर कर दे देते थे और उन्हें अभ्यास के लिए सात्विक नियमों का ज्ञान करा दिया जाता था। तथा किस शिविर में उन्हें प्रवेश दिया गया है यह भी उन्हें बता दिया जाता था।

राजयोग शिविर प्रदर्शनी के पीछे की ओर उत्सव की चहल पहल से थोड़ा हट कर एकान्त और शान्त स्थान पर लगाए गए थे। इन शिविरों के फ़र्श पर, छत पर और चारों ओर धवल वस्त्र से मण्डित होने के कारण हंस की तरह श्वेत थे। हरेक अभ्यासी के सुविधापूर्वक बैठने के लिए गद्दियाँ रखी हुई थीं।

हरेक अभ्यासी को प्रतिदिन डेढ़ घंटे के लिए आना होता था और तीन दिनों तक लगातार शिविर में भाग लेना होता था।

राजयोग क्या है और क्या नहीं है ?

राजयोग में प्रवेश प्राप्त करने से पहले हरेक व्यक्ति स्वभवत: यह जानना चाहता था कि "राजयोग" से क्या लाभ होते हैं और राजयोग के अभ्यास में क्या करना होता है। वास्तव में तो राजयोग के विषय को स्पष्ट करने के लिए प्रदर्शनी में एक पूरा मंडप ही बना था और उसमें तथा अन्य मंडपों में भी यह चित्रित किया हुआ था कि राजयोग पवित्र एवं निर्विकार जीवन जीने की, सम्पूर्णता की ओर बढ़ने की तथा इसी जन्म में और इसके बाद में भी शान्ति में बने रहने की कला अथवा वैज्ञानिक विधि है। अनेक स्थलों पर दर्शाया गया था कि राजयोग "पवित्र बनो और सदा खुश रहो"—इस सूत्र पर आधारित जीवन-पद्धति है। यह घर बार छोड़कर जंगल या गुफ़ा में जाकर रहने का मार्ग नहीं है बल्कि यह तो सादा, सीधा, स्वाभाविक, शान्तिमय और शिष्टतापूर्ण रीति से सामाजिक जीवन जीने का सरल विधि-विधान है। राजयोग के विधि-विधान में कोई धर्म-भेद, भाषा-भेद या देश-भेद नहीं है बल्कि यह तो आध्यात्मिक प्रेम पर आधारित है जिससे कि सभी में तालमेल और रूहानियत पैदा होती है।

राजयोग के अनेकानेक लाभ हैं। राजयोग का अभ्यास करने वालों पर जो वैज्ञानिक प्रयोग किये

गए हैं। उनसे यह स्पष्ट है कि इसके अभ्यास से शरीर को विश्रान्ति और मन को शान्ति मिलती है, इससे मनुष्य के व्यक्तित्व में सात्विक परिवर्तन आता है और इससे शारीरिक रोग भी कम हो जाते या मिट जाते हैं। राजयोग द्वारा आदतों में सुधार होने तथा शरीर स्वस्थ होने की बात तो आज प्रायः सभी मानते हैं। अतः स्वाभाविक है कि विश्व-कल्याण के ऐसे महत्त्वपूर्ण साधन को तो इस उत्सव में विशेष स्थान दिया जाना ही था।

उद्घाटन कार्यक्रम

राजयोग शिविरों के उद्घाटन कार्यक्रम में भारत के गृह मंत्रालय तथा संसदीय मामलों के राज्य मंत्री भ्राता पी० वेंकटसुबइया मुख्य अतिथि थे। यह कार्यक्रम २५ फ़रवरी को, प्रातः ९-३० से ११-३० तक हुआ। जब मुख्य अतिथि लाल किला मैदान पर पधारे तो आयोजकों ने उनका स्वागत किया और मंत्री महोदय को विश्व-कल्याण प्रदर्शनी के मंडपों का दिग्दर्शन कराया गया। उन्हें देखकर वे राजयोग शिविरों की ओर बढ़े और वहाँ टेप काट कर उनका उद्घाटन किया।

वहाँ वे सभा-स्थल पर पहुँचे। सभा-मण्डप श्रोतागण से पूरा भरा हुआ था। इस कार्यक्रम में राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी चन्द्रमणि जी सभा की अध्यक्षा थीं और जयपुर की राजयोग शिक्षिका ब्रह्माकुमारी राधा मंच मंत्री थीं।

प्रारम्भ में कुछ मिनिट ईश्वरीय स्मृति का अभ्यास किया गया। तत्पश्चात् जालन्धर की कुमारी लवली और ग्रुप ने एक गीत पेश किया। तब मंच मंत्री ने राजयोग के कुछ आधारभूत मान्यताओं का वर्णन किया। उन्होंने कहा—"जिस राजयोग का यहाँ शिविरों में प्रशिक्षण दिया जाता है, वह इन मन्तव्यों पर आधारित है—

१. हरेक भौतिक वस्तु क्षणभंगुर है और जीवन का लक्ष्य इन भौतिक पदार्थों की प्राप्ति नहीं है बल्कि वे पदार्थ ही जीवन को स्थिर रखने के लिए हैं।

२. पवित्र कर्मों ही से जीवन में आनन्द की प्राप्ति होती है।

३. आत्मा-निश्चय अथवा परमात्मा के साथ प्रेममय सम्बन्ध जोड़ना राजयोग का सबसे आवश्यक भाग है।

४. पवित्रता और दिव्य गुणों की धारणा राजयोग के अभ्यास के लिए ज़रूरी है।

इसके बाद मंच मंत्री ने मुख्य अतिथि से कहा कि वे सभा को सम्बोधित करें।

पी० वेंकटसुबइया : राजयोग द्वारा महत्वपूर्ण कार्य हो सकता है।

भ्राता पी.वेंकटसुबइया ने कहा—"मैंने प्रदर्शनी और योग मंडप को देखा है और ब्रह्माकुमारियों द्वारा हो रहे कार्य का मुझ पर अच्छा प्रभाव पड़ा है। भारत में राजयोग के अभ्यास, शान्ति के प्रकम्पनों द्वारा विश्व में शान्ति का फैलाव किया जा रहा है। निस्सन्देह, राजयोग द्वारा लोगों के जीवन में महत्त्वपूर्ण परिवर्तन लाया जा सकता है। मुझे कार्यक्रम में आयोजकों ने मुख्य अतिथि के रूप में भाग लेने के लिए निमन्त्रण दिया, उसके लिए मैं उनका आभारी हूँ।

"राजयोग ही आनन्द का मार्ग है" : ब्रह्माकुमारी विमला

इसके पश्चात् आगरा क्षेत्र के ईश्वरीय सेवा-केन्द्रों की इंचार्ज ब्रह्माकुमारी विमला, जो कि स्वयं एक महान् योगिन हैं, ने राजयोग से होने वाली प्राप्तियों पर भाषण करते हुए कहा—"मनोविकारों से मन में जो बहुत गर्मी पैदा हो गई है, आध्यात्मिकता की वर्षा उसे ठण्डा कर देगी।" उन्होंने आगे कहा—"राजयोग द्वारा मनुष्य अपने शरीर पर शासन करना जान जाता है और बुरी आदतों से छुटकारा पा लेता है। जो आत्मा योगाभ्यास करती है वह मन की अशान्ति से छुटकारा प्राप्त करके आनन्दानुभूति कर लेती है और वह बुरे कर्मों की ओर अब प्रवृत नहीं होती।

इसके पश्चात राजयोग के मूल सिद्धान्तों का तथा अभ्यास-विधि का परिचय देते हुए उन्होंने कहा —"राजयोग एक ऐसी औषधि है जो आत्मा में नव जीवन लाती है और लोहे-सम बनी आत्मा को स्वर्ण-

सम बनाती है। यह ऐसा अमृत है जिस से आत्मा को आदि पवित्रता और स्व-स्थिति प्राप्त होती है और उसे सब अपवित्रताओं से मुक्त करती है। फिर, राजयोग का अभ्यास है भी सहज, इतना सहज कि एक बच्चा भी इसे कर सकता है। जिसने इसका कभी अभ्यास नहीं किया उसे इसके अतुल लाभ का ज्ञान नहीं होता।"

शिविर में राजयोग के अभ्यास की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा—"यही वह राजयोग है जिसके बारे में भगवान् ने गीता में कहा है—पहले भी मैंने ही प्राचीन काल में यह राजयोग सिखाया था और अब जब वह प्रायः लुप्त हो गया है तब, विश्व-कल्याणार्थ उसकी पुनः शिक्षा देने के लिए मुझे फिर आना पड़ा है क्योंकि इस गुह्य विद्या को मेरे सिवा अन्य कोई भी नहीं सिखा सकता।" उन्होंने कहा कि अब पुनः नैतिक पतन और धर्म-ग्लानि का समय है, और वह योग प्रायः लुप्त हो गया है। अतः अब पुनः परमपिता परमात्मा प्रजापिता के तन में अवतरित होकर सस्नेह उस योग की शिक्षा दे रहे हैं। उसी राजयोग द्वारा जन-जन को लाभान्वित करने के लिए, राजयोग शिविरों का आयोजन किया गया है जहाँ राजयोग का निःशुल्क ही तीन दिन का संक्षिप्त सिद्धान्त-परिचय और विधि-प्रशिक्षण दिया जायगा। इनमें से एक योगाशिविर अंग्रेज़ी जानने वालों और दो हिन्दी जानने वालों के लिए हुआ करेगा। प्रतिदिन नये शिक्षार्थियों के लिए नये शिविर प्रारम्भ होते हैं।

अन्त में उन्होंने कहा—"मैं आशा करती हूं कि बहुत-से लोग इन शिविरों का लाभ लेंगे।" इसके बाद—ब्रह्माकुमारी गीता ने राजयोग का थोड़ा अभ्यास कराया।

"आओ हम अभी राजयोग का अभ्यास करें"
ब्रह्माकुमारी गीता

भावनगर में ईश्वरीय सेवा केन्द्र की इंचार्ज, ब्रह्माकुमारी गीता ने कहा "अच्छा होगा कि हम अभी यहाँ ही राजयोग का थोड़ा अभ्यास कर लें।" यह कहकर उन्होंने राजयोग के अभ्यास का अति संक्षिप्त परिचय देते हुए, थोड़े समय के लिए प्रदर्शन देते हुए सभी से कहा कि वे कुछ ज्ञान वाक्य बोलती जायेंगी और सभी मौन में उसका मनन करते हुए उसके अर्थ में स्थित होते चलें। तब ब्रह्माकुमारी गीता ने इस प्रकार उच्चारण किया :—

"मैं एक आत्मा हूं, एक ज्योतिर्मय चेतन सत्ता हूं। मैं एक अनादि और अविनाशी ज्योति बिन्दु हूँ और अपने आदि स्वरूप में पवित्र एवं शान्त हूं। मैं सर्वशक्तिमान परमात्मा का वत्स हूं और स्वयं प्रकाश एवं शान्त स्वरूप हूँ। मैं पवित्र और शान्त शक्ति हूँ। यह संसार एक मुसाफ़िरखाना है जहाँ मैं परमधाम से आया हूँ। वही मुझ आत्मा का आध्यात्मिक देश है जहाँ प्रकाश और शान्ति है। उस शान्तिधाम ही से मैं जो एक ज्योति का चेतन तारा-सा हूँ, इस संसार में आया हूँ और मैंने वापस उसी पवित्र और लाल-सुनहरे, प्रकाश वाले उसी देश में ही वापस जाना है। मैं शान्तिस्वरूप हूँ, प्रकाश हूँ, शक्ति हूँ और अपने आदि स्वरूप में पवित्र हूँ…"

इस प्रकार वे माइक्रोफ़ोन पर धीमी आवाज़ में बोल रही थीं और योगाभ्यास के लिए कुछ रूप-रेखा प्रस्तुत कर रही थीं।

"हमें राजयोग के अभ्यास द्वारा परमपिता परमात्मा के समान बनना चाहिए।"—ब्रह्माकुमारी चन्द्रमणि

अब कार्यक्रम की अध्यक्षा, ब्रह्माकुमारी दादी चन्द्रमणी जी ने कहा कि परमात्मा आत्माओं का परमपिता है और मनुष्यात्मा राजयोग द्वारा उससे सम्बन्ध जोड़कर परमात्मा से ईश्वरीय गुणों आदि की विरासत ले सकती है। योगाभ्यास द्वारा मनुष्य का मनोबल बढ़ता है, उसमें अपनी बुरी आदतों को छोड़ने की क्षमता आती है और वह परमात्मा की तरह पवित्रता तथा शान्ति, प्रेम और सद्गुणों से भरपूर होती जाती है।

उन्होंने आगे कहा—"राजयोगी शरीर से न्यारे होते हैं; इसलिए अन्य, सांसारिक लोगों से उनका अनुभव निराला होता है। शरीर से न्यारेपन की अनुभूति सचमुच बहुत प्रिय स्थिति होती है। अतः

हरेक को चाहिए कि स्वयं को देह मानने की बजाय इस प्रकार मनन-चिन्तन एवं योगाभ्यास करें :—

"मैं एक चेतन ज्योति-बिन्दु हूँ। मैं परमपिता शिव का एक अनादि-अविनाशी वत्स हूँ। परमपिता शिव प्रकाश स्वरूप, प्रेम स्वरूप, शान्तिस्वरूप और सर्वशक्तिमान हैं और मैं एक शिव-शक्ति सम्पन्न आत्मा हूँ जो कि परमधाम अथवा ज्योतिधाम से यहाँ आया हूँ। अब मेरा तीसरा चक्षु खुल गया है और मेरे शारीरिक बन्धन टूट गये हैं……।"

कर्मयोगी की आध्यात्मिक स्थिति पर प्रवचन करते हुए उन्होंने कहा—"कर्मयोगी की बुद्धि परम-पिता से युक्त होने के फलस्वरूप वह न उलटा कर्म करता है और न उसका बुरा फल भोगता है। वह अपने साँसारिक कर्त्तव्य करते हुए, स्वयं को परमात्मा का एक निमित्त मात्र मानता है। वह लोभ, क्रोध, काम, विकार तथा ईर्ष्या इत्यादि से ऐसे ही ऊपर उठ कर रहता है जैसे कमल कीचड़ से उठा रहता है। ऐसा ही योग यहाँ योग-शिविरों में सिखाया जायगा : यह राजयोग ही का एक भाग है।

उन्होंने आगे कहा—"साँसारिक लोग तो आज हम से प्रेम करते हैं और कल उनका प्रेम समाप्त हो जाता है। परन्तु शिव बाबा का और राजयोगी का प्रेम स्थायी बना रहता है। राजयोगी का मन करुणा से भरपूर होता है। अतः मेरी यह शुभ कामना है कि आप सभी राजयोगी बनें और पवित्र प्रेम तथा शान्ति की किरणें बिखेरते हुए विश्व-कल्याण में इस प्रकार सहयोग देने का सौभाग्य प्राप्त करें।"

उन्होंने कहा—"सभी लोग स्थायी शान्ति चाहते हैं। ऐसे मानव-समूह में से केवल धर्म-प्रिय लोग ही मानते हैं कि केवल परमात्मा ही शान्ति का दाता है परन्तु वे भी नहीं जानते कि परमात्मा से मन कैसे युक्त किया जाय और उससे पूर्ण शान्ति और आनन्द की पूर्ण प्राप्ति कैसे की जाय। अब उस करुणामय मात-पिता परमात्मा शिव ने प्रजापिता ब्रह्मा के मानवी माध्यम द्वारा ईश्वरीय ज्ञान दिया है और राजयोग का सहजतम और सही मार्ग दर्शाया है। सच तो यह है कि अब परमात्मा से योग लगाने में वह स्वयं सहायक हैं। अतः इस स्वर्णावसर का लाभ ले ही लेना चाहिए। मैं एक बार फिर सभी को शुभ सुझाव देती हूँ कि सभी आत्मा-निश्चय वाले हों क्योंकि 'देहाभिमान पतन की जड़ है' और अशान्ति का मूल कारण है।"

इसके पश्चात अहमदाबाद में सुपरिन्टेंडिंग इंजीनियर भ्राता जेठवाजी ने राजयोग द्वारा अपने कल्याण का संक्षिप्त अनुभव सुनाया। उन्होंने मुख्य अतिथि का, अध्यक्ष महोदया का, वक्ताओं का तथा श्रोताओं का धन्यवाद व्यक्त किया और तब एक दिव्य गीत के बाद मंच मंत्री ने सभा-विसर्जन की घोषणा की।

राजयोग शिविरों में अनुभव

राजयोग शिविर २६ फ़रवरी की प्रातः से प्रारम्भ हुए थे। अनुभवी योगिन बहनों ने इनका संचालन किया। उन्होंने इस विषय की इस प्रकार व्याख्या की और मार्ग प्रदर्शना की कि शिविर करने वालों को यह विषय रुचिकर, सहज और प्रैक्टीकल मालूम हुआ। लगभग १२०० व्यक्तियों ने राजयोग शिविर के लिए फार्म भरे थे। ५ मार्च को अर्थात् महोत्सव की समाप्ति की सन्ध्या को एक स्नेह-मिलन रखा गया था जिसमें आने के लिए कई लोगों को सूचना मिली थी। उस कार्यक्रम में तीन दिन का पूरा शिविर करने वाले कोई एक सौ से अधिक बहन-भाई उपस्थित थे। उनमें से बहुत-से बहन-भाइयों ने अपना अनुभव व्यक्त किया। उनमें से कुछेक के लिखित अनुभव इस प्रकार हैं :—

१. कुमारी भान, एम० ए०, बी० टी०, डी० पी० ई०, एन० ए० (अमेरिका), अवकाश प्राप्त प्रिंसिपल—यह शिविर अवस्था को बहुत ही ऊँचा उठाने वाले थे। मुझे ऐसा अनुभव होता है कि मैं ईश्वरानुभूति के ठीक मार्ग पर चल रही हूँ।

२. रामलाल कक्कर, अवकाश प्राप्त शिक्षक—ये शिविर आत्मा के उत्थान के लिए बहुत ही उपयोगी थे। अगर लोग इस राजयोग का अभ्यास करने लगें तो निश्चय ही समाज को दुःख और अशान्ति से मुक्ति मिलेगी।

३. नन्दलाल पुरी, डाक्टर—मेरे विचार में परमात्मा की अनुभूति के लिए यह बहुत ही सहज मार्ग है। मैं इस विधि का और अधिक अध्ययन करना चाहता हूँ।

४. एल० एस० कपूर, अकाउन्टेंट—राजयोग के अभ्यास की इस सहज विधि को सीखकर मुझे जो शान्ति और खुशी प्राप्त है, उसका मैं वर्णन नहीं कर सकता।

(अन्तर्राष्ट्रीय प्रदर्शनी)
(पृष्ट २५ का शेष)

६. पी० के० रोहतगी, देहली—यह प्रदर्शनी बहुत प्रभावशाली है। इससे आत्मिक जागृति होती है। ऐसे आध्यात्मिक मेलों का उद्घाटन प्रायः होते रहना चाहिये और लोगों को आध्यात्मिक शिक्षा मिलती रहनी चाहिये।

७. श्रीमती कलिका दीवान, प्रिंसिपल स्प्रिंग फ़ील्ड स्कूल— राजयोग शिविर मुझे और मेरे परिवार के सदस्यों को बहुत ही पसन्द आया। डॉ० सरोज दीवान ने हमें बहुत अच्छे ढंग से समझाया जिससे हमें यह ज्ञान मिला कि दुनिया में ईश्वरानुभूति के लिये हमें कुछ समय अवश्य देना चाहिये तभी हम संसार को सुखी बना सकते हैं।

८. एस० पी० सूद, सरकारी सेवा, नई देहली— प्रदर्शनी देखकर और बहनों द्वारा व्याख्या सुनकर बहुत खुशी हुई। इनसे सृष्टि के रचयिता परमात्मा को याद करने की प्रेरणा मिलती है।

९. जे० एम०एल०तम्बी० उद्योगपति, देहली— प्रदर्शनी बहुत ही शिक्षाप्रद और अच्छी है।

इस प्रकार की सम्मितियाँ बहुत-से लोगों ने लिखी हैं।

(राजयोग शिविर और उनका उद्घाटन)
(पृष्ट ३२ का शेष)

हमारे देशवासियों के लिए प्रेरणा का स्रोत हैं।

लेकिन हमें एक कमी महसूस हुई। वह यह कि आयुर्वेदिक चिकित्सकों को चिकित्सक सम्मेलन में वक्ता के रूप में नहीं शामिल किया गया और सारा कार्यक्रम अंग्रेज़ी भाषा में ही हुआ जिसके कारण वे लोग जो अंग्रेज़ी नहीं जानते, यहाँ हुए प्रवचनों से लाभ लेने से वंचित रह गये।

साधारणतया हम ऐसा देखते हैं कि जो कुछ लोग कहते हैं और जो कुछ वे करते हैं, उसमें बहुत फ़र्क होता है। लेकिन इस संस्था में भाई-बहन का पवित्र स्नेह, सात्विक और निर्विकार जीवन, दूसरे मत के उपदेशकों तथा अनुयायियों के आगे एक अद्वितीय उदाहरण हैं।

प्रकाश और ध्वनि कार्यक्रम और उसका उद्घाटन

महोत्सव के दिनों में, लाल किला मैदान पर प्रतिदिन जो दृश्य और श्रव्य (लाईट एण्ड साउण्ड) कार्यक्रम हुआ वह बहुत ही लोकप्रिय था। निस्सन्देह वहाँ जो प्रदर्शनी लगी थी वह भी काफ़ी आकर्षक थी और प्रतिदिन रात्रि को जो दिव्य नाटक आदि होते थे वे भी कोई कम दिलचस्प न थे परन्तु "लाइट एण्ड साउण्ड" कार्यक्रम का अपना अनोखा ही आकर्षण था।

इस कार्यक्रम को सफ़ल बनाने के लिये बहुत परिश्रम करना पड़ा। उपयुक्त आलेख (Script) तैयार करना, उसे ध्वनि और दृश्य में पेश करने के योग्य बनाना, इसके लिये बिजली और ध्वनि के उपकरणों को जुटाना तथा इनका उपयोग करने वाले तकनीकी लोगों का प्रबन्ध करना, इस आलेख को "दृश्य एवं श्रव्य रूप" देने वाले कलाकारों, निर्देशकों आदि को इसके निर्माण के लिये संगठित करना, विभिन्न दृश्यों की पृष्ठ भूमिका के लिये पर्दे या चित्र या ढाँचे तैयार कराना तथा इस "शो" (Show) में होने वाले अभिनय की "रिहर्सल्स" (दुहराई) कराना —ये सब इतना विशाल कार्य था जिसे सीमित अवधि में और सीमित ही साधनों से सम्पन्न करना था। सबसे कठिन कार्य तो स्टुडियो को आरक्षित (Book) कराने के बाद निश्चित दिन निर्देशक और कलाकारों को उक्त समय पर एकत्रित करके सब-कुछ रेकार्ड कराना और दृश्य तथा श्रव्य दोनों को तालमेल देना था और विशेष मुश्किल यह थी कि इस कार्य के लिये पूर्वानुभव या तकनीकी अनुभव का अभाव था। परन्तु यह सब शिव बाबा को ही श्रेय है कि उनकी प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष सहायता से यह सब कार्यक्रम ठीक बन सका। इसमें सन्देह नहीं है कि इसमें और सुधार हो सकते थे परन्तु पहला प्रयत्न होने के बावजूद भी ऐसा बन पाया कि इसे देखने के लिये बहुत बड़ा जन-समूह एकत्रित हो जाता था।

कथा-वस्तु का केन्द्र-बिन्दू

इस कथा-वस्तु का केन्द्र ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय की स्थापना के निमित्त बने व्यक्ति के जीवन का एक तो वह भाग था जो ज्योतिस्वरूप परमात्मा के अवतरण से पूर्व उनकी अपनी तैयारी से सम्बन्धित था और इसका मुख्य भाग उस समय से सम्बन्धित था जिसमें अशरीरी परमात्मा शिव ने इनकी काया में प्रविष्ट अथवा अवतरित होकर इनके माध्यम से गुह्य, आध्यात्मिक एवं पारलौकिक ज्ञान दिया, प्रेम और कृपा वृष्टि का और आत्माओं को पवित्रता तथा आनन्द का मार्ग दर्शाया।

यद्यपि इसमें प्रजापिता ब्रह्मा की जीवन-कहानी को ज्यों का त्यों ही, उसमें कुछ जोड़े बिना, प्रस्तुत किया गया था तो भी इस कथा-वस्तु में वह सब-कुछ स्वभावतः ही था जो किसी ड्रामा में होता है। वास्तव में ब्रह्मा बाबा के अपने व्यक्तित्व में ऐसे कई गुण थे जो ऐसे अनोखे थे कि दर्शकों का ध्यान स्वतः ही उस ओर खिच जाना स्वाभाविक है। उनकी जीवन-कहानी में ही वीरता, सहनशीलता, प्रेम, संघर्ष, किंचित दुःखात्मक तत्व हैं जो कि धीरे-धीरे जीवन-वृत्त को शिखर-स्थल तक ले जाते हैं। सामाजिक भित्ति भी कथावस्तु के अनुकूल है। कथा में एक गुणवान नायक भी है और उसका विरोध करने वाले पात्र भी हैं। अतः वास्तव में यह ऐसा जीवन्त ड्रामा है जिसकी तरह का दूसरा कोई ड्रामा अभी तक मंच पर, नाटक-ग्रंथों में या सिने स्क्रीन पर नहीं देखा गया होगा क्योंकि इसमें वासना के हाव-भाव या कामुकता एवं अशलीलता की ज़रा भी दुर्गन्ध नहीं है बल्कि इसमें तो काम विकार को संसार-भर से

निकाल देने का एक अच्छा खासा संग्राम है। महिलाएँ इसमें हैं परन्तु आज फ़िल्म में महिलाओं का प्रायः जो पार्ट होता है उससे यह बिल्कुल ही विपरीत है। इसमें तो महिलाओं द्वारा एक पवित्र आन्दोलन का सूत्रपात है।

इसमें न कोई हिंसा है न बन्दूकबाजी और न सीनाज़ोरी के दृश्य बल्कि इसमें तो ऐसे दूषित संस्कारों की बेड़ियों को काट फेंकने के लिए जद्दोजहद है। इसमें नायक विरोधियों के हथकंडों का ऐसी शान्ति और शालीनता से सामना करता है कि जिसका कोई उदाहरण नहीं। यह जीवनवृत उत्सुकता या कौतूहल या भावावेशों से रहित नहीं है बल्कि इसमें हर क्षण कौतूहल बढ़ता ही जाता है और आखिर वह समय आ पहुँचता है जब प्रजापिता ब्रह्मा अव्यक्त अथवा फ़रिश्ते की-सी स्थिति को प्राप्त करते हैं और उनकी स्थूल, नाशवान देह भी लोक-सेवा के कार्य में निमित्त बनती है। यह अन्तिम दृश्य भी कौतूहल लिये एक ड्रामा ही है। इसे देखने वाले किसी व्यक्ति के लिये तो यह दुःखान्त घटना हो सकती है क्योंकि अब वह अपने प्रिय नायक को उस साकार रूप में नहीं देख सकेगा; दूसरे किसी दर्शक के लिये यह सुखान्त भी हो सकती है क्योंकि इतने संघर्ष और इतनी कठिनाइयों के बाद बाबा को अन्तिम विजय और उत्कृष्टता प्राप्त हुई है और, इसलिये दर्शक स्वार्थ छोड़कर ब्रह्मा बाबा के अव्यक्त आरोहन को स्वीकार कर लेता है। इसके अतिरिक्त, दर्शक देखता है कि यह केवल किसी मनुष्य या महान् आत्मा की कथा नहीं है बल्कि इस कथावस्तु का परम नायक तो स्वयं परमात्मा ही है। इस प्रकार की कथावस्तु की तो पहले कभी कल्पना भी नहीं हो सकती थी। यह तो हमारे जीवनकाल में हुई ऐतिहासिक वृतान्त पर आधारित है।

कथावस्तु की रूप-रेखा

इस कथा-वस्तु का आरम्भ सतयुग से होता है जब कि संसार में सब-कुछ नियमपूर्वक ठीक ही था। तब एक ही भाषा थी और लोगों का जीवन श्रेष्ठ और सुखी था। तब समाज और वातावरण में धीरे-धीरे परिवर्तन होता गया और त्रतायुग और फिर द्वापरयुग आया। तब मनुष्य पवित्रता, सुख और शान्ति के लिये परमात्मा से भिन्न-भिन्न प्रकार से प्रार्थना करने लगा और इसके आधार पर अनेक धर्म तथा मत-मतान्तर स्थापित होने लगे। इस में वृद्धि होती गयी और अब लड़ाई, हिंसा, प्रतिशोध की भावना, लोभ तथा काम आदि भी बढ़ते गये और परिणाम यह हुआ कि कलियुग का अन्त आ पहुँचा। इसी पृष्ठ भूमिका में ही प्रजापिता ब्रह्मा को और उनके तन में, विश्व-कल्याणार्थ परमपिता परमात्मा शिव के अवतरण के ऐतिहासिक वृतान्त को लाइट-एण्ड-साउण्ड के दृश्यों में पेश किया गया। यह सारा "शो" एक घण्टे से कुछ कम अवधि का था।

उद्घाटन कार्यक्रम

भ्राता मगन भाई बारोत, केन्द्रीय अर्थ मन्त्रालय में उपमन्त्री, इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि थे। सूरत के राजयोग केन्द्र की इंचार्ज, ब्रह्माकुमारी लता ने तथा मेक्सीको से आये वैज्ञानिक भ्राता जुलियन बोल्स ने भी इस कार्यक्रम के अन्तर्गत भाषण किये। पाटन में एक कालेज में हिन्दी विभाग के अध्यक्ष डॉ० हरीश शुक्ल ने कार्यक्रम का संचालन किया।

कार्यक्रम के प्रारम्भ में सभी कुछ मिनट ईश्वरीय स्मृति में स्थित हुए और बाद में दिव्य संगीत के साथ स्वागत नृत्य हुआ।

कार्यक्रम की विशेषताएँ और उद्देश्य

सूरत-स्थित राजयोग केन्द्र की इंचार्ज ब्रह्माकुमारी लता ने कहा—"किसी ऐतिहासिक घटना या जीवन-वृत को बुद्धिजीवी लोगों के लिये एक दिलचस्प तरीके से व्यक्त करने के लिये लाइट एण्ड साउण्ड एक अच्छा माध्यम है। यहाँ जो लाइट एण्ड साउण्ड शो दिखाया जायेगा उसमें एक ऐसे अद्भुत व्यक्ति की जीवन गाथा है जिसने इसी जीवन में एक फ़रिश्ते-जैसी अव्यक्त स्थिति प्राप्त कर ली। उस व्यक्ति का नाम दादा लेखराज था और वह एक धनाढ्य जवाहिरी थे। जब दादा लेखराज की आयु लगभग साठ वर्ष की थी, तब उन्हें चतुर्भुज विष्णु का,

परमपिता परमात्मा शिव का, कलियुगी पतित सृष्टि के महाविनाश का और नई, पवित्र, सतयुगी सृष्टि की पुनर्स्थापना का दिव्य साक्षात्कार हुआ। तब परमपिता परमात्मा उनके तन में अवतरित हुए और उन्होंने उसको अब "प्रजापिता ब्रह्मा" नाम दिया और उनके द्वारा ईश्वरीय विश्व-विद्यालय की स्थापना की। यह ईश्वरीय विश्व-विद्यालय आज सत्य आध्यात्मिक ज्ञान दे रहा है, राजयोग द्वारा चरित्र-निर्माण का कार्य कर रहा है और विश्व-भ्रातृत्व का सन्देश फैला रहा है और भारत के प्राचीन जीवन-दर्शन की तथा संस्कृति की शिक्षा दे रहा है। धीरे-धीरे, बढ़ते-बढ़ते, अब यह ईश्वरीय विश्व-विद्यालय विश्व-भर में वास्तविक ईश्वरीय ज्ञान और ईश्वरीय सन्देश लोगों तक पहुँचाने की सेवा कर रहा है ताकि मनुष्य अपने जीवन में उस शिक्षा को धारण करे और जीवन को दिव्य गुणों को अपनाये और इस प्रकार मनुष्य से देव पद पाये तथा सतयुगी शान्तिमयी सृष्टि की पुनर्स्थापना के कार्य में सहयोगी बने।

"यह बहुत ही प्रेरणाप्रद जीवन-वृत है"

जुलियन बोल्स

मेक्सिको से आये वैज्ञानिक भ्राता जुलियन बोल्स ने कहा—"प्रजापिता ब्रह्मा की जीवन कहानी से मुझे तथा अन्य देशों में अनेकों को बहुत प्रेरणा मिली है। इस ईश्वरीय विश्व-विद्यालय के कार्य द्वारा बहुत-से विदेशी बहन-भाइयों के जीवन में ज्ञान-प्रकाश मिला है और अद्भुत आध्यात्मिक परिवर्तन हुआ है। यहाँ जो ज्ञान दिया जाता है वह व्यावहारिक है और तर्क-संगत भी है। भारत ही वह भूमि है जहाँ गीता में बताये अपने वचन के अनुसार, धर्म-ग्लानि के समय, संगमयुग में भगवान का अवतरण होता है। अतः यह बहुत ही खुशी की बात है कि हमें परमपिता से मिलने का स्वर्णावसर प्राप्त हुआ है। यह जो लाईट-एण्ड-साऊंड शो होने जा रहा है, इसके द्वारा अनेकानेक आत्माओं को परमात्मा के अवतरण का पता चलेगा और उन्हें जीवन को दिव्य बनाने की प्रेरणा मिलेगी।"

भगवान पाण्डवों ही के साथ है : मगन भाई बारोत

केन्द्रीय सरकार में वित्त मन्त्रालय में उपमंत्री भ्राता मगन भाई जी, जो मुख्य अतिथि थे, ने कहा—"आध्यात्मिक और नैतिक मूल्य समाज के लिये अत्यन्त आवश्यक हैं और आप इस क्षेत्र में जो कार्य कर रहे हैं, वह प्रशंसनीय है। यह विश्व आप-जैसे राजयोगी भाइयों और बहनों के कार्य द्वारा ही स्वर्ग बन सकता है। मैंने स्वयं इस ईश्वरीय विश्व-विद्यालय के आबू पर्वत पर स्थित मुख्यालय पाण्डव भवन के आध्यात्मिक वातावरण का अनुभव किया है। मुझे यहाँ की शिक्षाओं का, आध्यात्मिक दिनचर्या का और विश्व-भर में हो रहे चरित्र-निर्माण सम्बन्धी कार्य का भी परिचय है। परन्तु, मुझे खेद है कि ये सब जानते हुए भी व्यस्तताओं के कारण हम इनसे पूरा लाभ लेने तथा इसमें सहयोगी बनने से असफ़ल रह जाते हैं।"

उन्होंने आगे कहा—"आजकल की सामाजिक स्थिति वैसे ही है जैसे कि महाभारत काल में थी। आज पृथ्वी पर कौरवों की संख्या बहुत बड़ी है जबकि पाण्डवों की बहुत थोड़ी ही गिनती है परन्तु मेरा विश्वास है कि भगवान पाण्डवों ही के साथ है और अन्तिम विजय पाण्डवों ही की होगी। दुर्योधन की भाँति हमारा मन कई बार अस्पष्टता और उलझन में होता है परन्तु दूसरी ओर हमारे मन में बात स्पष्ट भी है। उन्होंने अपने भाषण का अन्त करते हुए कहा—"परमात्मा निश्चय ही आपके साथ है और उसकी शक्ति ने विदेशों के बहन-भाइयों पर भी अपना प्रभाव डाला है। एक दिन आयेगा जब विश्व के लोग आपके अद्भुत एवं नवीन ज्ञान-प्रकाश को जानेंगे।" इस प्रकार ईश्वरीय विश्व-विद्यालय के बारे में अपने विचार व्यक्त करते हुए उन्होंने लाइट-एण्ड-साउन्ड का उद्घाटन घोषित किया।

"पवित्रता के बिना शान्ति नहीं और राजयोग के बिना पवित्रता नहीं"—ब्रह्माकुमारी भारती

राजयोगिनी भारती जी ने कहा—"आज के विश्व में शान्ति की बहुत आवश्यकता है परन्तु जिसे शान्ति की इच्छा है, उसे यह जानना चाहिये कि पवित्रता के बिना मनुष्य को शान्ति प्राप्त नहीं हो सकती

और ईश्वरीय ज्ञान एवं योग पर आधारित आत्म-निश्चय के बिना मनुष्य में पवित्रता नहीं हो सकती, ईश्वरीय ज्ञान तथा ईश्वरीय राजयोग की शिक्षा तो परमात्मा ही देते हैं।" उन्होंने कहा कि "लाईट एण्ड साउन्ड शो" में यही दिखाया गया कि परमपिता परमात्मा कैसे इस संसार में एक साकार माध्यम में अवतरित होकर मनुष्यात्माओं को ईश्वरीय ज्ञान और राजयोग की शिक्षा देकर शान्ति का मार्ग दिखाते हैं। उनकी शिक्षा अव्यक्त बनने अथवा मनुष्य को देवता बनने की प्रेरणा देती है।"

इसके बाद उन्होंने महात्मा गाँधी का हवाला देते हुए कहा—"उन्होंने भारत को अंग्रेज़ों से स्वतन्त्रता दिलाने के लिये अपना सर्वस्व लगा दिया। परन्तु इस शो में परमात्मा द्वारा सर्व आत्माओं को माया अथवा मनोविकारों रूपी विदेशियों से मुक्त करने का कर्तव्य दिखाया हुआ है। हरेक मनुष्य को चाहिये कि अपने इन आन्तरिक शत्रुओं से छुटकारा पाने का पुरुषार्थ करें। इससे ही आज जो भ्रष्टाचार और अनुशासनहीनता है, उसका अन्त होगा।"

इसके बाद गोरे गाँव, बम्बई के सेवा केन्द्र की इंचार्ज ब्रह्माकुमारी दिव्या ने सामूहिक योगाभ्यास कराया। इसके फलस्वरूप ऐसा लग रहा था जैसे कि आत्माएँ शान्ति का दिव्य अनुभव कर रही हैं। और हल्कापन महसूस कर रही हों।

अन्त में अहमदाबाद के इंजिनीयर, कर्मयोगी भ्राता मोहन जी ने जिन्होंने लाईट एण्ड साउन्ड के कार्यक्रम की सफ़लता के लिये रात-दिन कार्य किया था, सभी को धन्यवाद दिया। उपस्थित जनों में गुजरात के एक संसद सदस्य भ्राता हीरालाल भी थे और सूरत से आये भ्राता पटेल जी भी। उन्हें भी लाईट-एण्ड-साउन्ड कार्यक्रम बहुत अच्छा लगा था।

आखिर एक दिव्य गीत और राजयोग के अभ्यास के साथ इस कार्यक्रम का अन्त हुआ और, इसके शीघ्र ही बाद आदरणीय ब्रह्माकुमारी प्रकाशमणि जी तथा हज़ारों प्रतिनिधियों की उपस्थिति में भ्राता मगन भाई बारोत ने दीपक जगाकर कार्यक्रम का उद्घाटन किया। उसके पश्चात लगभग एक घंटा लाइट-एण्ड-साउन्ड शो हुआ जिसे देखकर अनेक लोगों को प्रेरणा मिली।

❀❀

(न्यायविद एवं विधि वेता सम्मेलन पृष्ठ ६१ का शेष)

निमन्त्रण दिया।

अन्त में दिल्ली उच्च न्यायालय के भूतपूर्व मुख्य न्यायाधीश जस्टिस टी० वी० आर० तातायारी सभी का आभार वादन प्रकट करने के लिए खड़े हुए। उन्होंने गयाना के उपराष्ट्रपति भ्राता स्टीव नारायण जी तथा अन्य विदेशों से सैंकड़ों की संख्या में आये हुए प्रतिनिधियों का धन्यवाद किया जो अपने घरों से हज़ारों मील की यात्रा तय कर अपने भारतवासी भाइयों के आध्यात्मिक कल्याण के लिए दिल्ली आये थे। उन्होंने देश के विभिन्न प्रान्तों से आये हुए प्रतिनिधियों का भी शुक्रिया अदा किया जो आत्मिक उत्थान के लिए विभिन्न कठिनाइयों को झेलते हुए दिल्ली आये थे। उन्होंने जस्टिस मुर्तज़ा फ़ाज़ल अली, जस्टिस पी० के० गोस्वामी और जस्टिस एच० आर० खन्ना का भी आभार प्रगट किया जिन्होंने अपनी व्यस्त दिनचर्या में से इस कार्यक्रम के लिए समय निकाला। उन्होंने श्रोताओं को भी धैर्यता से सुनने के लिए धन्यवाद दिया क्योंकि कार्यक्रम लम्बा हो जाने के कारण उनके भोजन में भी विलम्ब हो गया था। अन्त में उन्होंने आयोजकों का धन्यवाद किया जिन्होंने उन्हें कार्यक्रम में भाग लेने, इतनी जागरूक वार्तायें सुनने व ऐसे विशिष्ट अतिथियों का आभार प्रकट करने का अवसर दिया।

एक दिव्य गीत के साथ सभी उस परमपिता परमात्मा की स्मृति में बैठे और इस तरह सम्मेलन का सुखद अन्त हुआ।

❀❀

विश्व कल्याण महोत्सव के अवसर पर हुए धर्म नेता समागम की रिपोर्ट

लाल किला मैदान में आयोजित "विश्व कल्याण महोत्सव" के अवसर पर अनेक विश्व आध्यात्मिक सम्मेलन हुए, जैसे कि शिक्षाविद सम्मेलन, न्यायविद सम्मेलन, विधिवेत्ता सम्मेलन, महिला सम्मेलन, पत्रकार सम्मेलन, चिकित्सक सम्मेलन आदि-आदि। इनमें "धर्म-नेता समागम" भी अपना विशेष स्थान रखता है। यह "धर्म-नेता समागम" २६ फ़रवरी को प्रातः ९ बजे से ११ बजे तक हुआ जिसमें विभिन्न धार्मिक नेताओं ने भाग लिया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य यह था कि हमारे ईश्वरीय विश्व-विद्यालय द्वारा आयोजित इस विशाल "विश्व-कल्याण महोत्सव" में सभी वर्ग सम्मिलित हों, विशेषकर प्रमुख धार्मिक नेतायें, ताकि जनता में आध्यात्मिक जागृति लाने के इस कार्य में सभी का योगदान अथवा शुभ कामनायें प्राप्त हों।

इसके लिए अनेक प्रमुख धार्मिक नेताओं से सम्पर्क किया गया तथा उन्हें इस कार्य में आमन्त्रित किया गया। इनमें से अधिकाँश धर्म-नेता पहले से ही हमारे विश्व-विद्यालय के सम्पर्क में हैं जिन्होंने इस कार्यक्रम में भाग लिया, उनका विवरण इस प्रकार है :—

१—निज़ामुद्दीन दरगाह मरकज़ के पीर ज़ामिन निज़ामी साहब।

२—चर्च आफ़ नार्थ इण्डिया के मौडरेटर (moderator) एवं बिशप ई० एस० नासिर।

३—महाबोधी सोसाइटी आफ़ इण्डिया के सचिव भ्राता आर्यवंश महाथेटा जी।

४—श्री अरविन्द आश्रम, दिल्ली शाखा जो अब वर्ल्ड यूनियन (world union) के नाम से प्रचलित है, के अध्यक्ष भ्राता छेदीलाल जी।

५—विश्व बहाई संस्था के सचिव भ्राता आर० एन० शाह एवं मलेशिया से पधारे हुए भ्राता नागरत्न जी।

६—हरिद्वार से पधारे हुए मुनि हरमिलापी जी।

७—विद्या ज्योति के सोसाइटी आफ़ जीसस के फादर टी० के० जॉन।

प्रदर्शनी के विभिन्न मण्डपों में जाना

प्रातः ९ बजे जब कुछ धर्म-नेता लाल किला मैदान में पहुँचे तो सर्वप्रथम उन्हें इस अवसर पर आयोजित विशाल प्रदर्शनी में ले जाया गया तथा एक ब्रह्माकुमारी बहन ने उन्हें अनेक मण्डपों में विभिन्न आध्यात्मिक विषयों पर बने चित्रों पर समझाया। प्रदर्शनी के द्वारा उन्हें ईश्वरीय ज्ञान के अनमोल रहस्यों का पता चला, जिन्हें परमात्मा शिव ने प्रजापिता ब्रह्मा के द्वारा बताया है। उनका ध्यान विशेषतया इस ज्ञान के मूलाधार तथ्यों की ओर खिचवाया गया। वे प्रदर्शनी में दर्शाये गये आध्यात्मिक सत्यों तथा आध्यात्मिक लाईट हाऊस बनाने के कार्य में जुटे हुए बहन-भाइयों के कठिन परिश्रम को देख कर बहुत प्रभावित हुए। प्रदर्शनी को देखने के पश्चात वे पण्डाल में पधारे।

पण्डाल में मंच को बहुत सुन्दर रीति से सजाया गया था। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता कानपुर ज़ोन के ईश्वरीय सेवा-केन्द्रों की इंचार्ज, ब्र० कु० आत्म इन्द्रा जी ने की तथा पेट्रोलियम मंत्री भ्राता पी० सी० सेठी जी मुख्य अतिथि थे। पहाड़गंज सेवा केन्द्र की इंचार्ज ब्र० कु० शील बहन ने मंच सचिव के रूप में कार्यक्रम का संचालन किया। कार्यक्रम का आरम्भ सरोज बहन ने एक दिव्य गीत द्वारा किया। मंच

सचिव शील बहन ने सभी उपस्थित आदरणीय अतिथियों का स्वागत करते हुए कार्यक्रम का उद्देश्य बताया।

परमात्मा के साथ नाता जोड़ने से ही एकता आ सकती है : चार्ल्स होंग

इसके पश्चात आस्ट्रेलिया से पधारे हुए भ्राता चार्ल्स होंग ने भाषण किया। उन्होंने कहा कि आज समय की यह पुकार है कि मनुष्य अपने जीवन में आध्यात्मिक व नैतिक मूल्यों को महत्त्व दे और देह के धर्मों को भूलकर शान्ति और पवित्रता के स्वधर्म में स्थित हो। उन्होंने कहा, कुछ लोग एकता को लाने के लिए मेहनत कर रहे हैं परन्तु जब लोग अपने मन में अनेक प्रकार की हदें तथा दीवारें बना लेते हैं, तो एकता को कैसे लाया जा सकता है ?स्वयं की पहचान से ही एकता की भावना उत्पन्न हो सकती है। आओ, हम सब एक परमात्मा के साथ नाता जोड़ें, एकता स्वयं ही हमारे अन्दर आ जायेगी।" उन्होंने कहा कि सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि आज विश्व में उचित नेतृत्व का अभाव है। आओ हम सब ईश्वर के ही नेतृत्व को स्वीकार करें। तब अनेक प्रकार के संकट स्वयं समाप्त हो जायेंगे।

उसके पश्चात विभिन्न धर्म-नेताओं ने संक्षेप में अपने-अपने शुभ सन्देश सुनाये। सभी ने अपने सन्देश में जहाँ एक ओर जनता में आध्यात्मिक जागृति एवं नैतिक उत्थान की आवश्यकता पर बल दिया, वहाँ उन्होंने इस दिशा में ब्रह्माकुमारी संस्था द्वारा किए जा रहे चरित्र उत्थान के कार्य की सराहना भी की।

आध्यात्मिक क्रांति द्वारा ही विश्व में शान्ति आ सकती है : भ्राता छेदीलाल

वर्ल्ड यूनियन दिल्ली शाखा के चेयरमैन, तथा पान्डिचरी के भूतपूर्व उपराज्यपाल भ्राता छेदीलाल जी ने कहा—मुझे पूर्ण विश्वास है कि वह दिन दूर नहीं जब इस महान संस्था के सतत प्रयत्नों से इस संसार में आध्यात्मिक क्रान्ति की लहर आएगी और परिणामस्वरूप वर्तमान अशान्तपूर्ण विश्व के स्थान पर नई सुखमयी सृष्टि का निर्माण होगा।

आपसी समझ तथा प्यार से ही एकता को लाया जा सकता है : पीर निजामी

निज़ामुद्दीन दरगाह मरकज़ के पीर ज़ामिन निज़ामी जी ने कहा कि आज मानव के हृदय में से सच्चा रूहानी प्रेम खत्म होता जा रहा है और स्वार्थ की भावना बढ़ती जा रही है। उन्होंने अपने संक्षिप्त संदेश में परस्पर रूहानी स्नेह पर बल दिया।

सामूहिक प्रयत्न करो : आर० एन० शाह

विश्व बहाई फ़ेथ के सचिव भ्राता शाह ने सभी धार्मिक संस्थाओं को एकता से कार्य करने को कहा।

इसके पश्चात महाराष्ट्र ज़ोन की बहन ब्र० कु० राजेश्वरी जी ने सामूहिक योग कराया। कुछ क्षणों के लिए सारा वातावरण शान्ति एवं आनन्द की सूक्ष्म किरणों से भर गया था। जब वह योगाभ्यास करा रही थीं, सभी के मन दिव्य श्रेष्ठ संकल्पों से भरपूर थे और सभी को शान्ति, एकता तथा सद्भावना का अनोखा अनुभव हो रहा था तथा पण्डाल में सम्पूर्ण शान्ति छाई हुई थी इससे सिद्ध होता है कि बुरे विचारों को खत्म कर तथा राजयोग अभ्यास द्वारा ही एकता लाई जा सकती है।

शान्ति की योजना पर चर्चा करना अच्छा है— ई. एस. नासिर

चर्च आफ़ नार्थ इण्डिया के बिशप, भ्राता ई० एस० नासिर ने कहा : विश्व के धार्मिक नेताओं को विश्व शान्ति की योजना के लिए इकट्ठा होने का जो अवसर प्राप्त हुआ है उसे गम्भीरतापूर्वक लेना चाहिए। आज की दुनिया में विश्व-शान्ति सम्बन्धी समस्याओं की चर्चा करने के लिए, हमें एक-दूसरे से मिलने का अवसर कम मिलता है उन्होंने प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय के प्रयत्नों की सराहना करते हुए कहा कि इन्होंने इस समस्या के समाधान के लिए ३४ देशों के प्रतिनिधियों को आमन्त्रित करने में सफ़लता प्राप्त की। उन्होंने कहा, "आज की प्रमुख समस्या ही है—विश्व शान्ति तथा इस दिशा में कार्य कर रही ब्रह्माकुमारी संस्था एक विश्व व्यापी संस्था है। इस कार्य में मेरी शुभ कामनायें सदा आपके साथ हैं।"

विज्ञान और आध्यात्मिकता को साथ-साथ कार्य करना चाहिए : पी० सी० सेठी

भारत के पेट्रोलियम मन्त्री, भ्राता सेठी जी ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि आज जब कि संसार बड़ी तीव्रता से भौतिकवादिता की ओर बढ़ रहा है, इस बात से इन्कार नहीं किया जा सकता कि इस समय आध्यात्मिकता की आवश्यकता भी महसूस की जा रही है। उन्होंने कहा जनता को आध्यात्मिक दिशा देने के लिए समय प्रति समय ऐसे कार्यक्रमों का आयोजन बहुत आवश्यक है। उन्होंने कहा "न तो युद्ध के अस्त्रों-शस्त्रों द्वारा शान्ति की प्राप्ति हो सकती है और न ही भौतिक तथा वैज्ञानिक उन्नति से सच्ची शान्ति की प्राप्ति होती है परन्तु यदि विज्ञान और आध्यात्मिकता में समन्वय हो तो विश्व में शान्ति निश्चित ही स्थापित हो सकती है।

उन्होंने कहा कि ब्रह्माकुमारी संस्था ने इस महोत्सव को आयोजित करने में कठिन परिश्रम किया है और उन्होंने उनके आयोजन कार्य, आध्यात्मिक वातावरण, श्रेष्ठ मिशन तथा लग्न को देखकर हार्दिक बधाई दी।

राजयोग-विश्व शान्ति का एकमात्र साधन : ब्रह्माकुमारी आत्म इन्द्रा

कार्यक्रम की अध्यक्षा महोदया राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी आत्म इन्द्रा जी ने अपने अध्यक्षीय भाषण में अज्ञान निद्रा में सोये मानव को आध्यात्मिक प्रवचन में बताया कि संसार में बढ़ती हुई विनाश सामग्री के कारण तथा बड़े-बड़े देशों में इस सामग्री को इकट्ठा करने की होड़ के कारण संसार में विनाश ज्वाला कभी भी भड़क सकती है और कुछ ही क्षणों में यह सृष्टि जलकर खाक हो सकती है। इस संदर्भ में उन्होंने वर्तमान समय की पहचान कराते हुए कहा कि अब कलियुग के अन्त तथा सतयुग के आदि का पुरुषोत्तम संगमयुग चल रहा है जबकि विश्व-कल्याणकारी परमात्मा स्वयं प्रजापिता ब्रह्मा के मानवीय तन में अवतरित होकर ईश्वरीय ज्ञान एवं राजयोग की शिक्षा द्वारा वर्तमान, विकारी सृष्टि को परिवर्तन कर एक पवित्र तथा सतयुगी दुनिया स्थापन करने का कार्य कर रहे हैं। राजयोग की विशेषताओं को महत्वपूर्ण बताते हुए, कार्यक्रम की अध्यक्षा महोदया ने बताया कि राजयोग बहुमूल्य खजाने की कुँजी है। यह एक ऐसा साधन है जिससे संसार में विद्यमान सर्व प्रकार की असन्तुष्टता को दूर किया जा सकता है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि राजयोग ही इसका एक मात्र उपचार है। राजयोग द्वारा हम हर प्रकार की परिस्थिति का सामना कर सकते हैं, ईश्वर को हम आत्माओं के सहयोग की आवश्यकता है ताकि इस सृष्टि पर पुनः पवित्रता, सुख तथा शान्ति स्थापित हो सके। आओ, हम उनके आवाहन को स्वीकार करें। उन्होंने सभी को परमात्मा शिव का "पवित्र बनो, राजयोगी बनो" का दिव्य सन्देश दिया।

अन्त में सभी आदरणीय अतिथियों को अपने विश्व-विद्यालय की ओर से ईश्वरीय साहित्य भेंट किया गया और उनमें से कुछ अम्बेडकर आडीटोरियम (Auditorium) में चले गए जहाँ से शान्ति यात्रा का भव्य जलूस प्रारम्भ होना था।

—:०:—

विश्व–कल्याण महोत्सव के अवसर पर दिल्ली में निकाली गई शान्ति यात्रा की रिपोर्ट

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के इतिहास में दिल्ली में आयोजित विश्व-कल्याण महोत्सव के अवसर पर २६ व २७ फ़रवरी को निकाली गई विशाल शान्ति यात्रा जिसमें भारत के सभी प्रान्तों तथा विश्व के ३४ देशों से आये हुये दस हज़ार से भी अधिक प्रतिनिधियों ने भाग लिया, एक अविस्मरणीय वृत्तान्त के रूप में लिखी जायेगी। आध्यात्मिक तथ्यों पर आधारित १७ सुन्दर झाँकियाँ इस विशाल शान्ति-यात्रा की विशेष आकर्षण थीं। दिल्ली की जनता का कहना है कि "आज तक हमने किसी भी धार्मिक संस्था द्वारा इतना बड़ा जलूस तथा इतनी विशाल सुन्दर झाँकियाँ जो भिन्न-भिन्न आध्यात्मिक विषयों को स्पष्ट कर रही थीं, नहीं देखीं।" अनेकों ने तो यहाँ तक कहा कि "ब्रह्माकुमारी संस्था द्वारा जलूस की झाँकियाँ तो गणतन्त्र दिवस पर २६ जनवरी को निकलने वाली झाँकियों से भी कहीं अधिक सुन्दर तथा विशाल थीं। इस शान्ति-यात्रा द्वारा जहाँ एक ओर जनता में आध्यात्मिक उन्नति की दिशा में संस्था द्वारा की जा रही सेवाओं की विशेष चर्चा हुई और हज़ारों लोगों की शंकायें तथा भ्रान्तियाँ दूर हुईं, वहाँ दूसरी ओर अपने विश्व-विद्यालय के नियमित रूप से शिक्षा प्राप्त करने वाले भाई-बहनों के दिलों में एक नया उमंग एवं उत्साह उत्पन्न हुआ।

तीन किलोमीटर लम्बी यात्रा और उसमें सभी श्वेत वस्त्रधारी

शान्ति-यात्रा का विशाल रूप इस बात से सिद्ध होता है कि २६ तारीख़ को जब शान्ति-यात्रा का अन्तिम भाग (Tail of the Procession) अम्बेडकर स्टेडियम से बाहर निकला तो इसका सब से आगे का भाग (Head of the Procession) दरिया गंज से होता हुआ चान्दनी चौक में टाऊन हाल के समीप पहुँच चुका था। अर्थात यह शान्ति यात्रा तीन कि० मी० से भी अधिक लम्बी थी। दिल्ली गेट, दरिया गंज, चान्दनी चौक का सारा मार्ग श्वेत वस्त्रधारी भाई-बहनों से भरा हुआ था और ऐसा लग रहा था मानो पीली झन्डियों, मोटोज़ (Mottoes) व बैनर आदि लिये हुये श्वेत वस्त्र धारी फ़रिश्तों का सागर उमड़ पड़ा हो। योग-युक्त मुद्रा में चलते हुये ये फ़रिश्ते जनता की नज़रों का केन्द्र बने हुए थे। कोई भी नारे आदि नहीं लगाये जा रहे थे, अपितु ये भाई-बहन अपने चेहरों व नयनों में रूहानियत भरे हुए जनता को शान्ति का सन्देश दे रहे थे।

तो आइये, आपको दिल्ली गेट के समीप अम्बेडकर स्टेडियम में ले चलें, जहाँ से २६ तारीख़ को यह विशाल शान्ति-यात्रा आरम्भ हुई। यह स्टेडियम दिल्ली का एक प्रमुख स्टेडियम है जहाँ फुटबाल मैच खेले जाते हैं। इसमें चारों ओर दर्शकों के बैठने के लिये सीढ़ियाँ बनी हुई हैं। प्रात: ९ बजे देश-देशान्तर से आये हुये भाई बहनों का आना आरम्भ हो गया, और देखते ही देखते पूरा स्टेडियम भर गया। इसमें भारत के विभिन्न प्रान्तों तथा विदेश के भाई-बहनों के बैठने की व्यवस्था बड़े सुचारू रूप से की गई थी। पूरे स्टेडियम को १३ सैक्टरों में बाँटा गया था। स्टेडियम के मुख्य प्रवेश द्वार के अतिरिक्त बायें और दायें दो प्रवेश द्वार और थे, जिन द्वारा चार्ट के अनुसार भाई-बहनों को अन्दर भेजा गया। स्टेडियम में अन्दर जाते ही बाईं ओर सीढ़ियों पर एक मंच बना हुआ था जिसे अच्छी प्रकार से फूलों व झन्डों से

सजाया गया। मंच के बिल्कुल सामने एक २० फुट ऊँचे पोल पर शिव बाबा का झण्डा हवा में बड़ी शान से लहरा रहा था। मंच के बाईं ओर कुछ कुर्सियाँ रखी गई थीं, जिन पर ज़ोन की बड़ी बहनों तथा कुछ प्रतिष्ठित व्यक्तियों को बिठाया गया। सारे स्टेडियम में लाउड स्पीकर लगे थे। हरेक सैक्टर में लिखित संकेतक (Indicator Stands) रखे हुये थे जिन पर उस प्रान्त का नाम लिखा था जिससे सभी को बिना पूछताछ किये, अपने-अपने सैक्टर में बैठने में कोई कठिनाई नहीं हुई।

स्टेडियम में बैठने की व्यवस्था

भारत का शायद कोई ही प्रान्त बचा हो जहाँ से अपने भाई-बहन न आये हों। मंच के बाईं ओर ख़ाली स्थान पर सैक्टर न० १ में बंगाल, बिहार, उड़ीसा, आसाम तथा नेपाल एवं तमिलनाडू के ११०० भाई-बहन बैठे थे। बाईं ओर ही सैक्टर २, ३ में महाराष्ट्र व आन्ध्र प्रदेश के १७०० भाई-बहन थे। उसी ओर सैक्टर न० ४, ५ में गुजरात ज़ोन के १५०० भाई-बहन बैठे थे। मंच के सामने सैक्टर न० ६, ७, ८ में दिल्ली ज़ोन के २००० से भी अधिक भाई-बहन बैठे थे। सैक्टर न० ९ में ३४ देशों से आये हुये ४०० विदेशी भाई बहन बैठे थे। इन देशों के नाम इस प्रकार हैं—इंग्लैण्ड, बैल्जियम, स्विटज़रलैन्ड, कम्बोडिया, ब्राज़ील, मैक्सिको, आस्ट्रेलिया, जापान, फ्रांस, हांग-काँग,दुबई,कोलम्बिया, स्पेन, सिंगापुर,अमेरिका, गियाना, ट्रिनिडाड, बारबेडोज़, केन्या, ज़ाम्बया, लाईबेरिया, ज़िम्बाबवे, जर्मनी, केनैडा, आयरलैंड, न्यूज़ीलैंड, मौरिशियश। दाईं ओर सैक्टर ११ में कर्नाटक के १५०० भाई-बहन बैठे। न० १२ में पंजाब,हरियाणा, हिमाचल तथा मध्य प्रदेश के ९०० भाई-बहन थे। न० १३ में राजस्थान, तथा यू० पी० के १००० भाई-बहन बैठे थे।

लगभग दस हज़ार से भी अधिक श्वेत वस्त्रधारी भाई-बहन, जो भारत के कोने-कोने तथा विश्व के अनेक देशों से आये थे, इस स्टेडियम में इकट्ठे हो गये। एक विशाल जन-समूह नज़र आ रहा था। इस अवसर पर अव्यक्त बाप-दादा की प्रेरणा के अनुसार शान्ति यात्रा में चलने के समय हाथ में पकड़ने के लिये शिव बाबा की २००० प्लास्टिक की पीली झण्डियाँ बनाई गई थीं। ७"×६" इंच की सुन्दर झण्डियों पर शिव बाबा के चित्र पर चमकता हुआ सितारा दूर से नज़र आ रहा था। स्टेडियम में इन झण्डियों को हाथ में लिये हुए भाई-बहनों का यह दृश्य एक अद्भुत सुन्दर दृश्य था। जिस ओर दृष्टि जाती थी, इन सुन्दर झन्डियों को हाथों में लिये हुये सफ़ेद वस्त्रधारी भाई-बहन नज़र आते थे। यहाँ तो समस्त भारत, नहीं, नहीं, पूरा विश्व (Miniature world) इकट्ठा हो गया था। यहाँ अपने-अपने प्रान्तों, देशों, भाषाओं व धर्मों के भेद भाव का प्रश्न नहीं था। सभी उस सर्वशक्तिवान, सर्व आत्माओं के परमपिता परमात्मा के झन्डे के नीचे बैठे थे। ऐसा लग रहा था कि सभी अपने देह-अभिमान को भूल कर अपने आत्मिक स्वरूप की स्थिति में स्थित थे। देह के धर्मों की तथा अनेक भेद-भाव की दीवारें टूट चुकी थीं। विश्व को यह सन्देश देने के लिये यह विशाल जन-समूह उत्सुक था कि आओ, ऐ विश्व के लोगों, हम धर्म, प्रान्त, भाषा, रंग के भेद-भाव को भूल जायें तथा अपने को उस परमपिता परमात्मा की सन्तान निश्चय करते हुये हम विश्व-कल्याण का कार्य करें। सभी में एक नया जोश, उमंग तथा उत्साह था।

दादी जी और दीदी जी का प्रवेश

अरे, यह देखो, इस विशाल आध्यात्मिक सैना की मुख्य सैनानी दादी एवं दीदी जी अनेक भाई-बहनों के साथ मुख्य प्रवेश द्वार की ओर आ रही हैं। भ्राता प्रेम प्रकाश उन्हें मंच पर ले गये। मंच पर पहुँचते ही ब्राह्मणकुल भूषणों की स्नेह-मूर्त दीदी एवं दादी जी ने हाथ हिलाकर स्टेडियम में बैठे हुये हज़ारों भाई-बहनों का अभिनन्दन किया। सारा स्टडियम तालियों की आवाज़ से गूंज उठा। अपने बीच दीदी एवं दादी जी को पाकर सभी प्रफुल्लित हो उठे। ओहो। ये क्षण कितने हर्ष, उल्लास, उमंग तथा आनन्द के थे।

मंच पर एक संक्षिप्त कार्यक्रम चला। पहले तो शान्ति यात्रा के समय बजने वाला तथा जोश भरने

वाला एक मधुर गीत (Marching Song) स्टेडियम में गूंज उठा। इस महोत्सव में हमारे आदरणीय अतिथि के रूप में न्यूयार्क से पधारी हुई राष्ट्र संघ के गैर सरकारी संस्था-संगठन की चीफ, मैडम सैली स्विंग शैली (Sally Suing Shally) भी आई। उन्होंने भी हाथ हिलाकर तथा कुछ शब्द बोलकर अपने हर्ष को प्रकट किया। दीदी, दादी ने भी सभी में जोश व खुशी भरने वाले कुछ महावाक्य उच्चारे। थोड़ी ही देर में फ़ोटोग्राफ़र तथा मूवी फ़िल्म लेने वालों का ग्रुप आ पहुँचा। स्टेडियम में चारों ओर बैठे हुये १०,००० भाई-बहनों का इकट्ठा ही एक फ़ोटो लिया गया। इस अद्‌भुत दृश्य का फोटो ६ फुट लम्बे काग़ज़ पर तैयार हुआ है जो कि एक अविस्मरणीय याद-गार के रूप में रहेगा। मूवी फ़िल्म वालों ने जब फिल्म निकाली, तो सभी भाई बहन अपने हाथों में पकड़ी हुई झण्डियाँ हिला रहे थे। बहुत ही आकर्षक दृश्य था यह।

शान्ति यात्रा के रूट में अनायास परिवर्तन

इधर स्टेडियम के बाहर का दृश्य भी कम आक-र्षक नहीं था। बाईं ओर खाली स्थान पर झाँकियों को नम्बरवार खड़ा किया गया था। लाल किला मैदान में जैसे-जैसे झाँकियाँ तैयार होती गई, वे स्टे-डियम पर पहुँचती गई। दिल्ली गेट के चौराहे के पास तक झाँकियाँ खड़ी हुई थीं। ये झाँकियाँ क्या थी, पूरे विमान थे। यह देखो, भाई अमीर चन्द उन्हें नम्बरवार खड़ा करने में कभी इधर भाग रहे हैं, कभी उधर भाग रहे हैं। क्योंकि ऐसी योजना बनाई गई थी कि स्टेडियम से जिस समय जिस ज़ोन के भाई बहन बाहर आयें, उस ज़ोन की झाँकी आगे खड़ी हो, ताकि बिना समय गंवाये वह शान्ति यात्रा में अपने स्थान पर सम्मिलित हो सकें।

झाँकियाँ लम्बाई, चौड़ाई, ऊँचाई में इतनी विशाल थीं कि उन्हें देखकर ट्रैफिक पुलिस विभाग चिन्तित हो उठा। कारण कि जिस रूट की स्वीकृति उन्हों द्वारा दी गई थी वहाँ से शायद इन झाँकियों का गुज़रना कठिन था। यहाँ रूट के बारे में थोड़ा-सा उल्लेख करना हम उचित समझते हैं। आरम्भ से ही हमारे मुख्य भाई बहनों की मीटिंग में यह निश्चित हुआ था कि यह शान्ति-यात्रा २६ तारीख को दरिया-गंज से होकर निकले। परन्तु ट्रैफिक पुलिस विभाग ने इस पर एतराज़ किया था और हमारे बहुत पुरु-षार्थ करने पर भी, तथा बड़े अफसरों से मिलने पर भी उन्होंने हमें दरियागंज के रूट की स्वीकृति नहीं दी थी। एक शान्ति-प्रिय संस्था होने के नाते हमने अधिक आग्रह नहीं किया और उनकी बात को मान लिया। परिणाम स्वरूप जो रूट अन्ततः निश्चित हुआ, वह इस प्रकार था।

"अम्बेडकर स्टेडियम से आरम्भ, आसफ़ अली रोड, अजमेरी गेट, चावड़ी बाजार, नई सड़क, चान्दनी चौक, लाल किला मैदान में समाप्त।" हमने इसी रूट के अनुसार इन मार्गों पर अनेक गेट आदि बनवाये। ट्रैफिक पुलिस ने भी इसी रूट पर ट्रैफिक कन्ट्रोल करने का पुलिस बन्दोबस्त किया था।

परन्तु कहते हैं कि "विश्व ड्रामा की भावी टाले न टले।" शायद मुख्य भाई बहनों का यह संकल्प पूरा होना था कि शान्ति यात्रा दरियागंज से होकर निकले। और हुआ भी यही। इसकी दास्तान इस प्रकार है। स्टेडियम के बाहर हमारी झाँकियों को ट्रैफ़िक पुलिस के अधिकारियों ने देखा तो उन्हें इस बात की चिन्ता हुई कि यह विशाल झाँकियाँ चावड़ी बाजार, व नई सड़क पर अटक जायेंगी और सारा जलूस एवं यातायात रुक जायेगा इस बात को ध्यान में रखते हुये ट्रैफिक पुलिस के डिप्टी कमिश्नर, भ्राता पी० एस० बावा (P. S. Bawa) स्टेडियम में स्वयं आये और उन्होंने इस विषय में अपनी चिन्ता प्रकट की। फिर अन्य पुलिस अधिकारी भी वहाँ पहुँच गये तथा काफ़ी परामर्श के बाद यह तय हुआ कि शान्ति-यात्रा दरियागंज से ही निकलेगी। उसी समय जो रूट निश्चित किया गया, वह इस प्रकार था।

"अम्बेडकर स्टेडियम से आरम्भ, दरियागंज, नेता जी सुभाष मार्ग, चान्दनी चौक, फतेहपुरी, रेलवे स्टेशन, टाऊन हाल, चान्दनी चौक का कुछ भाग—लाल किले मैदान में समाप्त।" परन्तु इसके लिये

सारे पुलिस बन्दोबस्त को बदलना था। ट्रैफ़िक पुलिस विभाग के अधिकारी इस प्रबन्ध में लग गये। और लगभग ११.३० बजे उन्होंने सूचना दी कि शान्ति-यात्रा आरम्भ कर सकते हैं। यह थी वह दास्तान कि अचानक रूट कैसे बदल गया। इसका उल्लेख करना यहाँ इसलिये उचित समझा गया कि अनेक भाई बहनों को यह जानने की उत्सुकता थी कि अन्तिम क्षणों में रूट कैसे परिवर्तन हुआ।

इतनी देर में स्टेडियम के बाहर हाथी, घोड़े आदि भी पहुँच गये थे। ग्रीन फील्ड स्कूल के बच्चों की एक टुकड़ी बैण्ड सहित आ गई थी। गेट के बाहर लाउड स्पीकर द्वारा सूचना दी जा रही थी। थोड़ी देर पहले तमिलनाडु की झाँकी (सर्वेश्वर परमात्मा शिव) का उद्घाटन केन्द्र के राज्य मन्त्री, भ्राता स्वामीनाथन द्वारा किया गया था।

शान्ति यात्रा का विवरण

स्टेडियम के अन्दर जैसे ही फोटो व फिल्म आदि का कार्यक्रम पूरा हुआ उसी समय (लगभग १२ बजे) शान्ति यात्रा को आरम्भ किया गया। यह देखिये, गेट के बाहर शील बहन, भटनागर भाई तथा ओम प्रकाश बजाज एवं अन्य भाई बहन शान्ति यात्रा को व्यवस्थित करने में लग गये। स्टेडियम के अन्दर भ्राता प्रेम प्रकाश माईक द्वारा सभी प्रान्तों को नम्बरवार बाहर आने की सूचना दे रहे थे, तो गेट के बाहर शाहदरा की प्रेम बहन झाँकियों आदि को उचित स्थान पर आने के लिये माईक द्वारा सूचित कर रही थी। एक अच्छा ताल मेल नजर आ रहा था। ओ, हो, इधर देखिये, शान्ति-यात्रा तो आरम्भ हो गई। सबसे आगे ६ भाई स्कूटरों पर शिव बाबा की झण्डियाँ लगाये हुये पायलटस (Pilots) के रूप में धीरे-धीरे चले। उनके पीछे एक भाई बड़े पोल में शिव बाबा का झण्डा हाथ में पकड़े हुये चला। फिर चार हाथी, छत्र सहित तथा चान्दी के आभूषणों से सजे हुये निकले। ये चार हाथी ज्ञान, योग, धारण, सेवा के सूचक थे जिन पर दो-दो कन्यायें, शिव बाबा के झण्डे लिये हुये बैठी थीं। उनके पीछे ५ घोड़े थे जो ५ Continents (यूरोप, अमेरिका, आस्ट्रेलिया, अफ्रीका, एशिया) के प्रतीक थे। उन पर हरेक Continents का एक-एक भाई शिव बाबा का झण्डा लिये हुये बैठा था। और उन भाइयों के गले में लाल पट्टी पर उनके Continent का नाम लिखा था। यह इस बात का संकेत था कि इस विश्व-कल्याण महोत्सव में सभी Continents के प्रतिनिधि आये थे। उनके पीछे एक सजी हुई ट्राली में ग्रीनफील्ड स्कूल के बच्चे बैन्ड पर शिव बाबा की महिमा के दिव्य गीतों की धुन बजाते हुये निकले। और अब दिल्ली ज़ोन के भाई-बहन गेट के बाहर पहुँच गये। सब से आगे दिल्ली ज़ोन का बैनर, फिर उनकी झाँकी (पर्वत सम समस्यायें तथा उनका समाधान) निकली। बड़ी सुन्दर झाँकी थी यह। गोवर्धन पहाड़ का दृश्य बना हुआ था। झाँकी के पीछे, पहले कन्यायें, फिर मातायें तथा उनके पीछे भाई थे। सभी प्रान्तों की टुकड़ियों का यही क्रम था।

इन भाई बहनों के हाथ में किसी के पास झन्डी थी, तो किसी के पास छोटे डन्डों में सलोगन (Mottoes) थे। इस अवसर पर ५०० से भी अधिक सलोगन २ फुट—१ फुट की प्लाई पर तैयार किये गये थे। इनमें ३५० हिन्दी के, १५० अंग्रेजी के तथा ३० उर्दू भाषा में थे। हरेक ज़ोन के भाई बहनों की संख्या के अनुसार उन्हें अपनी टुकड़ी के लिये उसी अनुपात से हिन्दी, अंग्रेजी तथा उर्दू के सलोगन दे दिये थे। यह तो हम ऊपर बता आये हैं कि २००० प्लास्टिक की झण्डियाँ भी बनाई गई थीं जो कि शान्ति यात्रा को चार-चांद लगा रही थीं। इसके अतिरिक्त हरेक प्रान्त के लिये "विश्व कल्याण महोत्सव" के बैनर भी बनाये गये थे। १५ से अधिक ये बैनर थे जिनमें कुछ अंग्रेजी भाषा में भी थे। शान्ति यात्रा को सुव्यवस्थित करने के लिये तथा मार्ग में अपने ज़ोन की टुकड़ी को कन्ट्रोल करने के लिये हरेक ज़ोन के दो भाइयों तथा दो बहनों को निश्चित किया गया था। इनके पास हरी व लाल झण्डी और एक सीटी थी इसके बाजू पर सुन्दर पीले रिबन का आर्म बैन्ड (Arm-Band) जिस पर 'Procession guide' लिखा था, बन्धा हुआ था।

दिल्ली ज़ोन के पीछे गुजरात ज़ोन निकला। इनकी झाँकी का विषय था "पतित पावन परमात्मा।" इनके बाद महाराष्ट्र तथा आन्ध्र प्रदेश की टुकड़ियाँ निकलीं। महाराष्ट्र की झाँकी का शीर्षक था "भारतीय संस्कृति" तथा आन्ध्र प्रदेश की झाँकी का "श्री कृष्ण अथवा वेंकटेश्वर।" यह आन्ध्र प्रदेश की झाँकी तिरूपति देवस्थानम् की ओर से बनाई गई थी। फिर विदेश का नम्बर आया। इनमें ३४ देशों (जिनके नाम हम ऊपर बता आये हैं) के प्रतिनिधि थे और ८ विभिन्न देशों द्वारा ८ झाँकियाँ निकाली गई। इनमें यू० के०, आस्ट्रेलिया, जर्मनी, गियाना, अमेरिका (सान फ्राँसिसको), अमेरिका (न्यू यार्क), कनाडा तथा दुबई द्वारा झाँकियाँ तैयार की गई थी। इस सभी में मानव जाति के लिये एक दिव्य संदेश था कि "ऐ, इस कलियुगी सृष्टि के लोगों, अपना ज्ञान का तीसरा नेत्र खोलो और देखो कि कैसे स्वयं सर्वशक्तिवान परमात्मा विश्व परिवर्तन का कार्य करा रहे हैं। यह सृष्टि अणु बमों के ढेर पर खड़ी है और किसी भी क्षण विनाश ज्वाला में जल कर खाक हो सकती है। स्वयं को बदलो, अपने चरित्र को श्रेष्ठ बनाओ, पवित्र और राजयोगी बनो। अपने में रूहानियत का दृष्टिकोण अपना कर सभी को भाई-भाई की दृष्टि से देखो। जर्मनी की झाँकी एक सुन्दर रथ पर बनी थी जिसमें एक बहुत बड़े कमल पर ब्रह्मा बाबा को बिठाया गया था तथा ऊपर शिवबाबा की किरणें गोल्डन तारों के रूप में दिखाई गई थी। इस झाँकी के साथ दो हाथी भी थे।

विदेश ज़ोन के पीछे राजस्थान की टुकड़ी निकली। इनकी झांकी का विषय था "अवतरण भूमि तथा तपो भूमि"। इनके बाद पंजाब, हरियाणा व हिमाचल ज़ोन की टुकड़ी निकली। इनकी झाँकी का शीर्षक था "विश्व इतिहास का स्वर्णिम काल"। सतयुगी दुनिया के दृश्यों को प्रदर्शित करती हुई यह झाँकी बड़ी सुन्दर थी। इनके ज़ोन का बैनर तो पंजाबी भाषा में था। इसके बाद कर्नाटक ज़ोन निकला कनड़ा भाषा में अपने बैनर लिए इनके भाई-बहन आये। इनकी झाँकी का विषय था "परमात्म बम"। इनके पीछे मध्य प्रदेश ज़ोन निकला, इनके पीछे उत्तर प्रदेश ज़ोन की टुकड़ी निकली। इनकी झाँकी का शीर्षक था "स्वर्ग का द्वार"। इस झाँकी को बहुत बड़े (४० फुट लम्बे) श्वेत हंस का रूप दिया हुआ था। यह झाँकी सभी का आकर्षण बिन्दु बनी हुई थी। इनके बाद तमिलनाडू एवं बंगाल, बिहार, उड़ीसा, आसाम व नेपाल ज़ोन के भाई-बहन बाहर निकले। इनकी झाँकी का विषय था "सर्वेश्वर परमात्मा शिव"। इस ज़ोन के भाई बहन बंगाली, उड़िया भाषा में अपने ज़ोन का बैनर लिये हुए थे।

अब देखिये, अपने विश्व विद्यालय की मुख्य प्रशासिका एवं अतिरिक्त प्रशासिका, आदरणीय दादी जी एवं दीदी जी सुन्दर सजी हुई जीप में निकलीं। कुछ फासला तय करने के बाद उन्होंने एक स्थान पर अपनी जीप को रोक कर सारी शान्ति यात्रा को देखा, अपने रूहानी नयनों व चेहरों पर दिव्य मधुर मुस्कान लिये तथा हाथ हिलाकर शान्ति-यात्रा में चलने वाले भाई-बहनों में उत्साह, उमंग को बढ़ाया। अन्त में प्राथमिक चिकित्सा (First-Aid Van) की गाड़ी थी। रेड क्रास सोसाइटी की ओर से (St. John) का प्रबन्ध किया गया था जिसमें एक महिला डॉक्टर तथा ३ कम्पाउन्डर थे। इन्होंने मार्ग में अनेक भाई-बहनों को दवाइयाँ दी। भारत स्काउटस (Bharat Scouts) और गाईड के द्वारा रास्ते में भाई-बहनों को पानी पिलाने के लिये पानी की ट्राली का भी प्रबन्ध किया गया था।

शान्ति यात्रा को भारी संख्या में लोगों ने देखा। ऐसा अनुमान है कि पहले दिन एक लाख से भी अधिक लोगों ने शान्ति-यात्रा को देखा। पहले दिन ८००० हिन्दी और ४००० अंग्रेज़ी के छोटे फोल्डर दर्शकों को बाँटे गये जिनमें उन्हें लाल किला मैदान में हो रहे "विश्व कल्याण महोत्सव" को देखने के लिए आमन्त्रित किया गया था। स्कूटरों, कारों तथा बसों में बैठे हज़ारों लोगों ने ट्रैफिक रुकने के कारण शान्ति-यात्रा को देखा। उसी दिन लाल किला मैदान में हो रहे "धर्म नेता समागम" के कार्यक्रम में आये कुछ धार्मिक नेताओं ने भी शान्ति यात्रा को देखा।

इनमें महा बोधी सोसाइटी ऑफ इण्डिया के सचिव, आर्यवंश महाथेरा तथा चर्च ऑफ नार्थ इण्डिया के विशप नासिर के नाम उल्लेखनीय हैं।

२७ तारीख को शान्ति यात्रा

इसी प्रकार २७ तारीख को करोल बाग स्थित अजमल खाँ पार्क से प्रातः ९ बजे शान्ति-यात्रा आरम्भ होकर अजमल खाँ रोड, आर्य समाज रोड, देश बन्धु गुप्ता रोड, नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पुल तथा अजमेरी गेट से होती हुई रामलीला मैदान में समाप्त हुई। अजमल खाँ रोड, दिल्ली का प्रसिद्ध व्यापार केन्द्र होने के कारण बहुत चहल-पहल का क्षेत्र है। समस्त व्यापारी वर्ग इन सफेद वस्त्रधारियों के सागर को देखने के लिये अपनी-अपनी दुकानों से बाहर आया। इसे भी लगभग ५०,००० से अधिक लोगों ने देखा। १०,००० फोल्डर बाँटे गये। इस दिन भी शान्ति यात्रा में छः हाथी, ५ घोड़े तथा १७ झाँकियाँ थीं।

शान्ति-यात्रा का जनता पर प्रभाव

ब्रह्माकुमारी संस्था के इतने विशाल प्रदर्शन को देखकर सभी दंग रह गये। सुन्दर आध्यात्मिक झाँकियों को देखकर सबने ये विचार व्यक्त किये कि "यह संस्था लोगों में आध्यात्मिक जाग्रति लाने के लिए इतना महान कार्य कर रही है, यह हमने सोचा भी न था। पहाड़ गंज की एक ऐसोसिएशन के प्रधान ने शान्ति यात्रा को देखने के बाद हमारे एक भाई से कहा मैं इस संस्था के बारे में कुछ भ्रान्तियों का शिकार था, अब मेरी सब भ्रान्तियाँ दूर हो गई हैं। यह संस्था बहुत महान कार्य कर रही है। आपको अपने प्रोग्राम आदि के लिये यदि हमारे स्कूल या धर्मशाला के हॉल की आवश्यकता हो तो मुझे बताना, मैं दे दूंगा।" पहाड़ गंज के ही एक प्रापर्टी डीलर ने बताया "यह शान्ति-यात्रा बहुत प्रभावशाली थी। यह संस्था बहुत ऊँचे आदर्शों के लिये अद्भुत कार्य कर रही है।

टेलीविज़न में २६ तारीख को सायं ८ बजे के मुख्य समाचार बुलेटिन में शान्ति यात्रा का समाचार प्रसारित किया गया तथा कुछ झाँकियों को दर्शाया भी गया। जिस दफ्तर में भी हम जाते, यह शान्ति-यात्रा चर्चा का विषय अवश्य बनती। सभी ने प्रशंसात्मक विचार व्यक्त किये तथा संस्था द्वारा किये जा रहे कार्य की सराहना की।

शान्ति यात्रा के समाचार एवं फोटो हिन्दुस्तान टाइम्स (अंग्रेज़ी), हिन्दुस्तान (हिन्दी) तथा टाइम्स ऑफ इण्डिया में प्रकाशित हुए।

इसमें कोई संदेह नहीं कि शान्ति-यात्रा के प्रबन्ध में काफी खर्चा हुआ होगा, परन्तु जितना भी हुआ हो, इसे पूर्ण रूप से सफल माना जायेगा, क्योंकि इस से संस्था के द्वारा किये जा रहे चरित्र निर्माण के कार्य का प्रशंसात्मक ढंग से आवाज़ बुलन्द हुआ। साधारण जनता, व्यापारी वर्ग, अनेक सरकारी अधिकारियों को सम्पर्क में आने का अवसर मिला। उन्हें संस्था का एक विशाल रूप देखने को मिला। हज़ारों लोगों की भ्रान्तियाँ दूर हुई। यह भी महान सफलता का सूचक है।

—:o:—

'बनो महान, करो कल्याण' की भावना से विश्व-कल्याण-महोत्सव व सम्मेलन का उद्घाटन

विश्व-कल्याण-महोत्सव का प्रारम्भिक अधिवेशन लाल-किला मैदान में बनाये गये विशाल पण्डाल में २६ फ़रवरी, १९८१ को सायंकाल ६ बजे हुआ। यह विशाल पण्डाल चारों ओर से छत-सहित, सफ़ेद चादरों से सुशोभित था तथा इसमें १२००० व्यक्तियों के बैठने का इन्तज़ाम किया गया था। इसमें ४०'×३०' साईज़ की स्टेज बनी हुई थी जिसके दोनों ओर ग्रीन रूम बने हुए थे तथा सारी स्टेज़ फूलों से सजाई हुई थी। स्टेज पर चलने वाले कार्यक्रमों का कई भाषाओं में अनुवाद करने का भी इन्तज़ाम किया गया था। पण्डाल में सफ़ेद बत्तियों के अतिरिक्त लाल बत्तियाँ भी लगाई गई थीं ताकि राजयोग के सामूहिक अभ्यास के समय लाल बत्तियाँ लगा दी जाएँ और सफ़ेद बत्तियाँ बुझा दी जाएँ। इस अवसर पर सारे पण्डाल में सम्पूर्ण शान्ति होती थी तथा सामूहिक राजयोग के अभ्यास के लिए शिक्षाप्रद गीत, ट्यून अथवा योग-कमैन्ट्री चलती रहती थी। स्टेज पर एक ओर इस सम्मेलन का चिह्न (Symbol) रखा हुआ था जिसमें सारे विश्व पर कमलपुष्प पर एक राजयोगी को बैठा हुआ दिखाया गया था तथा इस पर विश्व कल्याणकारी परमात्मा शिव द्वारा शक्ति एवं प्रकाश की दस किरणें पड़ती हुई दिखाई दे रही थीं। दूसरी ओर जर्मनी सेवा-केन्द्र द्वारा लाया हुआ प्रजापिता ब्रह्मा का पूरे साईज़ का मॉडल तथा पवित्रता एवं शान्ति के दाता परमात्मा शिव का प्रतीक प्रकाशमय चित्र भी स्टेज पर सुशोभित था, जो सभी के लिए विशेष आकर्षण का केन्द्र था। स्टेज के दोनों तरफ़ ३४ देशों के झण्डे लगे हुए थे तथा ये इस बात के द्योतक थे कि इन ३४ देशों से सम्मेलन में भाग लेने के लिए हज़ारों प्रतिनिधि पधारे हैं।

मंच पर सेवा-केन्द्रों के विभिन्न ज़ोन की इंचार्ज बहनें, प्रमुख ब्रह्माकुमार और ब्रह्माकुमारियाँ तथा आमन्त्रित वक्तागण बैठे थे। इनमें से मुख्य प्रशासिका आदरणीया दीदी जी तथा दादी जी, लोकसभा के स्पीकर भ्राता बलराम झाकर, सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश (अवकाश प्राप्त) भ्राता कृष्णा अय्यर संयुक्त राष्ट्र संघ में ग़ैर सरकारी संस्थाओं की प्रमुख बहन सैली स्वींग शैली, विदेशों में स्थित सेवा-केन्द्रों की इंचार्च ब्रह्माकुमारी जानकी बहन, गयाना के उपराष्ट्रपति की धर्मपत्नी ब्रह्माकुमारी बैटी आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। कार्यक्रम की रिकार्डिंग करने के लिए दूरदर्शन के कैमरामैन तथा आकाशवाणी के अधिकारीगण वहाँ उपस्थित थे।

इस विशाल पण्डाल में सभी सीटें भर चुकी थीं बल्कि अनेक लोग ज़मीन पर पण्डाल के बाहर बैठे थे, और वहीं से लाऊड स्पीकर द्वारा प्रवचनों का आनन्द ले रहे थे। लण्डन से पधारी हुई ब्रह्माकुमारी जयन्ती जी (जो हिन्दी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में बहुत अच्छी प्रकार से बोल सकती हैं), मंच का संचालन कर रही थी। शिव ध्वजारोहण के साथ कार्यक्रम का शुभारम्भ हुआ। मुख्य प्रशासिका ब्रह्माकुमारी प्रकाशमणि जी ने तालियों की ध्वनि के बीच ध्वजारोहण किया। मुख्य अतिथि भ्राता बलराम झाकर ने सम्मेलन के चिह्न का अनावरण किया जिसमें 'बनो महान्-करो कल्याण' का सलोगन लगा हुआ था। इसके पश्चात् विश्व के ३४ देशों तथा भारत के विभिन्न प्रान्तों से आए हुए प्रतिनिधियों ने मोमबत्ती जलाई जो सारे विश्व में ज्ञान-प्रकाश फैलाने का प्रतीक थीं।

उद्घाटन भाषण

भ्राता बलराम झाकर ने अपने प्रवचन में इस सम्मेलन के उद्देश्य की प्रशंसा करते हुए कहा कि वर्तमान समय विश्व में अशान्ति, दुःख एवं वैमनस्य तथा घृणा का जो वातावरण बना हुआ है उसका मुख्य कारण भी यही है कि हमने 'बनो महान-करो कल्याण' का ईश्वरीय सन्देश भुला दिया है। उन्होंने अपने ओजस्वी प्रवचन में कहा कि हमें देह पर आधारित सभी धर्मों का त्याग करके अपने में दिव्य गुण, विश्व-बन्धुत्व की भावना तथा पारस्परिक स्नेह व त्याग का समावेश करना चाहिए विश्व का कल्याण भी तभी सम्भव है जब हम परमपिता परमात्मा के बताए हुए मार्ग पर चलेंगे और राजयोग का अभ्यास करेंगे, उन्होंने इस महोत्सव की सफलता की शुभ कामना करते हुए अपना प्रवचन समाप्त किया।

एक ऐतिहासिक अवसर—योगी चन्द्र का कथन

मंच सचिव ने वर्ल्ड रिन्यूअल व ज्ञानामृत पत्रिकाओं के मुख्य सम्पादक को इस अन्तर्राष्ट्रीय महोत्सव पर अपने विचार प्रकट करने तथा इसका उद्देश्य बताने के लिए बुलाया। ब्रह्माकुमार जगदीश चन्द्र ने हिन्दी में प्रवचन किया जिसका अंग्रेज़ी अनुवाद मंच सचिव ने किया।

सभी आगन्तुक महानुभावों, मुख्य अतिथि व विद्वान वक्ताओं का स्वागत करते हुए उन्होंने कहा कि इस कार्यक्रम का इस संस्था के इतिहास में कई कारणों से विशेष महत्त्व है। पहला महत्त्व इस स्थान का यह है कि यहाँ ही स्वतन्त्रता के बाद राष्ट्रीय ध्वज फहराया गया था। इस स्थान व यमुना नदी के किनारे लाल किला का भारतीय इतिहास में कई कारणों से विशेष महत्त्व है। प्रत्येक वर्ष १५ अगस्त को इसी स्थान से देश का प्रधान-मंत्री देश की उन्नति के लिए सरकारी नीति योजना या कार्यक्रम की घोषणा करता है। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय द्वारा आयोजित यह कार्यक्रम भी इससे कम महत्त्वपूर्ण नहीं है। यहाँ विश्व के अनेक देशों के तथा भारत के सभी प्रान्तों के हज़ारों लोग एकत्रित हुए हैं जिनके सामने एक ही निश्चित लक्ष्य व ध्येय है। एक अद्भुत आध्यात्मिक क्रान्ति लाने के लिए पिछले दस मास से ८०,००० भाई-बहनों ने अथक मेहनत की है। इन ८०,००० भाई-बहनों ने दस-मास पूर्व यह प्रतिज्ञा की थी कि विश्व-कल्याण हेतु तथा मानवीय मूल्यों की पुनर्स्थापना के लिए दस-सूत्रीय कार्यक्रम को व्यवहारिक रूप देकर ही रहेंगे।

उन्होंने अब तक हज़ारों लोगों की मार्गप्रदर्शना की है तथा 'महान बनने, और कल्याण करने' के लिए तथा दिव्य गुण सम्पन्न जीवन बनाने के लिए राजयोग प्रदर्शनियों, मेलों व राजयोग शिविरों का आयोजन किया है। हमें विश्वास है कि आने वाले महीनों में यह कार्य ज़ोर पकड़ेगा और वह दिन दूर नहीं जब भारत में पूर्ण पवित्रता व शान्ति-सम्पन्न स्वराज्य की स्थापना हो जाएगी और विश्व में भारत अपना प्राचीन गौरव प्राप्त कर लेगा व शीघ्र ही सतयुग आ जाएगा। उन्होंने पुनः सभी का हार्दिक स्वागत करते हुए कहा कि मेरे पास केनेडा और न्यूज़ीलैंड जैसे दूर-देशों तथा देश के विभिन्न भागों से आए हुए हज़ारों भाई-बहनों का धन्यवाद करने के लिए उपयुक्त शब्द नहीं हैं। उन्होंने कहा कि उनके जीवन में अत्यधिक खुशी के तीन क्षण आए हैं। सर्वप्रथम वह क्षण था जब उन्हें इस ईश्वरीय ज्ञान में पूर्ण आस्था व विश्वास हुआ था। दूसरा अवसर उन्हें प्रथमवार अतिन्द्रिय सुख और आनन्द का अनुभव परमात्मा से मनोमिलन के समय हुआ था और तीसरा अवसर आज है जब इस विशाल समागम को देख रहा हूँ।

ईश्वरीय संदेश—ब्रह्माकुमारी हृदयमोहिनी द्वारा

तत्पश्चात् महोत्सव की प्रमुख आयोजिका ब्रह्माकुमारी हृदय-मोहिनी जी ने ईश्वरीय संदेश सुनाया जिन्हें परमात्मा शिव द्वारा दिव्य दृष्टि अथवा 'ट्राँस' का अलौकिक वरदान मिला हुआ है तथा उनके माध्यम द्वारा अव्यक्त बाप दादा के मधुर बोल सुनने का सौभाग्य मिलता रहता है। उन्होंने परमात्मा शिव का सन्देश सुनाते हुए कहा कि शिव बाबा ने सभी आत्माओं के कल्याण के लिए अथक मेहनत, लग्न व स्नेह से आध्यात्मिक सेवा करने की शिक्षा दी है। उन्होंने परमात्मा की स्नेह-भरी याद-प्यार देते हुए

कहा कि इस विश्व पर पवित्रता की स्थापना करने के लिए हमें बड़े से बड़ा त्याग करने को भी तैयार रहना चाहिए।

बनो महान, करो कल्याण—प्रेरणादायक गीत

इसके पश्चात् प्रसिद्ध गायिका-मीनू पुरुषोत्तम ने गीत गाया जिसका केन्द्रबिन्दू था 'बनो महान-करो कल्याण'।

तत्पश्चात् सभी देशों से आए हुए प्रतिनिधियों ने अपना सन्देश सुनाया। ब्रह्माकुमारी जानकी जी ने अपना दृढ़ विश्वास प्रकट किया कि नव-विश्व का नव-निर्माण शीघ्र ही होने वाला है तथा इस आसुरी विकारी, कलियुगी सृष्टि का विनाश भी शीघ्र ही होने वाला है। उन्होंने अनुरोध किया कि सभी उपस्थित भाई-बहनों को विश्व के कोने-कोने तक ईश्वरीय सन्देश पहुँचाने के लिए अथक परिश्रम करना चाहिए। तत्पश्चात् गयाना के उपराष्ट्रपति भ्राता स्टीव नारायण का सन्देश उनकी धर्मपत्नी ने पढ़कर सुनाया। इसके पश्चात् आबू में राजयोग शिविरों के निर्देशक भ्राता निर्वैर जी ने १९८०-८१ में इस ईश्वरीय विश्व-विद्यालय द्वारा की गई ईश्वरीय सेवाओं का विवरण प्रस्तुत किया। उन्होंने बताया कि एक वर्ष में लगभग १४ करोड़ लोगों को आध्यात्मिक मेलों, प्रदर्शनियों, योग शिविरों, स्कूल व कॉलिजों में किए गये कार्यक्रमों द्वारा ईश्वरीय संदेश दिया गया है। आने वाले महीनों में इस संस्था के कार्यों की प्रगति तेज़ी से होने की सम्भावना है।

विश्व-शान्ति की आवश्यकता पर बल-यू० एन० ओ० एन० जी० ओ० शाखा की प्रधान द्वारा

इसके पश्चात् संयुक्त राष्ट्र संघ की गैर सरकारी संस्थाओं की प्रधान, बहन सैली स्विग शैली ने संयुक्त राष्ट्र संघ के जनरल सेक्रेटरी का संदेश सुनाया। उन्होंने विश्व में शान्ति को स्थापना करने के लिए प्रयत्न करने की अत्यन्त आवश्यकता बताई और कहा कि यह संस्था विश्व कल्याण के लिए सराहनीय कार्य कर रही है।

आज न्यूट्रोन बम व ज्ञान बम में से एक को चुनने की स्थिति है : जस्टिस कृष्णा अय्यर

तत्पश्चात् भारत के सर्वोच्च न्यायालय के अवकाश प्राप्त न्यायाधीश-भ्राता कृष्णा अय्यर जी ने कहा कि इस ईश्वरीय विश्व-विद्यालय में वास्तविक स्वतन्त्रता है तथा महिलाओं को निःस्वार्थ सेवा करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। उन्होंने बताया कि राजयोग की शिक्षा द्वारा निकट भविष्य में होने वाले महाविनाश से विश्व को बचाया तथा चरित्र-पतन व अशान्ति के वातावरण को रोका जा सकता है जिसके लिए यह विश्व-विद्यालय सतत प्रयास कर रहा है।

राजयोग ही एकमात्र समाधान—प्रमुख बहनें

मुख्य प्रशासिका, राजयोगिनी, ब्रह्माकुमारी प्रकाशमणि जी ने विश्व-कल्याण के लिए मानव मूल्यों व आध्यात्मिक शिक्षा की पुनर्स्थापना पर ज़ोर दिया। उन्होंने कहा, यह विचित्र बात है कि आज हमारी सरकार की प्रधान मंत्री यहाँ मौजूद नहीं हैं ताकि वे भी इस ईश्वरीय कार्य को देख सकतीं तथा विश्व-शान्ति के लिए ईश्वरीय संदेश के महत्त्व को समझतीं!

इसके पश्चात् संयुक्त मुख्य प्रशासिका-राजयोगिनी, ब्रह्माकुमारी मनमोहिनी जी ने राजयोग की आवश्यकता की ओर सभी का ध्यान खिंचवाया। उन्होंने कहा कि राजयोग के द्वारा ही विश्व में सम्पूर्ण सुख-शान्ति की स्थापना हो सकती है और सभी समस्याओं का एकमात्र हल राजयोग द्वारा ही हो सकता है तथा इसके द्वारा ही नवयुग अथवा सतयुग की स्थापना हो सकती है!

अन्त में भारत सरकार के गृह मंत्रालय के संयुक्त सचिव भ्राता आर० एम० अग्रवाल जी ने सभी का धन्यवाद किया तथा सम्मेलन की सफ़लता की कामना की।

पत्रकार संगोष्ठी एवं स्नेह मिलन

पत्रकार संसार में बहुत ही महत्त्वपूर्ण कार्य में जुटे हुए हैं। किसी भी घटना अथवा संस्था को वे जिस नज़र से देखते हैं तथा उसके बारे में जिस प्रकार सूचित करते हैं, इसका व्यक्ति तथा समाज पर गहरा प्रभाव पड़ता है। पत्रकारों के पत्र अथवा पत्रिका की पद्धति, उस पत्र अथवा पत्रिका के अधिकारी अथवा प्रबन्धक का दृष्टिकोण तथा अन्य ऐसी कई चीजें जनता पर एक विशेष प्रभाव छोड़ जाती हैं। अत: यह अत्यन्त आवश्यक हो जाता है कि प्रेस को जो अधिकार प्राप्त हैं, उन्हें विश्व-कल्याण के कार्य में लगाया जाये क्योंकि प्रेस में प्रकाशित होने वाली सामग्री से पाठकगण बहुत प्रभावित होते हैं।

बहुत-से देशों में अपने विचार व्यक्त करने की स्वतन्त्रता वहाँ के शासन व संविधान द्वारा प्राप्त है। लेकिन प्रश्न तो यह उठता है कि यह स्वतन्त्रता समाज के नैतिक स्तर को उन्नत करने तथा सामंजस्यता लाने में इस्तेमाल हो रही है या इस स्वतन्त्रता का लाभ उठाकर केवल वो समाचार दिये जाते हैं जो सामाजिक स्थिति को धीरे-धीरे गिरावट की ओर ले जाने का कारण बनते हैं ?

दूसरी ओर, इस पर भी पूरी तौर से ध्यान नहीं दिया जा रहा है कि क्या प्रेस का मानव मूल्यों के विकास में तथा समाज को खुशहाल बनाने में कुछ योगदान हो सकता है ? वर्तमान समय तो हम समाचार पत्रों व पत्रिकाओं में प्रतिदिन बुरे समाचार ही पढ़ते हैं क्योंकि पत्रकारों का यह विश्वास है कि बुरा समाचार ही अच्छा समाचार है क्योंकि उसे ही लोग पढ़ना चाहते हैं। वे समाचार, जिनसे खुशी व शान्ति का वातावरण तथा आशावादी दृष्टिकोण बनता है, प्राय: प्रकाशित ही नहीं किये जाते और यदि कभी प्रकाशित किये भी जाते हैं तो बहुत कम स्थान में और संक्षिप्त रूप में क्योंकि कहावत है 'अच्छा समाचार ही बुरा समाचार नहीं है'। इसलिए पाठकों को समाचार पत्रों में दुर्घटनाओं, डकैतियों, बलात्कारों, प्रशासन सम्बन्धी गड़बड़ व गोलमाल आदि तथा देशों में तनाव की स्थिति आदि के ही समाचार पढ़ने को मिलते हैं। प्राय: ऐसी घटनायें प्रकाशित की जाती हैं जिनसे साफ़ प्रतीत होता है कि संसार विनाश ज्वाला की ओर अग्रसर हो रहा है। ऐसे समाचारों को प्रतिदिन पढ़ने से मनुष्य के स्वास्थ्य तथा मन पर क्या असर होता है, शायद अभी तक इसकी खोज किसी ने नहीं की।

निस्सन्देह यह बात तो सर्व मान्य है कि पत्रकारों का इस समाज में बहुत ही महत्त्वपूर्ण स्थान है। यदि कोई कार्य बड़े पैमाने पर किया जाता है तो उसमें प्रेस का सहयोग नितान्त आवश्यक है क्योंकि इसके बिना तो कुछ भी आगे नहीं बढ़ सकता। पत्रकार संगोष्ठी एवं स्नेह-मिलन, विश्व-कल्याण महोत्सव का एक महत्त्वपूर्ण अंग था जिसका उद्देश्य मुख्यत:, विश्व-कल्याण हेतु, प्रेस का सहयोग प्राप्त करना था।

ब्रह्माकुमार भ्राता रमेश शाह कार्यक्रम के सह-अध्यक्ष थे। ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय की मुख्य संचालिका दादी प्रकाशमणि जी इस कार्यक्रम की अध्यक्षा थीं। भारत सरकार के सूचना एवं प्रसारण मन्त्रालय की राज्य मन्त्री बहन कुमुद जोशी मुख्य अतिथि के रूप में आमन्त्रित थीं। बहुत-से बुद्धिजीवियों व लेखकों के अतिरिक्त कार्यक्रम में लगभग ३० से भी अधिक सम्पादक व पत्रकार उपस्थित थे। इन सबके बीच मंच पर उपस्थित वक्तागणों में बी० बी० सी०, लन्दन में धार्मिक कार्यक्रमों के प्रोड्यूसर भ्राता जॉन न्यूबरी, आस्ट्रेलिया में न्यू एज लीडर

तथा पत्रकार, मेडम एस्टला मायर्स, हिन्दी हिन्दुस्तान के सम्पादक भ्राता बी० के मिश्रा, हिन्द समाचार के डिप्टी जनरल मैनेजर भ्राता बालेश्वर प्रसाद तथा पंजाब के भूतपूर्व शिक्षामन्त्री तथा पंजाब व हरियाणा में हिन्दी, उर्दू व पंजाबी भाषाओं में प्रकाशित होने वाले समाचार पत्रों हिन्द केसरी व हिन्द समाचार के अधिकारी तथा मुख्य सम्पादक, लाला जगत नारायण जी थे।

कार्यक्रम का शुभारम्भ एक दिव्य गीत द्वारा किया गया जिसके साथ ही साथ राजयोगाभ्यास भी किया गया।

प्रेस का कर्त्तव्य समाचार व सूचनायें प्रकाशित करने के अतिरिक्त शिक्षा देना व सुधार करना भी है : ब्रह्माकुमारी मोहिनी

ब्रह्माकुमारी मोहिनी, जिन्होंने दिल्ली विश्वविद्यालय से जर्नलिज्म में डिप्लोमा प्राप्त किया हुआ है तथा जो वर्तमान समय न्यूयॉर्क स्थित राजयोग केन्द्र की संचालिका हैं, ने 'मानव मूल्यों के विकास में प्रेस का योगदान' विषय पर अपने विचार प्रस्तुत किये।

उन्होंने कहा, माध्यम मानव के लिए होते हैं और सभी मनुष्य खुशी व शान्ति चाहते हैं। यदि माध्यम द्वारा लक्ष्य की पूर्ति नहीं होती है तो समाज का ही नुकसान होगा। और क्या पत्रकार समाज का अंग नहीं हैं? और यदि समाज में सुख, शान्ति व खुशी ही नहीं तो और बाकी क्या है? अतः, यद्यपि प्रेस का कर्त्तव्य संसार में घटित हर घटना को सही-सही सूचित करना है तथापि उनका लक्ष्य समाज को सुख, शान्ति व खुशहाली की ओर ही ले जाने का होना चाहिए। कौन इस बात से इंकार कर सकता है, उन्होंने कहा, कि मनुष्य बहुत ही भावुक और कोमल हृदयी होता है? इसलिए कोई भी घटना को सूचित करते वक्त हमें यह ध्यान में रखना चाहिए कि ये समाचार अथवा ये सूचनायें जिस ढंग से प्रकाशित की जा रही हैं, ये समाज में, देशों में अथवा व्यक्तिगत जीवन में हलचल व अशान्ति पैदा करने वाली हैं या फिर समाज में भाई-चारे की भावना, सामंजस्यता तथा आत्मिक स्नेह को उत्पन्न करने वाली हैं। अगर समाज के हित को ध्यान में रखते हुए पत्रों अथवा पत्रिकाओं में सामग्री प्रकाशित की जाए तो इससे प्रेस की स्वतन्त्रता में कोई कमी नहीं आएगी अपितु मानव सम्बन्धों में बढ़ती हुई कटुता अवश्य कम हो जाएगी। अतः प्रेस को ऐसे अनुशासन की आवश्यकता है जिससे सूचनाएँ देने के कर्त्तव्य के साथ-साथ शिक्षा देने व सुधार करने के लक्ष्य की पूर्ति भी हो सके। अतः इससे प्रेस की स्वतन्त्रता कम नहीं होती अथवा खत्म नहीं होती अपितु इससे इसके अधिकार और ज़िम्मेवारी बढ़ जाती है।

इसके अतिरिक्त जिस बात पर मोहिनी बहन ने ध्यान आकर्षित कराया, वह यह थी कि स्थूल किस्म के समाचार तो काफ़ी स्थान में प्रकाशित किये जाते हैं परन्तु मानव-मूल्यों के विकास सम्बन्धी समाचारों को इतना स्थान नहीं दिया जाता। इसके परिणामस्वरूप समाज में नैतिक मूल्यों का ह्रास होता जा रहा है। उन्होंने कहा कि यह प्रेस की उदारता होगी कि वे ऐसी घटनाओं को प्रकाशित करें जिनसे समाज में नैतिक व मानवी मूल्यों का विकास हो।

यह बड़े अफ़सोस की बात है कि उत्थान व प्रगति की अपेक्षा, अस्त्र-शस्त्रों पर अरबों डॉलर खर्च किये जा रहे हैं। उन्होंने पूछा, इस संदर्भ में प्रेस का क्या योगदान है?

तत्पश्चात अन्य आमन्त्रित पत्रकारों को अपने विचार प्रस्तुत करने के लिए कहा गया।

पत्रकार विभिन्न दबावों द्वारा ग्रस्त : बी०के० मिश्रा

अगले वक्ता दिल्ली से प्रकाशित किये जाने वाले एक मुख्य समाचार पत्र, 'हिन्दी हिन्दुस्तान' के सम्पादक, भ्राता बी० के० मिश्रा जी थे। उन्होंने कहा कि वह भी मानव मूल्यों के विकास के पक्ष में हैं तथा साथ ही उन्होंने यह भी महसूस किया कि प्रेस का पूर्ण सहयोग इसमें आवश्यक है। उन्होंने कहा कि उनकी तरह बहुत-से सम्पादक ऐसा महसूस करते हैं परन्तु उन्होंने आगे कहा—'यदि स्वयं सम्पादक भी

इन विषयों पर लेख लिखना चाहें तो कुछ राजनीतिक दबावों तथा अन्य कुछ ऐसे कारणों के कारण वे ऐसा नहीं कर पाते और इसीलिए आध्यात्मिक सामग्री को वे अधिक स्थान देकर प्रकाशित नहीं कर पाते।' लेकिन, उन्होंने कहा, सम्पादक को इतना बन्धन नहीं होता; वे इस प्रकार की कुछ-न-कुछ सामग्री तो प्रकाशित कर ही सकते हैं।

इस तरह के सम्मेलन पत्रकारों को उनके कर्त्तव्य से अवगत कराने के लिए उपयुक्त—मलकानी जी

साप्ताहिक पत्रिका 'दि ऑरगनाइज़र' के मुख्य सम्पादक, भ्राता के० आर० मलकानी तथा 'न्यूज़ एजेन्सी' (News Agency) 'हिन्दुस्तान समाचार' के डिप्टी जनरल मैनेजर, भ्राता बालेश्वर प्रसाद अग्रवाल जी ने 'नैतिक मूल्यों के विकास में प्रेस का उत्तरदायित्व' विषय पर ज़ोर दिया। उन्होंने कहा—"प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय ने पत्रकार सम्मेलन का आयोजन कर बहुत महत्त्वपूर्ण कदम उठाया है तथा इस व्यवसाय में लगे हुए पुरुषों व महिलाओं को उनके कर्त्तव्य से अवगत कराया है।" भ्राता बालेश्वर प्रसाद अग्रवाल जी ने संस्था के मुख्यालय तथा वहाँ के शान्तिपूर्ण वातावरण के अपने यादगार अनुभव का भी वर्णन किया।

करनाल से प्रकाशित होने वाली साप्ताहिक पत्रिका 'अमृत' के सम्पादक भ्राता सुन्दरलाल जी ने कहा—"जबकि वर्तमान समय दिन प्रतिदिन विनाश के साधनों की वृद्धि हो रही है, सम्पादकों का नैतिक कर्त्तव्य नैतिक मूल्यों को बढ़ावा देना है।" और उसके लिए, उन्होंने कहा, 'यही समय उचित है क्योंकि बाद में संसार की बिगड़ती हुई हालत को सुधारना असम्भव होगा।' उन्होंने आगे कहा कि इसके लिए और कुछ नहीं चाहिए, सिर्फ़ हिम्मत और निर्भयता से ऐसे लेख, कहानियाँ अथवा कवितायें प्रकाशित की जानी चाहिए जिससे चरित्र महान बन सके।

प्रेस विश्व को सुधार सकता है: लाला जगत नारायण

जालन्धर से प्रकाशित होने वाले कुछ मुख्य समाचार पत्रों के अधिकारी, लाला जगत नारायण जी ने कहा कि प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय इस व्यवसाय से सम्बन्धित व्यक्तियों को संगठित कर तथा ऐसे मित्रभाव-भरे वातावरण में कुछ महत्त्वपूर्ण विषयों पर विचारों का आदान-प्रदान कर बहुत बड़ी सेवा में लगा हुआ है। उन्होंने माऊन्ट आबू स्थित संस्था के मुख्यालय में जाने का अपना अनुभव बताते हुए कहा कि वहाँ का वातावरण बहुत ही सात्विक है। वहाँ बहुत ही सादा जीवन व्यतीत किया जाता है तथा माँस, शराब, सिगरेट आदि तामसिक पदार्थों का निषेध किया जाता है जिसकी मैं हृदय से प्रशंसा करता हूँ। यहाँ विश्व-बन्धुत्व की भावना को जाग्रत कर हर प्रकार के मतभेद को मिटाया जाता है। फिर उन्होंने अपनी शुभेच्छा प्रकट करते हुए कहा कि इस तरह के कार्यक्रम जल्दी-जल्दी होते रहना चाहिएं तथा मानव के चरित्र उत्थान के लिए सदा यत्न करते रहना चाहिए। उन्होंने वहाँ पर उपस्थित अपने साथी पत्रकारों को संस्था के मुख्यालय में जाकर स्वयं कुछ अनुभव करके आने का सुझाव दिया।

उन्होंने इस बात पर फिर से ज़ोर दिया कि समाज के नैतिक ढाँचे को मज़बूत करना कितना महत्त्वपूर्ण है और कहा कि प्रेस इस कार्य में बहुत योगदान दे सकता है। अपने ४५ वर्ष के पत्रकार जीवन के अनुभव के आधार पर बोलते हुए उन्होंने कहा कि प्रेस के पास बहुत-से अधिकार हैं। यदि इन अधिकारों को ठीक प्रकार से इस्तेमाल किया जाए, तो इनसे विश्व का सुधार किया जा सकता है। उन्होंने यह भी कहा कि प्रेस के प्रत्येक कार्यकर्त्ता को व्यक्तिगत तौर से उस परमपिता परमात्मा तक पहुँचने का यत्न करना चाहिए।

उसके बाद बम्बई की प्रसिद्ध पार्श्व गायिका, बहन मीनू पुरुषोत्तम ने एक दिव्य गीत प्रस्तुत किया। यह रचना सिर्फ़ सुन्दरता ही नहीं थी और केवल मधुर आवाज़ में नहीं गाई गई थी बल्कि साथ-साथ मनुष्य के मन में नैतिकता की भावना को जागृत करने वाली थी।

तत्पश्चात् लन्दन से पधारी हुई बहन ब्रह्माकुमारी नोला ने व्याख्या सहित सामूहिक योगाभ्यास कराया जिससे वहाँ उपस्थित सभी श्रोतागण तथा वक्तागण इस दुनिया से दूर मानों शान्ति के प्रदेश में पहुँच गये। सभी वहाँ पर अचल स्थिति में बैठे थे तथा वहाँ का वातावरण शान्ति व पवित्रता के प्रकम्पनों से भरपूर था।

इस तरह के कायक्रमों को अधिक स्थान दिया जाना चाहिए : मेडम एस्टला मायर्स

सिडनी, आस्ट्रेलिया की प्रसिद्ध टी०वी० प्रोड्यूसर, पत्रकार तथा न्यू एज लीडर, मेडम एस्टला मायर्स ने कहा कि दिल्ली के मुख्य समाचार-पत्रों में इस सम्मेलन तथा उसके व्यवस्थापकों का समाचार मुख्य समाचार के रूप में प्रकाशित होना चाहिए। लेकिन, उन्होंने कहा कि वे यह देखकर हैरान हो गईं कि दिल्ली से प्रकाशित होने वाले केवल एक दैनिक अंग्रेज़ी के समाचार पत्र में विश्व-कल्याण महोत्सव की सूचना देते हुए हाथी की एक छोटी-सी फोटो प्रकाशित की गई थी। उन्होंने कहा—"यदि इस महोत्सव का आयोजन आस्ट्रेलिया में किया जाता तो समाचार पत्रों में इसके विषय में बहुत अधिक प्रकाशित किया जाता।" उन्होंने आगे कहा—"आस्ट्रेलिया में इस तरह के महोत्सव आदि के समाचारों का विस्तारपूर्वक विवरण तथा लेख आदि प्रकाशित किये जाते हैं। भारत में भी समाचार पत्रों में इस सम्मेलन के बारे में विशेष समाचार तथा विस्तृत लेख निकलने चाहिएं।" और फिर उन्होंने ऐसे कार्यक्रमों की प्रशंसा के भाव व्यक्त किये।

उनका कहना था कि प्रेस प्राय: वही प्रकाशित करती है जो जनता पसन्द करती है। दूसरे शब्दों में प्रेस व्यक्तियों के मानसिक स्तर के अनुसार ही समाचारों को प्रकाशित करती है। इसलिए यह हम सब का कर्त्तव्य है कि हम शुद्ध और नि:स्वार्थ स्नेह रखते हुए स्वयं अपने मानसिक स्तर को ऊपर उठायें।

प्रेस को मुझ जैसे डाकुओं के सुधार की कहानियाँ प्रकाशित करनी चाहिए : पंचमसिंह

इसी अवसर पर उपस्थित थे चम्बल घाटी के भूतपूर्व कुख्यात डाकू पंचमसिंह, जिसको ज़िन्दा या मुर्दा पकड़वाने का ७५०० रु० का पुरस्कार मिलना था। इनका अनुभव सभी श्रोताओं व वक्ताओं के सामने रखा गया। उसने सन् १९७२ में जयप्रकाश नारायण के सम्मुख आत्म समर्पण किया था। जब ब्रह्माकुमारी बहनों ने जेल अधिकारी व राज्य अधिकारी की अनुमति लेकर मध्य प्रदेश की खुली मुँगावली जेल में जाकर समर्पित डाकुओं की सेवा की थी, तब बहुत से डाकुओं ने राजयोग की शिक्षा प्राप्त की थी तथा बुरी आदतों, व्यस्नों का त्याग कर स्वयं का सुधार किया था। पंचम सिंह ने जो इसी मुँगावली जेल में था इन शिक्षाओं में अत्यधिक रुचि ली तथा स्वयं को काफ़ी हद तक सुधारा। अब वह ब्रह्मचर्य व्रत तथा उन सभी नियमों (सात्विक भोजन, अहिंसा आदि) का पालन करता है जो योगी जीवन के लिए आवश्यक हैं। वह अपने आन्तरिक परिवर्तन तथा राजयोग में इतनी रुचि लेता रहा है कि उसके स्वभाव व आदतों के परिवर्तन को देख, उसकी पुत्री बहुत प्रभावित हुई तथा अब वह भी पवित्रता के मार्ग को अपना कर ब्रह्माकुमारी बन गई है। पंचमसिंह अपने को बहुत ही भाग्यशाली मानता है क्योंकि वह स्वयं को सुधार सका।

अपने निजी जीवन में परिवर्तन का अनुभव बतलाते हुए पंचम सिंह ने ब्रह्मचर्य व्रत के पालन तथा अन्न की शुद्धि के महत्त्व पर बहुत बल दिया। उसने कहा, समाचार-पत्र मुझ जैसे व्यक्तियों की परिवर्तन की कहानी प्रकाशित कर बहुत बड़ी विश्व-सेवा कर सकते हैं ताकि अन्य भूले-भटके लोग उन पदचिह्नों पर चल मंज़िल को पा सकें।

इसके बाद बी०बी०सी० लन्दन के धार्मिक कार्यक्रमों के प्रोड्यूसर भ्राता जॉन न्यूबरी ने कहा कि बी० बी० सी० द्वारा प्रसारित अधिकतर कार्यक्रम ईसाई धर्म से सम्बन्धित होते हैं। हम उन्हीं समाचारों को चुनते तथा प्रसारित करते हैं जो ताज़े, रोचक व महत्त्वपूर्ण होते हैं। उन्होंने इस कार्यक्रम की अत्यधिक प्रशंसा की तथा इसके व्यवस्थापकों को सम्मेलन में उन्हें आमन्त्रित करने के लिए धन्यवाद दिया।

इस माध्यम द्वारा भाई चारे की भावना को बढ़ाया जा सकता है : बहन कुमुद जोशी

सूचना एवं प्रसारण मन्त्रालय की राज्य मन्त्री बहन कुमुद जोशी ने आपसी मेल-मिलाप तथा भाई-चारे की भावना को बढ़ाने तथा कायम रखने की आवश्यकता पर बल देते हुए कहा कि प्रेस इस कार्य में महत्त्वपूर्ण योगदान दे सकता है।

संसार की वर्तमान स्थिति के बारे में उन्होंने कहा कि शान्ति कहीं ढूंढे से भी नहीं मिलती। यहाँ तक कि पश्चिमी सभ्यता के लोग भी सभी प्रकार की भौतिक सुविधाएँ होते हुए भी आन्तरिक सुख और शान्ति को खोज रहे हैं। उन्होंने कहा, "यद्यपि मैंने भी यह सब अभी पाना है परन्तु मैं इतना जानती हूँ कि इसको प्राप्त करने के लिए किसी को अपना काम धंधा नहीं छोड़ना पड़ता। मेरा विचार है कि मनुष्य को धार्मिक पुस्तकों के बजाय राजयोगाभ्यास द्वारा आत्मा को पहचान कर भगवान तक पहुँचने की कोशिश करनी चाहिए। इसके लिए आवश्यक है—तपस्या, बुरी आदतों का त्याग तथा अपनी मंज़िल तक पहुँचने की राह की स्पष्ट जानकारी। उन्होंने कहा कि ब्रह्माकुमारी बहनें जितनी समर्पणमयता व लग्न से यह कार्य कर रही हैं, उससे वे यहाँ कुछ प्रेरणा लेने के लिए आई हैं।

नव-क्रान्ति लाने में पत्रकारों की महत्त्वपूर्ण भूमिका : दादी जी

इस अवसर पर संस्था की मुख्य संचालिका दादी प्रकाशमणि जी ने पत्रकारों को सम्बोधित करते हुए कहा—धर्म का अर्थ केवल कुछ धार्मिक रीतियों, रस्मों का पालन करना व पूजा-पाठ करना ही नहीं है। उन्होंने कहा—"श्रेष्ठ गुणों को ग्रहण करना तथा बुराइयों का त्याग ही वास्तविक धर्म है। धर्म का अर्थ ही है—धारणा। यदि धर्म का यह अर्थ लिया जाए तो यही धर्म समय, धन व शक्ति की बचत का साधन बन जाता है क्योंकि सच्चा धार्मिक व्यक्ति कुरीतियों व बुरी आदतों तथा व्यर्थ के आडम्बरों को छोड़कर मानवीय मूल्यों के विकास पर ही ज़ोर देता है। अब ऐसे धर्म को अपनाने में किसी को क्या आपत्ति हो सकती है?"

इसके बाद उन्होंने पत्रकारों की महत्त्वपूर्ण भूमिका पर प्रकाश डालते हुए कहा कि पत्रकारों का सहयोग परिवर्तन का मूल आधार है। अन्त में, उन्होंने वहाँ उपस्थित सभी पत्रकारों को माऊण्ट आबू-स्थित इस ईश्वरीय विश्व-विद्यालय के मुख्यालय में तीन दिन के लिए राजयोग शिविर में आने का निमन्त्रण दिया। और, कहा कि सबसे अच्छा यही है कि सभी पत्रकार कुछ समय निकाल कर राजयोग के अनुभव तथा शिक्षाओं का अनुभव करें तथा अपने उस अनुभव को अपने ही समाचार-पत्रों में प्रकाशित करें।

उसके बाद ब्रह्माकुमार सुन्दरलाल जी (ऐजूकेशन आफ़ीसर) ने धन्यवाद प्रस्ताव रखा तथा कुछ समय के राजयोगाभ्यास व एक दिव्य गीत के साथ कार्यक्रम समाप्त हुआ।

—:०:—

विकलांगों के कल्याण के लिए कार्यक्रम

मई, १९८० में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय द्वारा जो १० सूत्री कार्यक्रम बनाया गया था, विकलाँगों की सेवा उसका एक महत्वपूर्ण भाग था। अत: विश्व-कल्याण महोत्सव के पूर्व के १० मास में इस संस्था के ६०० से भी अधिक सेवा केन्द्रों ने इस सेवा की ओर विशेष ध्यान दिया। उन्होंने आध्यात्मिक प्रदर्शिनियाँ आयोजित कीं, राजयोग पर प्रवचन किये और विकलाँगों को जो कि अब तक इन बहनों के आध्यात्मिक स्नेह और सेवा के कारण इनके काफ़ी समीप आ गये थे, प्रसाद एवं उपहार भी बाँटे। विकलाँग वर्ग के लोगों ने ब्रह्माकुमारी बहनों की आध्यात्मिक सेवाओं से क्या-क्या लाभ उठाये, यह पृष्ठ ६२-६४ पर दिये गये, "दिल्ली चेशायर होम" (Delhi Cheshire Home) में रहने वालें लोगों के अनुभव तथा सम्मितियों से पता चलता है। इस विचार को ध्यान में रखते हुए, २७ फ़रवरी, १९८१ को १२-३० बजे से २-०० बजे तक विश्व कल्याण महोत्सव के एक भाग के रूप में जो विकलाँगों का कार्यक्रम आयोजित किया गया, उसी श्रृंखला का एक भाग था, यद्यपि अब यह कार्यक्रम बड़े रूप में किया गया था।

इस सेवा पर विशेष ध्यान

१० सूत्री कार्यक्रम में इस सेवा पर विशेष ध्यान दिया गया था क्योंकि संस्था का यह विश्वास है कि समाज के विकलाँग वर्ग पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। अपंग होने के कारण ये लोग राजयोग के ज्ञान तथा अभ्यास के लिए संस्था के सेवा-केन्द्रों पर सहज नहीं आ सकते, इसलिए संस्था के लिये यह ठीक ही था कि उनके स्थान पर समय-समय पर जाकर शान्ति तथा योग रूपी परमात्मा के दिव्य उपहार देकर उन्हें भी लाभान्वित किया।

क्योंकि राजयोग का अभ्यास सहज है, इसलिये अपंग लोग भी अन्य लोगों की भाँति अपना मन परमात्मा के साथ युक्त कर सकते हैं और परमात्मा द्वारा मात-पिता का प्यार तथा शान्ति प्राप्त कर सकते हैं। यह पृष्ठ ६२-६४ पर दी गई सम्मितियों से स्पष्ट हो जायेगा कि अपंग लोग अशान्त हैं क्योंकि वे समझते है कि समाज तथा उनके मित्र-सम्बन्धी उनकी ओर ध्यान नहीं देते और कि वे राष्ट्र के निर्माण के कार्य में कोई सहयोग नहीं दे सकते। अब यदि उन्हें यह समझाया जाये कि कैसे वे समाज में लाभदायक भूमिका निभा सकते हैं, और कि वे कैसे महान् योगी बन सकते हैं, तथा नैतिक उत्थान तथा परमात्मा का सामीप्य प्राप्त कर सकते हैं, तो वे जीवन से सम्पूर्ण सन्तुष्टता का अनुभव करेंगे। वरना यह जीवन अनेकों पर एक बोझ बनकर रह जाता है।

मानसिक पुनर्वास अथवा समायोजन अत्यावश्यक

इसके अतिरिक्त विकलाँगों की सेवा का अर्थ केवल आर्थिक तौर पर उनकी जीविकोपार्जन की समस्या हल करना नहीं अपितु समस्या यह है कि उन्हें मानसिक पुर्नवास तथा आन्तरिक शान्ति भी पुन: मिलनी चाहिये। यह आध्यात्मिक संस्था अथवा प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के राजयोग सेवा-केन्द्र इस आवश्यकता को पूरा कर सकते हैं। क्योंकि इस संस्था का संचालन कार्य प्राय: बहिनों द्वारा होता है और बहन उनका परमात्मा से आध्यात्मिक सम्बन्ध जोड़ने में स्नेहपूर्वक रीति से सहायक होकर एक बहुत बड़ी सेवा कर सकती हैं। उनके स्नेह और श्रेष्ठ सेवा के कारण ही अनेक सामाजिक कार्यकर्ताओं ने तथा अपंगों की संस्थाओं के संचालकों ने इन बहनों द्वारा हुई आध्यात्मिक सेवा

की सराहना की है। इसलिए ही वे इन कार्यक्रमों को आयोजित करने में ब्रह्माकुमारी बहनों को अपना पूरा सहयोग भी देते हैं और उन्होंने इस प्रोग्राम में भी पूर्ण रूप से सहयोग दिया। "दिल्ली चेशायर होम" के प्रशासक तथा इसके कुछ लोगों ने जो अपनी सम्मितियाँ दी हैं, वे इस तथ्य की पुष्टी करती हैं।

इन संस्थाओं के विकलाँगों ने कार्यक्रम में भाग लिया

१. प्रशिक्षण एवं अत्पादन केन्द्र (महिलाओं के लिए) सी-१२, ग्रीन पार्क एक्सटैन्शन, नई दिल्ली-६

२ गूंगे एवं बहरों के लिये ट्रेनिंग एवं उत्पादन केन्द्र, जवाहर लाल नेहरू यूनिवर्सिटी के पास, नई दिल्ली-५६

३. गवर्नमेण्ट लेडी नोयस (Lady Noyce) माध्यमिक स्कूल (बहरों के लिए) १, फिरोजशाह कोटला, नई दिल्ली

४. सरकारी अंध विद्यालय सेवा कुटीर, बन्दा बहादुर मार्ग, किंगस्वे कैम्प, दिल्ली

५. अन्ध विद्यालय, पंचकुई रोड, नई दिल्ली-७

६. प्रशिक्षण एवं उत्पादन केन्द्र (पुरुषों के लिए) २०, नार्थ एवेन्यू, पंजाबी बाग, नई दिल्ली

७. राष्ट्रीय विरजानन्द अन्ध विद्यालय, न्यू राजेन्द्र नगर, शंकर रोड, नई दिल्ली

८. बहरों तथा विकलाँगों का स्कूल, २० बी १८ पी, तिलक नगर, नई दिल्ली

९. अन्ध महाविद्यालय, समाज कल्याण सोसायटी के पीछे, पंचकुई रोड, नई दिल्ली

१०. महिला सदन, महरोली, नई दिल्ली

कार्यक्रम में भाग लेने वाले

केन्द्रीय समाज कल्याण बोर्ड, दिल्ली की अध्यक्षा श्रीमती सुशीला रोहतगी इस प्रोग्राम में मुख्य अतिथि के रूप में सम्मिलित हुईं तथा कर्नाटक एवं केरला के ईश्वरीय सेवा-केन्द्रों की इन्चार्ज ब्रह्माकुमारी हृदय पुष्पा अध्यक्षा थीं। मॉरिशियस से आई बहन सोमप्रभा ने मंच सचिव के रूप में कार्यक्रम को चलाया।

विकलाँगों की अनेक संस्थाओं से ३०० से भी अधिक विकलाँग लोगों ने कार्यक्रम में भाग लिया। इन संस्थाओं के प्रशासन एवं शिक्षा कर्मचारी भी इन लोगों के साथ आये। आयोजकों द्वारा बस सुविधायें भी उपलब्ध कराई गयी थीं। विकलाँगों तथा उनकी संस्थाओं के अधिकारियों को अन्तर्राष्ट्रीय प्रदर्शनी में ले जाया गया तथा उनके उद्देश्यों से परिचित कराया गया। उनके साथ कुछ ऐसे लोग भी थे जो गूँगों को उनकी भाषा में समझा सकते थे। इस सन्दर्भ में ४४, मोहन पार्क-स्थित गवर्नमेन्ट लेडी नोयस माध्यमिक स्कूल की उप-प्रधानाचार्या श्री मार्व जी० के० कुलश्रेष्ठ लिखती हैं—

दिल्ली प्रशासन के समाज कल्याण विभाग के पत्र संख्या न० एफ़-६०, ता० ३१. २. ८१ के निर्देशानुसार इस स्कूल के गूंगे एवं बहरे विद्यार्थी अपने पाँच शिक्षकों के साथ २४ फरवरी से ५ मार्च तक आयोजित विश्व कल्याण महोत्सव को देखने गये।

सारे ग्रुप को ब्रह्माकुमारी बहनों ने बहुत अच्छे ढंग से संभाला। वह उन्हें प्रदर्शनी में ले गयीं जहाँ विश्व के इतिहास तथा 'रचयिता एवं रचना' के ज्ञान को समझाया गया। यद्यपि विद्यार्थी बहरे थे, फिर भी उन्होंने इस संस्था द्वारा बताये जा रहे आध्यात्मिक एवं नैतिक मूल्यों को अच्छी प्रकार समझा।

लाल किला मैदान में पण्डाल में आयोजित कार्यक्रम

पण्डाल में कार्यक्रम एक स्थानीय विद्यालय की संगीत पार्टी द्वारा प्रस्तुत किये गये एक मधुर गीत से आरम्भ हुआ।

क्योंकि संयुक्त राष्ट्र संघ (U.N.O) ने १९८१ का वर्ष विकलाँगों का वर्ष घोषित किया था, यह उचित ही था कि संयुक्त राष्ट्र संघ के ग़ैर सरकारी विभाग की अध्यक्षा श्रीमति सैली स्विग शैली ने इस सभा को सम्बोधित किया।

उन्होंने कहा—"इस वर्ष को संयुक्त राष्ट्र विकलाँगों का वर्ष मना रहा है। इसका उद्देश्य यही है कि समाज उन्हें अपने एक अंग के रूप में स्वागत करे तथा उनके जीवन में—

१. शारीरिक तथा मनोवैज्ञानिक समायोजन लाने में सहायता करें।

२. अर्न्ताष्ट्रीय स्तर पर उनके लिए उचित

प्रशिक्षण तथा कार्य की सुविधाओं का प्रबन्ध हो

३. ऐसे प्रोजेक्ट बनाये जायें जिनके द्वारा उन्हें पब्लिक भवनों में ले जाये जाने का उचित प्रबन्ध हो।

४. पब्लिक को विकलाँगों के अधिकारों से परिचित कराया जाये।

५. अंगहीन होने से बचाने के लिए कुछ ठोस उपाय अपनाये जायें।

कुछ आँकड़े बताते हुए उन्होंने कहा—"हर दस व्यक्तियों में से एक व्यक्ति की कोई-न-कोई शारीरिक अयोग्यता है।" उन्होंने इस वर्ष को समाज के इस वर्ग का वर्ष मनाने का उद्देश्य बताया। उन्होंने कहा कि इसका उद्देश्य यही है कि अपंग और विकलाँग लोगों में अपने सामाजिक जीवन के प्रति चेतना बढ़े ताकि वे सन्तुष्ट जीवन व्यतीत कर सकें।

"परमात्मा के उपहार विकलाँगों के लिए भी हैं"··· ब्रह्माकुमारी गीता

इसके बाद साउथ एक्सटैन्शन, नई दिल्ली-स्थित सेवा केन्द्र एवं संग्रहालय की इंचार्ज ब्रह्माकुमारी गीता जी ने "जीवन में समायोजन (Adjustment) की कला" विषय पर प्रवचन किया। उन्होंने कहा कोई व्यक्ति स्वस्थ हो या विकलाँग, शान्ति और सन्तुष्टता का जीवन जीने का अधिकार सभी को है। कुछ चीज़ें ऐसी होती हैं जो मानसिक पुरुषार्थ के द्वारा प्राप्त की जा सकती हैं। उन्हें प्राप्त करने में शारिरिक विकलाँगता बाधक नहीं बनती। दुर्भाग्यवश यदि किसी को जन्म से अथवा बाद में नेत्र-ज्योति चली गयी हो तो अब वह तीसरे नेत्र या दिव्य नेत्र को प्राप्त करने का पुरुषार्थ कर सकता है। यदि किसी का मुख रूपी वाचन-यन्त्र कार्य नहीं करता, या अगर कोई जन्म से गूंगा है तो वह भी आन्तरिक शान्ति के रहस्य को समझकर शान्ति प्राप्त कर सकता है। उसे चाहिये कि वह भीतर में मौन या मूक भाव की भाषा को तथा जीवन के रहस्य को भली भाँति जानने का प्रयत्न करे और अपनी अन्तरात्मा की भाषा को समझे। निस्सन्देह, एक विकलाँग व्यक्ति में साधारणतया स्वस्थ व्यक्ति की तुलना में कुछ कमी है, फिर भी उन्हें यह समझ लेना चाहिये कि यदि कोई इस ओर ध्यान दे तो प्रकृति की उपलब्धियाँ तथा परमात्मा के उपहार उनके लिए भी अतुल मात्रा में हैं। शायद विकलाँगों ने यह सुना होगा कि मौत में भी एक आवाज़ सुनाई देती है, सृष्टि का रहस्य बताने वाले ज्ञान में भी गीत भरा है और कि मनुष्य का मन भी एक प्रकार का चक्षु ही है। संस्कृत में एक श्लोक है जिसका अर्थ है कि ईश्वर की कृपा से एक लंगड़ा भी पहाड़ पर चढ़ सकता है, गूंगा बोल सकता है और नेत्रहीन देख सकता है। वास्तव में यह बात आध्यात्मिक दृष्टिकोण से सत्य है। यदि कोई लंगड़ा है तो भी वह दिव्य बुद्धि के शिखर पर पहुँच सकता है; यदि वह गूंगा है तो भी वह अपनी भावनाओं को शान्ति की भाषा में परमात्मा के सामने रख सकता है और यदि वह नेत्रहीन है तो भी वह तीसरे नेत्र अथवा ज्ञान-नेत्र द्वारा परमात्मा को देख सकता है।

उन्होंने अपंग लोगों को कहा कि उन्हें निराश होने की आवश्यकता नहीं है। निराशा, दुःख तथा आत्मा की कमज़ोरी मनुष्य की खुशी को लूट लेती है। अतः उन्होंने परमात्मा की श्रेष्ठ मत पर चलने की प्रेरणा दी।

जीवन में समायोजन

उन्होंने जीवन में उपस्थित लोगों को इस जीवन का महत्त्व बताते हुये इस सत्य की ओर उनका ध्यान खिचवाया कि करुणा के सागर परमात्मा हमें दिव्य बुद्धि प्रदान कर रहे हैं तथा सहज राजयोग सिखा रहे हैं जिनके द्वारा जीवन में समायोजन हो जाता हैं। उन्होंने कहा जीवन में परिस्थितियाँ बदलती हैं और मित्र-सम्बन्धियों तथा अन्य लोगों का व्यवहार भी बदल जाता है, अतः हमें अपने मन को परमात्मा के साथ युक्त करना चाहिये ताकि हमारी मन की शान्ति अशान्ति में न बदल जाये। फिर जीवन में समायोजन की समस्या अपने-आप समाप्त हो जायेगी क्योंकि परमात्मा शान्ति, स्नेह तथा आनन्द का अतुल भण्डार है।

उन्होंने सभा से अनुरोध किया कि वे अपंग लोगों

में यह भावना भरें कि हम उन्हें ईश्वर के वृहद परिवार के सदस्य मानते हैं।

"भारत का नाम विख्यात होगा :"
श्रीमति सुशीला रोहतगी

तत्पश्चात समाज कल्याण, दिल्ली, की अध्यक्षा श्रीमति सुशीला रोहतगी ने सभा को सम्बोधित किया। उन्होंने कहा, "चिरकाल से भारत समाज-सेवा तथा कल्याण के क्षेत्र में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता आ रहा है। निःसन्देह आज सारे विश्व में विकलाँगों के कल्याण के लिए एक विशेष वर्ष मनाया जा रहा है। यद्यपि इतना बड़ा कार्य एक वर्ष में पूरा नहीं हो सकता, फिर भी ऐसे शुभ कार्य के लिए प्रयत्न जारी रहने चाहियें। उन्होंने कहा कि विश्व के सभी अपंग लोगों का कल्याण कोई भी एक देश अकेला नहीं कर सकता। परन्तु इस उत्तम सेवा के लिए विश्व में सभी देशों को निःस्वार्थ भाव से एक जुट होकर आगे आना चाहिये।

उन्होंने इस बात पर बल दिया कि दिल्ली में विकलाँगों की सेवा के लिए सुविधाओं में वृद्धि होनी चाहिये और सभी सामाजिक संस्थाओं से अनुरोध किया कि वे सब मिलकर एकता से इस कार्य को करें।

लाल किला मैदान में एकत्रित हुई निःस्वार्थ, प्रभु-समर्पित तथा पवित्र स्वभाव वाली सहस्त्रों ब्रह्माकुमारी बहिनों के दृढ़ संकल्प को समझते हुए उन्होंने यह कहा कि अब ऐसे लगता है कि अब समाज कल्याण के क्षेत्र में तीव्रता से भाग लेकर निकट भविष्य में निश्चित रूप से भारत का नाम विश्व-विख्यात होगा।

"विकलाँगता तथा अनेक रोगों का राजयोग द्वारा निवारण" ब्रह्माकुमारी हृदय पुष्पा

कार्यक्रम की अध्यक्षा तथा कर्नाटक एवं केरला ज़ोन की इन्चार्ज ब्रह्माकुमारी हृदय पुष्पा जी ने कहा—"सभी ईश्वरीय सेवा केन्द्रों पर बच्चों के लिए भी कक्षाएँ आयोजित की जाती हैं। वे आध्यात्मिक ड्रामा, नैतिक गीतों आदि के माध्यम से भी ईश्वरीय ज्ञान की बातें सीखते हैं। अब परमपिता परमात्मा छोटी-बड़ी सभी आयु वर्ग वालों को सतयुगी दुनिया के स्थापनार्थ कार्य करने के लिए प्रोत्साहन देते हैं। अब परमपिता परमात्मा स्वयं आत्मा एवं परमात्मा का ज्ञान दे रहे हैं। यदि किसी को शारीरिक स्वास्थ्य उपलब्ध नहीं है तो उस रोगी शरीर वाली आत्मा भी परमात्मा से शक्ति प्राप्त कर सकती है। राजयोग द्वारा सर्व रोग २१ जन्मों के लिए समाप्त हो जाते हैं। अब शरीर एवं मन के रोगों से मुक्त होने का समय है। परमात्मा पिता कर्म के सिद्धान्त को समझाकर हमारी सहायता करते हैं। इस राजयोग के द्वारा सभी पिछले विकर्म भस्म हो जाते हैं और आत्मा सम्पूर्ण स्थिति को प्राप्त करती है। इसलिए मनुष्य को राजयोग सीखना चाहिए तथा इसका अभ्यास करना चाहिये। इशारों की भाषा में भी इसे समझा जा सकता है।

तदोपरान्त विकलाँगों को उपहार दिये गये। अनेक संस्थाओं ने प्रोग्राम की सराहना के पत्र लिखे है। उनमें से कुछ का सार नीचे दिया गया है—

कुछ सम्मतियाँ

प्रोफ़ेसर सी० डी० तम्बोली, एम० एल० एल० बी० (कलकत्ता) एम० एड० (बोस्टन, अमेरिका) डिप्लोमा इन टीचिंग द ब्लाइंड (अमेरिका) अपने १७ मार्च के पत्र में लिखते हैं—

आपके द्वारा आयोजित विश्व-कल्याण महोत्सव में स्कूल के स्टॉफ़ और विद्यार्थियों को भाग लेने के सन्दर्भ में आमन्त्रण पत्र भेजा गया। मुझे अफ़सोस है कि मैं उसमें भाग नहीं ले सका क्योंकि पहले से ही मैं किसी कार्य से व्यस्त था।

स्कूल के शिक्षक एवं विद्यार्थियों ने आयोजित कार्यक्रम में अत्याधिक आनन्द प्राप्त किया और वे आध्यात्मिक गहराइयों से बहुत अधिक प्रभावित हुए, यहाँ तक कि उन्होंने मुझे आयोजकों को कृतज्ञता एवं धन्यवाद देने के लिए प्रोत्साहित किया। विद्यार्थियों को उपहार के रूप में टी शर्ट, टॉवल, ग्लास आदि भी दिये गये। उसका भी वे शुक्रिया मानते हैं।

उन्हें कार्यक्रम अच्छा लगा

इसी प्रकार, देहली चेशायर होम के प्रशासक,

कर्नल पी० दयाल रिटायर्ड, महोत्सव के बाद अपने पत्र में लिखते हैं—

"सबसे पहले मैं विकलाँगों के लिए २७ मार्च, १९८१ को लाल किला में आयोजित विश्व कल्याण महोत्सव में भाग लेने के लिए दिये गये निमन्त्रण का धन्यवाद करता हूँ बहुत बड़े पैमाने पर तथा जिस मेहनत से आपने प्रोग्राम का संचालन किया, वह हमें सदा अधिक से अधिक सीखने और अच्छा बनने की प्रेरणा देता रहेगा।

हमारे मरीज़ों और स्टाफ़ ने आयोजित कार्यक्रम में आन्नद प्राप्त किया। आपने अपने आयोजन में जो हमारे कार्यकर्ता थे उनको पुरुस्कार स्वरूप जो टी शर्ट, टॉवल और ग्लास आदि दिये हैं, उनका मैं धन्यवाद अदा करता हूँ। वे आपकी कृतज्ञता एवं दयालुता को सदैव याद रखेंगे।

अब हम यहाँ लाजपत नगर, देहली के चेशायर होम के कुछेक विकलाँगों, जिन्होंने राजयोग का लाभ लिया है विचार व्यक्त कर रहे हैं—

चेशायर होम के प्रबन्धक निर्देशक की सम्मति

नई दिल्ली, चेशायर होम के प्रबन्धक-निर्देशक, अवकाश-प्राप्त कर्नल दयाल, जो अपनी धर्म-पत्नी के सहयोग से विकलाँगों की बहुत सेवा करते हैं, लिखते हैं—मैंने इस प्रश्न पर विचार किया है कि इस "होम" के निवासी इतने खुश क्यों हैं। वे न तो कभी रोते हैं, न आपस में कभी लड़ते-झगड़ते हैं। हमें उनकी कुछ भी चिन्ता नहीं करनी पड़ती। वास्तव में, हम तो उन्हें केवल भोजन देते हैं, हमें और कुछ भी नहीं करना पड़ता। विचार करने पर मैं इसी निर्णय पर पहुँचा हूँ कि ब्रह्माकुमारियाँ जो यहाँ आती हैं, योगाभ्यास सिखाती हैं और जीवन को पवित्र बनाने की शिक्षा देती हैं, यह सब उसी का फल है। वरना यह हर-एक घर का यही हाल है कि वहाँ एक-आध बार तो गर्मागर्मी हो ही जाती है और यदि कहीं छोटा परिवार हो तो वहाँ भी झड़प तो होती ही है। परन्तु यहाँ तो हरेक के चेहरे पर खुशी देखने में आती है और जब कभी यहाँ ब्रह्माकुमारियाँ आती हैं तो वातावरण में खुशी की मात्रा बढ़ ही जाती है। मैं तो इसे ब्रह्माकुमारियों द्वारा दी गयी शिक्षा ही का फल मानता हूँ हाँ, यह उन्हीं की शिक्षाओं का फल है कि यहाँ के विकलाँग वासी अब जीवन में कुछ उत्साह और उमंग का अनुभव करते हैं। अतः मैं इन बहनों का आभारी हूँ।"

"अब मैं अकेला और परित्यक्त अनुभव नहीं करती" जीत कौर

चेशायर होम की एक महिला, जीत कौर लिखती हैं—"मैं होशियारपुर की रहने वाली हूँ। गाँव में दीवार गिरने से अपंग हो गई हूँ। मेरी एक बच्ची है, पति भी है मगर ससुराल से मेरे मिलने को कोई नहीं आता। एक तो अपंग होने के कारण, दूसरा रिश्तेदारों से सम्बन्ध टूटने के कारण में अपने आपको बहुत असहाय समझती थी। मगर अब जब से ब्रह्माकुमारी बहनों द्वारा ज्ञान मिला कि यह तो मेरे कर्मों का खेल है, आत्मा शरीर द्वारा हिसाब-किताब चुक्ता कर रही है और कि अब तो सर्व सम्बन्ध परमपिता परमात्मा से हैं तो मुझे सदाकाल का सुख मिलने लगा है। दूसरों को भी आत्मा समझना शुरू किया इससे सहनशक्ति मिली। जब भी मेरी वृति देहधारी में जाती है, मैं एकदम बुद्धि को उस ओर से मोड़कर अपने को देह से न्यारी होने का अभ्यास करती हूँ। इससे शान्ति प्राप्त होती है। योग में बैठने से ऐसा अनुभव होता है कि मैं आत्मा परमधाम जा रही हूँ और लाल ही लाल प्रकाश दिखाई देता है।

जब से मैंने योग सीखा है मुझे किसी से कोई नाराज़गी नहीं रहती। मन यही करता है कि उसकी याद में बैठी रहूँ और देह से न्यारी बनकर अच्छा महसूस होता है।

मेरी रूहानियत, सहनशीलता और खुशी बढ़ती जा रही है—जयदेवी

चेशायर होम की एक दूसरी महिला, जयदेवी लिखती हैं—"शादी के कुछ समय पश्चात ही मैं तीन मंजिल से गिर पड़ी। बच्चा कोई अभी तक हुआ नहीं था। पति ने वैसे ही साथ छोड़ दिया। यह रिश्ते-नाते सब सुख के समय के ही होते है दुःख में कौन

किसका साथ देता है ? कर्मभोग तो हर प्राणी ने खुद ही भोगने हैं। सो मैं भी इन कर्मेन्द्रियों द्वारा भोग रही हूँ। अपंग हुये २७ वर्ष हो गये हैं। बचपन से ही ईश्वरीय याद में रही हूँ। आर्य समाजी ख्यालात हैं। मूर्ति पूजा में विश्वास नहीं रखती हूँ। ज्ञान से पहले भी यही विचार था कि असल में मैं आत्मा हूँ, मगर अपने आपको आत्मा मानकर कैसे कर्म किया जाये और उसकी याद में कैसे बैठें जिससे शान्ति, सुख, आनन्द प्राप्त हो। जब से प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय से ज्ञान-योग की शिक्षा प्राप्त की है तब से चढ़ती कला का अनुभव किया है। आत्मिक दृष्टि पक्की होती जा रही है और सहन-शक्ति बढ़ी है।

"मुझे परमात्मा शिव से मातृ स्नेह और पैत्रिक प्रेम है"—प्रेम दास

एक व्यक्ति जिनका नाम प्रेम दास है लिखते हैं—हिमाचल प्रदेश का रहने वाला हूँ। लगभग छः वर्ष से अपंग हूँ। पत्नी का देहान्त हो गया है। बच्चों की देखभाल घर के लोग करते है। शिव की पूजा और देवी-देवताओं की पूजा शुरू से ही किया करता था। मगर यह कौन हैं इसका ज्ञान नहीं था। अब जब से ईश्वरीय पढ़ाई आरम्भ की है, तब से यही कहता हूँ कि शिव बाबा मेरी आत्मा के मात-पिता है, उनकी याद में रहने से मेरे पाप कर्म विनाश होंगे। जितना-जितना अपने को आत्मा समझता हूँ, मन को सच्ची शान्ति मिलती है। क्रोध भी पहले से काफी कम हो गया है।

"मैं स्वयं को शिव बाबा की गोद में महसूस करता हूँ"—ओमपाल

भ्राता ओमपाल कहते हैं—मुरादाबाद का रहने वाला हूँ। मेरी १४ वर्ष की आयु है। तीन साल से अपंग हूँ। जब से शिव बाबा का बच्चा बना हूँ, सुख और शान्ति मिलनी शुरू हुई है। मन यही चाहता है कि शिव बाबा की याद में रहूँ। पलंग पर लेटे-लेटे यही सोचता हूँ कि मैं तो शिव बाबा की गोदी में सो रहा हूँ, शिव बाबा मेरे साथ खाना भी खाते हैं। मुझे बहुत-बहुत खुशी मिलती है।

"मैंने निन्द्रा, घृणा और पर-चिन्तन से छुटकारा पा लिया है"—राम लाल

एक अन्य भाई राम लाल जी लिखते हैं—"राजस्थान का रहने वाला हूँ। जब से ज्ञान और योग की शिक्षा ली है, आत्मिक दृष्टि बनती जा रही है। मैंने क्रोध पर विजय प्राप्त की है। सबसे अधिक लाभ हुआ है कि किसी की निन्दा-चुगली करने को मन नहीं करता और ना ही सुनने को। मेरी यह हार्दिक इच्छा है कि यह क्लास रोज हो।

"मुझे पहले जो मानसिक दुःख था, अब नहीं है"—कन्हैया लाल गुजर

उस्तरा गाँव का रहने वाला हूँ। नो साल से अपंग हूँ। मैं बहुत ही दुःखी इन्सान था मगर जब से ज्ञान-योग की शिक्षा ली है दुःखी होना छोड़ दिया है। अब तो शिव बाबा की सन्तान हूँ और उनकी याद में जितना समय निकल जाये, अच्छा है।

"परमात्मा ही मेरे सच्चे साथी और सहायक हैं"—मालती देवी

एक विकलाँग बहन मालती देवी लिखती हैं—"मैं उत्तर प्रदेश की रहने वाली हूँ। शादी होने के पश्चात अपंग हो गई हूँ। जैसे गायन है कि "सुख के सब साथी दुःख में साथी ना कोय", इसी प्रकार दुःख में कोई मेरा साथी नहीं बना। मेरा तो सच्चा साथी परमपिता परमात्मा ही है जो कि सर्व आत्माओं का कल्याण करने वाले हैं। योग में बैठने से बहुत आनन्द प्राप्त होता है। पाँच विकारों में से "मोह" का विकार समाप्त हो गया है।"

"मुझे परमात्मा पिता से निरन्तर स्नेह मिलता है"—रश्मी

एक १७ वर्षीय कन्या जिसका नाम रश्मी है और जो सब्जी मण्डी की रहने वाली थीं, लिखती हैं—"जन्म से ही अपंग हूँ। उसका कहना है कि जब से मुझे ज्ञान मिला कि मैं तो वास्तव में एक आत्मा हूँ और शिव बाबा की सन्तान हूँ, परमपिता मेरे सच्चे-सच्चे मात-पिता हैं, मुझे सुख मिलने लगा। परमात्मा प्यार का सागर है, इसलिए हर समय प्यार मिलता है और यही मन करता है कि उनकी याद में रहूँ। क्रोध करने को मन नहीं करता। आत्मिक सुख का अनुभव होता है। सहनशक्ति भी काफ़ी आ गई है।"

विश्व भ्रातृत्व-सम्मेलन

२७ फरवरी, १९८१ को अपराह्न ४ से ५-३० बजे लाल-किला मैदान पर बड़े पण्डाल में विश्व भ्रातृत्व सम्मेलन किया गया जिसका विषय था "राष्ट्रों में एकता"।

सम्मेलन की सभा में जो लोग बैठे थे उनमें हर व्यवसाय और हर एक महाद्वीप के कुछ-न-कुछ लोग शामिल थे। श्रोतागण में लगभग ३५ देशों से आए हुए लोग उपस्थित थे। ऐसा लगता था जैसे कि लगभग सभी जातियों, अनेक भाषाओं और अनेकानेक राष्ट्रों के कुछ-कुछ लोग जो पहले अलग-अलग धर्मों से सम्बन्धित थे, अब इन सभी धर्मों से ऊँचे उठ कर एक स्थान पर एकत्रित हुए। सब प्रकार के स्वार्थों को छोड़कर वे अब एक पवित्र और पसन्द परिवार के सदस्यों के रूप में स्नेह मिलन कर रहे थे। उनके मन में केवल एक ही दृढ़ संकल्प था कि वे पवित्रता के द्वारा विश्व में स्थायी शान्ति व सुख की स्थापना की जाए।

इस कार्यक्रम में "संयुक्त राष्ट्र संघ की ग़ैरसरकारी संस्थाओं की प्रधान श्रीमति सैली स्विंग शैली माननीय अतिथि थी। जो विभिन्न राष्ट्रों से आये हुए व्यक्तियों की इस छोटी संयुक्त सभा को देख कर खुश हो रही थीं। इस सभा में भारत के विदेश मंत्री भ्राता पी० वी० नरसिंहा राव ने इस कार्यक्रम में अपनी बहुत दिलचस्पी व्यक्त की थी और वे इसमें मुख्य अतिथि के रूप में आने वाले थे परन्तु अपनी माता के देहान्त के कारण उन्हें अनायास ही आँध्र-प्रदेश में अपने नगर में जाना पड़ गया था। ग्याना के उपप्रधान भ्राता स्टीव नारायण भी इस प्रोग्राम में सम्मिलित होने वाले थे। परन्तु अपने देश में किसी आवश्यक सरकारी काम के कारण उन्हें थोड़ा रुकना पड़ा और वे इस सत्र में भाग नहीं ले सके बल्कि अगले दिन उन्होंने अन्य सत्रों में भाग लिया।

कार्यक्रम के शुरू में अन्तर्राष्ट्रीय-भजन-मंडली ने हिन्दी में एक गीत गाया, जिसका विषय था "विश्व भ्रातृत्व"। इस गीत से सभा में उमंग और उत्साह की लहर दौड़ गई।

इसके बाद आस्ट्रेलिया देश के सिडनी नगर से आए ब्रह्माकुमार भ्राता रावर्ट फोरब्ज़ जो कि स्नेह स्वभाव के हैं और योग में गहरी रुचि लेते हैं, ने सम्मेलन के उद्देश्यों पर तथा विषय के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने सारे कार्यक्रम का संचालन किया। उन्होंने विदेश की सेवाओं की इंचार्ज और आध्यात्म तथा योग में ख्याति प्राप्त प्रमुख बहन ब्रह्माकुमारी जानकी जी को भाषण करने के लिए कहा।

ब्रह्माकुमारी जानकी, जिनके प्रेरणादायक व्यक्तित्व ने एक चुम्बक का काम करते हुए विभिन्न देशों और जातियों के लोगों को आकर्षित करके उन्हें परमपिता परमात्मा के एक आध्यात्मिक परिवार के रूप में जोड़ दिया है, ने ओजस्वी शब्दों में भाषण दिया।

"हम सभी एक ही विश्व-कुटुम्ब के सदस्य हैं"—ब्रह्माकुमारी जानकी

ब्रह्माकुमारी जानकी जी ने कहा—"संसार ने भ्रातृत्व शब्द का प्रयोग तो असंख्य बार किया है परन्तु हम देखते हैं कि वस्तु स्थिति यह है आज संसार में ऐसे गिनती के ही परिवार मिलेंगे जिनके सदस्य भ्रातृत्व की भावना से रहते हों। उन्होंने कहा कि भ्रातृत्व की भावना वास्तव में तभी आयेगी जब मनुष्य अन्यों को अपना भाई ही समझेगा परन्तु यह भाई-भाई की दृष्टि और भ्रातृत्व की भावना से भरा

स्नेह तभी पैदा होगा जब हम में से हर कोई स्वयं को आत्मा-परमपिता परमात्मा की सन्तान निश्चित करेगा। इस आध्यात्मिक दृष्टिकोण के बिना भ्रातृत्व की दृष्टि तथा भावना का और भला आधार हो ही क्या सकता है? और जब तक इस आधार पर भ्रातृत्व की भावना न हो तब तक एकता कैसे हो सकती है? एकता तो एक परमात्मा की सन्तति मानने से ही होगी? है भला इसका कोई और उपाय?

उन्होंने कहा—"यदि हम भ्रातृत्व की भावना छोड़ दें और यदि उसकी जगह संकुचित विचारों के आधार पर अनेक प्रकार की हदें बना लें तब तो फिर हमें यह मान कर चलना चाहिये कि हिंसा, घृणा, द्वेष और ऐसे अन्य अनेक दुर्भाव पैदा होंगे और हमें इन्हें भुगतना ही पड़ेगा। परन्तु हम से हर कोई मानेगा कि यह तो कोई ठीक जीवन मार्ग नहीं है, न ही यह शान्ति, प्रेम, सद्भाव और एकता का मार्ग है—और वास्तव में हम सभी चाहते तो शान्ति और एकता का मार्ग है न? अतः अच्छा यही होगा कि हम सभी का एक ही धर्म हो- वह है अहिंसा रूप धर्म। हम सभी की एक ही संस्कृति हो, वह है भ्रातृत्व की भावना पर आधारित स्नेहपूर्ण आध्यात्मिक सम्बन्ध रूपी संस्कार।"

भेदों पर बल देने से पतन हुआ है

उन्होंने कहा—"भेदों पर आधारित द्वैत के कारण ही परस्पर मन-मुटाव, झगड़े, दंगे और देश, रंग, जाति के आधार पर गुट-बन्दी होती है। अतः यह आवश्यक है कि यदि हमें सचमुच एकता चाहिए, जैसे कि हरेक ठीक विचारधारा वाला व्यक्ति चाहता है, तब तो हमें ऐसी बातों को उभारना चाहिए जिनसे एकता और मनोमिलन पैदा हो और यह बात मैं पूरे जोर से कहना चाहती हूँ कि एकता तब तक तो हो ही नहीं सकती जब तक कि प्रेम के सागर परमात्मा पिता की सन्तति होने के नाते भ्रातृत्व की भावना सुदृढ़ न हो। और मैं अनुभव के आधार पर कहना चाहती हूँ तथा मुझे पूर्ण आशा है कि यहाँ बैठे हुए और भी एक-सा ही कहेंगे कि जब से हम ने परमात्मा पिता शिव से—जिसे आप "गॉड" नाम दें या अन्य कोई नाम—नाता जोड़ा है और व्यावहारिक रीति से भ्रातृत्व की भावना को अपनाया है तब से हम हृदय से, मन से, स्वाभाविक रीति से स्वयं को एक ईश्वरीय परिवार के सदस्य अनुभव करते हैं।"

उन्होंने एक बार फिर स्नेह-पूर्ण रीति से और मुस्कराते हुए परन्तु ओजपूर्ण शब्दों में कहा—"जिन्होंने राजयोग का अभ्यास किया है वे इस बात को अनुभव करते हैं कि पहले जिस बात को हम असम्भव मानते थे, आज उसे हम सम्भव समझते हैं। उन्होंने कहा—"यदि एकता सम्भव नहीं है और यदि यह सम्भव नहीं है कि एक व्यक्ति दूसरों को आत्मा के नाते से भाई के प्रेम से देखे तो फिर संसार में कुछ भी सम्भव नहीं है। परन्तु यह बात ठीक है कि यह भ्रातृत्व की भावना दृढ़ तभी हो सकती है जब मनुष्य आत्मा-निश्चय की स्थिति में टिका हो। जब तक वह देह-अभिमानी रहेगा, तब तक उसका मन, लोभ, ईर्ष्या, द्वेष, अभिमान आदि प्रदूषण से मैले होंगे और तब तक एकता ढूंढने का कोई-न-कोई कारण पैदा होता ही रहेगा। परन्तु यदि आप राजयोग का अभ्यास करेंगे तो आप देखेंगे कि यह सभी प्रदूषण नष्ट हो जायेंगे और तब मन में स्वतः ही प्रेम और सहकारिता की धारा प्रवाहित होगी और हम में परस्पर तालमेल बढ़ेगा। राजयोग से मनुष्य के व्यक्तित्व में और उसकी विचार-प्रणाली में स्वतः ही परिवर्तन आ जाता है।"

"ओमशान्ति" के अर्थ-स्वरूप में स्थिति

ब्रह्माकुमारी जानकी जी ने कहा- कि शायद आप उपस्थित जनों ने इस बात पर ध्यान दिया होगा कि जब हम लोग किसी से मिलते हैं तो परस्पर "ओमशान्ति"—इन शब्दों से उसका अभिवादन करते हैं। भारत में जब दो व्यक्ति मिलते हैं, वे हाथ जोड़ते हैं अथवा नमः कहते हैं, झुकते हैं। अन्य बहुत-से देशों में जब लोग परस्पर मिलते हैं तो हाथ मिलाते हैं। परन्तु हम देखते हैं कि यद्यपि लोग औप-

चारिकता तो पूरी करते हैं, उनके मन में वह प्रेम और परस्पर सम्मान की हार्दिक भावना नहीं होती। परन्तु हम जब ओमशान्ति कहते हैं तब हम में यह स्मृति समाई होती है कि हम "आत्माएँ" हैं और कि हम परस्पर भाई-भाई हैं और तब हमारे मन में स्थायित्व होता है और, इस प्रकार, हम वास्तविक अर्थ में शुभाभिवादन करते हैं।"

लंडन में अपनी आध्यात्मिक सेवाओं की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा—"यहाँ ईश्वरीय सेवा-केन्द्र पर जो कोई भी आता है, तो शारीरिक दृष्टिकोण से चाहे वह किसी भी देश, धर्म या भाषा से सम्बन्धित हो, मैं उसे चार विषय अवश्य स्पष्ट करती हूँ—(१) ओमशान्ति (२) शिव बाबा (३) परमधाम और (४) स्वर्ग। मेरा यह विश्वास है कि अगर वे इन चार विषयों को समझ लें तो वे शेष बातें भी समझ जायेंगे। इन चार बातों को समझ लेने से मनुष्य को शान्ति और एकता की राह मिल जाती है।

यदि हम अव्यक्त फ़रिश्ते-जैसे बन जायें तो शान्ति हो ही जाएगी

आगे उन्होंने कहा—"जब लंडन से बहन-भाई इस महोत्सव में समय पर पहुँचने के लिए रवाना हो रहे थे तब मैंने भारतवर्ष में आने का अपने बारे में कोई विचार नहीं किया था। अतः उन बहन-भाइयों के प्रस्थान के समय मैंने उसे उसी रूप से बात करते हुए कहा—"आप सन्देशवाहक बन कर नहीं जा रहे, फ़रिश्ते बन कर जा रहे हैं।" मैंने यह इसलिए कहा था कि सभी लोग यह तो मानते ही हैं कि फ़रिश्ते शान्तिपूर्ण, दयालु और रक्षक होते हैं, तो ये बहन-भाई जो इतने समय राजयोग का अभ्यास करते आ रहे हैं, ये भी केवल सन्देशवाहक नहीं बल्कि फ़रिश्ते ही बन कर जायेंगे। परन्तु केवल वे बहन-भाई ही नहीं बल्कि आओ, हम सभी शान्ति के फ़रिश्ते बनें। आओ हम सभी भी उसी ही कार्य को करें क्योंकि परमात्मा हम सभी को शान्ति, प्रेम और एकता से रहने के लिए कहते हैं। यदि, हम यह मन में रखेंगे तो विश्व की सभी आत्माओं की स्थायी शान्ति की इच्छा निश्चय ही पूरी हो जायेगी।

अनेकता में एकता के दिगदर्शन

बहन जानकी के इन ज्ञानपूर्ण शब्दों तथा शान्ति-पूर्ण तरंगों की अनुभूति के बाद विभिन्न देशों से आये प्रतिनिधियों ने सन्देश सुनाये मानो एकता रूपी गुलदस्ते में हरेक ने अपने ज्ञान-पुष्प और शुभकामना रूपी सुमन सजोये। जब एक-एक देश से कोई बहन या भाई गहरे स्नेह-भरे शब्द सुनाने के लिए मंच पर सामने आता था तो वह दृश्य मनोहारी लगता था। वह अनेकता में एकता के दिगदर्शन कराता था और शान्ति की सुरखि बिखेरता था।

इसके बाद एक सांस्कृतिक कार्यक्रम हुआ। जर्मन ग्रुप ने मुरली-वादन किया और लंडन के ग्रुप ने एक दिव्य गीत पेश किया। नेरोबी से आई एक ब्रह्मा-कुमारी बहन ने एक आध्यात्मिक प्रेरणा देने वाला नृत्य पेश किया और दर्शकों को हर्षित किया।

शान्ति की प्राप्ति और स्थापना कैसे हो सकती है ?

इसके बाद संयुक्त राष्ट्र संघ की गैर-सरकारी संस्था-संगठन की प्रधान श्रीमति सैली स्विंग शैली ने सभा को सम्बोधित करते हुए कहा—"सन् १९६५ में नेहरू जी ने विश्व के राष्ट्रों को कहा था कि वे उसे अन्तर्राष्ट्रीय सहकारिता वर्ष के रूप में मनाएँ। वह एकता, मेलजोल और शान्ति से एक-जुट होकर कार्य करने की सम्मति थी। परन्तु उसके पन्द्रह वर्ष बाद आज हम किस स्थिति में हैं? उनके कहने का भाव यह था कि हम अपने लक्ष्य की ओर कोई आगे नहीं बढ़े।

आगे उन्होंने कहा—"पहले तो हम यह सोचें कि "शान्ति" हम कहते किस स्थिति को हैं? उन्होंने स्वयं ही उत्तर देते हुए बताया कि वास्तव में ठीक कर्म करने से मन की जो स्थिति बनती है, वही शान्ति की स्थिति है। वह एक गुणात्मक और सक्रिय स्थिति है। तब उन्होंने शान्ति की प्राप्ति के लिये तीन बातें करने का सुझाव दिया :—

१. हमारे समाज की व्यवस्था सम-भाव और

आर्थिक न्याय पर आधारित हो। उन्होंने लोगों को ऐसे नये आर्थिक ढाँचे के लिये सक्रिय होने के लिए कहा। उन्होंने ध्यान खिचवाया कि आज ५० करोड़ लोग निर्धनता की रेखा से भी निम्न स्तर पर जीवन व्यतीत करते हैं जो कि मानवता पर एक कलंक है।

२. हम राष्ट्र से अधिक महत्व विश्व को दें। उन्होंने कहा कि यदि राष्ट्रवादिता बनी रहेगी तो शान्ति स्थापित नहीं हो सकेगी।

३. हमें यह ध्यान रहे कि मानव समाज एक है। उन्होंने कहा कि जाति, रंग आदि एकता की भावना से दूर ले जाते हैं। जहाँ विभाजन हो वहाँ शान्ति की बेलें नहीं बढ़ सकतीं। यह कहना ग़लत है कि एक जाति ऊँची है और दूसरी नीची है और इस प्रकार के दूसरे भेद करना भी ग़लत है जिन से घृणा और द्वेष बढ़े।

एक आदर्श व्यक्ति कौन हो सकता है ?

तब उन्होंने संयुक्त राष्ट्र संघ के भूतपूर्व महा-मंत्री, "ऊँ थाँ" (U. Than) जो अब नहीं रहे द्वारा दी गई आदर्श नागरिक की व्याख्या की चर्चा करते हुए कहा कि उनके अनुसार आदर्श नागरिक में मुख्यतः चार विशेषताएँ होती हैं।

१. स्वयं को आत्मा मानना और आन्तरिक पवित्रता का होना।

२. नैतिक प्रेम और करूणा का होना।

३. बौद्धि योग्यताओं का होना।

४. शारीरिक योग्यताओं का होना।

उन्होंने सबसे अधिक महत्त्व "आत्मा-निश्चय" और आन्तरिक पवित्रता को दिया था।

फिर उन्होंने कहा कि प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय भी "आत्मा-निश्चय", विश्व-एकता, नैतिकता युक्त प्रेम और आन्तरिक पवित्रता को स्थापित करने और बढ़ाने की महत्व-पूर्ण सेवा कर रहा है; अतः मैं उनके कार्य की प्रशंसा करती हूँ। उन्होंने कहा कि मैंने उनके इस कार्य का व्यावहारिक दिगदर्शन इस महोत्सव में किया है जिसमें अनेक देशों के प्रतिनिधि भाग ले रहे हैं।

"इसे समता न कहकर सम-रसता, कहना अधिक उपयुक्त : ब्रह्माकुमारी डेनीज़

इसके बाद अमेरिका में सानफ्रांसिस्को में स्थित सेवा केन्द्र की इंचार्ज ब्रह्माकुमारी डेनीज़ ने कहा—"जब मुझे कोई "ब्रह्माकुमारी" कहता है या जब कभी मैं अपना परिचय देते हुए स्वयं को ब्रह्माकुमारी कहती हूँ तो मुझे पवित्र गर्व होता है क्योंकि मैं ब्रह्मा-कुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय के विश्व-भ्रातृत्व के आदर्शों को जीवन में ढाल कर व्यवहार क्षेत्र में सामने हूँ।

"भ्रातृत्व और समता" विषय पर भाषण करते हुए उन्होंने कहा—"हमें यह भली भाँति समझना चाहिए कि यद्यपि हम सभी भाई-भाई हैं, तो भी हर कोई हर दूसरे से व्यक्तिगत रूप में कई तरह से भिन्न भी है। हरेक में कोई-न-कोई अपनी विशेषता है। अतः मेरे विचार में "समता" शब्द इस प्रसंग में ग़लत होगा; इसकी बजाय "सन्तुलन" शब्द का प्रयोग ज्यादा ठीक होगा।"

उनके भाषण के पश्चात्, लंडन सेवा केन्द्र की राजयोग की प्रसिद्ध शिक्षिका ब्रह्माकुमारी जयन्ती, जिन्होंने अनेक देशों में राजयोग द्वारा एकता और शान्ति का सन्देश दिया है, सभा-जनों को अपने भाषण द्वारा राजयोग का सामूहिक अभ्यास कराया।

इसके बाद, लंडन आर्ट ग्रुप ने "विन्डोज" नाम कार्यक्रम पेश किया जिसके द्वारा आत्मा को सन्तुष्ट किया।

—:०:—

विश्व में नव जागृति के लिए राजयोग

हमें यूरोप व इंग्लैंड का इतिहास पढ़ने से विश्व में नव-जागृति आन्दोलन के बारे में जानकारी मिलती है। यह आन्दोलन १६वीं शताब्दी में एक नये समाज की स्थापना करने हेतु किया गया था जिसके द्वारा नई विचारधारा द्वारा धार्मिक सहिष्णुता का पाठ पढ़ाया गया था। इस आन्दोलन का उद्देश्य धार्मिक कट्टरता एवं अन्ध-विश्वास को समाप्त करके मनुष्य को विशाल हृदय बनाना तथा बुद्धिजीवी लोगों में एक नई विचारधारा पैदा करना था, लेकिन अगर हम सोचें कि इन सबके बावजूद प्राप्ति क्या हुई ? क्या संसार अच्छा बन गया ? क्या धार्मिक कट्टरता व झगड़े समाप्त हो गए ? क्या एक नये समाज की स्थापना हो गई जहाँ बुद्धिजीवी लोग हों और उनका श्रेष्ठता सम्पन्न जीवन हो ? वास्तव में इंग्लैंड व यूरोप का इतिहास हमें बताता है कि इन सब प्रयत्नों के बावजूद सामाजिक जीवन में ज़रा भी उन्नति नहीं हो सकी और लोगों में ईर्ष्या-द्वेष, लड़ाई-झगड़े की भावना समाप्त नहीं हुई। अतः इस लक्ष्य को पाने के लिए तथा आध्यात्मिक क्राँति के लिए विशेष प्रयत्नों की आवश्यकता है।

दूसरे शब्दों में मनुष्य की चाहना अभी तक बनी हुई है कि एक ऐसे समाज की स्थापना हो जहाँ लड़ाई-झगड़ा न हो तथा मनुष्य खुले दिमाग़ से स्वयं को पहचाने और वास्तविक सुख-शान्ति सम्पन्न युग का निर्माण हो। ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय का विश्वास है कि इन इच्छाओं की पूर्ति राजयोग द्वारा हो सकती है क्योंकि राजयोग द्वारा मनुष्य के मनोविकारों को भस्म किया जा सकता है और उन्हें दैवी विचारों में बदला जा सकता है। इससे मनुष्य के मन को स्थाई शान्ति मिलती है जैसे बारिश से अकाल पीड़ित ज़मीन को राहत और हरियाली मिलती है। यह राजयोग परमात्मा द्वारा दी गई संजीवनी बूटी है जिससे बीमार आत्माएँ पुनः शक्ति प्राप्त करके लोहे से सच्चा सोना बन जाती हैं। इस विचारधारा को लेकर ही यह सम्मेलन रखा गया था।

राजयोग के अभ्यास से मनुष्य का मन परमात्मा की स्नेह युक्त याद में मग्न हो जाता है। इससे मनुष्य के जीवन में विशेष परिवर्तन आता है। इस परिवर्तन के लिए स्वयं को इन साँसारिक पदार्थों व तत्वों से अलग समझना आवश्यक है। उन्होंने आगे बताया कि राजयोग निम्नलिखित बातों पर आधारित है—

(१) निरन्तर यह विचार करते रहना कि मैं एक आत्मा हूँ, एक चेतन बिन्दू हूँ।

(२) मैं स्वभाव से ही शान्त व पवित्र हूँ।

(३) मैं इस संसार में सूर्य, चाँद व सितारों से भी पार के लोक से आया हूँ जहाँ सोने की तरह चमकती हुई अखण्ड ज्योति है। मैं आत्मा वहाँ की निवासी हूँ। वहाँ से आकर मैंने इस शरीर का आधार लिया है तथा इस संसार रूपी ड्रामा में मैं पार्ट बजाने आई हूँ। अब मुझे अपने असली घर जाना है और यहाँ मुझे अपने को शरीर से अलग समझना है।

(४) मुझे यह ज्ञान अब मिला है कि अब चार युगों (सतयुग, त्रेतायुग, द्वापरयुग व कलियुग) का ड्रामा अब समाप्त होने वाला है और अब मुझ आत्मा को अपने मीठे घर, परमधाम में जाना है—सभी साँसारिक पदार्थों को यहीं छोड़ना है।

(५) मुझे परमपिता निराकार परमात्मा की स्मृति में रहना है। जो कि परमधाम का निवासी है और चेतन ज्योतिर्लिंगम हैं तथा पवित्रता, सुख, शान्ति एवं आनन्द के सागर हैं। यह स्नेह भरी याद मेरे व परमात्मा के बीच एक कड़ी है।

(६) उन्होंने आगे बताया कि चलते-फिरते, खाते-बोलते हुए अथवा कार्य व्यवहार करते हुए हमें इसी स्मृति में रहना चाहिए कि मैं एक आत्मा हूँ—और परमात्मा ज्ञान के सागर, सुख व शान्ति के सागर मेरे पिता हैं। यह स्मृति आन्तरिक परिवर्तन लाएगी और सच्ची शान्ति का अनुभव करायेगी।

भाग लेने वाले

केन्द्रीय मंत्री (जहाजरानी व यातायात विभाग) भ्राता वीरेन्द्र पाटिल इस सम्मेलन में मुख्य अतिथी थे तथा आपूर्ति विभाग के उपमंत्री भ्राता ब्रजमोहन मोहन्ती गेस्ट ऑफ ऑनर थे। भ्राता राजेन्द्र मोहन वाजपेयी को भी आना था लेकिन किसी आवश्यक कार्य वश वे नहीं आ सके। माऊन्ट आबू में ट्रेनिंग सैन्टर की इंचार्ज राजयोगिनी बहन मनोहर इन्द्रा, जो पिछले ४० वर्षों से योग की शिक्षा देती रही हैं, सभापति थीं। ब्रह्माकुमार निर्वैर जो स्वयं एक राजयोगी हैं, मंच सचिव थे। ब्रह्माकुमारी शीलू (माऊन्ट आबू में राजयोग की शिक्षिका), ब्रह्माकुमार ऐडन वाकर (यू० एस० ए० में राजयोग शिक्षक) ब्रह्माकुमारी नलिनी (घाटकूपर, बम्बई सेवा केन्द्र की इंचार्ज), ब्रह्माकुमारी सुदेश (यू० के० व स्कोटलैंड में स्थित सेवा केन्द्रों की इंचार्ज) आदि अन्य वक्तागण थे जिन्होंने अपने अनुभवी जीवन से अनेकों को लाभान्वित किया है। इन सभी अनुभवी वक्ताओं ने राजयोग की इतनी सुन्दर व्याख्या की जिसका शब्दों में वर्णन करना कठिन है।

बहुत से अन्य महान योगी भी स्टेज पर बैठे थे ताकि वातावरण में योग की लहर फैल सके। समस्त पण्डाल में पूर्ण शान्ति छाई हुई थी हालाँकि यह हज़ारों लोगों से भरा हुआ था।

यह कार्यक्रम उत्साह-वर्धक गीत से आरम्भ हुआ जिसके द्वारा लोगों का ध्यान परमात्मा की ओर खिच गया तथा कुछ समय के लिए योग का अभ्यास भी कराया गया।

राजयोग का अभ्यास व आवश्यक ट्रेनिंग

माऊन्ट आबू में राजयोग की शिक्षिका ब्रह्माकुमारी शीलू ने राजयोग के अभ्यास के लिए कुछ आवश्यक निर्देश दिये। इससे पहले उन्होंने राजयोग की व्याख्या व आवश्यकता बताई। उन्होंने बताया कि राजयोग आध्यात्मिक, शारीरिक व मानसिक उन्नति का सर्वोत्तम साधन है। राजयोग का अर्थ समझाते हुए उन्होंने कहा कि परमात्मा जो सुख-शान्ति के सागर हैं तथा सभी आत्माओं के मात-पिता हैं, से आत्मा का सम्बन्ध जुटाना ही राजयोग है। जैसे-जैसे शीलू बहन राजयोग के अभ्यास के आवश्यक निर्देश देती जाती थी उपस्थित लोग बहुत ही आनन्दित व उन्नति का अनुभव करते जाते थे और अपने को परमात्मा के निकट महसूस करते थे।

अतीन्द्रिय सुख का अनुभव

अमेरिका के राजयोग शिक्षक ब्रह्माकुमार ऐडनवाकर ने इस अनुभव को और आगे बढ़ाते हुए आत्मानुभूति कराई। वह स्वयं भी स्वस्थिति में स्थित थे तथा बहुत ही धीमें व मृदु शब्दों में राजयोग की व्याख्या दे रहे थे जबकि सामने रखा माइक्रोफोन उनकी धीमी आवाज़ को लोगों तक पहुँचाने में मदद कर रहा था। उन्होंने कहा, "मैं एक चेतन ज्योति हूँ, मैं एक अविनाशी बीज हूँ, मैं एक चेतन बिन्दू हूँ···मैं शान्त और पवित्र हूँ—मैं परमधाम से आई हूँ जहाँ सुनहरी लाल रोशनी है···मेरा मन शिव बाबा पर स्थित है जो एक बहुत ही चमकता हुआ शान्ति व स्नेह फैलाता हुआ सितारा है—मेरे ऊपर सुख-शान्ति और आनन्द की बहुत तेज़ धाराएँ पड़ रही हैं—" वे इस प्रकार के अनुभव सुनाते रहे और लोग असीम सुख-शान्ति की लहरों में लहराते रहे। ऐसा आनन्द किसी साँसारिक वस्तु से प्राप्त नहीं हो सकता। लोग चाहते थे कि यह अभ्यास चलता ही रहे अतः इसे राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी नलिनी (बम्बई सेवा केन्द्र की इंचार्ज) ने चालू रखा।

शरीर भान से अलग होना

"मैं ज्योति आनन्द व शक्ति का एक बिन्दू हूँ—मैं यह स्थूल शरीर नहीं हूँ—यह शरीर मेरी कार है और मैं इसका ड्राइवर हूँ—मैं अविनाशी सत्ता हूँ—चमकता हुआ सितारा हूँ—मैं सूर्य चाँद व

सितारों से भी पार से आया हूँ—मैं परमात्मा की अविनाशी सन्तान हूँ—" इस प्रकार का अभ्यास नलिनी बहन कराती रहीं। यह वास्तव में बहुत ही आकर्षक तथा शान्ति व आनन्द प्रदायक अभ्यास था और लोगों ने इससे भरपूर आनन्द उठाया। सारा वातावरण योगयुक्त बन चुका था।

राजयोग के अनुभव—ब्रह्माकुमारी फिटकूव

अब डॉक्टर हैलदी फिटकूव, जो कि जर्मनी में साइकोनालिस्ट हैं, ने अपना राजयोग का अनुभव सुनाया। उन्होंने इस अभ्यास में सच्चा स्नेह का बहुत महत्त्व बताया। उन्होंने कहा मेरे विचार से परमपिता परमात्मा से सच्चा स्नेह और सर्व सम्बन्ध जोड़ने का नाम ही योग है। इस स्नेह के बन्धन के लिए किसी प्रकार के सन्यास की आवश्यकता नहीं है। मैं स्नेह के आधार पर ही परमात्मा को याद करती हूँ और दूसरों को भी इसका अभ्यास कराती हूँ तो मुझे बहुत आनन्द व शान्ति मिलती है।

साईको ऐनोलिसस विज्ञान का विषय है और अगर मनुष्य के मन का विज्ञान द्वारा विश्लेषण किया जाए तो हमें स्नेह (प्यार) का महत्त्व पता चलेगा। जीवन में स्नेह बहुत जरूरी है। यदि हमें दैवी स्नेह का अनुभव जीवन में हो जाता है तो हम दूसरों के साथ अपना सम्बन्ध अच्छी प्रकार से निभा सकते हैं। इस प्रकार उन्होंने राजयोग के अभ्यास में स्नेह का बहुत बड़ा स्थान बताया और कहा परमात्मा से सच्चा प्यार करना ही वास्तव में राजयोग है जिससे जीवन में अतीन्द्रिय सुख का अनुभव होता है।

मन को ईश्वरीय स्मृति में स्थिर रखना

अब स्कोटलैंड व इंग्लैंड से आई हुई ब्रह्माकुमारी सुदेश ने मन को ईश्वरीय स्मृति में टिकाने का सहज तरीका बताते हुए कहा कि सर्वप्रथम हमें अपने आप को शरीर से अलग समझना है तथा आत्मिक स्थिति में स्थित होना है व अपने को परमधाम का निवासी और परमात्मा की सन्तान समझना है। इससे आत्मा को असीम शान्ति एवं हल्के पन का अनुभव होता है और आत्मा फ़रिश्ता बनकर उड़ने लगती है। वह स्थूल प्रकृति व संसार के आकर्षणों से परे, परमधाम में ऊपर-ऊपर उड़ती रहती है।

फिर उन्होंने योग का अभ्यास कराते हुए कहा, "मैं एक आत्मा हूँ—, अविनाशी ज्योति बिन्दू हूँ, मैं शान्त और पवित्र हूँ, मैं परमधाम से यहाँ आई हूँ, वह मेरा तथा मेरे परमपिता परमात्मा का स्वीट होम है, परमात्मा मेरे दयालु, मात-पिता, बन्धु व सखा हैं जो मुझे विकारों की दलदल से निकाल रहे हैं—" इस प्रकार उन्होंने उपस्थित जनता को राजयोग का अभ्यास व असीम शान्ति व आनन्द का अनुभव कराया।

जब सुदेश बहन लोगों को इस प्रकार योग का अभ्यास करा रही थी तो सारा वातावरण ही योग युक्त बन गया था और सारी सभा ऐसे लग रही थी मानो वे इस ज़मीन पर नहीं बल्कि शान्ति के सागर में गोते लगा रही है अथवा पीस पैलेस में पहुँच गए हैं और अथाह शान्ति और आनन्द का अनुभव कर रहे हैं।

योग द्वारा मानसिक तनाव और बुराइयों से छुटकारा तथा समय की पुकार : भ्राता वीरेन्द्र पाटिल

अब मुख्य अतिथि भ्राता वीरेन्द्र पाटिल (केन्द्रीय मंत्री) ने अपने विचार प्रकट किए कि इस प्रकार का आयोजन एक विशेष महत्त्व रखता है क्योंकि आज का मानव मानसिक तनाव व परेशानियों से ग्रसित है और इस प्रकार के राजयोग अभ्यास से ही उसे इन सभी परेशानियों से छुटकारा मिल सकता है। उन्होंने कहा कि आज का मानव भौतिक सुखों के पीछे पड़ा हुआ है और भौतिकता तथा विकारों के वश अनेक कुकर्म (पाप) करता रहता है। उसमें सहनशक्ति न होने के कारण वह जल्दी ही क्रोधित हो जाता है और लड़ने पर उतारू रहता है। यह ईश्वरीय विश्व विद्यालय लोगों के चरित्र सुधारने व आत्मिक उन्नति करने का बहुत महान कार्य कर रहा है। इनके इस प्रकार के अथक प्रयास व शिक्षा प्रणाली से मैं बहुत सन्तुष्ट हूँ और आशा करता हूँ कि सभी क्षेत्रों में इसे सफ़लता मिलेगी। विशेषतौर

(शेष पृष्ठ ७६ पर)

शिक्षा-विद-सम्मेलन

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय द्वारा मई १९८० में समाज में आध्यात्मिक एवम् नैतिक मूल्यों की पुनर्स्थापना के लिए एक दस सूत्री कार्यक्रम का आयोजन किया गया। यह अपनी तरह का अनूठा ही प्रयोग था। इस दस-सूत्री कार्यक्रम में एक सूत्र का समावेश विशेष रूप से बच्चों व युवकों की उन्नति के लिए किया गया। इसके लिए भारत के विभिन्न राज्यों में भिन्न-भिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। दिल्ली में अन्य कार्यक्रमों के अतिरिक्त विद्यार्थियों के नैतिक व आध्यात्मिक हित में कुछ प्रतियोगिताओं का भी आयोजन किया गया। इन सभी कार्यक्रमों की समाप्ति फ़रवरी के चौथे सप्ताह तक की जानी थी जबकि एक विशाल अन्तर्राष्ट्रीय कार्यक्रम "विश्व कल्याण महोत्सव" का आयोजन किया जाना था। शिक्षा-विद सम्मेलन भी इस महोत्सव का एक अंग था जो २८ फ़रवरी को आयोजित किए गए कुछ कार्यक्रमों में से एक था। इस सम्मेलन का विवरण देने से पहले चरितार्थ यह होगा कि उन प्रतियोगिताओं का संक्षिप्त विवरण दिया जाए जिनका १०-सूत्री-सेवा कार्यक्रम के अन्तर्गत आयोजन किया गया।

विद्यार्थियों के लिए प्रतियोगिताओं का आयोजन

इस कार्यक्रम के अन्तर्गत दिल्ली के विभिन्न स्कूलों व कॉलेजों में निम्नलिखित प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया।

१. कविता प्रतियोगिता

यह प्रतियोगिता स्नातक व स्नातकोतर कला के विद्यार्थियों के लिए आयोजित की गई। इसमें विद्यार्थियों को निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर अपनी कविता प्रस्तुत करनी थी।—

१. नैतिक मूल्य
२. साम्प्रदायिक-एकता
३. पिता श्री प्रजापिता ब्रह्मा

२. अन्तर्विद्यालय कला एव नीति वचन प्रतियोगिता

(क) कला प्रतियोगिता का आयोजन छठी, साँतवी व आठवी कक्षा के विद्यार्थियों के लिए किया गया। इन विद्यार्थियों को निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर अपनी कला कृति प्रस्तुत करनी थी –

१. अच्छे बच्चे
२. अच्छा समाज
३. बच्चों की समस्याएँ

(ख) नीति-वचन प्रतियोगिता ग्याहरवीं तथा बारहवीं कक्षा के विद्यार्थियों के लिए आयोजित की गई। इन्हें निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय को चुनकर अपने नीति वचन प्रस्तुत करने थे।

१. आत्म-अनुशासन
२. नैतिक मूल्य
३. दैवी गुणों का-आचरण
४. साम्प्रदायिक साँमजस्य

३. अन्तर्विद्यालय भाषण प्रतियोगिता

नवीं व दसवीं के विद्यार्थियों के लिए भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। अधिक-से अधिक विद्यार्थियों को सम्मिलित करने अर्थ इस प्रतियोगिता को दो भागों में विभाजित किया गया। प्रथम भाग में सम्पूर्ण दिल्ली के विभिन्न क्षेत्रों में अन्तर्विद्यालय प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। उसके बाद हर क्षेत्रीय प्रतियोगिता में प्रथम श्रेणी प्राप्त करने वाले प्रतियोगयों के बीच एक अन्तिम (Final) प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

प्रथम चरण में निम्नलिखित विद्यालयों ने क्षेत्रीय

प्रतियोगिता का आयोजन किया।

१. विद्या भवन स्कूल कश्मीरी गेट, दिल्ली

२. राजकीय उच्चतर माध्यमिक कन्या विद्यालय, रानी बाग, दिल्ली

३. राजकीय उच्चतर माध्यमिकबाल विद्यालय रामपुरा, दिल्ली

४. राजकीय उच्चतर माध्यमिक बाल विद्यालय, पालम कालोनी, नई दिल्ली

५. डी० ए० वी० उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, शंकर रोड, नई दिल्ली

६. सिन्धी पन्चायती स्कूल, राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली

७. राजकीय उच्चतर माध्यमिक बाल विद्यालय, रूप नगर, न० १, दिल्ली

८. राजकीय उच्चतर माध्यमिक बाल विद्यालय, शक्ति नगर, दिल्ली

९. राजकीय सीनीयर माध्यमिक कन्या विद्यालय, कृष्णा नगर, दिल्ली

१०. राजकीय सीनीयर माध्यमिक कन्या विद्यालय न० २, वैस्ट पटेल नगर, नई दिल्ली

११. ग्रीन फील्ड स्कूल, सफदरजंग एनक्लेव, नई दिल्ली

१२. एन्थनी उच्चतर माध्यमिक कन्या विद्यालय, नई दिल्ली

१३. महता विद्यालय, दिल्ली

१४. डी० टी० ई० ए० स्कूल, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली

१५. राजकीय उच्चतर माध्यमिक कन्या विद्यालय, इन्द्र गंज, नई दिल्ली

१६. नवयुग विद्यालय, नई दिल्ली

क्षेत्रहस-प्रतियोगिताओं में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले प्रतियोगियों के मध्य अन्तिम प्रतियोगिता का आयोजन लाल किला मैदान, दिल्ली में २८ फरवरी, १९८१ को "शिक्षा विद सम्मेलन" के शुभ अवसर पर किया गया।

पारितोषिक एवं प्रमाण-पत्र वितरण

सभी प्रतियोगिताओं के प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय श्रेणी-प्राप्त विद्यार्थियों को योग्यता अनुसार प्रमाण-पत्र प्रदान किए गए। विजेताओं को शील्ड कप भी प्रदान किए गए। इसके अतिरिक्त निम्न लिखित पुरस्कार भी दिए गए।

१. प्रथम श्रेणी प्राप्त विजेताओं के लिए अटैची केस

२. द्वितीय श्रेणी प्राप्त विजेताओं के लिए हैंड बैग

३. तृतीय श्रेणी प्राप्त विजेताओं के लिए टॉर्च

कुल मिलाकर प्रतियोगियों को ३५ शील्ड तथा कप वितरित किए गए। इसके अतिरिक्त प्रथम स्थान पाने वालों को चार बड़ी शील्ड्स भी दी गई। इन विजेताओं के स्कूल व कॉलेज के नाम इस प्रकार हैं।

कविता प्रतियोगिता : आत्मा राम सनातन धर्म महाविद्यालय धौला कुँआ, नई दिल्ली

भाषण प्रतियोगिता : डी० टी० ई० ए० स्कूल, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली

कला प्रतियोगिता : रायसीना बंगाली उच्चतर माध्यमिक विद्यालय नई दिल्ली

नीति वचन प्रतियोगिता : दयानन्द आर्य उच्चतर माध्यमिक विद्यालय वेस्ट पटेल नगर, नई दिल्ली

बाल कला प्रदर्शनी

जैसा कि ऊपर बताया गया है फ़रवरी के तीसरे सप्ताह के पूर्व सभी प्रतियोगिताएँ समाप्त कर दी गई थीं। प्रतियोगिता में भेजे गए बच्चों के नीति वचन तथा कला-कृतियाँ २४ फ़रवरी को लाल किला मैदान, दिल्ली में आयोजित एक अन्तर्राष्ट्रीय प्रदर्शनी में रखी गयीं। इस आध्यात्मिक अन्तर्राष्ट्रीय प्रदर्शनी में एक मण्डप विशेष रूप से बच्चों की कला-कृतियों द्वारा सजाया गया जिसका उद्घाटन २४ फ़रवरी, १९८१ को बच्चों की प्रसिद्ध पत्रिका "नन्दन" के सम्पादक भ्राता जय प्रकाश भारती जी द्वारा किया गया। इस कला प्रदर्शनी को ७०,००० से भी अधिक व्यक्तियों ने देखा।

शिक्षा विद् सम्मेलन

कार्यक्रम का शुभारम्भ बहन लवली तथा उसकी सखियों ने एक नृत्य द्वारा किया। उसके बाद तीन मिनट के लिए राजयोग हुआ जिसमें टॉम एनी तथा रॉबर्ट ने एक दिव्य गीत अंग्रेजी हिन्दी में प्रस्तुत किया। तत्पश्चात् मंच पर उपस्थित सभी वक्तागणों को बैज (Badges) लगाए गए तथा मंच सचिव बहन पूनम ने कार्यक्रम उद्घोषित किया।

सर्वप्रथम वक्ता आस्ट्रेलिया से पधारी मैडम एस्टेला मायर्स थी। वह इन्द्रधनुषी रंगों की पोशाक पहने हुई थीं। इस पोशाक की चर्चा उन्होंने अपने प्रवचन में की। उन्होंने यह विस्तार पूर्वक बताया कि किस प्रकार वह रंग-भेद आदि से घृणा करती थीं, इसीलिए सदा इन बुराइयों को खत्म करने की खोज में रहती थीं। न्यूयार्क विश्व-विद्यालय में उन्होंने देखा कि कैसे शिक्षा ने विभिन्न जातियों को एक सूत्र में बाँध दिया था। वहाँ सभी इकट्ठे रहकर एक-दूसरे की सहायता करते थे तब से ही जैसे उन्होंने ज़िन्दगी की वास्तविकता को पहचाना तथा उनका जीवन खुशी से भर गया था। इससे वे इस निष्कर्ष पर पहुँची कि शिक्षा द्वारा सभी सीमाओं व हदों को पार कर एकता को महसूस किया जा सकता है। पुस्तकें केवल सीखने का माध्यम ही नहीं लेकिन, यदि हम पुस्तकों द्वारा दी गई शिक्षाओं की गहराई में जाएं तो हम सदा हर्षित रहकर विश्व को वह संदेश दे सकते है जो आज मानव नहों अपितु पशु-पक्षी इस संसार को दे रहे हैं। अतः शिक्षा द्वारा हमें अपनी चारों ओर की प्रकृति व वातावरण का ज्ञान मिलना चाहिए। अपने भाषण को संक्षिप्त करते हुए उन्होंने कहा कि जैसे यदि एक प्रिज्म पर सफ़ेद प्रकाश डाला जाए तो भाँति-भाँति के रंग प्रतिबिम्बित होते हैं। इसी प्रकार सर्व बुराइयों रहित आत्मा विश्व में खुशी, प्यार व शान्ति की किरणे फैलाती है।

उसके पश्चात "भाषण प्रतियोगिता" रखी गई जिसका विषय था, "श्रेष्ठ जीवन के लिए शिक्षा।" सभी प्रतियोगी मंच पर उपस्थित हो गए।

शिक्षा केवल जीवीकोपार्जन की कला नहीं अपितु जीने की कला भी सिखाती है

तत्पश्चात् मध्य प्रदेश के सीनीयर भ्राता ओम प्रकाश जी ने सभा को प्रारम्भ किया। उन्होंने अपने भाषण में मुख्यतः शिक्षा के सुधार पर ज़ोर दिया। उन्होंने कहा, "हम सभी जानते हैं कि मानव के लिए यह जीवन बहुत अर्थ पूर्ण है। हर व्यक्ति के पास अपने ऊँचे विचार, ऊँचा व्यक्तित्व है और यही उसका सबसे बड़ा धन है। इन सबके बीच शिक्षा एक ऐसी कला है जो व्यक्तित्व को बनाती है परन्तु मूर्ति में कोई भी कमी उसका मूल्य घटा देती है। प्रारम्भ से ही गणित, लिखना व पढ़ना जीवन की मुख्य आवश्यकताएँ मानकर सिखाई जाती हैं, परन्तु इस प्रकार की शिक्षा से मनुष्य केवल कार्य करने या अपनी रोज़ी कमाने का ही प्रशिक्षण प्राप्त कर सका है। इसमें यह नहीं सिखाया जाता कि जीवन कैसे जिया जाता है। उदाहरण के तौर पर हमारे सामने कितने ही डॉक्टर, वकील व न्यायधीश आदि हैं जिन्होंने अपने-अपने क्षेत्रों में विद्योपार्जन में सालों व्यतीत किए लेकिन क्या इससे उनके जीवन पर कोई अच्छा प्रभाव पड़ा है? जब हम इन सब व्यवसायों के दोषपूर्ण उपयोग के बारे में सुनते हैं तो इनकी शिक्षा पर प्रश्न उठता है।

अपने वक्तव्य को आगे बढ़ाते हुए उन्होंने कहा कि वर्तमान समय की शिक्षा बहुत कुछ सिखाती है लेकिन जीवन जीने का सही रास्ता नहीं बतलाती। आज के मानव ने ऊँचे से ऊँचे शिखर व गहरे से गहरे सागर को नाप लिया हैं परन्तु अब तक यह नहीं समझ पाया, "मैं कौन हूँ? और इस संस्था का लक्ष्य ही स्वयं तथा स्वयं के पिता की पहचान देना है। तथा यह कदापि मुश्किल नहीं।" यही शिक्षा जीवन जीने की कला सिखाती है।

शिक्षा से जीवन का स्तर ऊँचा होना चाहिए : एस० बी० चव्हाण

इसी बीच हमारे शिक्षा मंत्री भ्राता एस० बी० चव्हाण को देरी होने के कारण मंच पर उन्हें भाषण देने के लिए आमन्त्रित किया गया। उन्होंने कहा

शिक्षा मंत्री होने के नाते उनका पहला कर्तव्य है कि शिक्षा पद्धति में आने वाली समस्याओं पर गहराई से विचार कर अपना पूरा-पूरा सहयोग दें।

शुरू से ही वह सोचा करते थे कि शिक्षा का अर्थ केवल उपाधि प्राप्त करना ही नहीं अपितु शिक्षा किसी लक्ष्य-पूर्ति का साधन है। तथा इस लक्ष्य की पूर्ति "प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय" जैसी सामाजिक व आध्यात्मिक संस्थाओं द्वारा ही हो सकती हैं। फिर उन्होंने महोत्सव की सफ़लता के लिए अपनी शुभ कामनाएँ व्यक्त की।

उन्होंने कहा शिक्षा हमारी संस्कृति की तरह, जीवन स्तर को सुधारने वाली होनी चाहिए। विद्यार्थियों तथा शिक्षकों को श्रेष्ठ शिक्षा के लिए प्रयास करना चाहिए। जिसका एक रूप है—तीक्ष्ण बुद्धि। शिक्षा स्नेह, आनन्द, रहम, करुणा, इच्छा के रूप में होने चाहिएं। विभिन्न मनुष्यों में जीवन की सामंजस्यता ही श्रेष्ठता का वास्तविक चिह्न है और इसी सामंजस्यता की वृद्धि की आज आवश्यकता है। इसके साथ-साथ शारीरिक तंदुरूस्ती भी अत्यन्त आवश्यक है।

इसके पश्चात लंदन से पधारे भ्राता जिम रयान ने अपने प्रवचन में कहा कि वह एक अध्यापक थे और युवकों को अपने भविष्य को उज्जवल बनाने का प्रशिक्षण देना अपनी जिम्मेवारी समझते थे। उन्होंने कहा कि यदि निश्चित पाठयक्रम (Syllabus) में नैतिक शिक्षा को भी शामिल कर दिया जाए तो युवकों को अपने कार्य को अधिक उत्साह व साहस से करने की शक्ति मिलेगी।

पुनर्जन्म की वास्तविकता का ज्ञान अर्थात् समझ आ जाने से हमें यह समझ में आ सकता है कि कई आत्माओं को वर्तमान आधुनिक काल के युद्धों व निराशात्मक स्थितियों का अनुभव है जिसका परिणाम संसार की वर्तमान स्थिति है। आज आत्मा को शक्ति चाहिये जिसके लिए परमात्मा जो कि शक्ति का स्रोत है उसकी पहचान आवश्यक है।

उन्होंने आगे कहा, "इस तरह दो तरफ़े परिवर्तन की आवश्यकता है। सबसे पहले आत्मा की पहचान आवश्यक है जिसके द्वारा शिक्षक-विद्यार्थी सम्बन्धों में आदर तथा भाई चारे का विकास होगा। दूसरे, शक्ति के परम स्रोत सर्वशक्तिवान् परमपिता परमात्मा की पहचान आवश्यक है जिस शक्ति के आधार से हम समाज के सहायक बन सकते हैं।"

लोगों को नज़दीक से समझना भी शिक्षा का एक अंग है : पोडोइनिटजिन

तत्पश्चात् संयुक्त राष्ट्र शैक्षणिक वैज्ञानिक तथा सांस्कृतिक संस्था के डायरेक्टर तथा भारत में उनके प्रतिनिधि डा० वी० जी० पोडोइनिटजिन ने संक्षेप में अपने विचारों को व्यक्त करते हुए कहा, कि किस प्रकार भिन्न-भिन्न व्यक्तियों से मिलने, उनके कर्मों, विचारों तथा उनकी पसन्द व नापसन्द को समझने ने उन्हें किस प्रकार हर वर्ग के व्यक्तियों से बुद्धिमता से व्यवहार करने का मौका दिया है और उनके विचार में इस प्रकार लोगों का नज़दीक से समझना ही वास्तविक शिक्षा है।

उसके बाद डा० पोडोइनिटजिन ने भाषण प्रतियोगिता व कला प्रतियोगिता के विजेताओं को पुरस्कार वितरित किए तथा ब्रह्माकुमारी शिवकन्या अध्यक्षा ने प्रमाण पत्र तथा मिठाई बाँटी।

सभा के समाप्त होने से कुछ ही समय पूर्व दादी जानकी जी मंच पर पधारीं। और उन्होंने "किस तरह विश्व की सभ्यता व विश्व-कल्याण युवकों पर निर्भर करता है" विषय पर कुछ शब्दों में प्रकाश डाला। उन्होंने कुछ पुरस्कार भी वितरित किए।

तभी ब्रह्माकुमारी शिवकन्या ने अध्यक्षा के रूप में भाषण दिया। सभा की समाप्ति उन्होंने यह याद दिलाते हुए की कि जीवन की हर अवस्था तथा सम्पर्क में आए हुए हर व्यक्ति से हमें शिक्षा की प्राप्ति होती है। जन्म लेते ही माँ बच्चे की देखभाल करती है। उसके सम्बन्धी, विद्यालय व साँसारिक अनुभव ही एक व्यक्ति को बनाने में सहयोग देते हैं। जाने अनजाने इस संसार में हम एक-दूसरे से सीखते व सिखाते हैं। हर व्यक्ति समाज का महत्त्वपूर्ण अंग है। तथा यह समाज हम सभी व्यक्तियों पर निर्भर करता है इसलिए दूसरों को शिक्षा देने हेतु हमें एक

अच्छा उदाहरण बनने का पूरा-पूरा ध्यान रखना चाहिए। और हमें वही ग्रहण करना चाहिए जो हमारे लिए सर्वोत्तम हो।

इसी के साथ के कानपुर के वकील ब्रह्माकुमार संतराम जी ने प्रस्ताव पढ़कर सुनाया तथा जयपुर के व्यापारी ब्रह्माकुमार शर्मा जी ने उनकी हाँ में हाँ मिलाई और प्रस्ताव एक मत से पास हो गया।

इस सभा की एक महत्त्वपूर्ण वक्ता बम्बई की कुमारी संगीता एक विशेष संदेश लेकर आई। यद्यपि वे केवल पाँच वर्ष की थी परन्तु अपनी बुद्धिमता के कारण पचास वर्ष की प्रतीत होती थी। उसने प्रारम्भ करते हुए कहा कि वह कोई भाषण देने नहीं अपितु विश्व-कल्याण अर्थ एक महत्वपूर्ण संदेश देने आई हैं। उसने कहा, आज संसार की हालत दिन-प्रतिदिन गिरती जा रही है। धार्मिक, सामाजिक व शैक्षणिक रीति रिवाजों की शक्ति समाप्त हो चुकी है और सभी व्यक्ति विकारी व दुःखी जीवन के आदी हो चुके हैं। जिससे अब वे मुक्ति पाना चाहते हैं। इन सबका मूल कारण है—पाँच विकार। फिर उसने बहुत साहस से सभी उपस्थित व्यक्तियों से पूछा—कौन ऐसा व्यक्ति है जो इन विकारों को छोड़ने को तैयार है? इसका सबसे आसान रास्ता है कि स्वयं को पहचान अपनी बुद्धि का सीधा सम्बन्ध उस परमपिता परमात्मा शिव से जोड़ो।

उसने सचमुच अपनी साधारण तथा मीठी लेकिन प्यारी बातों से सभी का मन मोह लिया।

फिर भ्राता ब्रह्माकुमार शर्मा जी ने सभी उपस्थित जनों का आभार प्रकट किया और कुछ मिनट के सामूहिक योगाभ्यास के पश्चात् कार्यक्रम समाप्त हुआ।

—:o:—

(विश्व में नव जागृति के लिए राजयोग पृष्ठ ७१ का शेष)

पर महिला उत्थान, शिशु कल्याण व विकलाँगों के कल्याण के लिए जो कार्य इस संस्था द्वारा किया जा रहा है, वह बहुत ही सराहनीय है।

समाज का आध्यात्मिक उत्थान अत्यावश्यक : बी० एम० मोहन्ती

तत्पश्चात् केन्द्रीय मंत्री भ्राता बृज मोहन मोहन्ती ने कहा, "यह ईश्वरीय विश्व-विद्यालय आज के भौतिक युग में समाज में आध्यात्मिक क्राँति लाने तथा चरित्र निर्माण करने तथा प्राचीन सभ्यता के पुनरुत्थान करने के लिए बहुत महान कार्य कर रही है।"

अब ब्रह्माकुमारी मनोहर इन्द्रा जी, जो कि माऊन्ट आबू में स्थित ट्रेनिंग सैन्टर की इन्चार्ज हैं और आज की सभा की अध्यक्षा थीं, ने सभी वक्ताओं के भाषणों का सार बताते हुए कहा कि राजयोग के सिवाय कोई अन्य साधन नहीं है जिससे मनुष्य अपने जीवन में सच्ची सुख शान्ति (अतीन्द्रिय सुख) का अनुभव कर सके। एक बार कुछ क्षणों के लिए भी अगर कोई इसका अनुभव कर लेता है तो वह इसके लिए बड़े से बड़ा त्याग करने को तैयार हो जाता है। वास्तव में यह बहुत सहज है और इसके लिए कुछ त्याग करने की आवश्यकता नहीं पड़ती। केवल देह अभिमान छोड़ना पड़ता है तथा देही-अभिमानी बनना पड़ता है। इस अभ्यास से परमात्मा से अविनाशी सुख-शान्ति व पवित्रता का वर्सा प्राप्त कर सकते हैं। अब नहीं तो कभी नहीं—अगर अभी आलस्य किया तो अकथनीय नुकसान उठाना पड़ेगा।

धन्यवाद प्रस्ताव : ब्रह्माकुमार हंस मुख भाई

अहमदाबाद के हंस मुख भाई, जो स्वयं भी एक महान कर्मयोगी एवं राजयोगी हैं, ने मुख्या अतिथि, माननीय अतिथि वक्ताओं तथा उपस्थित जनता का धन्यवाद किया और कहा कि इस कार्यक्रम की सफ़लता में सभी का सहयोग मिला है तथा मैं इस संस्था की ओर से सभी का आभारी हूँ। अन्त में मंच सचिव ब्रह्माकुमार निर्वैर ने सभा की समाप्ति की घोषणा की तथा मनोरंजक कार्यक्रम आरम्भ होने की सूचना दी।

—:o:—

महिला सम्मेलन

विश्व की लगभग आधी जनगणना महिलाओं की है। अतः विश्व-कल्याण हेतु बनाये गए किसी भी कार्यक्रम में महिलाओं के कल्याण की योजना अवश्य ही बनाई जानी चाहिए। वास्तव में तो किसी भी सामाजिक और नैतिक कार्यक्रम को अन्तर्राष्ट्रीय मानना ही न्याय संगत नहीं यदि उसमें महिलाएँ शामिल न की गई हों अथवा उनका बहिष्कार कर दिया गया हो। फिर, यह कहना भी अतिशयोक्ति न होगा कि कोई भी कार्यक्रम सफ़ल हो ही नहीं सकता यदि नारियाँ उसमें सम्मिलित न हों अथवा उसकी ओर उनका ध्यान और खिचाव न हो अथवा उस कार्यक्रम के साथ उनकी सहानुभूति न हो।

नारी के लिए यह ठीक ही कहा गया है कि यही वे हाथ हैं जो झूला झुलाते हैं (The hands that rock the cradle) और ये ही वो हस्तियाँ हैं जो विश्व पर राज्य करती हैं (rule the world) क्योंकि बच्चों के प्रथम वर्षों में माँ के व्यक्तित्व की ऐसी छाप पड़ती है जो बहुदा उनके मन की गहराई में बैठ जाती है। इसलिए, यदि हम समाज का सुधार चाहते हैं, तो इसे समाज के अभिन्न अंग, माताओं से प्रारम्भ करना ही उपयुक्त होगा। मनु, जिसे कुछ लोग नारी का तिरस्कार करने का दोषी ठहराते हैं, को भी यह मानना पड़ा कि वह देश, जहाँ नारी पूज्या की दृष्टि से देखी जाती है, वहाँ देवता लोग भी खुशी से विचरण करते हैं। इसलिए, यह उपयुक्त ही था कि विश्व-कल्याण महोत्सव में महिला कार्यक्रम भी एक विशाल पैमाने पर रखा गया।

और फिर, यह संस्था, जिस द्वारा इस महोत्सव का आयोजन हुआ, ही अधिकतर महिलाओं—ब्रह्माकुमारियाँ अथवा शिव शक्तियाँ—द्वारा चलाई जा रही है जिन्हें इस संस्था के संस्थापक ने स्वयं इज़्ज़त का और एक महत्त्वपूर्ण स्थान दिया। इस संस्था में आने वालों को उनके संस्थापक की यह शिक्षा है कि नारी जाति, जो एक दीर्घ काल तक, विश्व व भारत के इतिहास में, उस समय के सामाजिक वातावरण में गिरी हुई निगाह से देखी जाती रही, को पूर्ण सम्मान दिया जाए। इसीलिए, इस संस्था द्वारा आयोजित किसी भी कार्यक्रम में महिलाओं के कार्यक्रम को एक महत्त्वपूर्ण स्थान दिया जाता रहा है और सन् १९८० के लिए बनाए गए १०-सूत्रीय कार्यक्रम के अन्तर्गत इस संस्था के सभी सेवा-केन्द्रों ने बहुत ही उमंग उत्साह से, अनेक युक्तियों से, विविध तरीकों से महिलाओं की सेवा की है। विश्व-कल्याण महोत्सव के सिलसिले में अन्य दूसरी संस्थाओं के अलावा निम्नलिखित संस्थाओं से सम्पर्क स्थापित किया गया।

१. इण्डियन फेडीरेशन ऑफ़ यू० एन० ओ० एसोसिएशन।
२. नेशनल फेडीरेशन आफ़ इण्डियन विमैन
३. अखिल भारतीय महिला सम्मेलन
४. केन्द्रीय समाज-कल्याण बोर्ड
५. भारतीय ग्रामीण महिला संघ
६. नेशनल काऊन्सिल ऑफ़ विमैन इन इण्डिया
७. अखिल भारतीय समाज-कल्याण निर्देशक बोर्ड
८. एसोसिएशन ऑफ़ मेडीकल विमैन इन इण्डिया
९. राष्ट्रीय अभिभावक-अध्यापक संघ और अन्य इस तरह की कई संस्थायें।

ब्रह्माकुमारी संस्था के प्रतिनिधि श्रीमती निगम, पदमा सेठ, श्रीमती पूर्बी मुकर्जी, बेगम आबिदा अली, श्रीमती शीला कौल, श्रीमती जेसमीन खन्ना, कुमारी सुरिन्दर सेनी, श्रीमती कैलाश राकी, श्रीमती शान्ता

भटनागर, श्रीमती डब्ल्यू० एस० सागर, कुमारी अमरजीत कौर, श्रीमती कमला सुब्रमण्यम, श्रीमती पुष्पा महत्ता, श्रीमती ओ० एन० वोहरा, श्रीमती लीला सेठ, श्रीमती पी० एन० भगवती, विभिन्न शैक्षणिक संस्थाओं की प्रधानों तथा कई समाज-सेविकाओं से मिले। प्रतिनिधियों ने उन्हें कार्यक्रम में भाग लेने के लिए आमन्त्रित किया। इस सम्मेलन में, जो २८ फ़रवरी १९८१ को अपराह्न २.०० से ३.०० बजे तक हुआ, कई प्रतिष्ठित समाज सेविकाओं तथा विभिन्न संस्थाओं की मुखिया बहनों ने भाग लिया।

इस कार्यक्रम की अध्यक्षा, आस्ट्रेलिया व न्यूज़ीलैण्ड-स्थित ब्रह्माकुमारी राजयोग सेवा-केन्द्रों की संचालिका ब्रह्माकुमारी डा० निर्मला जी थीं। ब्रह्माकुमारी सुमन, जो जर्मनी व बेल्जियम स्थित राजयोग केन्द्रों की संचालिका हैं, ने सम्मेलन के कार्यक्रम का संचालन किया। इन दोनों बहनों ने इस क्षेत्र में बहुत महत्त्वपूर्ण कार्य किया है। श्रीमती माधुरी आर० शाह, जो युनिवर्सिटी ग्रान्ट्स कमीशन की अध्यक्षा हैं, को भी इस सम्मेलन में सम्मिलित होना था परन्तु किन्हीं आवश्यक कार्यों के कारण वह नहीं आ सकीं।

सम्मेलन का प्रारम्भ एक दिव्य गीत से हुआ जिसे सुनते हुए सभी ने कुछ मिनटों के लिए सामूहिक योगाभ्यास किया और फिर मंच सचिव ने प्रथम वक्ता से उसके अपने विचार प्रगट करने का अनुरोध किया। सम्मेलन का विषय था—'महिलायें : नव क्रान्ति की ध्वज-वाहिनि'।

माता घर में क्रान्ति ला सकती है और इसे स्वर्ग-सम बना सकती है

श्रोताओं को सम्बोधित करते हुए श्रीमती बेटी नारायण, जो गयाना के उपप्रधान की धर्म पत्नी हैं और स्वयं भी एक महान नेता हैं, ने कहा : परिवार में माँ का एक बहुत महत्त्वपूर्ण और अद्वितीय स्थान है। वह अपने ही परिवेश में परिवार का निर्माण करती है। अगर वह स्वयं दिव्यता और पवित्रता की राह अपनाती है तो वह परिवार को उसी दिशा की ओर मोड़ने में कामयाब होती है। अत: वह परिवार को स्वर्ग-सम बना सकती है जहाँ सब इकट्ठे खुशी से रहते हैं क्योंकि वहाँ किसी प्रकार का कोई भेद-भाव नहीं होता, सबका मन प्रतिद्वन्दता, ईर्ष्या, दुर्भावना इत्यादि से मुक्त होता है। अत: वह एक ऐसे समाज का ढाँचा बनाने में मददगार साबित हो सकती है, जहाँ स्वार्थपरता नहीं, मतभेद नहीं परन्तु पारिवारिक दृष्टिकोण होता है। उन्होंने आगे कहा कि ब्रह्माकुमारी संस्था विश्व की इकाई परिवार से यह कार्य आरम्भ कर विश्व में क्रान्ति लाने का यह महत्त्वपूर्ण सामाजिक कार्य कर रही है।

महिलाओं,एक हो जाओ और दोषी के विरुद्ध आवाज उठाओ—श्रीमती सावित्री निगम

श्रीमती सावित्री निगम, अध्यक्षा, अखिल भारतीय महिला संघ, ने अपने वक्तव्य में महिलाओं से कहा कि समाज के दूषित वर्ग से अपनी रक्षा करने के लिए एक हो जाओ। उन्होंने कहा कि महिलाओं की एकता संसद पर दबाव डालेगी कि नित्य प्रति बढ़ती हुई बलात्कार की वारदातों से नारी की रक्षा के लिए योजना बनाई जाए, साधन जुटाये जायें। उन्होंने कानून में एक परिवर्तन लाने की माँग की और वह यह कि वेश्यालय चलाने वालों के साथ-साथ वेश्यालय में जाने वालों को भी कानूनी तौर से सज़ा दी जानी चाहिए। उन्होंने बेसहारा व ग़रीब महिलाओं को धन का लालच देकर शरीर बेचने के लिए अथवा वेश्या बनने के लिए उकसाने वाले पुरुषों को दोषी बताया और महिलाओं से उनके विरुद्ध एक हो जाने के लिए कहा। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय के कार्यों की सराहना करते हुए उन्होंने कहा कि यह विद्यालय पवित्रता और एकता के ध्वज को बुलन्द करके एक महान कार्य कर रहा है।

नारियाँ, ध्वज-वहन करने में अधिक समक्ष—ब्रह्माकुमारी चक्रधारी

ब्रह्माकुमारी चक्रधारी, जो दिल्ली प्रशासन की शैक्षणिक संस्थाओं की प्रबन्धक कमेटी की एक सदस्या हैं और जो इससे पूर्व भी कई महिला सम्मेलनों में अपना वक्तव्य दे चुकी हैं, ने कहा : हमें यह याद

रखना चाहिए कि इस सम्मेलन में जिस क्रान्ति की हम चर्चा कर रहे हैं, वह एक आध्यात्मिक क्रान्ति है जो आसुरीयत व आसुरीयता के विभिन्न रूपों यथा काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार आदि के विरुद्ध एक युद्ध छेड़ने के लिए आरम्भ की गई है। यह युद्ध इतिहास के पन्नों पर लिखे गए युद्धों से भिन्न है; यह उस रक्तपात करने वाले युद्ध से अलग है जो हमने अपने जीवन-काल में देखे हैं। यह पवित्र लड़ाई अन्य लड़ाइयों की तरह साहस और बलिदान माँगती है परन्तु एक विभिन्न रूप में। यह वह युद्ध है जिसमें, बदले की भावना नहीं लेकिन सहन शक्ति, हिंसा और आणविक शक्ति नहीं अपितु अहिंसा की शक्ति, क्रोध और घृणा नहीं लेकिन रहम व करुणा के आधार पर सफ़लता प्राप्त की जा सकती है। हथियारों वाले युद्ध में पौरुष और शारीरिक बल की आवश्यकता है लेकिन विकारों के विरुद्ध यह युद्ध अपेक्षाकृत नारियों द्वारा श्रेष्ठ रूप से हो सकता है। यद्यपि पुरुषों में भी कुछेक ऐसी विशेषतायें होती हैं जो इस मानसिक युद्ध में लाभप्रद सिद्ध होती हैं। विश्व को वर्तमान समय जिस क्रान्ति की आवश्यकता है, उसमें स्वार्थपरता, रूखापन एवं कड़वाहट की बजाय त्याग, मधुरता और सर्वस्व न्योछावर करने की ज़रूरत है। अतः नारियाँ ही इस नव क्रान्ति को ध्वज-वाहिनि हो सकती हैं क्योंकि हर नारी में कुछ मातृभावना और कुछ बहन का प्यार समाया होता है।

इसके अलावा, ध्वज-वाहक वही व्यक्ति हो सकता है जिसमें दृढ़ता हो, निष्ठा हो, तत्परता हो कि वह इस ध्वज को सदा ऊपर ही ऊपर रखेगा चाहे कितने ही विघ्न उसके रास्ते में क्यों न आयें। और, इस दृष्टिकोण से भी नारी ही अपनी धर्म की मान्यताओं, मर्यादाओं व नियमों का पालन करने में जीवन की आखिरी साँस तक भी दृढ़ होती है। अनेक कठिनाइयों के सामने आते हुए भी वह पवित्रता के ध्वज को सदैव बुलन्द रखेगी। वह आसुरी वृत्तियों के लिये दुर्गा है, शिव शक्ति है और काली है। वह समाज की ओर से किये जाने वाले विरोध और निन्दा-सूचक शब्दों को मीरा की भाँति सहन कर सकती है और शक्ति माता की तरह एक नये आध्यात्मिक समाज के ध्वज को ऊँचा रख सकती है। केवल प्राचीन कला-कृतियाँ, कला, पौराणिक कथायें, शास्त्र, धार्मिक संस्कृति, प्राचीन मान्यतायें ही इस बात के प्रमाण नहीं हैं कि शक्तियों ने इस पावन भारत भूमि पर पवित्रता और दिव्यता के झंडे को बुलन्द किया था लेकिन वर्तमान समय से भी यह देखा जा सकता है कि महिलायें, जिन्हें परमात्मा ने ब्रह्माकुमारियाँ नाम दिया है, ही इस नव क्रान्ति की ध्वज-वाहिनि हैं। निस्सन्देह पुरुष भी इस कार्य में योगदान देने का आवश्यक और महत्त्वपूर्ण कार्य कर रहे हैं।

ब्रह्माकुमारी चक्रधारी जी के प्रवचन के बाद सामूहिक योगाभ्यास हुआ जिसका संचालन उज्जैन सेवा-केन्द्र की संचालिका ब्रह्माकुमारी किरन जी ने किया।

परमात्मा ने यह ज़िम्मेवारी नारियों को सौंपी हैं— ब्रह्माकुमारी विरोनिका

अगला वक्ता लन्दन से पधारी हुई ब्रह्माकुमारी विरोनिका जी थीं जो नैतिक मूल्यों व राजयोग की शिक्षा द्वारा विश्व-कल्याण के कार्य में समर्पित हैं। उन्होंने भी इसी बात को विस्तार पूर्वक स्पष्ट किया कि किस प्रकार महिलाओं में इस नव क्रान्ति को लाने की कुछ स्वाभाविक विशेषतायें होती हैं। उन्होंने इसके विभिन्न उदाहरण देते हुए कहा जैसे हस्पतालों में नर्स रोगियों की पूरी देखभाल करती है अर्थात् उन्हें केवल औषधि ही नहीं देती बल्कि उनके साथ सहानुभूति भी रखती है, महिला अध्यापिकायें किस प्रकार छोटे बच्चों को पढ़ाने व उनसे मातृ भाव से व्यवहार करने में अपेक्षाकृत अधिक योग्य मानी गई हैं अथवा घर में भी मातायें ही बच्चे की परवरिश करने में अनुकूल समझी जाती हैं। उनका कहने का तात्पर्य था कि महिलाओं में कुछ ऐसे स्वभाविक गुण होते हैं जो इस क्रान्तिकारी कार्य को कार्यान्वित करने व आगे बढ़ाने में सहयोगी होते हैं। इसीलिए ही तो परमात्मा ने माताओं को यह क्रान्ति लाने का निमित्त बनाया है यद्यपि पुरुष भी काफ़ी संख्या में इस महत्त्वपूर्ण कार्य में तत्परता व लग्न से लगे हुए हैं।

पुरुषों का पूर्ण सहयोग भी आवश्यक : सैली स्विग शैली

संयुक्त राष्ट्र संघ के गैर-सरकारी संस्थाओं के संगठन की प्रधान मैडम सैली स्विग शैली ने कहा : निस्सन्देह वर्तमान समय में महिलायें इस नव क्रान्तिकारी कार्य में बहुत महत्त्वपूर्ण पार्ट अदा कर रही हैं परन्तु पुरुषों का भी इसमें अपना महत्त्व है, उनमें भी अपनी प्रकार की कुछ विशेषतायें हैं। अतः उन्होंने इस बात पर ज़ोर दिया कि यह कार्य दोनों के पुरुषार्थ व सहयोग से हो सकता है।

इसके बाद ब्रह्माकुमारी आरती जी, जो मध्य प्रदेश ज़ोन-स्थित ईश्वरीय सेवा केन्द्रों की संचालिका हैं, ने अपने वक्तव्य में कहा : कि अब महिलाओं ने विकारों की गन्दगी को, जो सदियों से मानव-मन को मलीन करती जा रही है, दूर करने अथवा भस्म करने की सेवा का कार्य अपने कन्धों पर ले लिया है। 'सेवा' हमारा नारा है, हम इसे हर परिस्थिति में और बहुत तीव्रता से करेंगे। उन्होंने इस बात पर ज़ोर दिया कि अगर नारी विश्व को स्वर्ग बनाने का बीड़ा उठाती है तो कोई भी उसके रास्ते में रुकावट नहीं डाल सकता क्योंकि अब सर्वशक्तिवान् परमात्मा का आर्शीवाद उनके साथ है। उन्होंने माताओं को इसके लिए दृढ़ हो जाने के लिए कहा और पुरुषों से अनुरोध किया कि वे उनकी सेवाओं को स्वीकार कर इस पावन कार्य में सहयोगी बनें।

महिलाओं को आगे आना चाहिए—डा० निर्मला

इस सम्मेलन की अध्यक्षा ब्रह्माकुमारी डा० निर्मला ने सभी वक्ताओं के वक्तव्यों अथवा विचारों का सार सुनाते हुए अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि आध्यात्मिक दृष्टिकोण से, नर हो या नारी, दोनों ही आत्मायें हैं और परमपिता परमात्मा की सन्तान हैं। कुछेक ऐसी योग्यतायें होती हैं जो साधारणतया पुरुषों में पाई जाती हैं परन्तु वही योग्यतायें कुछ महिलाओं में भी हो सकती हैं और होती हैं। और, दूसरी ओर, कुछ ऐसी विशेषतायें हैं जो प्रायः महिलाओं में होती है परन्तु कुछ पुरुषों में भी वो देखी जाती हैं। परन्तु वर्तमान समय का जिस क्रान्ति की आवश्यकता है, उसमें महिलाओं को आगे आना चाहिए। नारियाँ, जो किसी नेक कार्य के लिए समर्पण और त्याग कर देती हैं, नारियाँ, जो चरित्र को सर्वोपरि रखती हैं; नारियाँ, जो पवित्रता और शुद्धता को ही अपना सर्व-श्रेष्ठ खज़ाना समझती हैं; नारियाँ जो एक नये चरित्रवान समाज का निर्माण करने के लिए अपने आराम व सुख के साधनों का त्याग करने को तैयार हैं, वही नारियाँ इस नव क्रान्ति की ध्वजवाहिनि हो सकती हैं। उन्होंने कहा कि यह पुरुष-प्रधान संसार मिलावट, धोखा, भ्रष्टाचार, अत्याचार, और युद्ध के समाचार पढ़-पढ़कर अथवा सुन-सुनकर तंग आ चुका है और अब वह महिलाओं को एक नये रूप में देखना चाहता है। वह चाहता है कि महिलाएँ सभी मनुष्यों को—युवा हों या वृद्ध—अपने बालक की दृष्टि से देखें, उनका सुधार करें और विकारों व भ्रष्टाचार के जाल से उन्हें मुक्त करें। उनका कहना था कि इसीसे ही सफ़लता होगी और फिर उन्होंने पुरुषों को इस कार्य में सहयोगी बनने के लिए कहा।

बहन शकुन्तला सुल्हन द्वारा धन्यवाद

मंच सचिव ने दो शब्दों में सम्मेलन का सार कहते हुए बहन शकुन्तला सुल्हन को, जो दिल्ली नगर निगम की भूतपूर्व सदस्या थीं और वर्तमान समय एक प्रसिद्ध समाज-सेविका हैं, धन्यवाद के शब्द बोलने के लिए अनुरोध किया। शकुन्तला जी ने सभी वक्ताओं का उनके श्रेष्ठ विचारों के लिए धन्यवाद किया और साथ-ही-साथ श्रोताओं का भी धन्यवाद किया जिन्होंने इस कार्यक्रम को सफ़ल बनाने में सहयोग दिया।

उसके बाद कुछ मिनट के लिए सामूहिक योगाभ्यास हुआ और फिर यह कार्यक्रम समाप्त हुआ।

—:o:—

आध्यात्मिक जागृति दिवस

२८ फरवरी, १९८१ आध्यात्मिक जागृति दिवस के रूप में मनाया गया। विश्व-कल्याण के लिए आध्यात्मिक जागृति के महत्त्व का कम मूल्यांकन नहीं किया जा सकता। यह भली भाँति समझा जा सकता है कि कोई भी व्यक्ति स्व-कल्याण अथवा समाज के कल्याण के लिए कार्य नहीं कर सकता जब तक वह इस सत्यता को न जाने कि वह इस देह में रहने वाली एक चेतन शक्ति आत्मा है और कि वह आत्मा पवित्रता के बिना स्थाई शान्ति की प्राप्ति नहीं कर सकती तथा कर्म-विधान को झुठलाया नहीं जा सकता और कि विश्व-पिता परमात्मा की सन्तान विश्व भ्रातृत्व भावना के बिना समाज में रूहानी स्नेह अथवा नियम, मर्यादा नहीं पनप सकते।

वास्तव में आध्यात्मिक जागृति के बिना समाज एक सोये हुए राक्षस की तरह है। नहीं, इससे भी अधिक गिरा हुआ है क्योंकि न केवल यह अपने कल्याण से अनभिज्ञ है बल्कि यह अपने को ऐसे कर्मों में व्यस्त कर देता है जो उसे दिन-प्रतिदिन गिरावट की ओर धकेलते जाते हैं। उसका हाल ऐसे ही मनुष्य की तरह होता है जो दलदल में फंसा हुआ है और दलदल से निकलने का पुरुषार्थ उसे और नीचे ही नीचे ले जाता है।

परन्तु, आध्यात्मिक जागृति के महत्त्व की अनुभूति न होने के कारण, आज का मानव इन्द्रियों के सुख के जाल में उलझ गया है। उसका लक्ष्य केवल अपनी रोज़ी कमाना और खाना रह गया है। वह इस सत्य को भूल गया है कि मनुष्य भोजन के लिए नहीं अपितु भोजन मनुष्य के लिए बना है। अतः आज वह केवल भोजन प्राप्त करने के लिए ही परिश्रम करता है और देह में जो आत्मा है, जिसके होने से ही वह पुरुषार्थ अथवा परिश्रम करता है, उसकी उपेक्षा करता है।

इस भूलने का कुछ भी कारण हो, परन्तु सत्य तो यह है कि विश्व के ९९% लोग दिन में कुछ घण्टे शारीरिक रूप से तो जागते हैं परन्तु सारा जीवन—बचपन से मृत्यु तक—आध्यात्मिक रूप से सोये ही रहते हैं। कितने अफसोस की बात है कि चाहे कोई व्यक्ति अत्यन्त बुद्धिमान हो परन्तु वह आध्यात्मिक जगत से प्राप्त होने वाले वास्तविक फल से वंचित रहता है क्योंकि जिन्दगी की यात्रा के दौरान वह उनसे अनजान ही रहता है।

इसलिए आध्यात्मिक व नैतिक जागृति के महत्त्व पर प्रकाश डालने के लिए, २८ फ़रवरी १९८१ को एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

सम्मेलन का विषय और इसमें भाग लेने वाले

सम्मेलन का विषय था 'स्वर्णिम युग स्थापनार्थ क्रियमाण ईश्वरीय योजना।' ब्रह्माकुमारी चन्द्रमणि, पंजाब एवं हरियाणा क्षेत्र में ब्रह्माकुमारी केन्द्रों की क्षेत्रीय संचालिका इस सम्मेलन की अध्यक्षा थीं और जस्टिस जसवन्त सिंह, अध्यक्ष, आरबिटरेशन बोर्ड, मुख्य अतिथि थे। ब्रह्माकुमार रमेश शाह, बर्ल्ड रिन्युवल स्प्रिचुअल ट्रस्ट के मैनेजिंग ट्रस्टी; भ्राता डोन, ट्रस्टी, योगा फॉर हेल्थ, लन्दन; ब्रह्माकुमारी चन्द्रिका, संचालिका राजयोग केन्द्र, अहमदाबाद; ब्रह्माकुमारी मोहिनी, संचालिका राजयोग केन्द्र, न्यूयार्क; भ्राता स्टीव नारायण, उपराष्ट्रपति, गयाना; एवं भ्राता छेदी लाल, भूतपूर्व लेफ्टिनेन्ट गवर्नर पाँडेचरी और अध्यक्ष वर्ल्ड यूनियन दिल्ली आदि वक्ताओं ने सभा को सम्बोधित किया। ब्रह्माकुमारी योगिनी, संचालिका राजयोग केन्द्र विले पार्ले,

बम्बई ने मंच सचिव के रूप में मंच का संचालन किया।

पंजाब से आये हुए छोटे-छोटे बच्चों ने एक दिव्य गीत प्रस्तुत किया और फिर कुछ मिनटों के लिए ईश्वरीय स्मृति में बैठे। फिर मंच सचिव ने ब्रह्माकुमार रमेश शाह से अपना वक्तव्य रखने के लिए अनुरोध किया।

वर्तमान समय कलियुग का अन्तिम चरण है

स्वर्णयुग स्थापनार्थ क्रियमाण ईश्वरीय योजना के विषय में अपने विचार व्यक्त करते हुए ब्रह्माकुमार रमेश शाह ने कहा : यह हमें भली प्रकार समझ लेना चाहिए कि वर्तमान समय कलियुग का अन्तिम चरण चल रहा है। मानव के इतिहास में यह सबसे तमोप्रधान समय है क्योंकि मानव के नैतिक मूल्य और दिव्य गुण सब ख़त्म हो चुके हैं। अगर हम यह नहीं समझेंगे कि वर्तमान समय कलियुग का अन्तिम चरण है तब तक हम सतयुगी दुनिया की स्थापना की आशा नहीं रख सकते। यह परिवर्तन की वेला बहुत महत्त्वपूर्ण है क्योंकि यही समय है जब मनुष्य देवता बनने का पुरुषार्थ कर सकता है अर्थात सर्व गुण सम्पन्न, १६ कला सम्पूर्ण बन सकता है।

सतयुगी दुनिया की विशेषताओं के विषय में बोलते हुए उन्होंने कहा : सतयुग में सारा व्यवहार-व्यापार स्नेह के आधार पर चलेगा और वहाँ किसी प्रकार की कोई कमी नहीं होगी। यहाँ हर चीज़ की बहुतायत होगी, यह समृद्धिशाली युग होगा। उन्होंने अपनी शुभ कामना ज़ाहिर करते हुए कहा कि सभी लोग वर्तमान समय अर्थात पुरुषोत्तम कल्याणकारी संगम युग के विशेष महत्त्व को जान लें और देव-पद पाने का पूर्ण पुरुषार्थ करें।

ईश्वरीय ज्ञान से अब आत्मिक प्यास बुझ रही है : ब्रह्माकुमार डान

लन्दन से पधारे हुए योगा फॉर हेल्थ सेन्टर के ट्रस्टी, भ्राता डॉन अगले वक्ता थे। वे राजयोग तथा ईश्वरीय ज्ञान से होने वाली प्राप्तियों की प्रशंसा करते हुए कह रहे थे कि उन्होंने अपनी ज़िन्दगी में पहली बार १०,००० से भी अधिक व्यक्तियों को अपनी आध्यात्मिक प्यास बुझाने व राजयोग के अनुभव से लाभान्वित होने के लिए एक स्थान पर इकट्ठे हुए देखा है। उन्होंने बताया कि वे कुछ अर्से से इस संस्था के सम्पर्क में हैं और परमात्मा को प्रत्यक्ष करने वाले इस विशाल कार्य को देख बहुत प्रभावित हुए हैं। उन्होंने स्वर्णिम युग की स्थापनार्थ हो रहे परमात्मा के दिव्य कर्त्तव्यों के विषय में चर्चा करते हुए कहा कि मुझे निश्चय है कि वर्तमान समय परमात्मा का विश्व नव-निर्माण का कर्त्तव्य चल रहा है।

सतयुग स्थापनार्थ क्रियमाण ईश्वरीय योजना में हमें आत्म-स्थिति में स्थित होना है— ब्रह्माकुमारी चन्द्रिका

ब्रह्माकुमारी चन्द्रिका, जो अहमदाबाद-स्थित राजयोग सेवा केन्द्र की संचालिका हैं, ने सामूहिक योगाभ्यास कराया ताकि वहाँ उपस्थित जन आध्यात्मिक जागृति का कुछ अनुभव कर सकें। योगाभ्यास कराने के प्रारम्भ में उन्होंने कहा कि आत्मा एक अनादि अविनाशी ज्योति-बिन्दु शक्ति है और इस सत्य की अनुभूति जादू का काम करती है। जितनी गहराई से हम इस स्थिति में स्थित होंगे उतना हमें अधिक से अधिक अनुभव होगा। अगर हम इस स्थिति में स्थित हैं कि परमात्मा शान्ति का सागर है और इस स्थिति में डूब गये हैं, तब हम निश्चित रूप से शान्ति का अनुभव करेंगे और दूसरी ओर, यदि हमारा मन अपने किसी सम्बन्धी या पड़ोसी से लड़ने-झगड़ने के विचारों में व्यस्त है तो हम दुःख-दर्द व चुभन महसूस करेंगे। इसलिए आत्म-स्थिति या परमात्म-स्मृति में स्थित होने में तो अपना ही लाभ है। वास्तव में, वर्तमान नाज़ुक समय की यही माँग है। अगर हम इस स्मृति में स्थित होने का अभ्यास करें कि परमात्मा प्यार का सागर है, आनन्द का सागर है, हम भी उस प्रेम व आनन्द की स्थिति को प्राप्त कर लेंगे। इसी प्रकार, यदि हम सोचें कि हमें विश्व का कल्याण करना है और इसके लिए हमें अपने में उन गुणों की धारणा करनी है जो परमात्मा में हैं, तो हमारा मन पवित्रता व श्रेष्ठ

भावनाओं से भरपूर हो जाएगा। हमें अपने विचारों को श्रेष्ठ बनाते हुए विश्व में श्रेष्ठ प्रकम्पन फैलाने चाहिएं। हमें पवित्र दृष्टि से देखना चाहिए ताकि संसार में पवित्रता फैले, हमें शुभ वचन, कल्याण-कारी वचन बोलने चाहिए ताकि आत्माओं में हम जागृति ला सकें। विश्व-कल्याण महोत्सव का यही संदेश है और इसके लिए हमें राजयोगाभ्यास करना चाहिए। फिर उन्होंने सामूहिक योगाभ्यास कराया।

मनुष्य के परिवर्तन से ही सतयुग की स्थापना होगी : ब्रह्माकुमारी मोहिनी

सामूहिक योगाभ्यास के बाद, अमरीका से पधारी हुई एक महान राजयोगिनी, ब्रह्माकुमारी मोहिनी ने सभा को सम्बोधित किया। पश्चिमी देशों में आध्यात्मिक सेवा के अपने अनुभव बताते हुए उन्होंने कहा : जब हम वहाँ लोगों को यह संदेश देते हैं कि यह पुरानी तमोप्रधान दुनिया शीघ्र ही खत्म हो जाएगी और फिर नई स्वर्णिम दुनिया का अभ्युदय होगा, तो वे हमसे पूछते हैं : "लेकिन कितनी जल्दी यह ख़त्म होगी ?" वे सतयुगी प्रभात आने का संदेश सुनकर बहुत प्रसन्न होते हैं क्योंकि उससे उनकी आशा की किरण चमक उठती है कि यह तनाव-भरा संसार जल्दी ही ख़त्म हो जाएगा। उनकी हार्दिक इच्छा होती है कि यह भौतिकवादितापूर्ण संसार, जिसमें न जाने कितनी बुराईयाँ पनप रही हैं, शीघ्र ही समाप्त हो जाये।" उन्होंने कहा कि वर्तमान समय परमात्मा का यह दिव्य कर्त्तव्य हो रहा है। अगर हम उनकी (परमात्मा की) योजना को समझ लें तो हमें इस कर्त्तव्य में उनका सहयोगी बनने का शुभावसर मिलेगा।

पर उन्होंने आगे कहा कि परमात्मा सतयुग की स्थापना का कार्य मनुष्य के आचार-विचार-व्यवहार को परिवर्तन करके करते हैं। सर्वप्रथम तो वे यही ज्ञान देते हैं कि हे आत्मा, अपनी कर्मेन्द्रियों व ज्ञानेन्द्रियों के गुलाम मत बनो अपितु उनके मालिक बनो। प्रकृति के स्वामी बनो, अधिकारी बनो, अधीन नहीं। अगर प्रकृति के तत्वों पर कोई विजय प्राप्त कर भी ले परन्तु अपने आन्तरिक स्वभाव का गुलाम बना रहे, शान्ति उससे दूर भाग जाती है।

आइये, हम ईश्वरीय योजना को क्रियान्वित करने के माध्यम बनें ब्रह्माकुमार स्टीव नारायण

इसके बाद श्रोताओं ने गयाना के उपराष्ट्रपति, भ्राता ब्रह्माकुमार स्टीव नारायण के विचारों को सुना। उन्होंने कहा : "मैं पिछले ४ या ५ वर्षों से ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय के सम्पर्क में हूँ और इस दौरान मैंने बहुत से अनुभव प्राप्त किये हैं, आध्यात्मिक जागृति मुझमें आई है। वर्ष में एक बार मैं ब्रह्माकुमारी संस्था के मुख्यालय, माऊण्ट आबू में वहाँ के आध्यात्मिक वातावरण से लाभान्वित होने के लिए जाता हूँ। मैं अपने को बहुत सौभाग्यशाली समझता हूँ कि मुझे शिव बाबा द्वारा दी गई राजयोग व ईश्वरीय ज्ञान की शिक्षा मिली है। स्वर्णिम युग स्थापनार्थ हो रहे परमात्मा के दिव्य कर्त्तव्य को जानकर, मैं भी विश्व-कल्याण अर्थ इस ईश्वरीय सेवा में सहयोगी बनने का पुरुषार्थ करता हूँ।"

भ्राता स्टीव नारायण के वक्तव्य के बाद, आर-बिटरेशन बोर्ड के अध्यक्ष, एक अत्यन्त धार्मिक व्यक्ति, जस्टिस जसवन्त सिंह ने अपने विचार व्यक्त किये। उन्होंने कहा : अगर हम विश्व को तनाव, युद्ध आदि के कुचक्र से बचाना चाहते हैं और सही मानों में इसे शान्त व खुशहाल बनाना चाहते हैं, उसका एकमात्र साधन सहनशीलता व सहयोग की भावना को बढ़ाना है। लेकिन ये विशेषताएँ केवल आध्यात्मिक रूप से जागृत व्यक्ति में ही आ सकती हैं। अतः निस्सन्देह, विश्व को शान्तिमय बनाने का पहला कदम आध्यात्मिक जागृति लाना है।

उन्होंने आपसी सहयोग, स्नेह व आदर-भावना के महत्त्व पर प्रकाश डाला। इन गुणों की धारणा से आपसी मन-मुटाव ख़त्म हो जाते हैं या बहुत कम हो जाते हैं। परन्तु रोज़मर्रा की ज़िन्दगी में कार्य-व्यवहार में आते हुए इन गुणों को धारण करने के लिए स्वयं का, परमात्मा का, उनके कर्त्तव्यों का, उनकी योजना का हमें ज्ञान होना चाहिए और साथ-साथ हमें राजयोगाभ्यास भी करना चाहिए और इसमें

ब्रह्माकुमारी संस्था बहुत मदद दे सकती है।

पुराना दो, नया लो : ब्रह्माकुमारी चन्द्रमणि

फिर, सम्मेलन की अध्यक्षा, राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी चन्द्रमणि ने अत्यन्त प्रभावशाली प्रवचन किया। उन्होंने कहा : मुझे यह सुनकर प्रसन्नता हुई है कि हर व्यक्ति स्वर्णिम युग के स्वागत के लिए तैयार है और ऐसा लगता है कि सभी लोग उसके लिए आवश्यक तैयारी करने के लिए इच्छुक हैं। लेकिन हमें यह नहीं भूल जाना चाहिए कि ऐसा नया युग लाने के लिए हमें अपने आपको नया करना है अर्थात् बदलना है। ईश्वरीय योजना, जिसके विषय में हम अभी चर्चा कर रहे थे, के अनुसार हमें कोई कीमती अथवा विस्तृत तैयारी की आवश्यकता नहीं है, बस आत्मिक स्मृति में स्थित होने व मन, वचन, कर्म से योगी बनने की ज़रूरत है। उन्होंने कहा, "परमात्मा मनुष्य को अपने अनुरूप ही बनाना चाहता है। तो आइये, हम अपने आपको उसके आगे समर्पित कर दें ताकि वे हमें अपने समान बना सकें। शान्ति का युग लाने की इससे अधिक और कौनसी योजना सफ़ल होगी कि हम अपने स्वभाव में से जो कुछ बुरा है, उसे छोड़ दें तथा आध्यात्मिक जागृति लायें। उन्होंने पूछा कि जब तक अपने जीवन में से हमने बुराई को अथवा पुरानेपन को नहीं निकाला है तब तक हम नव-युग की स्थापना की आशा कैसे कर सकते हैं ? फिर उन्होंने अपने अनुभव के आधार पर यह सुझाव दिया कि पुराना दो, नया लो क्योंकि परमात्मा अब हमें नयी रोशनी दे रहे हैं और हमसे वे दीपक ले रहे हैं जिनमें न बाती है न तेल, जिसकी चिमनी धुएँ से काली हो गई है और धरातल लीक कर रहा है। आइये हम अपनी बुद्धि को उसके हवाले कर दें ताकि वे इसे दिव्य बुद्धि बना दें, इसे उजागर कर दें और फिर पवित्रता, सुख, शान्ति, समृद्धि के युग की स्थापना हो सके।"

आभार-वादन

अन्त में भ्राता छेदी लाल जी, भूतपूर्व लेफ्टिनेन्ट गवर्नर, पाँडेचरी, ने अध्यक्षा महोदया, मुख्य अतिथि, वक्ताओं एवं श्रोताओं का आभार प्रकट किया। उन्होंने कहा कि नैतिक मूल्य तेज़ी से ख़त्म होते जा रहे हैं और इन्हें फिर से स्थापन करने की सख़्त ज़रूरत है और इस संदर्भ में ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय द्वारा किया गया कर्त्तव्य प्रशंसनीय है।

सम्मेलन के बाद प्रभावशाली एवं प्रेरणादायक सांस्कृतिक कार्यक्रम का प्रारम्भ हुआ।

—:o:—

न्यायविद् एवं विधिवेत्ता सम्मेलन

लाल किला मैदान में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय द्वारा आयोजित विश्व-कल्याण महोत्सव के अन्तर्गत होने वाले विभिन्न सम्मेलनों के लिए बनाये गए एक भव्य पण्डाल में रविवार, १ मार्च, १९८१ को प्रातः ११ बजे न्याय-विद् एवं विधिवेत्ता सम्मेलन का आयोजन किया गया।

सम्मेलन का विषय और इसमें भाग लेने वाले

इस सम्मेलन का विषय था : 'राजयोग द्वारा अपराध निरोध'। यह अत्यन्त रुचिकर, आकर्षक, मोहक एवं ज्ञान-युक्त कार्यक्रम रहा।

इस कार्यक्रम की अध्यक्षता पूर्वी भारत में स्थित ब्रह्माकुमारी संस्था के सेवा-केंद्रों की क्षेत्रीय इंचार्ज (Zonal Incharge) राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी निर्मलशान्ता जी ने की। इस सम्मेलन का उद्घाटन भारतीय उच्चतम न्यायालय के न्यायाधीश, भ्राता जस्टिस मुर्तज़ा फ़ाज़ल अली ने किया। भारतीय उच्चतम न्यायालय के भूतपूर्व न्यायाधीश जस्टिस पी० के० गोस्वामी और जस्टिस एच० आर० खन्ना, लन्दन-स्थित राजयोग सेवा केन्द्र की इंचार्ज ब्रह्माकुमारी जयन्ति एवं एडीशनल डिस्ट्रिक्ट एण्ड सेशन जज, भ्राता आर० एल० गुप्ता ने भी अपने विचार प्रकट किए। अन्त में दिल्ली हाई कोर्ट के भूतपूर्व जस्टिस, भ्राता टी० वी० आर० तातांचारी ने सभी श्रोताओं एवं वक्ताओं का आभार प्रकट किया। भ्राता लालचन्द वत्स, (एक प्रतिष्ठित वकील) ने मंच सचिव का पार्ट अदा किया।

एक भूतपूर्व कुख्यात डाकू पंचम सिंह ने, जिसको पकड़वाने पर ५०,००० रुपये का इनाम घोषित हुआ था और बाद में जिसने अपराधी जीवन का बहिष्कार कर एक सामान्य जीवन में प्रवेश किया था और इस ईश्वरीय ज्ञान एवं राजयोग की शिक्षाओं के आधार पर उसने अपने को इतना परिवर्तित किया कि वह अब मध्य प्रदेश में अपने निवास स्थान पर उप-सेवा केन्द्र का संचालन भी कर रहा है, भी अपने हिंसा व अपराध भरे जीवन से दिव्य गुण सम्पन्न व निर्विकार जीवन में प्रवेश करने का अपना मार्मिक वृत्तान्त भी सुनाया। ब्रह्माकुमारी मीरा इन्चार्ज, राजयोग सेवा केन्द्र, गयाना, ने सामूहिक योगाभ्यास कराया। इस कार्यक्रम को और अधिक सफ़ल बनाने के लिए गयाना के उपराष्ट्रपति, महामहिम भ्राता स्टीव नारायण जी भी गयाना से दिल्ली पधारे। उन्होंने बताया कि किस प्रकार राजयोग अपनी दूषित एवं आसुरी वृत्तियों से छुटकारा दिलाने में तथा इस संसार में रहते हुए अपने को दिव्य एवं शुद्ध बनाने में मदद करता है। इसी अवसर पर कुछ दिव्य गीत भी प्रस्तुत किए गये जिसकी श्रोताओं ने बहुत प्रशंसा की।

न्यायविदों को निमन्त्रण

इस कार्यक्रम के लिए लगभग ८०० निमन्त्रण-पत्र, २००० पत्रक (Folders) तथा ५०० पुस्तिकायें (Programme booklets) व्यक्तिगत रूप से सुप्रीम कोर्ट, दिल्ली हाई कोर्ट, तीस हज़ारी डिस्ट्रिक्ट कोर्ट, क्रासी-जुडिशियल ट्रिब्यूनल और दफ़्तरों, दिल्ली विश्व-विद्यालय के लॉ सेन्टर एवं उससे सम्बन्धित कालेजों में विभिन्न न्यायाधीशों, वकीलों, अध्यापकों इत्यादि को बाँटे गए। इसके परिणामस्वरूप पण्डाल खचाखच भरा हुआ था और ५०० के लगभग कानूनी सलाहकार, वकील, प्रशासनिक अधिकारी इत्यादि इस कार्यक्रम में सम्मिलित हुए। उनमें से कुछ तो अपने आफ़िस की ड्रेस में थे।

मानव का आदि स्वभाव अपराध-पूर्ण नहीं था : ब्रह्माकुमारी जयन्ति

सम्मेलन का आरम्भ दिव्य गीत के साथ सामूहिक योगाभ्यास से हुआ। ब्रह्माकुमारी जयन्ति ने पोज़ीशन पेपर प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि अपराधों को कम या पूर्ण रूपेण खत्म करने के लिए हमें मानव के आदिम स्वभाव-संस्कार का अवलोकन करना चाहिए। हमें यह जानने व समझने की कोशिश करनी चाहिए कि मानव का आदि स्वभाव पवित्र, शान्ति व खुशहाल था अथवा झूठ, अपराध, हिंसा व पाप से भरपूर था। मानव-स्वभाव का विश्लेषण करते हुए उन्होंने इस बात पर ध्यान खिचवाया कि किस प्रकार झूठ, अपराधों एवं पापों ने समाज को बेचैन कर दिया है, मन की शान्ति भंग कर दी है और उसमें भय एवं दोष पैदा कर दिये हैं। इससे सिद्ध होता है कि मानव का आदि स्वभाव पवित्र एवं सतोप्रधान था।

ईश्वरीय मर्यादाओं का उल्लंघन मानवी मर्यादाओं का भी उल्लंघन करवाता है

उन्होंने अपने धारा-प्रवाह वक्तव्य में आज के बिखरे हुए समाज और मानव द्वारा बनाये गये कानूनों के उल्लंघन का भी कारण बताया। उन्होंने कहा : मानवी कानूनों का इसलिए उल्लंघन हो रहा है क्योंकि मानव जान-बूझ कर भी ईश्वरीय मर्यादाओं का उल्लंघन कर रहा है। इसके परिणामस्वरूप पृथक-पृथक विचारधाराओं पूंजीवाद (Capitalism), समाजवाद अथवा साम्यवाद आदि के कारण न्यायाधीशों के विचारों में अन्तर हो गया।

उन्होंने आगे कहा कि कानून (Rule of Law) का सारा ढाँचा अपने ही बोझ से दबता हुआ महसूस कर रहा है और लोगों का कानून से विश्वास उठता जा रहा है। उदाहरण के तौर पर इंगलैंड में ये मांग की गई कि विभिन्न कुल-सम्बन्धी (Racial) घटनाओं में पुलिस के कार्य कलापों की देख-रेख की जाए और अमरीका में १९७९ में यह ख़बर छपी कि लगभग ६० प्रतिशत लोगों का कानूनी सलाहकारों से विश्वास उठ गया है क्योंकि उनका ध्येय केवल धनोपार्जन ही था। संक्षेप में, उनका कहना यही था कि चूँकि मनुष्य ईश्वरीय मर्यादाओं की अवहेलना करता रहा है, इसलिए उसके बनाये गए कानून भी तहस-नहस हो गये हैं और समाज का ढाँचा ही हिल गया है।

समस्या का हल

राजयोगाभ्यासी हज़ारों भाई-बहनों के अनुभव के आधार पर उन्होंने इस समस्या का हल सुझाया। उन्होंने कहा कि आत्मा के आदि स्वरूप को जानने व उसका अनुभव करने से मानव का आत्म-विश्वास बढ़ता है और आशाएँ पूरी होती दिखाई देती हैं। यदि एक अपराधी को यह ज्ञान दिया जाए कि आदि स्वरूप में वह एक पवित्र आत्मा है और उसमें छिपी हुई श्रेष्ठता को फिर से उभारा जा सकता है और साथ-साथ उसे अपने आपको सुधारने की विधि भी बताई जाए तो वह आत्मा आध्यात्मिक उत्थान के पथ पर अग्रसर हो सकती है। उसमें आत्माभिमान व अपनी श्रेष्ठ शान की जागृति होती है। और फिर यही जागृति उसके लिए मार्ग-प्रदर्शक बन जाती है जिसके परिणाम स्वरूप वह भय से नहीं बल्कि सहज स्वाभाविक रूप से मर्यादाओं का पालन करना शुरू कर देता है।

उन्होंने अपने वक्तव्य में कहा : "राजयोग से व्यक्तिगत संस्कारों का दमन अथवा शमन नहीं होता अपितु वे वास्तविक रूप में बदल जाते हैं। सर्व गुणों के सागर परमपिता परमात्मा से बुद्धि योग लगाने से बुद्धि दिव्य हो जाती है जिससे मन के संकल्पों व अपनी कर्मेन्द्रियों को सहज ही अनुशासित किया जा सकता है और चरित्र महानता के शिखर पर पहुँचने लगता है। आत्मा का अनादि अस्तित्व समझ लेने से जब वह देहाभिमान के कारण बुद्धि पर छाई हुई समय अथवा स्थान की हदों को पार कर लेता है तब प्रकृति व पुरुष के प्रति उसके विचारों में परिवर्तन आ जाता है।"

उन्होंने आगे कहा : "राजयोग से विश्व-बन्धुत्व की भावना का उदय होता है और कर्मों की गुह्य गति 'जैसा कर्म वैसा फल' को जानने से बेहद के

परिवार के लिए सहयोग देने की भावना जागृत होती है। इस प्रकार व्यक्तिगत परिवर्तन विश्व-परिवर्तन का आधार बनता है और जब हमारे जीवन में आत्मिक स्नेह व करुणा के संस्कार काम करने लगते हैं, तब हम एक नये युग की ओर बढ़ते हैं जहाँ धर्म और राज्य का समन्वय होता है, आज के युग की तरह दोनों में कोई विरोध नहीं होता। अतः जब एक आत्मा सही अर्थों में धार्मिक हो जाती है तब उसके हर कर्म से पवित्रता और शान्ति की किरणें फैलती हैं और जो भी उसके सम्पर्क में आता है, उसे भी ऐसा ही एहसास होता है। इस प्रकार धर्म के वास्तविक स्वरूप को व्यावहारिक जीवन में लाने से मानवीय कानून बनाने की आवश्यकता खत्म हो जाती है।"

फिर उन्होंने विस्तार पूर्वक यह बताया कि किस प्रकार माऊण्ट आबू स्थित इस ईश्वरीय विश्व-विद्यालय के मुख्यालय में हज़ारों भाई-बहन पवित्रता व स्नेह के ईश्वरीय नियमों का पालन करते हुए इकट्ठे रहते हैं जिससे वहाँ का वातावरण ऐसा बन जाता है कि एक अजनबी को भी ईश्वरीय मर्यादाओं का पालन करना बहुत सहज लगता है। इस प्रकार का अनुभव व प्रशिक्षण प्राप्त करके वे अपने घर, शहर और अपने देश में रहते हुए, अपने-अपने कार्य करते हुए अपने जीवन को दिव्य बनाते हैं और इस तरह दिव्यता का पौधा बढ़ता रहता है।

राजयोग दृष्टिकोण बदल देता है.
आर० एल० गुप्ता

इसके बाद दिल्ली के एडीशनल सेशन जज, भ्राता आर० एल० गुप्ता ने अपना अनुभव सबके सामने रखा। उन्होंने कहा: "जब एक बार किसी संन्यासी गुरु ने मुझे कहा कि तुम अपने परिवार का पालन पोषण करने के लिए रिश्वत ले सकते हो तो धर्म से मेरा विश्वास उठ गया। लेकिन जब मैंने सन् १९७३ में ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय द्वारा आयोजित आध्यात्मिक मेला देखा, मैं इसकी सादगी, पवित्रता, रूहानी स्नेह और बिना किसी जाति भेद अथवा प्रान्त भेद के विश्व का अथवा मानव-जाति का कल्याण करने के लिए इनके द्वारा सिखाये गये व समझाये गये राजयोग की तर्क युक्त व प्रभावशाली विधि से बहुत प्रभावित हुआ।"

उन्होंने आगे कहा: "जब मैं इनके अधिक सम्पर्क में आया तो मालूम पड़ा कि ये केवल अच्छाई में आस्था अथवा विश्वास रखने वाले लोग नहीं हैं वरन् बुराइयों को अच्छाइयों में परिवर्तित करते हुए जीवन जीने वाले हैं। इससे मन पर एक अमिट छाप लग गई जिसके फलस्वरूप आज मैं इस संस्था का एक नियमित विद्यार्थी हूँ।"

उन्होंने कहा: मैंने धर्म का सार इस वाक्य में देखा कि 'पवित्र बनो और राजयोगी बनो' और इसीलिए 'महान बनो, कल्याण करो'। इसके परिणामस्वरूप मुझ में धीरज व सहनशक्ति बढ़ी है, मन की स्पष्टता हुई है जिससे बिना किसी तनाव व थकावट के मुझे अपने ऑफ़िस का कार्य करने में बहुत सहयोग मिलता है। राजयोग से मैं खुद को परमात्मा के बहुत नज़दीक अनुभव करता हूँ और उनकी कृपा अपने को शान्ति, स्नेह व आनन्द के रूप में देखता हूँ।

भ्राता आर० एल० गुप्ता जी ने भी ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय के माऊण्ट आबू-स्थित मुख्यालय की चर्चा करते हुए कहा कि वहाँ का वातावरण शान्ति व स्नेह के शक्तिशाली प्रकम्पनों से भरपूर है। (जैसा कि पहले ब्रह्माकुमारी जयन्ति ने भी कहा था) उन्होंने कहा कि राजयोगाभ्यास से मानव के विकारी, आसुरी वृत्तियों को निश्चित रूप से बदला जा सकता है और उसे दिव्य मानव बनाया जा सकता है।

"श्रेष्ठ नैतिक मूल्यों के खो जाने के कारण ही अपराध होते हैं" जस्टिस मुर्तज़ा फ़ाज़ल अली

अब भ्राता जस्टिस मुर्तज़ा फ़ाज़ल अली अपने विचार प्रकट करने के लिए उठे। उन्होंने कहा: "मैं सचमुच यहाँ आकर तथा ब्रह्माकुमारी जयन्ति का आत्म-उत्थान करने वाला वक्तव्य एवं भ्राता आर० एल० गुप्ता जी का अनुभव सुनकर बहुत प्रसन्न हूँ। मैं भी मानता हूँ कि वर्तमान समाज संकटकालीन

परिस्थितियों से गुज़र रहा है और उसके निराकरण के लिए यह आवश्यक है कि बुराई की जड़ को पकड़ा जाए। पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव के कारण हमारी प्राचीन सभ्यता लुप्त होती जा रही है और उसका स्थान एक ऐसी नई सभ्यता ने ले लिया है जिनमें बुद्धि, शक्ति व अहंकार को प्रधानता दी जाती है। इसके परिणामस्वरूप एक मानव दूसरे मानव का शोषण करने लगा है और इसकी प्रतिक्रिया कमज़ोर व दलित वर्ग में अपराध-वृद्धि के रूप में हुई।"

उन्होंने आगे कहा कि बुद्धिवादी लोगों में आध्यात्मिक जागृति लाने के अवसर इसी प्रकार के सम्मेलन अथवा समागम होते हैं। उन्होंने एक बार फिर अपनी खुशी ज़ाहिर करते हुए कहा कि विश्व-भर में फैली हुई यह आध्यात्मिक संस्था समाज के उत्थान में गहरी मदद कर रही है। उन्होंने कहा कि धर्म के वास्तविक स्वरूप को पहचानने से ही अपराध-वृत्तियों में कमी हो सकती है। उन्होंने जयन्ति बहन की प्रशंसा करते हुए कहा कि ये इतनी छोटी उम्र में आत्मिक शक्ति व बुद्धि को प्राप्त कर कितने गूढ़ विषय पर इतनी स्पष्टता एवं गहराई से बोल सकी हैं। इसमें कोई शक नहीं कि केवल न्यायविद नहीं बल्कि ऐसे ही प्रकार के अध्यात्मवादी लोग अपराध-निरोध में एक मुख्य भूमिका निभा सकते हैं। उन्होंने सम्मेलन का उद्घाटन करने की भी खुशी ज़ाहिर की।

सामूहिक योगाभ्यास

उसके बाद ब्रह्माकुमारी मीरा ने आत्म-स्थिति में स्थित होते हुए, शान्ति, आनन्द, प्रेम व दिव्य गुणों के सागर परमपिता परमात्मा की स्नेह-युक्त व उद्देश्य पूर्ण स्मृति में मन को एकाग्र करते हुए सामूहिक योगाभ्यास कराया। ऐसा लग रहा था कि शान्ति के प्रकम्पन फैलते जा रहे हैं और अपने में श्रोताओं को समाते जा रहे हैं। श्रोताओं को योगाभ्यास में मदद करने के लिए वे आत्मा तथा परमात्मा की विशेषताओं से सम्बन्धित कुछ शब्द भी बोलती जा रही थीं। ऐसा महसूस होता था जैसे कि वह आत्माओं के पास पहुँच सकती हैं और उन्हें नवीन एवं उच्च अनुभव करने की मार्ग-प्रदर्शना दे सकती हैं। इस प्रकार सामूहिक योगाभ्यास लगभग १० मिनट तक किया गया।

कानून नहीं परन्तु स्वयं की पहचान से अपराध-निरोध सम्भव है : जस्टिस गोस्वामी

फिर, भारतीय उच्चतम न्यायालय के भूतपूर्व न्यायाधीश, भ्राता जस्टिस पी० के० गोस्वामी अपने विचार सबके समक्ष रखने के लिए खड़े हुए। अत्यन्त धीमी परन्तु दृढ़ता से भरी आवाज़ में उन्होंने कहा : मैं ब्रह्माकुमारी जयन्ति द्वारा अपराधों में वृद्धि का कारण और उसका निवारण पर किये गये विश्लेषण से पूर्णतया सहमत हूँ।

उन्होंने आगे कहा : "मैं भी राजयोग शिविर करने के लिए ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय के मुख्यालय, आबू पर्वत पर गया हूँ और मैंने खुद देह से न्यारे होने, परमात्मा में मन को स्थित कर वास्तविक आनन्द, प्रेम व शान्ति का अनुभव किया है जो एक अपूर्व व अद्वितीय अनुभव था। मुझे कोई संदेह नहीं कि ऐसा वातावरण एक अपराधी से भी आसुरी संस्कारों को आसानी से रोक सकता है। उन्होंने इस बात पर ज़ोर देते हुए कहा कि कितना भी कानून बना लिया जाये या कितनी भी शिक्षा दे दी जाए परन्तु यह कानून और केवल उपदेश समस्त समाज को तो क्या, एक व्यक्ति की भी अपराधी वृत्तियों को ख़त्म नहीं कर सकते। यह केवल एक नई चेतना, नई जागृति एवं नई अनुभूति से ही सम्भव हो सकता है और मुझे यह कहने में कोई संकोच नहीं है कि ब्रह्माकुमारियाँ यही कार्य कर रही हैं। वे समाज की सेवा कर रही हैं। हमें उन पर गर्व होना चाहिए और उनका सहयोगी बनना चाहिए। अगर कोई विश्व में निःस्वार्थ सेवा का उदाहरण देखना चाहता है, वह इनके नज़दीक आकर इन्हें देख सकता है, परख सकता है। इन्होंने जो विश्व-कल्याण महोत्सव का आयोजन किया, उसके लिए हर बुद्धिमान व्यक्ति द्वारा ये बधाई के पात्र हैं। इन्होंने इस महोत्सव में मानव जाति की वास्तविक सेवा की गहराई को देखा। समय के साथ-साथ यह

यदि विभिन्न देशों, विभिन्न भाषाओं, विभिन्न प्रकार का भोजन ग्रहण करने वाले, विभिन्न वर्गों के लोग राजयोग के अभ्यास से पाण्डव भवन माऊण्ट आबू, में सम्पूर्ण मैत्री भाव से संगठित होकर रह सकते हैं तो शायद ऐसा सारे संसार में भी हो सकता है। उसके मतानुसार राजयोग एक विज्ञान है, एक जीवन है या दूसरे शब्दों में कहें तो यह जीने की कला सिखाता है। उसे कोई संदेह नहीं कि जहाँ संयुक्त राष्ट्र संघ व विश्व की अन्य संस्थाएँ फ़ेल हो गई हैं, राजयोग द्वारा वहाँ सफ़लता प्राप्त हो सकती है। भ्राता पंचम सिंह का अनुभव इतना प्रेरणादायक, हृदय स्पर्शी व मार्ग-प्रदर्शना देने वाला था कि श्रोता उसके अनुभव को बहुत देर तक सुनना चाहते थे क्यों कि उन्हें इसमें वह मिल रहा था जो केवल बुद्धि से कहे गये विचार नहीं थे परन्तु अनुभव युक्त थे।

हर घण्टे में ३ मिनट योग का अभ्यास मनुष्य को तनाव-मुक्त कर देता है : भ्राता स्टीव नारायण

अब इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि, गयाना के उपराष्ट्रपति भ्राता स्टीव नारायण ने सभा को सम्बोधित किया। सर्व प्रथम उन्होंने अप्राप्य मान (Rare honour) देने के कारण आयोजकों का धन्यवाद किया। उन्होंने अपने निजी अनुभव से कहा कि जागृत अवस्था में, जब से उन्होंने प्रति घण्टे में से तीन मिनट परमप्रिय शिवबाबा की याद में देने शुरू किये हैं, तब से उनका जीवन तनाव-मुक्त हो गया है जो उनके राजनीतिक जीवन में एक नया अनुभव है। इस राजयोगाभ्यास से उनमें विचारों की इतनी स्पष्टता हो गई है, उनकी बुद्धि प्रकृति व पदार्थों व प्राणियों के भान से इतनी न्यारी रहती है कि वे बहुत जल्दी ही इतना ठीक निर्णय दे देते हैं जिसे सर्व का सम्मान व सहमति प्राप्त होती है। वह महसूस करते हैं कि राजयोग के द्वारा उनके मानवीय दृष्टिकोण का विकास हुआ है। ऐसा पद होते हुए भी वह एक ईश्वरीय विद्यार्थी के नाते नियमित रूप से क्लास करने जाते हैं क्योंकि इस ईश्वरीय ज्ञान से उन्हें बहुत अधिक लाभ होता है। उनके बच्चे भी न्यूयार्क में एक राजयोग सेवा केन्द्र खोलने व उसका संचालन करने के निमित्त बने हैं और शिव बाबा ने उन्हें गयाना में सेवा केन्द्र का संचालन करने का श्रेष्ठ कार्य सौंपा है। उनकी धर्म पत्नी, जो भी महोत्सव में सम्मिलित हुई थी, भी अमरीका में ईश्वरीय सेवा के कार्य में बड़ी लग्न व श्रद्धा से तत्पर हैं। यह उनका दृढ़ विश्वास है कि राजयोग से किसी भी व्यक्ति की दूषित वृत्तियों को बदला जा सकता है। गयाना के राष्ट्रपति एवं प्रधान मन्त्री ने भी इस महोत्सव के लिए अपनी शुभकामनाएँ व मुबारकबाद भेजी हैं।

इस कार्यक्रम के दौरान, किसी का भी ध्यान घड़ी की ओर नहीं गया। अब १ बज चुका था जब भारतीय उच्चतम न्यायालय के भूतपूर्व न्यायाधीश, जस्टिस एच० आर० खन्ना को श्रोताओं के समक्ष अपने विचार रखने के लिए अनुरोध किया गया।

जस्टिस खन्ना ने समय की ओर ध्यान खिंचवाया

जस्टिस खन्ना ने उपस्थित श्रोताओं का ध्यान घड़ी की ओर खिंचवाया और कहा कि हमें समय के अनुसार चलना चाहिए, शायद यह भी राजयोग का एक अंग है। इस प्रकार, इस कार्यक्रम की प्रशंसा करते हुए, उन्होंने अपने वक्तव्य का सार कहते हुए तथा सर्व का धन्यवाद देते हुए अपनी सीट ग्रहण की।

राजयोग से बुद्धि दिव्य हो जाती है जिससे अपराधों का अन्त हो जाता है : ब्रह्माकुमारी निर्मल शान्ता

इसके तुरन्त बाद इस कार्यक्रम की अध्यक्षा राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी निर्मलशान्ताजी ने आशीष—वचन कहे। उन्होंने बहुत ही सुन्दर शब्दों में अपराध विज्ञान का विश्लेषण किया और कहा कि सभी विकारों अथवा अपराधों का मूल स्वयं को, कर्म की गति को व आत्मा के अनादि गुणों शान्ति प्रेम व आनन्द को न जानना है। अज्ञानता का कारण है देहाभिमान अर्थात् स्वयं को देह मानना। अपने ४३ वर्षों के राजयोग के अनुभव के आधार पर उन्होंने कहा कि अपने मन से दूषित एवं व्यर्थ संकल्पों के निराकरण का एकमात्र एवं निश्चित साधन राजयोग

ही है जो और कुछ नहीं बस अपने विचारों को साकारी सृष्टि से निराकारी लोक अथवा स्थूल से सूक्ष्म की ओर ले जाना है। उन्होंने कहा : यह तो सर्व विदित है कि जब कोई बच्चा जन्म लेता है तो वह अपने कुछ गहरे संस्कार लेकर जन्म लेता है जो उसके पिछले जन्म के कर्मों का प्रभाव पड़ा होता है। होता क्या है कि क्योंकि आत्मा अविनाशी है, यह पिछले जन्म में किये गये कर्मों का प्रभाव संस्कारों के रूप में अपने साथ अगले जन्म में ले जाती है। जब आत्मा एक शरीर से दूसरे में प्रवेश करती है, इन्हीं संस्कारों के अनुरूप ही उसके विचार, दृष्टिकोण, भावना बन जाती है। यह संकल्प—कर्म—संस्कार—संकल्प एक जंजीर का रूप ले लेते हैं और मनुष्य को बन्धन में बाँध देते हैं। आज के कलियुगी तमोप्रधान वातावरण के कारण मन में, नकारात्मक (Negative) निराशावादी और व्यर्थ संकल्प उत्पन्न होते हैं और जब वे संकल्प कर्मों में परिणित होते हैं, उससे ऐसे ही संस्कार बनते हैं जो मानव को अधिक विकारी बनाते हैं और वह हिंसात्मक, कामी और अन्य दूषित वृत्तियों की ओर बढ़ता रहता है। इससे हम समझ सकते हैं कि संसार में अपराध क्यों बढ़ रहे हैं और छोटे-छोटे बच्चे भी जघन्य अपराध तथा हर प्रकार के कुकृत्य करते रहते हैं। इस प्रकार अपराधी वृत्तियाँ मानव-मन की गहराई तक पहुँच गई हैं और इसका उपचार वैचारिक स्थल पर ही किया जा सकता है।

राजयोग से निर्णय शक्ति बढ़ती है

राजयोग के प्रशिक्षण से आत्मा, परमात्मा, सृष्टि चक्र व कर्मों की गहन गति के ईश्वरीय ज्ञान को समझने से सर्वप्रथम स्वयं की सही पहचान होती है जिससे मानव की सुषुप्त कार्यशक्ति जागृत होती है। दूसरे शब्दों में ऐसा भी कहा जा सकता है कि ईश्वरीय ज्ञान के आधार से मनुष्य सही और गलत विचारों के अन्तर को समझ जाता है। लेकिन अब आवश्यकता रह जाती है अपने नकारात्मक और व्यर्थ विचारों को रोकने की शक्ति की और उसकी जगह श्रेष्ठ विचारों को उत्पन्न करने की और यह शक्ति राजयोग अर्थात ज्ञान के सागर, गुणों के भण्डार सर्वशक्तिवान परमात्मा से बुद्धि का नाता जोड़ने से प्राप्त होती है। राजयोग से बुद्धि दिव्य हो जाती है। इस दिव्य बुद्धि से न केवल सिर्फ़ सही निर्णय किया जा सकता है बल्कि अपने व्यर्थ संकल्पों को फ़ौरन रोका जा सकता है। सिर्फ़ इतना ही नहीं, अपने सही व श्रेष्ठ विचारों को कर्मों में सहज ही परिणित किया जा सकता है। अत: जब व्यर्थ और दूषित संकल्पों को कर्म में लाने से पहले ही रोक दिया जाता है, पुराने संस्कार धीरे-धीरे फीके पड़ते जाते हैं। दूसरी ओर, पवित्र एवं शुद्ध संकल्पों को जब कर्मों में लाया जाता है, उससे शक्तिशाली पवित्र संस्कार बनते हैं जो कमज़ोर व्यर्थ संस्कारों पर हावी हो जाते हैं। साथ ही साथ आत्मा रूप बैटरी आत्मा के अनादि गुणों शान्ति, प्रेम व आनन्द से भरपूर (Charge) होती जाती है। इस प्रकार दिव्य संस्कारों की जागृति होती है और मानव सही अर्थों में दिव्य बनता जाता है जो ही आत्मा का अनादि स्वरूप है। इस स्थिति में वह स्वयं से व दूसरों से सदा सन्तुष्ट रहता है और दूसरों के कल्याण की उसको हार्दिक इच्छा बनी रहती है। अब ज़रा ऐसे परिवार के विषय में सोचिए जिसका हर सदस्य दूसरों के कल्याण का कार्य कर रहा है। यह अवश्य ही सदा-सुखी परिवार होगा। यही, संक्षेप में, राजयोग से प्राप्ति होती है।

उन्होंने आगे कहा : उपरोक्त से स्पष्ट है कि अपराध-उन्मूलन राजयोग से सम्भव है। ऐसा अनगिनत प्राणी अपने जीवन में कर रहे हैं जिसका एक उदाहरण आपके सामने भाई पंचमसिंह ने अपने अनुभव के रूप में रखा। अत: राजयोग एक जीने की कला भी है। समस्त विश्व-यात्रा के अनुभव के आधार पर उन्होंने कहा कि हज़ारों-लाखों की संख्या में लोग राजयोग के द्वारा अपने चरित्र का उत्थान कर रहे हैं और नव चेतना की जागृति कर रहे हैं। उन्होंने सभी श्रोताओं को भी यह अनुभव करने का

(शेष पृष्ठ ४१ पर)

चिकित्सक सम्मेलन

पहली मार्च, १९८१ को लाल किला मैदान में, अपराह्न, ३ से ५ बजे तक प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय द्वारा डॉक्टरों का एक सामूहिक कार्यक्रम रखा गया था। इसका लक्ष्य यह था कि इस बात को स्पष्ट किया जाए कि डाक्टरों के व्यवसाय में राजयोग और आध्यात्मिक पवित्रता को स्वास्थ्य के साधन के रूप में कैसे अपनाया जा सकता है।

कायक्रम से कई दिन पहले इसकी सूचना अधिकाधिक डॉक्टरों को देने के लिए कई साधन अपनाये गए। इसके लिए मैडिकल संस्थानों, कॉलिजों, अस्पतालों, और एसोसिएशन्स के उच्चाधिकारियों से व्यक्तिगत रूप से मिलकर वहाँ-वहाँ के सूचनापट पर इस कार्यक्रम को लिखकर लगाने को, या उनके बुलेटिन अथवा पत्रों-पत्रिकाओं में छापने के लिए उनसे कहा गया। इसके अतिरिक्त कई अस्पतालों में कपड़े के बैनर बनवा कर उन्हें ऐसे स्थानों पर लगाया गया जहाँ अस्पताल के डॉक्टरों का सहज ही उन पर ध्यान जाए। बहुत से डाक्टरों को व्यक्तिगत रूप से मिलकर भी इस सम्मेलन में आने के लिए कहा गया। बड़ौदा के डॉ० ब्रह्माकुमार जयंत ने ब्रह्माकुमार डॉ० मेंहदीदत्ता, लेडी डॉक्टर ब्रह्माकुमारी शान्ति बख्शी, डॉ० उषाकिरण, और डॉ० सत्यभान आदि-आदि के सहयोग से डॉक्टरों को ईश्वरीय विश्व-विद्यालय की ओर से निमन्त्रण देने की सेवा को संगठित किया। इस प्रकार इन्होंने कुल १५०० निमन्त्रण पत्र बाँटे। जब ये डॉक्टरों से मिलते तो उनमें से कुछ-एक डॉक्टर आध्यात्मिक विषयों पर कुछ प्रश्न भी करते और उनका उत्तर वे चिकित्सा विज्ञान (Medical Sciences) के दृष्टिकोण से पाना चाहते और वे ऐसे उत्तर पाकर सन्तुष्ट व खुश मालूम होते। इस प्रकार बहुत डॉक्टरों ने सम्मेलन में आने का विचार प्रकट किया। कुछ डॉक्टरों ने अपने व्यवसाय में व्यस्त होने के कारण अपनी असमर्थता प्रकट की या किन्हीं दूसरे कार्यक्रमों में आने का विचार प्रकट किया और कहा कि उन्हें इन कार्यक्रमों के बारे में बहुत पहले ही सूचित किया जाता तो अच्छा होता ताकि वे अपना कार्यक्रम बना सकते। जितने भी अधिकाधिक डॉक्टरों को व्यक्तिगत रूप से मिला जा सकता था, मिला गया जिसके फलस्वरूप लगभग २०० डॉक्टरों ने, जिनमें पुरुष महिलाएँ दोनों थे, भाग लिया। कार्यक्रम शुरू होने से पहले ही डॉक्टर और अन्य प्रशिक्षित व्यक्ति एकत्रित हो गए थे। और इस जन-समूह को देखने से लगता था जैसे कोई अन्तर्राष्ट्रीय गोष्ठी होने जा रही है।

जो डॉक्टर १ मार्च, १९८१ को नहीं आ सके वे अन्य किसी दिवस पर आये और उन्होंने प्रदर्शनी देखी। जो १ मार्च, १९८१ को आए उनमें से कुछ के नाम निम्नलिखित हैं।

(१) डॉ० आई० डी० बजाज, महासंचालक, स्वास्थ्य सेवाएँ, भारत सरकार।

(२) डॉ० आर० सी० मेहन्दीरत्ता, डिप्टी मेडिकल सुपरिडेन्ट, लोकनायक जयप्रकाश अस्पताल, दिल्ली।

(३) प्रो० ए० के० गुप्ता प्रोफ़ेसर, नेत्र शल्य चिकित्सा विभाग, लोकनायक जयप्रकाश नारायण अस्पताल और गुरु नानक केन्द्र दिल्ली।

(४)	प्रो० जी० सी० विश्वकर्मा	संचालक, केन्द्रीय संस्थान आर्थोपीडिक सफ़दर जंग अस्पताल, नई दिल्ली।
(५)	डॉक्टर ढींगरा	नाक, कान, गला विशेषज्ञ, जयप्रकाश नारायण अस्पताल, नई दिल्ली।
(६)	डॉ० एल०आर० पाठक	मेडिकल सुपरिडेन्टविलिंगडन अस्पताल नई दिल्ली।
(७)	डॉ० हिंगोरानी	निदान चिकित्सक और हृदय विशेषज्ञ, जी० बी० पन्त अस्पताल, नई दिल्ली
(८)	प्रो० जी० सी० मुन्झाल	मानसिक रोग विशेषज्ञ, जी० बी० पन्त अस्पताल, नई दिल्ली।
(९)	डॉ० अग्निहोत्री	मानसिक रोग विशेषज्ञ, लेडी हार्डिंग मेडिकल कॉलेज।
(१०)	डॉ० सहाय	क्लीनिक्ल मनोवैज्ञानिक, जी० बी० पन्त अस्पताल, नई दिल्ली।
(११)	डॉ०शान्ति बख्शी	स्त्री-रोग विशेषज्ञ, प्राइवेट प्रैक्टिस दिल्ली।
(१२)	डॉ० जयन्त	प्राइवेट प्रौक्टिस, बड़ौदा
(१३)	डॉ० गिरीश पटेल	,, ,, बम्बई
(१४)	डॉ० उषाकिरण	आनैस्थिस्ट, जी०बी० पंत अस्पताल नई दिल्ली।
(१५)	डॉ० दीपक	जी० डी० एम० ओ० हिन्दू राव अस्पताल, दिल्ली।
(१६)	डॉ० शोभा सचदेवा	डैन्टिस्ट, प्राईवेट प्रैक्टिस, दिल्ली।
(१७)	डॉ० सतीश सचदेवा	डैन्टिस्ट, प्राईवेट प्रैक्टिस, दिल्ली।
(१८)	डॉ० प्रताप	पी०जी० आई०, चन्डीगढ़
(१९)	डॉ० सत्यभान पातनजलि	रेजिडेन्ट मानसिक रोग विशेषज्ञ जी० बी० पन्त अस्पताल, दिल्ली।
(२०)	डॉ० निरंजना	प्राईवेट प्रैक्टिस, बड़ौदा।

भारत में स्वास्थ सेवा के महानिर्देशक डॉ० आई० डी० बजाज इस सम्मेलन में माननीय अतिथि थे और स्वास्थ एवं परिवार-कल्याण मंत्रालय के राज्य मंत्री भ्राता निहार रंजन लश्कर मुख्य अतिथि थे और इस ईश्वरीय विश्वविद्यालय की मुख्य प्रशासिका ब्रह्माकुमारी प्रकाशमणि जी सभा अध्यक्षा थीं। चंडीगढ़ के डॉ० प्रताप कुमार, जो कि स्वयं भी एक राजयोगी हैं, मंच मंत्री थे जिन्होंने इसका संचालन किया। प्रारम्भ में पंजाब के कुछ बच्चों ने एक स्वागत गीत गाया।

राजयोग, पवित्रता और सात्त्विक आहार स्वास्थ्य के बहुत बड़े साधन हैं"—डा० हंसा रावल

इस अधिवेशन की प्रथम प्रवक्ता डॉ० ब्रह्माकुमारी हंसा रावल थीं। ये अमरीका से आई थीं। सन् १९७७ से लेकर ये राजयोग में काफ़ी दिलचस्पी लेती रही हैं। ये अमरीका की सेना के डॉक्टरी कार्य में कर्नल रह चुकी हैं। इनका विषय था—'राजयोग द्वारा व्याधियों का अवरोध'।

इस पर भाषण देते हुए उन्होंने कहा : व्याधियाँ मनुष्य के आन्तरिक सन्तुलन का क्षुब्ध करती हैं। वे केवल मनुष्य की शारीरिक क्षमताओं और क्रियाओं को ही हानि नहीं पहुँचाती बल्कि मनुष्य की मानसिक योग्यताओं और उसके मानसिक सन्तुलन पर भी बुरा प्रभाव डालती हैं। यदि कोई बीमारी मनुष्य के मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव नहीं डालती तो उसका कारण मनुष्य का महान् मनोबल ही होता है जो कि शारीरिक कारणों का मन पर कुछ असर नहीं होने देता। उन्होंने कहा, बहुत-से शारीरिक रोग मानसिक कारणों से होते हैं और यदि मनुष्य का मन स्वस्थ हो तो वह बहुत-से रोगों से बच सकता है। अनासक्ति, शान्ति, संकल्प-शक्ति और आत्म स्थिति में ऐसा बल है जिससे मनुष्य का मन क्षोभ-रहित और आत्मा अविक्षिप्त रहेगी। अतः उन्होंने कहा कि डाक्टरों को रोगी के तन व मन दोनों का इलाज करना चाहिए जो कि तभी सम्भव होगा जब डाक्टरों को मानसिक विज्ञान की तथा राजयोग की पूरी जानकारी होगी।

आगे उन्होंने कहा कि चिकित्सा विज्ञान के बहुत प्रयत्नों के बाद भी ऐसी बहुत-सी बीमारियाँ हैं जिनका अभी तक डा० ठीक इलाज नहीं कर सके। उन्होंने कहा कि अमरीका में कैंसर के रोगियों को आज भी इस रोग के विशेषज्ञ गम्भीरतापूर्वक यह सुझाव देते हैं कि वे (रोगी) राजयोग का अभ्यास करें व अपनी संकल्प शक्ति का प्रयोग करें ताकि वे अपने जीवन में आराम महसूस कर सकें। अमेरिका में चिकित्सा विशेषज्ञ अब इस बात से भली-भाँति परिचित हैं कि राजयोग और मनन-चिन्तन की हर ऐसी साधना इलाज का साधन है इस प्रकार चिकित्सा-शोध (Medical Research) के क्षेत्र में राजयोग द्वारा एक नई क्राँति-सी हो रही है। उन्होंने कहा : परमपिता परमात्मा से सहज राजयोग के द्वारा मन को शक्ति मिलती है इस शक्ति से बहुत-से रोगों का अवरोध होता है। आज के समाज का चित्रण करते हुए डा० हंसा रावल ने बताया कि आज मनोबल का इतना अभाव है कि मनुष्य में परिस्थितियों का सामना करने की भी हिम्मत नहीं है। हमने देखा है कि १९वीं शताब्दी में समाज की उन्नति कोयले से प्राप्त होने वाली शक्ति पर निर्भर थी और २०वीं शताब्दी में तेल से प्राप्त होने वाली शक्ति पर आधारित है। परन्तु स्पष्ट है कि अब एक नई शक्ति की आवश्यकता है और वो है आत्मिक शक्ति।

उन्होंने आगे कहा कि आध्यात्मिक व नैतिक मूल्यों के पालन के फलस्वरूप मनुष्य का मानसिक व आध्यात्मिक स्वास्थ्य अच्छा होता है और इससे यह भी लाभ होता है कि यदि मनुष्य का शरीर सामान्यावस्था में न हो तो भी वो आध्यात्मिक बल के आधार पर इस शरीर से काम ले ही लेता है। फिर चूंकि राजयोग का अभ्यास करने वाले व्यक्तियों का यह स्वभाव बन जाता है कि वे सदा शुभ व शुद्ध ही विचार करते हैं, इसलिए अन्य लोगों की तुलना में उनके जीवन में शान्ति बनी रहती है। इसके अतिरिक्त चूंकि राजयोगी शाकाहारी होता है और वो शराब की तरह की नशे वाली चीजें या उत्साहट पैदा करने वाले पदार्थ या सिगरेट की तरह की शरीर को दूषित करने वाली चीजें नहीं लेता, वह आध्यात्मिक नियमों पर चलते हुए अपने मन की शान्ति बनाए रखता है। इस सबका शुभ फल यह होता है कि वह मानसिक असन्तुलन व क्षोभ से होने वाले रोगों से बचा रहता है और जीवन को एक व्यवस्थित, निश्चिन्त एवं हर्षपूर्ण रीति से व्यतीत करने की कला उसे आ जाती है। इन सबका परिणाम यह होता है कि उसके शरीर में रोगों का अवरोध करने की क्षमता बढ़ जाती है, अतः हर दृष्टि से राजयोग का अभ्यास लाभकारी है।

अपना भाषण समाप्त करते हुए उन्होंने कहा कि वे आजकल केवल एक डाक्टर के नाते ही रोगों के निदान में अपनी योग्यता बढ़ाने में नहीं लगी हुई बल्कि एक राजयोगी के तौर पर भी रोगियों की स्वास्थ्य सेवा करने में अधिक कुशलता प्राप्त करने का प्रयत्न कर रही हैं।

शुभ विचारों का स्वास्थ्य प्राप्ति में महत्त्वपूर्ण स्थान : डा० विडा स्कुलटन

इसके पश्चात् जर्मनी की डा० विडा स्कुलटन ने भाषण किया उनका विषय था—'आध्यात्मिकता तथा मानसिक स्वास्थ्य। डा० विडा इंगलैंड में ब्रिस्टल यूनिवर्सिटी में मानसिक स्वास्थ्य के विषय पर शिक्षिका थीं। उन्होंने कहा : आज पाश्चात्य देशों में लोगों की यह जानने में बहुत दिलचस्पी है कि मानसिक तनाव व मानसिक असन्तुलन को कैसे रोका जा सके। अब लोग इस बात को समझ रहे हैं कि हमें शुद्ध संकल्पों व रचनात्मक विचारों की आदत डालनी चाहिए और हानिकारक तथा अशुद्ध संकल्पों से छुटकारा पाना चाहिए और अपने चिन्तन को ठीक दिशा देनी चाहिए। उन्होंने कहा कि अध्यात्मवाद मनुष्य के इस प्रयत्न में काफ़ी सहायक हो सकता है और कि शुद्ध विचार की आदत को पक्का करने के लिए राजयोग का अभ्यास करने की आवश्यकता है। उन्होंने इंगलैंड के साऊथ वेल्स में आध्यात्मिकता द्वारा स्वस्थ करने (Spiritual healing) के कार्य का कुछ विवरण देते हुए कहा कि वहाँ के स्वास्थ्य मंत्रालय के तत्त्वाधान में कुछ शोध कार्य

किया गया। उसके परिणामस्वरूप ये बात मालूम हुई कि सामाजिक परिस्थितियों का और मनुष्य के मन का बहुत प्रभाव पड़ता है और कि आध्यात्मिक विद्या के ज्ञाता स्वास्थ्य लाभ में काफ़ी सहायता दे सकते हैं।

डा० विडा के भाषण के बाद इंगलैंड के "बियॉन्ड साऊन्ड ग्रुप" (Boyond Sound group) ने एक दिव्य गीत गाया। इससे लोगों में शुभ विचारधारा प्रवाहित हुई। और अनेक मानव मस्तिष्कों में शान्ति की लहरें प्रवाहित हुई।

डा० हैरल्ड स्ट्रीटफ़ील्ड : "वैज्ञानिक प्रयोगों से राजयोग बहुत ही मूल्यवान सिद्ध हुआ है।"

डा० हैरल्ड स्ट्रीटफ़ील्ड ने राजयोग और ई० ई० जी० के बारे में बताया। डा० हैरल्ड सान फ्रांसिस्को, अमेरिका में कुंडलिनी विशेषज्ञ और क्लीनीक्ल मनोविकार विशेषज्ञ हैं और पिछले कई वर्षों से राजयोग का अभ्यास कर रहे हैं। उन्होंने राजयोगियों पर ई० ई० जी० (Electro-Encephalogram) का प्रयोग करके जो अध्ययन किया था उसकी रिपोर्ट प्रस्तुत की। उन्होंने और प्रकार का योगाभ्यास करने वालों पर भी ई० ई० जी० द्वारा प्रयोग किये थे और देखा था कि उस योग प्रणाली के अभ्यास से उनके ई० ई० जी० में क्या परिवर्तन आते हैं। जिन चार प्रकार की योग-पद्धतियों पर उन्होंने प्रयोग किए थे उनमें से कुछ लोग ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय की राजयोग पद्धति का अभ्यास करने वाले थे। इस योग प्रणाली में अभ्यास करने वाले मन को यूं ही कहीं केवल स्थिर नहीं करते बल्कि परमपिता परमात्मा के स्वरूप पर एकाग्र करते हैं।

ई० ई० जी० मस्तिष्क की विपरीत तरंगों को चित्रित करता है। ई० ई० जी० द्वारा मस्तिष्क की तरंगों का चित्र लेने के अलावा योगी की श्वास क्रिया को भी आँका जाता है। डा० हैरल्ड ने सान फ्रांसिस्को में कैलिफ़ोरनिया यूनिवर्सिटी के चिकित्सा विभाग के अन्तर्गत लैंगली-पोर्ट क्लीनिक द्वारा किए गये अध्ययनों व शोध कार्य का हवाला देते हुए कहा कि उस क्लीनिक में सन् १९४६ से लेकर ज़ेन (Zen) तिब्बतन और तांत्रिक योग प्रणालियों का अभ्यास करने वालों पर जो प्रभाव पड़ता है उसके परीक्षण किये गए। अभी थोड़ा समय पहले उन्होंने ब्रह्माकुमारियों की राजयोग पद्धति का अभ्यास करने वालों पर भी शोध कार्य किया। उसके परिणाम शेष सभी प्रणालियों से बहुत ही भिन्न पाए गए। इन योग अभ्यासियों की न केवल श्वास क्रिया की गति कम हो गई बल्कि उनके ई० ई० जी० में एल्फ़ा (Alpha) और थीटा (Theta) तरंगों के साथ डेल्टा (Delta) तरंगें भी पाई गईं जिसका भाव यह निकलता है कि उनके जागते होने पर और समस्याओं का हल सोचते होने पर भी उनका मन गहरी विश्रान्ति की अवस्था में था। डा० हैरल्ड ने कहा कि ब्रह्माकुमारी राजयोग पद्धति का अभ्यास करने वालों की इस महान विशेषता का कारण यह है कि इस पद्धति में ज्योति-बिन्दु परमात्मा शिव पर मन एकाग्र किया जाता है।

'राजयोग के अभ्यास से डाक्टरों में रोग को जानने की शक्ति का विकास होता है' : डा० गिरीश

बम्बई के डा० गिरीश पटेल ने मनुष्य व बन्दर के मस्तिष्क की तुलना करते हुए अपने भाषण का प्रारम्भ किया। उन्होंने कहा : मनुष्य व बन्दर के मस्तिष्क लिंबिक (Limbic system) सिस्टम तो एक-जैसा ही है परन्तु उनकी मानसिक योग्यताओं में बहुत अन्तर है। इससे स्पष्ट है कि मन, मस्तिष्क ही की किसी योग्यता का नाम नहीं है बल्कि वह एक अभौतिक अथवा आध्यात्मिक सत्ता है। उन्होंने कहा कि मस्तिष्क के वे भाग जो मनुष्य के आवेगों, अनुभवों और कलात्मिकता से सम्बन्धित हैं जिन्हें हिपोकैम्पस (Hippocampus) और कारपस कलोज़म (Corpus Collosum) कहते हैं, वे मनुष्य व बन्दर में एक-जैसे होते हैं। तब प्रश्न उठता है कि मनुष्य पशु व बन्दर से श्रेष्ठ किस तरह से है? मनुष्य की श्रेष्ठता का कारण उसका मन या उसकी बुद्धि है। उन्होंने दूसरा प्रश्न पूछा—"क्या आत्माओं का व परमात्मा का अस्तित्व है? उन्होंने कहा : आज मनुष्य यह सोचता है कि न तो आत्माओं का कोई अस्तित्व है और न ही

परमात्मा का। कम्प्यूटर का उदाहरण देते हुए लोग कहते हैं कि वह भी तो मनुष्य अथवा मन की तरह कार्य करता है। डा० गिरीश ने कहा—"मैं पूछता हूँ, क्या किसी कम्प्यूटर से मेरे-जैसा कोई अयोग्य व्यक्ति कुशलता-पूर्वक कार्य ले सकता है? कम्प्यूटर की कुशलता भी तो उस व्यक्ति पर ही निर्भर है जो उससे कार्य लेता है? इसी प्रकार मस्तिष्क रूपी कम्प्यूटर से कार्य लेने वाली सत्ता भी मस्तिष्क से अलग है; उसे ही आत्मा कहते हैं।"

रोगी के रोग को जानने की योग्यता पर अपने विचार व्यक्त करते हुए उन्होंने कहा कि योग-अभ्यास के द्वारा डाक्टर की ये योग्यता निश्चित रूप से उन्नत होती है। यदि कोई यह जानता हो कि वह स्वयं कौन है और उसके कर्तव्य व उसका लक्ष्य क्या है और एक आत्मा होने के नाते उसके स्वाभाविक गुण क्या हैं और यदि वह राजयोग के द्वारा अपने जीवन में गुण धारण करने का पुरुषार्थ करे तो वह रोगी की समस्याओं को अधिक अच्छी तरह से जान सकता है। चूंकि बहुत-से रोग जीवन में तनाव और दबाव के कारण होते हैं और चूंकि तनाव, निराशा व चिन्ता केवल शारीरिक बीमारियों को ही पैदा नहीं करते बल्कि इनका मन पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है जिससे कि बीमारियाँ लम्बे समय तक चलती हैं व ठीक होने में अधिक समय ले लेती हैं, इसलिए अगर कोई डाक्टर राजयोगी हो तो वह अपने रोगियों के मन को ठीक करते हुए उन्हें ज्यादा लाभ दे सकता है। अपना उदाहरण देते हुए उन्होंने कहा कि राजयोग के अभ्यास से स्वयं उनकी भी रोग के निदान की शक्ति बढ़ी है। और बीमारी के मानसिक कारणों के बारे में उनकी सूझ व समझ अधिक स्पष्ट हुई है। इसलिए वे रोगी को औषधि देने के साथ अब राजयोगी होने के नाते उसके मन को भी राहत देते हैं और अब वे इस कला का दूसरों को भी ज्ञान दे रहे हैं। उन्होंने आगे कहा कि राजयोग में मन को किसी एक विचार अथवा विषय पर स्थिर किया जाता है और हमारे यहाँ आत्मा निश्चय में स्थित होकर मन को परमपिता परमात्मा शिव पर एकाग्र करने की प्रक्रिया का अभ्यास किया जाता है। इस प्रक्रिया में विनाशी व भौतिक विषयों से सम्बन्धित कोई विचार मन में नहीं लाये जाते।

आत्मा के अस्तित्व का मेडिकल ग्राऊन्ड पर पुष्टिकरण

मन (आत्मा) व मस्तिष्क की भिन्नता बताते हुए उन्होंने कहा कि आत्मा मस्तिष्क व शरीर दोनों को चलाने वाली शक्ति है और इनको अपनी बुद्धिमता व संस्कारों के आधार से प्रयोग करती है।

उन्होंने यह भी बताया कि मानव-मस्तिष्क व कम्प्यूटर में क्या अन्तर है। कम्प्यूटर मानव की देन है तथा कम्प्यूटर सुख-दुःख महसूस नहीं कर सकता जहाँ कि मनुष्य (आत्मा + शरीर) अपने जीवनकाल में समय प्रति समय ये सब महसूस करता ही रहता है, उन्होंने बताया कि कैसे क्लीनिकल निदान व निर्णय शक्ति में राजयोग अभ्यास से बढ़ोत्तरी होती है और डाक्टर किसी बीमारी को जानने में और ठीक समय पर ठीक निर्णय लेकर रोगी को दवा दारू देने में दक्ष हो जाता है।

उन्होंने कहा कि डाक्टर को यह भी ध्यान देना चाहिए कि वह रोगी के शारीरिक पहलू पर ध्यान देने के साथ-साथ उसके मन के आवेगों को भी जाने और उनका भी साथ-साथ इलाज करे। इस सम्बन्ध में राजयोग काफ़ी सहायक सिद्ध हो सकता है।

अब राजयोग के अभ्यास का समय आ पहुँचा था वक्ता अब तक राजयोग के लाभों का वर्णन तो कर ही चुके थे। अतः मंच मंत्री ने घोषणा की कि वक्ता व श्रोता अब सभी पाँच मिनट उसका अभ्यास करेंगे। तब आस्ट्रलिया से आई हुई ब्रह्माकुमारी मॉरीन ने अभ्यास की विधि का थोड़ा स्पष्टीकरण किया और राजयोग के अन्तर्गत प्रभु-चिन्तन का धीमी-धीमी आवाज में आलाप किया ताकि अन्य लोग भी उनके साथ-साथ मन को उसी टेर में ले जाकर योग-स्थित हो सकें। सारे वातावरण में शान्ति-ही-शान्ति थी और ऐसा लगता था कि सभी चाहते हैं कि इसका थोड़ा और भी अभ्यास हो। परन्तु समय भागता जा रहा था और अभी दूसरे वक्ताओं को भी भाषण

करना था और अब कार्यक्रम में अगले वक्ता थे माननीय अतिथि डा० आई० डी० बजाज।

"मानसिक तनाव को दूर करने के लिए राजयोग बहुत जरूरी है" : डा० आई० डी० बजाज

भारत सरकार की स्वास्थ्य सेवाओं के महानिर्देशक डा० आई० डी० बजाज ने 'मानसिक तनाव व स्वास्थ्य' पर बहुत ही अच्छा भाषण किया जिसमें उन्होंने डाक्टरों का ध्यान मनो-शारीरिक व्याधियों (Psycho-Somatic diseases) की ओर खिंचवाया और कहा कि यह चिकित्सा की एक नई शाखा है। उन्होंने विश्व-स्वास्थ्य संघ (W. H. O.) की स्वास्थ्य की परिभाषा को दृढ़ करते हुए बताया कि स्वास्थ्य केवल शारीरिक बीमारी व कमज़ोरी के न होने का नाम नहीं है बल्कि शारीरिक, मानसिक व सामाजिक—तीनों तरह से मनुष्य के ठीक होने का नाम स्वास्थ्य है। उन्होंने कहा कि इस व्याख्या में स्वास्थ्य के तीन पहलू बताए गए हैं—शारीरिक मानसिक व सामाजिक—और इन तीनों का परस्पर गहरा सम्बन्ध है। परन्तु एक चौथा भी पहलू है जिसे हम आध्यात्मिक स्वास्थ्य कह सकते हैं। आत्मा अथवा 'आध्यात्मिकता अग्राहीय है अर्थात लौकिक ज्ञान से बाहर की चीज़ है। ये शरीर विज्ञान व मनोविज्ञान से ऊँची वस्तु है।" उन्होंने ज़ोर देते हुए कहा कि डाक्टरों की यह बहुत बड़ी भूल है कि वे आज आत्मा को एक ओर रखकर केवल शरीर की ओर ध्यान देते हैं। आज बहुत-सी बीमारियाँ जैसे मधुमेह(diabetes), रक्तचाप में बढ़ाव (hiper tension) पैप्टिक अल्सर (Peptic ulcer) और हृदय रोग, मानसिक तनाव से सम्बन्धित हैं। यदि राजयोग के द्वारा आत्मा व परमात्मा का अनुभव करते हुए मानसिक व संवेदनात्मक असन्तुलन पर नियन्त्रण किया जाए तब इन सब बीमारियों को पैदा होने से रोका जा सकता है या इन्हें इतना तो काबू में रखा ही जा सकता है कि जिससे ये हमें ज्यादा तकलीफ़ न दें।

आगे उन्होंने कहा : अपने दैनिक जीवन में हर एक मनुष्य के सामने कोई-न-कोई समस्या तो आती ही रहती है। समय परिवर्तन के साथ परिस्थितियाँ भी परिवर्तन होती रहती हैं और मनुष्य नये-नये लोगों के सम्पर्क में आता रहता है जिनके अपने अलग ही संस्कार होते हैं। उन सबके साथ उसे शान्तिपूर्वक व्यवहार करना होता है ताकि उसके अपने मन की शान्ति भी बनी रहे व दूसरों की शान्ति भी भंग न हो। इस बीच में कई ऐसी परिस्थितियाँ भी आ जाती हैं जिनका बहुत दबाव पड़ता है। उसके मन व उसके आवेगों पर दबाव पड़ता है। अतः जब कोई अपने किसी रोग-निवारण के लिए डाक्टर के पास आता है तो डाक्टर को उसके मानसिक पहलू पर भी विचार करना चाहिए क्योंकि उसका भी उसके शारीरिक रोग के साथ सम्बन्ध होता है। अतः डाक्टरों को चाहिए कि वह उसे केवल एक शारीरिक रोगी के रूप में न देखकर उसे एक व्यक्ति मानकर उसका इलाज करें और उसके मनोभावों को गहराई से जानकर उसके साथ मानसिक तालमेल पैदा करें। उन्होंने कहा कि मानसिक तनाव से इतनी बीमारियाँ होती हैं कि आज इसके इलाज के लिए पूरी नई शाखाएँ, जिन्हें मनोशारीरिक चिकित्सा (Psycho-Somatic Medicine) और मनोविकार-चिकित्सा (Psychiatric Medicine) कहते हैं, बहुत तीव्र गति से बढ़ रही हैं। उन्होंने इस बात को ठीक ज़ोर देते हुए कहा कि वास्तव में शरीर का कोई भी ऐसा भाग नहीं है जिसे मानसिक तनाव से हानि न पहुँचती हो। तनाव से अनगिनत रोग-लक्षण और पेचीदा रोग पैदा होते हैं। यदि हम उनकी एक सूची तैयार करने लगें तो घंटों लग जायेंगे परन्तु यदि उनमें से कुछ-एक के नाम लें तो कब्ज़, मंदाग्नि, हिचकी, पैप्टिक अलसर, अलसरेटिव कोलाइटिस, मालएबसारप्शन सिन्ड्रोम, मानसिक कारण से उल्टी आना, अनेक प्रकार के हृदय रोग, अधिक रक्तचाप आदि इनमें सम्मिलित हैं।

रक्तचाप का यहाँ विशेष महत्त्व है क्योंकि क्रोधित मनुष्य में क्रोध पारे की तरह से ऊपर चढ़ता है, इसलिए हम अपने रोगियों को यही सलाह देते हैं कि उन्हें शान्त रहना है और गुस्सा नहीं करना है और गुस्से वाले वातावरण से बचकर रहना है। डा०

LIBRARY

बजाज ने हृदय विशेषज्ञों द्वारा किये गये परीक्षणों के बारे में बताते हुए कहा कि बहुत-से योगी अपनी नब्ज़ और रक्तचाप भी अपनी इच्छानुसार कम कर लेते हैं। मधुमेह, दमा, आधे सिर का दर्द भी मानसिक दबाव से बढ़ते हैं।

'परमात्मा से बुद्धियोग होने से मानसिक स्वास्थ्य में सुधार' स्वास्थ्य मंत्री

मुख्य अतिथि भ्राता निहार रंजन लश्कर, राज्य स्वास्थ्य मंत्री, ने ब्रह्मा कुमारी संस्था द्वारा किये गये कार्य की सराहना करते हुए कहा कि यह ज्ञान प्रत्येक मनुष्य के लिए लाभदायक है। उन्होंने खुशी प्रकट करते हुए कहा कि इतने सारे डाक्टरों को इस भव्य कार्यक्रम में बुलाना सभी के हित में है और इसके लिए उन्होंने ब्रह्माकुमारी बहनों को धन्यवाद दिया। उन्होंने कहा राजयोग कोई नया विषय नहीं है और गीता में भी इसका विवरण है। उन्होंने कहा मानसिक और आध्यात्मिक स्तर को ऊँचा उठाने के लिए राजयोग बहुत आवश्यक है। योग भारत भूमि की प्राचीनतम कला है जिसका लक्ष्य था खुशी, मानसिक सन्तोष और आध्यात्मिक शान्ति। गीता हमें कर्मयोगी बनने का पाठ पढ़ाती है। परमात्मा से सम्बन्ध होने से मानसिक स्वास्थ्य अच्छा होता है जिससे ही शारीरिक स्वास्थ्य भी अच्छा होता है।

आगे उन्होंने कहा : आज जितनी वैज्ञानिक प्रगति हुई है उतनी मनुष्य की नैतिक व आध्यात्मिक प्रगति नहीं हुई; इसलिए दोनों के बीच एक खाई पैदा हो गई है, परन्तु ये खुशी की बात है कि आज पाश्चात्य देशों में भी लोग योग में काफ़ी दिलचस्पी लेने लगे हैं। अपने भाषण को समाप्त करते हुए उन्होंने कहा कि ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय मनुष्यों को सात्त्विक आहार, पवित्रता, राजयोग के अभ्यास और निर्विकार जीवन की शिक्षा देते हुए एक प्रशंसनीय कार्य कर रहा है।

"परमात्मा द्वारा स्थायी स्वास्थ्य व दिव्य नेत्र की प्राप्ति होती है" : ब्रह्माकुमारी प्रकाशमणि जी

इस कार्यक्रम का समापन भाषण देते हुए ब्रह्माकुमारी प्रकाशमणि जी ने कहा : "मुझे बहुत ही खुशी है कि आज मुझे इतने डाक्टरों के बीच बोलने का मौका मिला। डाक्टरों का समाज में बहुत ही महत्त्वपूर्ण स्थान है और यही कारण है कि शिवबाबा भी डाक्टरों के बारे में चर्चा करते हैं। मैं डा० भाइयों व डा० बहनों को यह बताना चाहूँगी कि परमपिता परमात्मा शिव स्वयं ही एक परम डाक्टर (Supreme Doctor and Surgeon) हैं जो कि मनुष्यात्माओं को उनकी बीमारियों से सदा के लिए छुटकारा दिलाते हैं। मेरा यह विचार है कि यदि डा० लोग रोगियों को दवा के अतिरिक्त यह भी परामर्श दें कि वे राजयोग द्वारा परमात्मा की सहायता प्राप्त करें तो इससे डा० रोगियों की बहुत बड़ी सेवा कर सकते हैं। इसमें डाक्टरों को केवल इतना ही करना होगा कि वे रोगियों को परमात्मा का एवं राजयोग का संक्षिप्त परिचय दें।

उन्होंने कहा : राजयोग के अभ्यास से बहुत ही खुशी एवं आनन्द का अनुभव होता है। जैसे डा० दवाई के पिल देते हैं वैसे ही राजयोग की ड्रिल से तन व मन के बहुत से रोग दूर हो जाते हैं और आत्मा बीमारी के कारणों से निवृत्त हो जाती है। राजयोग से आत्मा को परमात्मा से माता-पिता, मित्र, सहायक, मार्गदर्शक सभी रूपों का अगाध प्यार प्राप्त होता है और उसे आनन्द का एक ऐसा स्रोत मिल जाता है जो कभी नहीं सूखता।

प्रवचन को जारी रखते हुए उन्होंने कहा— नेत्र विशेषज्ञ रोगी को दवाई देकर अथवा शल्य क्रिया (Surgical operation) द्वारा आँखों की रोशनी को ठीक कर देते हैं परन्तु क्या ही अच्छा हो कि रोगियों को वह अन्तर्दृष्टि भी प्राप्त हो जाए जिससे वे अच्छाई व बुराई में भेद कर सकें और जिस दृष्टि को पाकर वे स्वयं को सुधार सकें। ये गीता में भी कहा गया है कि भगवान ने अर्जुन को दिव्य दृष्टि अथवा दिव्य चक्षु का वरदान दिया जिससे उसने भूतकाल, वर्तमान काल व भविष्यकाल, तीनों को जान लिया। अतः उन्होंने कहा : मैं डाक्टरों से यह जानना चाहती हूँ कि क्या ऐसा नहीं हो सकता कि

वे शरीर रूपी माध्यम का इलाज करने की ज़िम्मेवारी निभाने के साथ-साथ आत्मा को भी आध्यात्मिक दृष्टि प्राप्त कराने के निमित्त बनें। उन्होंने कहा : आत्माओं के लिए केवल एक ही इंजेक्शन है। वह है राजयोग व पवित्रता को मिलाकर बनाया गया इंजेक्शन। राजयोग से आत्मा एक महान् चेतना को प्राप्त करती है और मनुष्य के मन की पवित्रता से उसके वचन व कर्मों में भी पवित्रता आती है और मनुष्य को इसके योग्य बनाना ही इस विश्व-कल्याण महोत्सव का लक्ष्य है। यह ईश्वरीय सन्देश जन-जन तक पहुंचना चाहिए।

उन्होंने कहा कि जो डाक्टर नई-नई दवाइयाँ और इलाज के नये-नये तरीकों के शोधकार्य में लगे रहते हैं, मैं उनसे कहना चाहूँगी कि वे सबको, विशेष कर रोगियों को राजयोग द्वारा अच्छा स्वास्थ्य देने के विषय पर भी शोध कार्य करें।

अत: दादी प्रकाशमणि जी ने डाक्टरों को सुझाव दिया कि डा० स्वयं राजयोग का अभ्यास करें। इससे रोगियों को भी जल्दी ठीक करने के कार्य में उन्हें मदद मिलेगी।

यदि एक डाक्टर स्वयं ही खिन्न एवं उदास है तो वह रोगी को उसके मानसिक तनाव दूर करने में कैसे मदद कर सकता है ? ऐसा डाक्टर अपने रोगी को ठीक करने की बजाय उसकी पीड़ा को बढ़ा सकता है और अपना कर्तव्य पूर्ण रूप से पालन नहीं कर सकता।

उन्होंने कहा डाक्टर को राजयोग का अभ्यास करते हुए अनुभव होगा कि वह शरीर नहीं बल्कि एक शुद्ध आत्मा है जिसका आदि स्वभाव है - शान्ति-स्वरूप, प्रेम स्वरूप और आनन्द स्वरूप। इस अनुभव से वह अपने रोगी को दिव्य गुण दे सकेगा और रोगी को शारीरिक बीमारी से ही नहीं बल्कि मानसिक बाधा से भी छुटकारा दिला सकेगा।

सान फ्रांसिस्को (अमेरिका) में राजयोग सेवा केन्द्र की इन्चार्ज ब्रह्माकुमारी डेनीज़ जिन्होंने दादी प्रकाशमणि जी के स्थान पर सभापतित्व का कार्यभार संभाला था, ने कहा कि जब भी उन्होंने अमेरिका में डाक्टरों का कार्यक्रम किया है उन्हें बहुत अच्छी सफ़लता मिली है। उन्होंने कहा मेडिकल क्षेत्र में एक विचारधारा है कि कुछ लोग दूसरों का ध्यान अपनी ओर खिचवाने व स्नेह-प्यार लेने के लिए जानबूझ कर बीमार पड़ जाते हैं या मरना चाहते हैं। राजयोग से हमारी स्नेह प्यार लेने की इच्छा पूरी हो जाती है क्योंकि हमें प्यार के सागर परमात्मा से बहुत प्यार मिलता है। राजयोग से हम अच्छा अनुभव करते हैं और हमारी बीमार पड़ने की कोई इच्छा नहीं होती। उन्होंने राजयोग के अनेक लाभ बताए।

अन्त में लोकनायक जयप्रकाश नारायण अस्पताल के डिप्टी मेडिकल सुपरिडेन्ट डा० ए० आर० मेहन्दीरत्ता ने सभी डाक्टरों व अन्य वक्ताओं का धन्यवाद किया और इसके बाद जालन्धर से आए बच्चों द्वारा गाए गए गीत 'अंधियारे सभी मिट गए' के साथ ही यह मधुर कार्यक्रम समाप्त हुआ।

—:०:—

विश्व शान्ति और सद्भाव सम्मेलन

मन की शान्ति हो तो जीवन भी सुहाता है वरना ऐसे मालूम होता है कि यह जीवन काँटों की शैय्या है। तनिक सोचिये कि यदि कोई व्यक्ति सोने-चाँदी के बर्तनों में खाना खाता हो परन्तु उसके मन में चैन न हो तो उसे उन स्वादिष्ट पदार्थों से क्या सुख मिलेगा ? उसे जो चिन्ता लगी है, उसका मन तो उसी का "अशान्त रस" लेने में लगा होगा। दोहरे फ़ोम के नर्म गद्दे पर वातानुकूल (Airconditioned) कमरे में सोया होने पर भी, उसके मन में तो किसी की कड़वी बातों की जो चुभन होगी, उसके कारण वे तो करवटें ही लेते हुए रात काटेगा। अत: यह तो प्रत्यक्ष ही है कि जिस मनुष्य को मन की शान्ति प्राप्त नहीं, उसके पास धन-पदार्थ और वैभव-विमान होने पर भी उसे प्रवञ्चना (Deprivation) और रिक्तता ही का अनुभव होगा।

समाज की शान्ति का व्यक्ति की शान्ति से सम्बन्ध

फिर, जिसके अपने मन में शान्ति होती है वह तो जहाँ जाता है वहाँ मोतिया और चम्बेली के फूलों की तरह शान्ति रूप सुगन्धि ही बखेरता है और जिसका अपना मन अशान्त हो तो वह छोटी-छोटी बात पर भड़क जाता है, झगड़ा मोल ले लेता है, बात को बुरा मान जाता है, रोने-चिल्लाने या तोड़-फोड़ करने लगता है और इस प्रकार अशान्ति ही फैलाता है। अत: समाज की शान्ति का भी व्यक्ति की शान्ति से सम्बन्ध है।

स्नेह और भातृत्व शान्ति के लिये जरूरी

पुनश्च, यदि घर-दर में, अड़ोस-पड़ोस में भ्रातृत्व की भावना न हो बल्कि वैर-वैमनस्य हो और द्वेष-दुर्भावना हो तो भी जीना दुश्वार हो जाता है। सम्बन्धों में कटुता आ जाने से मनुष्य की नींद भी हराम हो जाती है। भाई-भाई में भी अगर मित्रता का सार ही समाप्त हो गया मानिये। फिर तो पृथ्वी को प्यार से शून्य और वृक्ष-लता को हरियाली से रहित हुआ जानिये। जब भाईचारा ही न रहा तो शेष क्या रह गया ? जीवन केवल दिल की धड़कन और श्वसन क्रिया ही का नाम तो नहीं है ! अत: भाई-भाई में ठन जाय तो दिल की धड़कन ही बदल जाती है और साँस की रफ़्तार भी वैसी नहीं रहती, न खाने में कोई रस बना रह जाता है। अत: भ्रातृत्व की भावना तो मानसिक स्वास्थ्य का आवश्यक चिन्ह है।

आर्थिक प्रगति के लिए शान्ति जरूरी

विश्व के जिन देशों में जन-मत की अभिव्यक्ति के लिये न्यूनाधिक छूट है और जहाँ मज़दूरों या कर्मचारियों के संग या दल (Unions) बनाने की भी स्वतन्त्रता है, वहाँ हम प्राय: अनेक प्रकार की हड़तालों के समाचार सुनते हैं। कितने ही बड़े उद्योग या पूँजीपतियों के कारख़ाने कई-कई दिनों तक कर्मचारियों और मालिकों के बीच अनबन होने के कारण बन्द होते हैं ! एक दिन भी उस बड़े कारख़ाने के बन्द होने से उत्पादन-कार्य में लाखों रुपयों की हानि होती है और, इस प्रकार, हर वर्ष औद्योगिक अशान्ति (Industrial peacelessness) के परिणामस्वरूप व्यक्तियों को और देशों को करोड़ों रुपयों की क्षति होती है। कुछ कर्मचारी नेताओं या कुछ प्रशासकों अथवा मालिकों की मानसिक अशान्ति के परिणामस्वरूप जो औद्योगिक अशान्ति होती है, उसका परिणाम कितनों को भुगतना पड़ता है ! देश में उत्पादन कम और माँग अधिक हो जाने के कारण मंहगाई और अधिक हो जाती है, रिश्वत और भ्रष्टाचार और बढ़ जाता है और मंहगाई बढ़ने के कारण फिर हड़ताल करने की योजनाएँ बनने लगती हैं और फिर

नारों, धरनों, हड़तालों आदि का कुचक्र चल पड़ता है। इस प्रकार अपार क्षति तो होती ही है, अशान्ति भी फैलती है।

राजनीतिक अशान्ति

राजनीतिक दलों की बाग-डोर जब अशान्त व्यक्तियों के हाथ में आती है, अथवा जब उनकी नीति में ही हिंसा और अशान्ति वर्जित नहीं होते बल्कि स्वीकृत होते हैं, तो भी अशान्ति का वातावरण बन जाता है। एक राजनीतिक दल के नेता दूसरे राजनीतिक दल की गतिविधियों के विरुद्ध रोष प्रगट करने के लिये दुकानदारों, व्यापारियों, स्कूलों और कालेजों को बन्द करने के लिये कहते हैं; वे एक-दूसरे के विरुद्ध "हाय, हाय" के नारे लगाते हैं। हर घर के सदस्य राजनीतिक चर्चा को लेकर परस्पर बट जाते हैं। संसद की कार्यवाही में रुकावट पैदा होती हैं, अविश्वास प्रस्ताव, "वाक आऊट", ऐसे अनेकों तरीके अपनाये जाते हैं। एक-दूसरे की निंदा ही का वातावरण बन जाता है। मेल-मिलाप की भावना मिट जाती है और बटवारे तथा फूट की स्थिति बनी होती है।

राजनीतिक अशान्ति का एक और भी महाभयंकर रूप है। दूसरे देशों से राजनीतिक भेद होने के कारण हर आये दिन लड़ाई के लिए चुनौती दी जाती है। देश के उद्योगों, वैज्ञानिकों तथा साधनों को अस्त्रों-शस्त्रों की तैयारी में तथा युवकों को लड़ाई के तरीकों के प्रशिक्षण में लगा दिया जाता है। देश में माल की कमी और डर का वातावरण पैदा हो जाता है। ऐसे अशान्त वातावरण में, जबकि कभी भी लड़ाई छिड़ जाने या कहीं भी बम आ गिरने की चिन्ता लगी रहती है, जीवन में सुख भला कैसे अनुभव हो सकता है? आज बड़े-बड़े उद्योग और उच्चकोटि के वैज्ञानिक अधिकाधिक भयानक शस्त्रास्त्र बनाने में तथा उनके व्यापारी उन्हें ही बेचने में तो लगे हैं। विश्व का खरबों रुपया अशान्ति की विकराल देवी पर बली के रूप में भेंट हो रहा है! क्या यह जीवन है?

सम्मेलन और उसके विषय

अतः स्पष्ट है कि शान्ति का भ्रातृत्व-भावना और परस्पर तालमेल और सम-भाव के साथ भी गहरा सम्बन्ध है। इसलिये विश्व-कल्याण महोत्सव के अन्तर्गत एक पूरा सम्मेलन "विश्व-शान्ति, मानसिक शान्ति, भ्रातृत्व की भावना तथा मेल-मिलाप एवं सद्भाव" विषयों पर आयोजित किया गया था।

यह सम्मेलन, रविवार, १ मार्च की सन्ध्या को ५.३० बजे प्रारम्भ हुआ। इस अधिवेशन की कार्यवाही का संचालन किया ब्रह्माकुमार बृजमोहन आनन्द ने, जो कि धार्मिक, शैक्षणिक और नैतिक क्षेत्र में पिछले लगभग दो दशकों से सक्रिय भाग लेते रहे हैं। वे ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय के पत्राचार पाठ्यक्रम विभाग के निर्देशक भी हैं। इस कार्यक्रम की अध्यक्षा थीं ब्रह्माकुमारी राजयोगिनि निर्मल शान्ता जो कि इसी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय की एक वरिष्ठ कार्यकर्ता हैं और इसके दीर्घतम पूर्वी क्षेत्र की संरक्षिका एवं संचालिका हैं। इस में मुख्य अतिथि थे भ्राता स्टीव नारायण जो गयाना देश के उप-प्रधान हैं और चिरकाल से राजनीतिक क्षेत्र के कुशल अनुभवी होने के साथ-साथ आध्यात्मिक क्षेत्र में भी प्रतिष्ठित हैं। इसमें मुख्य प्रवक्ता थीं ब्रह्माकुमारी उषा जो एक प्रसिद्ध आध्यात्मिक कार्यकर्ता, महान् योगिन और कुशल व्यवस्थापक हैं तथा विश्व के कई देशों में राजयोग द्वारा शान्ति का सन्देश दे चुकी हैं। इस में राजयोग का व्यावहारिक अभ्यास कराया ब्रह्माकुमारी रानी जी ने जो शान्त मूर्त और योगमूर्त हैं और मुजफ़्फ़रपुर में राजयोग केन्द्र की इंचार्ज हैं। इस कार्यक्रम में केन्द्रीय गृह मंत्री भ्राता ज़ैल सिंह तथा रेल मन्त्रालय के राज्य मंत्री, भ्राता जाफ़िर शरीफ़ भी आने वाले थे परन्तु वे अचानक ही किन्हीं कार्यों के कारण नहीं आ सके।

"पवित्रता ही शान्ति की जननी है"—ब्रह्माकुमारी उषा

ब्रह्माकुमारी उषा ने अपने भाषण में अशान्ति के अनेक विश्व-व्यापी रूपों का वर्णन करते हुए तथा व्यक्तिगत जीवन में भी अशान्ति का विश्लेषण करते हुए कहा कि अशान्ति का कारण कोई-न-कोई मनोविकार ही है। कर्म-सिद्धान्त की प्रसिद्ध कहावत "जैसा बोवोगे वैसा काटोगे" अथवा "जैसा करोगे

वैसा भरोगे" की व्याख्या करते हुए उन्होंने कहा कि छह मनोविकारों के कारण ही मनुष्य के कर्म विकर्म होते हैं जिनका फल मनुष्य के सामने दुःख के रूप में आता है। परन्तु इतना ही नहीं, इन विकारों के कारण तत्क्षण भी मानसिक अशान्ति होती है और उससे मनुष्य के संस्कार भी बिगड़ जाते हैं, वृत्ति और दृष्टि भी दूषित होती है और स्मृति भी भ्रष्ट हो जाती है। उन्होंने कहा कि यह विश्लेषण साधारण-सा और जाना हुआ-सा तो मालूम होता है परन्तु अशान्ति के रोग का ही सत्य निदान है; इसके बिना यदि दूसरी कोई विधि हो तो कोई बताये। अशुचि और अपवित्रता सभी रोगों, दुःखों तथा तनावों का मूल है– यह अकाट्य सत्य है।

उन्होंने कहा—"आज डाक्टर लोग भी परीक्षणों के आधार पर कहते हैं कि इन मानसिक आवेगों की उग्रता से शरीर में अनेक रोग होते हैं। इससे भी स्पष्ट है कि ये मनोविकार आदि मध्य-अन्त में दुःख ही के उत्पादक हैं। इन को छोड़े बिना किसी ने सच्ची शान्ति प्राप्त की हो तो वह बताये ?"

उन्होंने कहा कि कुछ अशान्त व्यक्ति क्रोध में आकर करोड़ों रुपयों की सम्पत्ति को नष्ट कर डालते हैं। जिस सम्पत्ति के निर्माण में प्रचुर धन, समय, मानवी शक्ति आदि का खर्च होता है उसे वे मिन्टों में ही तहस-नहस कर डालते हैं। इससे वितनों को कष्ट होता है। समाज के ढांचे में ही घुण लग जाता है। घर-घर में कलह होता है। किसी को "काम" रूपी अजगर खा जाता है तो कोई मोह की मीठी जहर पी रहा है और कोई अहंकार से मतवाला होकर अपने से बाहर हो रहा है। ये विकार नरक का द्वार हैं—जो ऐसा नहीं जानता या जानते हुए भी नहीं मानता, या जान और मान कर भी इनके फंदे से छूटने के लिये पुरुषार्थ नहीं करता, उसे चाहिये कि वह शान्ति को भूल जाय, आनन्द की इच्छा छोड़ दे और अशान्ति को ही अपना जीवन-संगी या असाध्य रोग मान कर चले। दो शब्दों का ही निर्णय है। वह यह कि यदि शान्ति चाहिये तो पवित्रता ही को अपना वास्तविक जीवन मान कर चलना पड़ेगा।

शान्ति के लिए भ्रातृत्व की भावना आवश्यक

गयाना देश के उप-प्रधान भ्राता स्टीव नारायण ने कहा—"आज लोग विश्व-शांति के लिये शिखर सम्मेलन करते हैं, निरस्त्रीकरण के लिये भी वार्ताएं करते हैं, परन्तु दूसरी ओर हम देखते हैं कि बड़े-बड़े देशों के उद्योग, उनकी राजनीति और उनके व्यापार, आदि ही अस्त्रों-शस्त्रों के निर्माण, क्रय-विक्रय, और शस्त्रीकरण को लेकर चल रहे हैं। अतः सब से पहली बात तो यह है कि हमारे मन-वचन और कर्म एक होने चाहियें और यदि हम सचमुच शांति चाहते हैं तो हमारे कर्मों से स्पष्ट पता चलना चाहिये कि हम शांति ही की ओर कदम बढ़ा रहे हैं।

उन्होंने कहा कि यदि हम देशों के भौगोलिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक या जाति-सम्बन्धी भेदों को उभारेंगे तो उत्साहट पैदा होगी और विश्व में शांति कभी भी स्थापित नहीं हो सकेगी। इसकी बजाय यदि हम भ्रातृत्व की भावना को आधार बना कर हर समस्या का सामूहिक रूप से हल ढूढें तो निश्चय ही विश्व में शांति की बेल हरी-भरी हो उठेगी। उन्होंने कहा कि प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय की यही विशेषता है कि यहां के कार्यकर्ता स्वयं शान्ति में स्थित हैं और ये सभी प्रकार के बाह्य भेदों से ऊँचे उठकर भाई चारे की भावना पैदा करते हैं और अपने पवित्र आचरण से दूसरों को भी पवित्रता के लिये प्रेरित करते हैं। यदि हम इस प्रकार आत्मा-निश्चय के आधार पर पवित्रता को अपनाते हुए, भ्रातृत्व की भावना रखें तो निश्चय ही शान्ति प्राप्त होगी।

"शान्ति के स्वरूप में स्थित होने का अभ्यास करो"
ब्रह्माकुमारी रानी

ब्रह्माकुमारी राजयोगिनि रानी जी ने सभी से सस्नेह कहा—"चलो, अभी ही गहन शांति का अनुभव करते हैं। देखो, शांति तो हमारा वास्तविक स्वरूप है, तभी तो हमें अशान्ति अच्छी नहीं लगती। शांति देश के हम रहने वाली आत्माएँ हैं। हम सभी हैं ही आत्मा रूप से भाई-भाई। अतः अब इसी सत्यता से मन में लवलीन हो जाओ कि—"मैं तो हूं

ही शांतिस्वरूप, शांति तो मेरा स्वधर्म है, मेरे गले का हार है। मैं शांतिस्वरूप परमपिता परमात्मा ही की संतान हूं। शांति तो मेरा ईश्वरीय जन्म-सिद्ध अधिकार है। सूर्य, चाँद और तारागण से पार, इन आवाज़ों वाली सृष्टि के उस पार, ब्रह्मलोक में, जहाँ शांति है, से मैं इस सृष्टि मंच पर आया हूँ। मैं ज्योति-स्वरूप हूँ और शांति की रश्मियां फैलाना ही मेरा स्वाभाविक कर्तव्य है -।" इस प्रकार उन्होंने ईश्वरीय चिंतन की भावात्मक मार्गदर्शना देकर शांति ही में स्थित कर दिया—ऐसा लग रहा था।

तत्पश्चात् ब्रह्माकुमारी निर्मल शांता जी ने प्रवचन प्रारम्भ किया।

हम शान्ति के सागर परमपिता के बच्चे, शान्ति स्वरूप हैं"—ब्रह्माकुमारी निर्मल शान्ता

ब्रह्माकुमारी निर्मल शांता जी ने कहा—"परमपिता परमात्मा शांति के सागर, आनन्द के सागर और प्रेम के सागर हैं। राजा का पुत्र भिखारी कैसे हो सकता है? अतः हम शांति के लिये याचक अथवा प्रार्थी कैसे हो सकते हैं? शांति तो हमारे गले का हार है परंतु यदि हम स्वयं ही अपने ख़ज़ाने को गंवा दें तो कोई क्या कर सकता है?

उन्होंने कहा कि विश्व का मालिक एक परमात्मा ही है। सभी उस ही से यह आशा करते हैं कि वह विश्व में शांति स्थापित करे। परन्तु लोग जानते नहीं हैं कि वह शांति कैसे स्थापित करता है। इस बात को स्पष्ट करते हुए उन्होंने कहा कि परमात्मा ईश्वरीय ज्ञान और सहज राजयोग की शिक्षा देकर हमारे कर्मों को महान् बनाता है, हम में दिव्य गुण कैसे आयें, इसका वह हमें सहज मार्ग दिखाता है। इसी शुभ कार्य में ही वह हमारा सहायक बनता है: इसलिये ही उसे 'सुख-दाता', 'शांति-दाता' और 'पतित-पावन' कहा गया है। पहले वह पतित से पावन बनाता है, उस से ही हम सुख और शाँति प्राप्त करते हैं। पतित से पावन बनने के लिए वह हमें जो ईश्वरीय ज्ञान देता है और योग सिखाता है, उस द्वारा हमें स्वयं ही अपना जीवन महान् बनाना होता है। इस मूल बात को लोग नहीं जानते। वे परमात्मा से शांति तो मांगते हैं परन्तु यह नहीं जानते कि वह शांति के लिए ज्ञान तथा योग देता है; यह न जानने के कारण वे इन्हें प्राप्त नहीं करते। अतः अब हमें, जिन्हें शांति चाहिये, ईश्वरीय ज्ञान प्राप्त करना चाहिए और योगी बनना चाहिए ताकि हमारे जीवन में शांति आये। इसलिए ही इस महोत्सव का नीति वचन है—"बनो महान्, करो कल्याण।"

इसके पश्चात कलकत्ता से आये ब्रह्माकुमार रमेश जी जो उद्योग में भी योग का आदर्श हैं, स्वयं शांत और शीतल स्वभाव के हैं और दूसरों को भी शांति मिले, इस भावना से तन-मन और धन से योगी और सहयोगी हैं, ने संक्षेप में अपना अनुभव सुनाते हुए, वक्ताओं और श्रोताओं को धन्यवाद कहा और मंच-सचिव ब्रह्माकुमार बृजमोहन जी ने सभा की कार्यवाही को समाप्त घोषित किया।

—:o:—

विश्व कल्याण महोत्सव (महायज्ञ) की समाप्ति तथा ४५वीं त्रिमूर्ति शिव-जयन्ती समारोह दिवस

५ मार्च, १९८१ को विश्व-कल्याण महोत्सव के समाप्ति दिवस के साथ ही शिव-जयन्ती समारोह भी मनाया गया। इस अवसर पर पिछले १० दिनों में आध्यात्मिक मेला, राजयोग शिविर तथा सम्मेलनों द्वारा जो अनेकानेक आत्माओं की आध्यात्मिक सेवा का महान कार्य हुआ उसका संक्षिप्त विवरण सुनाया गया तथा साथ ही इस महायज्ञ में विकारों की आहुति देने तथा परमात्मा शिव द्वारा किये जा रहे महान कार्य में सहयोग देने की, उपस्थित जनता से अपील की गई। सर्व प्रथम उपस्थित जनता को ४५वीं त्रिमूर्ति शिव-जयन्ती के पावन पर्व का विशेष महत्व बताते हुए शुभ सूचना दी गई कि आज से लगभग ४५ वर्ष पूर्व "परमपिता परमात्मा शिव ने प्रजापिता ब्रह्मा के साधारण तन में प्रवेश होकर अधर्म का विनाश और आदि सनातन देवी-देवता धर्म की स्थापना अर्थ "अश्व मेध अविनाशी ज्ञान यज्ञ" अथवा प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय की स्थापना की थी। पिछले ४५ वर्षों से लगातार परमात्मा शिव इस ईश्वरीय विश्वविद्यालय के हज़ारों समर्पित ब्रह्माकुमार एवं ब्रह्माकुरियों द्वारा इस विश्व पर सतयुगी दैवी सृष्टि की स्थापना का महान कार्य करा रहे हैं। इस विश्व-विद्यालय के भारत में तथा विदेशों में ७३५ से भी अधिक सेवा केन्द्र खुले हुए हैं जहाँ आध्यात्मिक ज्ञान एवं राजयोग की शिक्षा बिना किसी जाति व धर्म के भेद-भाव के निःशुल्क दी जाती है।

तत्पश्चात् बम्बई सेवा-केन्द्र से आई हुई एक कन्या ब्र० कु० मालती ने बहुत ही सुन्दर "स्वागत गीत एवं नृत्य" प्रस्तुत किया जिसमें "स्वर्णिम युग" की महिमा का वर्णन करते हुए उपस्थित जनता को ऐसे सुख-शान्ति व समृद्धि सम्पन्न युग में चलने का आह्वान किया गया था।

इसके पश्चात ब्र० कु० आशा बहन (इन्चार्ज आध्यात्मिक संग्रहालय पाँडव भवन करौल बाग, नई दिल्ली) ने परमात्मा शिव का वास्तविक परिचय दिया और बताया कि परमपिता परमात्मा शिव हम सभी के परमपिता, परमशिक्षक एवं परम सद्गुरू हैं, जो कि सत्धर्म की स्थापना तथा अधर्म के विनाश कराने हेतु पुरुषोत्तम संगमयुग पर प्रजापिता ब्रह्मा के साधारण तन में कल्प-कल्प (५००० वर्ष बाद) अवतरित होते हैं। उनका नाम शिव है जो कि उनके गुणों का वाचक है न कि साधारण देहधारी मनुष्यों की तरह है। सभी विश्व की आत्माओं का कल्याणकारी होने के कारण ही उन्हें "शिव" कहा जाता है तथा उनका दैहिक रूप न होने कारण उन्हें निराकार माना जाता है। वे अजन्मा व अकर्त्ता होते हुए भी "प्रजापिता ब्रह्मा" के साधारण तन में प्रवेश करके ज्ञान देते हैं तथा प्रजापिता ब्रह्मा के द्वारा सत्युगी सृष्टि की स्थापना, शंकर के द्वारा कलियुगी सृष्टि का विनाश तथा विष्णु द्वारा सत्युगी सृष्टि की पालना का महान कर्तव्य कराते हैं। वे परमधाम, अखण्ड ज्योति महतत्व अथवा ब्रह्मलोक के निवासी हैं तथा कल्प ५ हज़ार वर्ष में एक ही बार संगमयुग पर अवतरित होते हैं, ना कि युगे-युगे अवतार लेते हैं।

उन्होंने आगे बताया कि शिव-जयन्ती अथवा शिव-रात्रि का पावन पर्व भी उनके इस अवतरण की यादगार रूप में ही भारत वर्ष में ही नहीं, बल्कि विश्व के अनेक देशों में मनाया जाता है। इस पर्व से

हमें यही शिक्षा लेनी चाहिए कि अपने जीवन से अज्ञान का अंधकार मिटाना है तथा ज्ञान का प्रकाश फैलाना है ताकि काम-क्रोध-लोभ-मोह-अहंकार आदि विकार खत्म होकर जीवन में सच्ची सुख-शाँति एवं पवित्रता का अनुभव कर सक। साथ ही उन्होंने यह सावधानी भी दी कि अगर अब गफ़लत की और यह शुभ अवसर हाथ से गंवा दिया तो फिर पछताने के सिवाय कुछ भी प्राप्त नहीं हो सकेगा और यही मुख से निकलेगा कि "अहो प्रभु आये भी और हमें पता भी नहीं चला। अतः कुम्भकर्णी नींद को छोड़कर ज्ञानामृत पान करके अपने जीवन को श्रेष्ठ बनाने का आमन्त्रण सभी आत्माओं को दिया।

इसके पश्चात् डाक्टर लक्ष्मी सहाय माथुर (भूत-पूर्व डायरेक्टर-जनरल मैट्रोलोजिकल ओबज़र-वेट्रीज़) ने अपने प्रवचन में बताया कि ईश्वरीय ज्ञान और विज्ञान का समन्वय होने से ही विश्व का कल्याण हो सकता है। सहज ज्ञान और सहज राज-योग की शिक्षा इस युग में सभी के लिये अति आव-श्यक है क्योंकि आज के इस तनावपूर्ण वातावरण तथा भौतिकवाद की दौड़ में भागते हुए दुःखी और अशाँत हो कहीं भी किनारा नहीं नज़र आ रहा है। आज का मानव धन व विज्ञान की प्रगति द्वारा सुख व शाँति की खोज में भटक रहा है लेकिन सही दिशा का ज्ञान न होने के कारण तथा मानसिक विकृति के कारण उसकी स्थिति मृग-तृष्णा के समान रेगिस्तान में पानी की तलाश में भागते हुए मृग के समान है। अगर विज्ञान के साथ मानव ईश्वरीय-ज्ञान को भी धारण कर ले और अपने जीवन में सद्गुणों, सद्भावना तथा विश्व-कल्याण की भावना का समावेश कर ले तो आज विश्व का नक्शा ही बदल जायेगा और महा-विनाश के लिये जो नये-नये अस्त्र-शस्त्रों को बनाने की होड़ में सभी देश लगे हुए हैं और अरबों (खरबों) रुपये खर्च कर रहे हैं वे अपना समय और धन और बुद्धि नई सतयुगी सृष्टि, सच्चा राम-राज्य की स्थापना में ही लगायेंगे। उन्होंने एक वैज्ञानिक होते हुए अपना ईश्वरीय ज्ञान का अनुभव भी सुनाया कि "साइन्स और साइलेन्स" दोनों ही मनुष्य को सच्ची सुख-शाँति-समृद्धि दिला सकती हैं अतः दोनों का समन्वय होना अति आवश्यक है।

ब्र० कु० शुक्ला जी इन्चार्ज पटेल नगर सेवा-केन्द्र ने अपने अलौकिक जीवन एवं दिव्य-विवाह का अनुभव सुनाते हुए बताया कि ईश्वरीय ज्ञान एवं राजयोग की शिक्षा से उनके जीवन में महान परि-वर्तन आया है और वे एक अलौकिक सुख-शाँति का अनुभव करते हैं तथा अनेकानेक आत्माओं को इस सुख का अनुभव करा चुके हैं। आपने बताया कि बच-पन से उनकी तीव्र इच्छा कि "कौमार्य जीवन" में रहकर विश्व की आत्माओं की सेवा करने तथा ईश्वर को ही अपना पति अथवा साजन रूप में प्राप्त करूँ। इसी लक्ष्य को लेकर वे पिछले २५ वर्षों से ईश्वरीय सेवा में रत हैं तथा परमपिता शिव की श्रीमत के आधार पर अलौकिक रीति से विवाह भी किया तथा कौमार्य जीवन व्यतीत करते हुए विश्व की आत्माओं की सेवा में अपना अधिक से अधिक समय देती हैं।

तत्पश्चात् ब्रह्माकुमारी सुन्दरी जी (इन्चार्ज मालवीय नगर सेवा केन्द्र) ने उपस्थित जनता को राजयोग के अभ्यास का सहज तरीका तथा उससे प्राप्ति का वर्णन करते हुए उपस्थित जनता को राजयोग का अभ्यास कराया तथा उन्हें इसी प्रकार परमात्मा से मिलन-मनाते रहने तथा जीवन को श्रेष्ठाचारी बनाने की प्रेरणा दी।

भारत के सर्वोच्च न्यायालय के (अवकाश प्राप्त) न्यायाधीश भ्राता कृष्णाय्यर ने अपने ओजपूर्ण प्रव-चन में बताया कि विश्व-कल्याण के लिये आध्या-त्मिक और राजयोग के अभ्यास की अत्यन्त आवश्य-कता है जबकि इस ओर देश के नेताओं व सामाजिक कार्यकर्ताओं का ध्यान न के बराबर ही है। आज मनुष्य अपने विनाश के साधनों को जुटाने में ही लगा हुआ है और अपने तन-मन-धन व बुद्धि विनाशकारी हथियारों के बनाने में ही खर्च करता रहता है। चरित्र का पतन तथा स्वार्थ की भावना चर्म सीमा तक पहुंच चुकी है। ऐसे समय केवल परमात्मा शिव का ही सहारा लेने में हमारा कल्याण हो सकता है।

इस ईश्वरीय विश्व-विद्यालय द्वारा की जा रही सेवाओं की सराहना करते हुए उन्होंने बताया कि चरित्र-निर्माण और देश का उत्थान तभी हो सकता है जब सभी देशवासी राजयोग का अभ्यास करके अपने विकारों को खत्म कर दें तथा ईश्वर द्वारा बताये हुए मार्ग पर चलेंगे।

भ्राता सी० के० जफ़र शरीफ़ (केन्द्रीय रेलवे राज्य मंत्री) जो कि विशिष्ट अतिथि के रूप में पधारे थे ने अपने प्रवचन में इस संस्था द्वारा किये जा रहे कार्य की सराहना करते हुए कहा कि मेरा इस संस्था से काफ़ी समय से सम्पर्क है तथा मुझे कर्नाटक (बंगलौर) में स्थित सेवा केन्द्र पर कई बार जाने का शुभ अवसर मिला है। बहनों द्वारा दिये जा रहे ईश्वरीय ज्ञान और राजयोग की शिक्षा से मैं बहुत प्रभावित हुआ हूँ और समझता हूँ कि मानव मात्र को सच्ची सुख व शाँति की प्राप्ति के लिए इस शिक्षा को अवश्य अपनाना चाहिए।

भ्राता केदार पाँडे (केन्द्रीय रेलवे मन्त्री) जो कि इस समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में पधारे थे ने "आध्यात्मिक मेला" का अवलोकन करने के पश्चात् इसकी विशेषता बताते हुए कहा कि इस प्रकार के आयोजन भारत के कोने-कोने में होने चाहिए ताकि सभी लोग इससे लाभ उठा सकें और लोगों का चरित्र निर्माण और देश का उत्थान हो सके। उन्होंने कहा कि ब्रह्माकुमारी बहनें बहुत महान् कार्य कर रही हैं तथा देशवासियों को इसके द्वारा बताये हुए मार्ग का अनुसरण करना चाहिए तभी गाँधी (बापू) जी के स्वप्नों के राम-राज्य की स्थापना हो सकती है। उन्होंने शास्त्रों का हवाला देते हुए बताया कि शिव ही परम-कल्याणकारी परमात्मा हैं तथा शिव-रात्रि शिव जयन्ती मनाने का सही अर्थ यही है कि हम उन के द्वारा बताये हुए मार्ग व शिक्षाओं का अनुसरण करें। आपने चरित्र-निर्माण के लिए आध्यात्मिक शिक्षा की आवश्यकता बताते हुए कहा कि सभी स्कूलों व कालेजों में इसे अनिवार्य विषय के रूप में पढ़ाना चाहिए।

ब्रह्माकुमारी रुक्मणि (इन्चार्ज राजोरी गार्डन सेवा-केन्द्र) ने अपने अध्यक्षीय प्रवचन में शिव जयन्ती के महान पर्व पर बधाई देते हुए कहा कि हमें इस पर्व पर "पवित्र और योगी" बनने की प्रतिज्ञा लेनी चाहिए। साथ ही परमात्मा शिव द्वारा रचाये गये इस महायज्ञ में कोई-न-कोई विकारों की आहुति अवश्य देनी चाहिए। शिव-रात्रि का अर्थ बताते हुए आपने बताया कि परमात्मा शिव का अवतरण ऐसे समय ही होता है जब कि इस सृष्टि पर अधर्म व अज्ञानता का अन्धकार छाया होता है तथा विकारों की अग्नि से मानव मात्र ग्रसित होकर परमात्मा को पुकारता है। अब परमपिता परमात्मा शिव हम बच्चों की पुकार सुनकर हमें सभी दुःखों से छुड़ाने के लिये प्रजापिता ब्रह्मा के साधारण तन में अवतरित हो चुके हैं और पिछले ४५ वर्षों से इस विश्व के परिवर्तन का महान् कार्य करा रहे हैं। अतः हमें भी उनके इस कार्य में सहयोगी बनना चाहिए ताकि नई दुनिया में राज्य भाग्य का अधिकार प्राप्त कर सकें। "अभी नहीं तो कभी नहीं"- ऐसी सावधानी भी सभी को देते हुए उन्होंने इस ईश्वरीय विश्व-विद्यालय की सेवाओं से लाभ उठाते रहने का निमन्त्रण दिया।

अन्त में भ्राता लक्ष्मण जी (मद्रास रिफ़ाइनरी के रेज़िडेन्ट प्रतिनिधि) ने सभी को अपना अमूल्य समय निकालने के लिए तथा इस महान कार्य (महायज्ञ) में सहयोग देने के लिये धन्यवाद दिया।

—:०:—

सांस्कृतिक कार्यक्रम

सांस्कृतिक कार्यक्रम किसी देश, प्रदेश या जाति के जीवन-दर्शन, चिन्तन, पारम्परिक रीति-रिवाज, रहन-सहन, वेश-भूषा, इतिहास, आचार-विचार, मनोरंजन और जीवन-मूल्यों आदि को कलात्मक रीति से प्रतिबिम्बित करते हैं। साँस्कृतिक कार्यक्रमों में गीत, संगीत, नाटक, संवाद आदि के विविध रूप में जो अभिव्यक्ति होती है, उस से अभिव्यञ्जित होता है कि उस देश, धर्म या जाति के लोग किस परिस्थिति में कैसा सोचते या व्यवहार करते हैं और उनके जीवन-मूल्य या आदर्श क्या हैं। साँस्कृतिक कार्यक्रम मनोरंजन का तो एक बड़ा साधन होते ही हैं परन्तु उनकी यह भी विशेषता है कि वे सूक्ष्म रीति से मनुष्य के संस्कारों पर अपनी छाप छोड़ जाते हैं। वे दर्शक अथवा श्रोता के आवेगों (Emotions) को प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से ढालते हैं और उसके चिन्तन को एक दिशा देते हैं। सांस्कृतिक कार्यक्रम भाव-प्रधान होने के कारण मनुष्य के आवेगों (Emotions) पर विशेष प्रभाव डालते हैं और उनके द्वारा वे मनुष्य के बुद्धि पक्ष को भी मोड़ देते हैं। अतः न केवल ये किसी देश या जाति की परम्परा को प्रतिबिम्बित करते हैं बल्कि ये वर्तमान पीढ़ी को भी उनके पूर्वजों के चिन्तन एवं अनुभव का फल (Heritage) देने के अतिरिक्त अब उनके संस्कारों का वाँछित नव-निर्माण भी करते हैं।

चुनाव की आवश्यकता

हम अपने पूर्वजों की देन (Ancient heritage) की बात कह रहे थे। परन्तु अतीत तो एक बड़ा आगार है, उसमें से हम क्या चुनते और लेते हैं, यह भी एक महत्त्वपूर्ण प्रश्न है। अतीत में त्याग और वैराग्य की भी निधि मौजूद है तो भोग और विलास की भी। अतीत में शान्ति का सन्देश देने वाले भी हुए हैं और रौद्र रूप धारण करके ध्वंस और विध्वंस करने वाले भी। अतीत में "ऋण लेकर भी घी पीयो" की नीति का प्रचार करने वाले भी हुए हैं और परमात्मा में मन को एकाग्र करके परम आनन्द को प्राप्त करने की सम्मति देने वाले भी। अब सोचना यह है कि आज जब जीवन में पहले ही से वासना और भोग की प्रधानता है, भौतिकवादिता और हिंसा से हाहाकार मचा है तो हमारे सांस्कृतिक कार्यक्रम मनोरंजन और कला के प्रभावशाली माध्यम से जन-जन को क्या दें? समाज का कल्याण किस में है?

सांस्कृतिक कार्यक्रम—संस्कारों को सतोप्रधान बनाने के लिए

इसी प्रश्न को सामने रखते हुए, प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय न केवल चित्रकला एवं मूर्त्त कला तथा अन्य भव्य कलाओं (aesthetic arts) के द्वारा जन-मन को पवित्रता एवं सदाचार की प्राचीनतम परम्परा की ओर मोड़ने का ज़ोरदार पुरुषार्थ करता आया है बल्कि गीत, संगीत, नाटक आदि (Performing arts) द्वारा भी मनुष्य को गीता की महानतम भगवद्वाणी "तस्मात योगीभव अर्जुन" (इसलिए हे अर्जुन, तू योगी बन) के अनुरूप उसे मनोरंजनात्मक विधि से योगी बनाने का कल्याणप्रद कर्त्तव्य करता आ रहा है।

अतः विश्व-कल्याणोत्सव में माया पर चार प्रकार से प्रहार किया गया था। चित्रकला, भव्यकला या मूर्त्त कला आदि के रूप में प्रदर्शनी एवं पण्डाल निर्माण करके उनके माध्यम से मानव-मन को विकारों से मुक्त करने और प्रभु से युक्त करना

उसका एक पक्ष था। दूसरा था—वक्तृत्व कला (Art of speech), भाषण कला (Oratory) आदि के द्वारा ललकार कर, माया को चुनौती देकर, उसे मनुष्य के चिन्तन से हटाना। विभिन्न सम्मेलन आदि इसी प्रकार के कार्यक्रम थे जिसमें ज्ञान पक्ष के रूप में माया पर प्रहार था। तीसरा था संगठन, दल-बल अथवा सामूहिक चेतना के रूप में उमंग-उत्साह भर कर आत्मा से कमज़ोरी, नीरसता, विवशता या हताशा के रूप में बैठी माया को समाप्त करना। चौथा प्रहार था—इन साँस्कृतिक कार्यक्रमों के रूप में, मनोरंजन के माध्यम से मनुष्य के मन में अनैतिकता के प्रति आवेग, प्रभु-प्रेम के लिए सहन करने के लक्ष्य से उत्साह आदि को वेगपूर्ण उत्पन्न करना। लाल किला मैदान में इन चारों का एक किला बनाकर माया को परास्त करने के संकल्प से शिव ध्वज लहराया गया था और इस पवित्र युद्ध (Holy war) का शंखनाद किया गया था।

ईश्वरीय विश्व-विद्यालय के द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम

एक साँस्कृतिक समाज (Cultural Society) के रूप में प्रसिद्ध न होने पर भी प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय साँस्कृतिक क्षेत्र में जो कार्य कर रहा है वह कम महत्त्व का नहीं है। ईश्वरीय विश्व-विद्यालय में आने वाले बहन-भाई सदाचार का वातावरण पैदा करने के लिए मंच पर प्रतिवर्ष जितने कार्यक्रम करते हैं, शायद ही कोई संस्था इतने करती होगी। इसमें लोक गीत, लोक नृत्य आदि के अतिरिक्त शास्त्रीय गीत, शास्त्रीय नृत्य, नाटक, संगीत आदि का प्रचुर कार्यक्रम होता रहता है।

विश्व-कल्याण महोत्सव के अवसर पर प्रतिदिन जितना साँस्कृतिक कार्यक्रम होता था यदि उस सब का यहाँ विवरण दें तो उसके लिए काफ़ी स्थान चाहिए। २४ फ़रवरी से ५ मार्च तक दस दिन की अवधि में लगभग १७ सभाएँ हुईं। इनमें ८ नाटक, ३६ गीत, १४ नृत्य, एक कठपुतली का खेल, एक क़व्वाली आदि-आदि से जन-जन को पवित्रता के लिए प्रेरित किया गया। कानपुर और आगरा के ग्रुपों ने लोक गीत सुनाए, मध्य प्रदेश के ग्रुप ने आदिवासी गीत जर्मन ग्रुप ने मुरली वादन किया तो भोपाल केन्द्र ने मूक ध्वनि, ब्रोच (गुजरात) वालों ने गोप गुँथम और डंडा रास दिखाई, महाराष्ट्र वालों ने लेज़ियम डांस किया तो जालन्धर ग्रुप ने बैले और जूनागढ़ तथा इन्दौर वालों ने दीपक रास। लण्डन वालों ने गीतों, कठपुतली का खेल, नाटक तथा माईम (Mime) द्वारा जन-जन को "पवित्र बनो और योगी बनो" का संदेश दिया तो सान-फ्रांसिस्कों (अमेरिका) ग्रुप ने वाद्य-सहित गीतों से मानव-मन को ईश्वरीय प्रेम से विभोर कर दिया। जापान, जर्मनी फ्रांस, ट्रिनीडाड, बैलजियम आदि अनेक देशों तथा प्रदेशों ने अपने-अपने कला-कौशल के अनुसार साँस्कृतिक कार्यक्रम में भाग लिया। दो-तीन गीत अनेक देशों के गायकों ने सामूहिक रूप में तैयार करके भी वाद्य-सहित पेश किये जिससे कि सारे कार्यक्रम में अन्तर्राष्ट्रीय संस्कृति का नमूना सामने आया। प्रोग्राम पेश करने वाले विभिन्न देशों और भारतीय प्रदेशों से आये यह ग्रुप व्यावसायिक कलाकार (Professional artistes) नहीं थे बल्कि लोक-कल्याणार्थ रुचि के कारण वे जन-मानस को शान्ति, आनन्द प्रभु-प्रेम एवं पवित्रता का आभास कराने के लिए विविध कार्यक्रम पेश करते थे।

२६ फ़रवरी सायं को सम्मेलनों के उद्घाटन कार्यक्रम में जो गीत पेश किया गया था, वह सम्मेलन के नीति वचन (guiding slogan) को लेकर बना था, अर्थात् "बनो महान, करो कल्याण" विषय पर। इसकी शब्द रचना की थी ब्रह्माकुमार मोहन भाई ने इसे गाया था बम्बई की व्यावसायिक गायिका मीनू पुरुषोत्तम ने। गीत निम्नलिखित है :—

सम्मेलनोद्घाटन कार्यक्रम में पेश किया गया गीत

(स्थाई) **बनो महान करो कल्याण**
शिव पिता का यही पैग़ाम
प्यार के सागर के तुम बच्चे,
सब पे प्यार बरसाओ तुम
(शेष पृष्ठ ११० पर)

समाचार पत्रों द्वारा समाचार, निमन्त्रण और सूचना

देहली और नई दिल्ली की जन-संख्या अब ६० लाख से भी अधिक है और यह आबादी दूर-दूर तक फैली हुई है; देहली एक महानगर भी है और प्रदेश भी। अतः विश्व-कल्याण महोत्सव में आने के लिये यहाँ हरेक को व्यक्तिगत रूप से निमन्त्रण देना तो कठिन कार्य था। दैनिक समाचार पत्र और पत्रिकाएँ ही ऐसा साधन थीं जिन द्वारा शिक्षित जन-जन को लाभ उठाने के लिये आमन्त्रित अथवा सूचित किया जा सकता था। समाचार पत्र लाखों घरों में प्रतिदिन पहुँच जाते हैं; उन्हीं द्वारा लोगों को मालूम होता है कि आजकल देहली में क्या हो रहा है।

देहली में अंग्रेज़ी, हिन्दी, उर्दू और गुरुमुखी में ही अधिकाँश पत्र और पत्रिकाएँ प्रकाशित होते हैं। उनमें से अंग्रेज़ी में हिन्दुस्तान टाइम्स, टाइम्स ऑफ़ इण्डिया, इण्डियन एक्सप्रेस, स्टेट्समेन, नेशनल हेरल्ड, इवनिंग न्यूज़ और प्रैट्रीआट मुख्य हैं और हिन्दी में हिन्दुस्तान, नवभारत टाइम्स, वीर अर्जुन अधिक पढ़ी जाती हैं और उर्दू में मिलाप, प्रताप, तेज, सवेरा, दावत, अल्जामियत और गुरुमुखी में एज्यूकेटर आदि-आदि प्रकाशित होते हैं। इनके अतिरिक्त, अनेकानेक साप्ताहिक या मासिक प्रत्रिकाएँ भी प्रकाशित होती हैं और समाचार एजेन्सियाँ, प्रादेशिक समाचार पत्रों के संवाददाता तथा अन्य देशों की न्यूज़ एजेन्सियाँ भी यहाँ हैं।

इन पत्रों-पत्रिकाओं तथा समाचार एजेन्सियों द्वारा देहली तथा बाहर की जनता को समाचार से अवगत कराने तथा सूचना देने के लक्ष्य से महोत्सव के लिये बने हुए समाचार विभाग के बहन-भाई लगभग २०० व्यक्तियों से कई बार मिले। इन व्यक्तियों में कई पत्रों के मुख्य सम्पादक, समाचार सम्पादक, सहायक समाचार सम्पादक, मुख्य रिपोर्टर, वरिष्ठ रिपोर्टर, संवाददाता, प्रेस फ़ोटोग्राफ़र आदि सम्मिलित थे। कुछ पत्रों के जनरल मैनेजर, प्रबन्ध-निर्देशक तथा प्रबन्ध सम्पादकों आदि से भी वे मिले। इन सभी को वे महोत्सव के बारे में साहित्य तथा पूरा समाचार देते रहे तथा उन्हें सहयोग देने के लिये भी निवेदन करते रहे।

समाचार पत्रों द्वारा प्राप्त सहयोग

इस सभी के फलस्वरूप, कुछेक पत्रों और पत्रिकाओं में विशेष लेख (Features) व्यक्तिगत भेंट (Press Interview) या ईश्वरीय विश्व-विद्यालय की संस्थापना के निमित्त पिता-श्री के संक्षिप्त जीवन-परिचय आदि प्रकाशित हुए। इनमें से हिन्दुस्तान टाइम्स, "सूर्या" और "तेजगाम" के नाम विशेष तौर पर उल्लेखनीय हैं। इनके अतिरिक्त, दस सूत्रीय कार्यक्रम का तथा विश्व-कल्याण महोत्सव का समाचार महोत्सव से पहले अंग्रेज़ी के दैनिक पत्र "हिन्दुस्तान टाइम्स" में ३ बार, "टाइम्स ऑफ़ इण्डिया" में २ बार, इण्डियन एक्सप्रेस में ४ बार, नेशनल हेरल्ड में १ बार, ईवनिंग न्यूज में २ बार छपा। इसी प्रकार हिन्दी दैनिक पत्र "हिन्दुस्तान" में १ बार, नवभारत टाइम्स में ३ बार, प्रताप में १ बार, वीर अर्जुन में १ बार यह समाचार छपा। उर्दू के दैनिक मिलाप में इस कार्यक्रम का समाचार तथा लेख १० बार, दावत में ६ बार, तेज में ४ बार, प्रताप में ५ बार, सवेरा में ५ बार, और अल्जमियत में २ बार छपा। महोत्सव के दिनों में और बाद में महोत्सव-सम्बन्धी समाचार या लेख हिन्दुस्तान टाइम्स में ६ बार, नेशनल हेरल्ड में ४ बार, प्रैट्रीआट में २ बार, ईवनिंग न्यूज़ में १ बार हिन्दुस्तान (हिन्दी) में ४ बार, नवभारत टाइम्स में २ बार, जनयुग में १ बार, वीर अर्जुन में १ बार, सान्ध्य समाचार में २ बार, मिलाप उर्दू में ४ बार,

और प्रताप में २ बार छपा।

महोत्सव का समाचार महोत्सव के दिनों में या बाद में देहली के बाहर के कई समाचार पत्रों में भी छपा। इनमें से बम्बई के धर्मयुग, दैनिक विश्वामित्र, फ्री प्रेस जर्नल में, इन्दौर के नई दुनिया, जलन्धर के पंजाब केसरी और हिन्द समाचार, जबलपुर के हितवाद, जयपुर के राजस्थान क्रानीकल, रोहतक के दैनिक नवज्योति तथा हरियाणा निर्माण, लखनऊ के तरुण भारत, मथुरा के बृज वसुन्धरा आदि पत्रों में छपा।

दस मास में लगभग ७८० समाचार अथवा लेख छपे

दस सूत्री कार्यक्रम के दस मास में शायद ही कोई ऐसा प्रमुख दैनिक पत्र होगा जिसमें यह समाचार प्रकाशित न हुआ हो। देश-भर के लगभग ४२५ (चार सौ पच्चीस) पत्रों और पत्रिकाओं में कुल सात सौ अस्सी (७८०) बार समाचार या लेख छपे। इन में प्रायः हर प्रदेश के और प्रायः हर भाषा के मुख्य-मुख्य समाचार पत्र और पत्रिकाएँ हैं। आशा है कि इस तरह कई करोड़ लोगों को इस कार्यक्रम का समाचार मिला होगा। इनके अतिरिक्त कुछ मुख्य पत्र या पत्रिकाएँ ऐसे हैं जिनकी नीति ही यह है कि वे ऐसे समाचार नहीं छापते क्योंकि वे विज्ञान से या फ़िल्म आदि से सम्बन्धित हैं या अध्यात्म में उनकी रुचि ही नहीं है या वे दूसरी संस्थाओं के समाचार ही नहीं छापते।

भारत के बाहर भी जब इस ईश्वरीय विश्व-विद्यालय की संयुक्त मुख्य प्रशासिका ब्रह्माकुमारी मनमोहिनी जी तथा पूर्वी क्षेत्रीय इंचार्ज ब्रह्माकुमारी निर्मल शान्ता जी गयीं, तब और वैसे भी वहाँ के कई समाचार पत्रों ने आने वाले विश्व-कल्याण महोत्सव के बारे में भी समाचार प्रकाशित किया।

दूसरे देशों के समाचार पत्रों के संवाददाताओं से भी इस सम्बन्ध में सम्पर्क स्थापित हुआ है। आशा है कि आगे चलकर वे भी इसमें काफ़ी सहयोगी बनेंगे।

संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि हमारे पुरुषार्थानुसार तथा वर्तमान समय एवं स्थिति-परिस्थिति के अनुसार समाचार पत्रों तथा पत्रिकाओं ने यथा-सम्भव सहयोग दिया ही है।

(साँस्कृतिक कार्यक्रम पृष्ठ १०८ का शेष)

अन्धकार में बैठे हैं जो,
आत्म-ज्योति जगाओ तुम
खोलो झोली देते जाओ,
ज्ञान के रत्नों का तुम दान
बनो महान करो कल्याण···
ज्ञान अमृत के द्वारा खुद को,
पावन शुद्ध बनाओ तुम
जग-मग चमको दिव्य सितारे,
इस जग को चमकाओ तुम
परमपिता के सब गुण ले लो,
बन जाओ तुम गुणों की खान
बनो महान करो कल्याण···
त्याग तपस्या और सेवा,
यही तुम्हारा नारा हो
इस दुनिया को पावन करना,
यही लक्ष्य तुम्हारा हो
दैवी कर्म करो बना दो,
इस जग को तुम देवस्थान
बनो महान करो कल्याण···
शान्ति रूप शक्ति भरपूर,
ऐसा तेज न्यारा हो
गिरते हुओं को दो सहारा,
तुम जग का सहारा हो
अपने जीवन से तुम कर दो,
औरों का चरित्र-उत्थान
बनो महान करो कल्याण···

—:०:—

विश्व-कल्याण महोत्सव का रेडियो और टेलीविज़न पर प्रसार

विश्व-कल्याण महोत्सव धर्म, देश और जाति भेद के बिना सभी के कल्याण के लिए था। अतः अधिक से अधिक लोगों को इस महोत्सव के कार्यक्रम की सूचना देने के लिए रेडियो व टेलीविज़न विभाग का सहयोग अत्यावश्यक था क्योंकि इन द्वारा देहली के लगभग दस लाख घरों में सन्देश पहुँचता है। इसके लिए पहले तो यह ज़रूरी था कि जन प्रसार के इन महत्त्वपूर्ण प्रसाधनों से सम्बन्धित कार्याधिकारियों को इस अन्तर्राष्ट्रीय महोत्सव की मुख्य विशेषताओं का बोध हो ताकि वे भली भाँति इसके स्तर को जान सकें।

अतः कुछेक ब्रह्माकुमारी बहनों व ब्रह्माकुमार भाइयों का संगठन, जिन में भ्राता आर० एस० भटनागर, आस्ट्रेलिया के राबर्ट फ़ार्ब्ज़, बम्बई के अस्पी भाई, लण्डन की जयन्ती बहन तथा स्वदेश बहन आदि सम्मिलित थे, ने भ्राता ब्रज मोहन तथा आशा बहन की मार्ग दर्शना तथा सक्रिय सहयोग से सूचना एवं प्रसार विभाग की उपमन्त्री से तथा इन दोनों विभागों के कार्याधिकारियों से भेंट की। उन्होंने उन्हें महोत्सव से सम्बन्धित फ़ोल्डर तथा अन्य साहित्य दिया जिसमें यह जानकारी दी गई थी कि अन्तर्राष्ट्रीय **प्रदर्शनी** में किस-किस देश अथवा प्रदेश के किस-किस विषय पर मण्डप होंगे, **शोभा यात्रा** में किस-किस विषय पर कैसी झाँकियाँ होंगी, विभिन्न **सम्मेलनों** के क्या-क्या विषय होंगे और उन-उन में कौन-कौन विशिष्ट व्यक्ति भाग लेंगे, किस-किस देश से लगभग कितने प्रतिनिधि आयेंगे तथा सभाओं में लगभग कितने लोगों के आने की आशा है, आदि-आदि।

इसके अतिरिक्त, उन्हें आयोजक संस्था—प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय का भी परिचय दिया गया तथा उन्हें इस संस्था के किसी केन्द्र में आने तथा महोत्सव में पधारने के लिए भी आमन्त्रित किया गया। दूरदर्शन (T.V.) के जिन कार्याधिकारियों से भेंट की गई, उनमें से कुछेक निम्नलिखित हैं :—

१. महानिर्देशक
२. महाउपनिर्देशक
३. कंट्रोलर ऑफ़ प्रोग्राम्स्
४. स्टेशन डायरेक्टर
५. सहायक निर्देशक
६. 'चहल-पहल', 'परिक्रमा', 'आवर गैस्ट' (Our Gust), 'पर्सन्स, प्लेसिस एण्ड ईवेंट्स (Persons, Places and Events) के प्रोड्यूसर
७. समाचार दर्शन के सम्पादक आदि-आदि।

आकाशवाणी के जिन कार्यकर्त्ताओं से भेंट की गई, उनमें से कुछेक ये हैं :—

१. महानिर्देशक
२. महाउपनिर्देशक
३. स्टेशन डायरेक्टर
४. न्यूज़ सर्विस विभाग के डायरेक्टर
५. संयुक्त डायरेक्टर
६. सहायक स्टेशन डायरेक्टर
७. सहायक डायरेक्टर, न्यूज़ सर्विस विभाग
८. डायरेक्टर, विदेश सेवा विभाग
९. सहायक डायरेक्टर, विदेश सेवा विभाग
१०. समाचार सम्पादक
११. समाचार संवाददाता

१२. प्रोड्यूसर, युवा वाणी

रेडियो व दूरदर्शन में कब समाचार आया ?

इस पुरुषार्थ के फलस्वरूप २४ फ़रवरी, १९८१ को रात्रि के ७-३० बजे आकाशवाणी के देहली स्टेशन से हिन्दी और अंग्रेज़ी दोनों में अन्तर्राष्ट्रीय प्रदर्शनी अथवा मेले का समाचार प्रसारित किया गया। यही समाचार आकाशवाणी के भारत के अन्य सभी स्टेशनों से अंग्रेज़ी में रात्रि को १०-४५ बजे और २५ फ़रवरी, १९८१ को अन्य भाषाओं में तथा विदेशों के समाचार-पत्रों में भी प्रसारित किया गया क्योंकि विदेशी समाचारों के सम्पादक महोदय से पहले ही से निवेदन किया गया था कि वे इस अन्तर्राष्ट्रीय महोत्सव से सम्बन्धित समाचार का विदेशों के लिए भी प्रसार करें।

फिर, २७ फ़रवरी, १९८१ को रात्रि के ८-३० बजे अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन का समाचार आकाशवाणी से हिन्दी व अंग्रेज़ी में प्रसारित किया गया। इसे 'युवा वाणी' में भी दिया गया।

तत्पश्चात् 'पत्रकार स्नेह मिलन' का समाचार २७ फ़रवरी, १९८१ को देहली स्टेशन से प्रातः ७-४५ बजे हिन्दी में दिया गया और विश्व भ्रातृत्व सम्मेलन का समाचार भी २७ फ़रवरी को रात्रि के ८-३० बजे अंग्रेज़ी में दिया गया।

इसी प्रकार, २६ फ़रवरी के दूरदर्शन ने 'शोभा यात्रा' और 'शान्ति यात्रा' का कुछ भाग दिखाया और २ मार्च, १९८१ को अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन की झलकें चहल-पहल में दिखाईं।

२४ फ़रवरी को देहली-बी के 'समाचार दर्शन' में रात्रि के ८-१० बजे जो समाचार प्रसारित किया गया, उसकी हिन्दी ये है। इसे ही २५ तारीख को प्रातः ८-०० बजे के समाचारों में दोहराया गया :—

"आज नई दिल्ली में दस दिन के लिए विश्व-कल्याण महोत्सव प्रारम्भ हो गया है। इसके एक प्रवक्ता ने कहा कि इसमें ३४ देशों के लगभग ४०० प्रतिनिधि और भारत के विभिन्न प्रदेशों के लगभग १०,००० प्रतिनिधि भाग ले रहे हैं। इस अवसर पर राज्य सभा के उपाध्यक्ष श्री श्यामलाल यादव ने विश्व-कल्याण आध्यात्मिक प्रदर्शनी का उद्घाटन किया। उन्होंने इस बात पर ज़ोर दिया कि वर्तमान अशान्ति काल में आध्यात्मिक मूल्यों पर पुनः ध्यान दिया जाना चाहिए क्योंकि ये समाज के लिए बहुत ज़रूरी हैं।"

इसके बाद जो समाचार प्रसारित हुए, उनमें आयोजक संस्था (प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय) का भी परिचय दिया गया।

—:०:—

जगदीश चन्द्र हसीजा, सम्पादक एवं प्रकाशक, 151 ई, कमला नगर, दिल्ली ने गगन प्रिण्टर्स, कृष्ण नगर, दिल्ली-51 से छपवाया, Regd. No. 10563/65-D (D N) 178

प्राकृतिक सौन्दर्य से घिरा आबू पर्वत पर
प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व
विद्यालय का मुख्यालय ।

संगम युग मंडप : इसमें दिखाया गया है कि कलियुगी विषय सागर से सतयुगी सुख-धाम में जाने का यहीसमय है ।

विश्व कल्याण महोत्सव केअन्तर्गत सम्मेलनों के लिए विशाल मण्डप ।

भारतमाता शक्तियों तथा देवियों की एक भव्य झांकी

अम्बेदकर स्टेडियम में हजारों प्रतिनिधियों का एक मनोरम दृश्य ।